भगवती सूत्र

षष्ठ भाग

शतक १८-२४

प्रकाशक

श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन
संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर
शाखा-नेहरू गेट बाहर, ब्यावर-305901
(01462) 251216, 257699, 250328

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ साहित्य रत्न माला का ४४ वाँ रत्न

गणधर भगवान् सुधर्मस्वामि प्रणीत

भगवती सूत्र

(व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र)

षष्ठ भाग

(शतक १८ से २४)

सम्पादक
पं. श्री घेवरचन्दजी बांठिया "वीरपुत्र"
(स्वर्गीय पंडित श्री वीरपुत्र जी महाराज)
न्याय व्याकरणतीर्थ, जैन सिद्धांत शास्त्री

प्रकाशक
श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर
शाखा-नेहरू गेट बाहर, ब्यावर-305901
(01462) 251216, 257699 Fax No. 250328

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्य सहायक

उदारमना श्रीमान् सेठ जशवंतलाल भाई शाह, बम्बई

प्राप्ति स्थान

१. श्री अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, सिटी पुलिस, **जोधपुर** ☎ **2626145**

२. शाखा-अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, नेहरू गेट बाहर, **ब्यावर** ☎ **251216**

३. महाराष्ट्र शाखा-माणके कंपाउंड, दूसरी मंजिल आंबेड़कर पुतले के बाजू में, **मनमाड़**

४. श्री जशवन्तभाई शाह एदुन बिल्डिंग पहली धोबी तलावलेन पो० बॉ० नं० 2217, **बम्बई-2**

५. श्रीमान् हस्तीमल जी किशनलालजी जैन प्रीतम हाऊ० कॉ० सोसा० ब्लॉक नं० १० स्टेट बैंक के सामने, **मालेगांव (नासिक)** ☎ **252097**

६. श्री एच. आर. डोशी जी-३६ बस्ती नारनौल अजमेरी गेट, **दिल्ली-६** ☎ **23233521**

७. श्री अशोकजी एस. छाजेड़, १२१ महावीर क्लॉथ मार्केट, **अहमदाबाद** ☎ **5461234**

८. श्री सुधर्म सेवा समिति भगवान् महावीर मार्ग, **बुलडाणा**

९. श्री श्रुतज्ञान स्वाध्याय समिति सांगानेरी गेट, **भीलवाड़ा** ☎ **236108**

१०. श्री सुधर्म जैन आराधना भवन २४ ग्रीन पार्क कॉलोनी साउथ तुकोगंज, **इन्दौर**

११. श्री विद्या प्रकाशन मन्दिर, ट्रांसपोर्ट नगर, **मेरठ** (उ. प्र.)

१२. श्री अमरचन्दजी छाजेड़, १०३ वाल टेक्स रोड़, **चैन्नई** ☎ **25357775**

१३. श्री संतोषकुमार बोथरा वर्द्धमान स्वर्ण अलंकार ३९४, शांपिग सेन्टर, **कोटा** ☎ **2360950**

सम्पूर्ण सेट मूल्य : ३००-००

चतुर्थ आवृत्ति
१०००

वीर संवत् २५३२
विक्रम संवत् २०६३
अप्रेल २००६

मुद्रक - स्वास्तिक प्रिन्टर्स प्रेम भवन हाथी भाटा, अजमेर ☎ 2423295

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

निवेदन

सम्पूर्ण जैन आगम साहित्य में भगवती सूत्र विशाल रत्नाकर है, जिसमें विविध रत्न समाये हुए हैं। जिनकी चर्चा प्रश्नोत्तर के माध्यम से इसमें की गई है। प्रस्तुत षष्ठ भाग में अठारह, उन्नीस, बीस, इक्कीस, बाईस, तेईस और चौबीस शतक का निरूपण हुआ है। प्रत्येक शतक के कितने उद्देशक हैं और उनकी विषय सामग्री क्या है? इसका संक्षेप में यहाँ वर्णन किया गया है -

शतक १८ - अठारहवें शतक में १० उद्देशक हैं - जीवादि के विषय में प्रथम-अप्रथम आदि भावों का प्रतिपादक प्रथम उद्देशक है। विशाखा नगरी में श्रवण भगवान् महावीर पधारे, इस विषयक दूसरा उद्देशक है। माकन्दी पुत्र अनगार की पृच्छा रूप तीसरा उद्देशक है। प्राणातिपातादि पाप और इनकी विरति विषयक चौथा उद्देशक है। असुरकुमार देव की वक्तव्यता का पाँचवाँ उद्देशक है। गुड़ आदि के वर्णादि विषयक छठा उद्देशक है। केवलज्ञानी के विषय में अन्यतीर्थियों के मन्तव्य विषयक सातवाँ उद्देशक है। अनगार-क्रिया सम्बन्धी पृच्छा का आठवाँ उद्देशक है। भविक द्रव्य नैरयिक आदि विषयक नौवां उद्देशक है और सोमिल ब्राह्मण के प्रश्न युक्त दसवाँ उद्देशक है।

शतक १९ - उन्नीसवें शतक में १० उद्देशक इस प्रकार हैं - १. लेश्या विषयक प्रथम उद्देशक है। २. गर्भ विषयक दूसरा उद्देशक है। ३. पृथ्वीकायिकादि विषय तीसरा ४. 'महा आस्रव, महाक्रिया' आदि पृच्छा विषयक चौथा ५ चरम (अल्प स्थितिक) विषयक पांचवां ६. द्वीप आदि विषयक छठा ७. भवनादि विषयक सातवां ८. एकेन्द्रिय आदि जीवों की उत्पत्ति विषयक आठवाँ ९. द्रव्यादि करण विषयक नौवाँ और १०. वाणव्यंतरदेव विषयक दसवाँ उद्देशक है।

शतक २० - बीसवें शतक में १० उद्देशक हैं - १. बेइन्द्रियादि की वक्तव्यता विषयक प्रथम उद्देशक २. आकाशादि अर्थ विषयक ३. प्राणातिपातादि अर्थ को प्रतिपादन करने वाला

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४. इन्द्रियोपचय विषयक ५. परमाणु से ले कर अनन्त प्रदेशीस्कन्ध विषयक ६. रत्नप्रभा आदि के अन्तराल विषयक ७. जीव प्रयोगादि बन्ध विषयक ८. कर्मभूमि अकर्मभूमि विषयक ९. विद्याचारणादि विषयक और १०. सोपक्रम निरुपक्रम आयुष्य वाले जीवों का प्रतिपादन **करने** विषयक दसवां उद्देशक है।

शतक २१ - इक्कीसवें शतक में ८ वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग में १० उद्देशक हैं। आठ वर्ग इस प्रकार हैं - शालि आदि धान्य के विषय में दस उद्देशात्मक प्रथम वर्ग है। कलाय (मटर) आदि धान्य के विषय में दूसरा वर्ग है। अलसी आदि धान्य के विषय में तीसरा वर्ग है। बांस आदि पर्व वाली वनस्पति के लिये चौथा वर्ग है। इक्षु आदि पर्व वाली वनस्पति से सम्बन्धित पाँचवां वर्ग है। दर्भ (डाभ) आदि तृण के विषय में छठा वर्ग है। अभ्र आदि वनस्पति का प्रतिपादक सातवां वर्ग है और तुलसी आदि वनस्पति का प्रतिपादक आठवां वर्ग है।

शतक २२ - बाईसवें शतक में ६ वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग में १०-१० उद्देशक हैं। छह वर्ग इस प्रकार हैं - १. ताल, तमाल आदि वृक्षों के विषय में दस उद्देशात्मक प्रथम वर्ग है। एक बीज वाले वृक्षों के विषय में दूसरा वर्ग है। बहुबीज फल वाले वृक्षों के सम्बन्ध में तीसरा वर्ग है। रींगणी आदि गुच्छ वनस्पति के विषय में चौथा वर्ग है। सिरिय नवमालिका आदि गुल्म वनस्पति के विषय में पांचवां वर्ग है। वल्लि आदि बेल के विषय में छठा वर्ग है। प्रत्येक वर्ग में दस-दस उद्देशक हैं। ये सब मिला कर ६० उद्देशक हैं।

शतक २३ - तेईसवें शतक में ५ वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग में १०-१० उद्देशक हैं। सब मिलाकर ५० उद्देशक हैं। ५ वर्ग इस प्रकार हैं - आलू आदि साधारण वनस्पति विषयक दस उद्देशात्मक प्रथम वर्ग है। लोही आदि अनन्तकायिक विषयक दूसरा, अवकादि वनस्पति विषयक तीसरा, पाठा मृगलालुंकी आदि वनस्पति विषयक चौथा और माषपर्णी आदि वनस्पति **विषयक** पाँचवां वर्ग है।

शतक २४ - चौबीसवें शतक में २४ उद्देशक हैं। वे इस प्रकार हैं - १. उपपात २. परिमाण ३. संहनन ४. ऊंचाई ५. संस्थान ६. लेश्या ७. दृष्टि ८. ज्ञान, अज्ञान, ९. योग

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१०. उपयोग ११. संज्ञा १२. कषाय १३. इन्द्रिय १४. समुद्घात १५. वेदना १६. वेद १७. आयुष्य १८. अध्यवसाय १९. अनुबंध और २० कायसंवेध। यह सब विषय चौबीस दण्डक से प्रत्येक जीव पद में कहे गये हैं अर्थात् प्रत्येक दण्डक पर ये बीस द्वारा कहे गये हैं। इन बीस द्वारों में से पहला-दूसरा द्वार तो जीव जहाँ उत्पन्न होता है, उस स्थान की अपेक्षा से हैं। तीसरे से उन्नीसवें तक सतरह द्वार, उत्पन्न होने वाले जीव के दस भव सम्बन्धी हैं और बीसवां द्वार दोनों भव सम्बन्धी सम्मिलित है। इस प्रकार चौबीसवें शतक में चौबीस दण्डक सम्बन्धी चौबीस उद्देशक कहे गये हैं।

उक्त सात शतक एवं उद्देशकों की विशेष जानकारी के लिए पाठक बंधुओं को इस पुस्तक का पूर्ण रूपेण पारायण करना चाहिये।

संघ की आगम बत्तीसी प्रकाशन में आदरणीय ***श्री जशवंतभाई शाह, मुम्बई*** निवासी का मुख्य सहयोग रहा है। आप एवं आपकी धर्म सहायिका ***श्रीमती मंगलाबेनशाह*** की सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार में गहरी रुचि हैं। आपकी भावना है कि संघ द्वारा प्रकाशित सभी आगम **अर्द्ध मूल्य** में पाठकों को उपलब्ध हो तदनुसार आप इस योजना के अंतर्गत सहयोग प्रदान करते रहे हैं। अतः संघ आपका आभारी है।

आदरणीय शाह साहब तत्त्वज्ञ एवं आगमों के अच्छे ज्ञाता हैं। आप का अधिकांश समय धर्म साधना, आराधना में बीतता है। प्रसन्नता एवं गर्व तो इस बात का है कि आप स्वयं तो आगमों का पठन-पाठन करते ही हैं, साथ ही आपके सम्पर्क में आने वाले चतुर्विध संघ के सदस्यों को भी आगम की वाचनादि देकर जिनशासन की खूब प्रभावना करते हैं। आज़ के इस हीयमान युग में आप जैसे तत्त्वज्ञ श्रावक रत्न का मिलना जिनशासन के लिए गौरव की बात है। आपके पुत्र रत्न ***मयंकभाई शाह एवं श्रेयांसभाई शाह*** भी आपके पद चिह्नों पर चलने वाले हैं। आप सभी को आगमों एवं थोकड़ों का गहन अभ्यास है। आपके धार्मिक जीवन को देख कर प्रमोद होता है। आप चिरायु हों एवं शासन की प्रभावना करते रहें, इसी शुभ भावना के साथ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इसके प्रकाशन में जो कागज काम में लिया गया है वह उच्च कोटि का मेफलिथो है साथ ही पक्की सेक्शन बाईंडिंग है बावजूद *आदरणीय शाह साहब* के आर्थिक सहयोग के कारण **अर्द्ध मूल्य** ही रखा गया है। जो अन्य संस्थानों के प्रकाशनों की अपेक्षा अल्प है।

संघ की आगम बत्तीसी प्रकाशन योजना के अन्तर्गत भगवती सूत्र भाग ६ की यह चतुर्थ आवृत्ति **श्रीमान् जशवंतलाल भाई शाह, मुम्बई** निवासी के अर्थ सहयोग से ही प्रकाशित हो रही है। आपके अर्थ सहयोग के कारण इस आवृत्ति के मूल्य में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं की गयी है। संघ आपका आभारी है। पाठक बन्धुओं से निवेदन है कि वे इस चतुर्थ आवृत्ति का अधिक से अधिक लाभ उठावें।

ब्यावर (राज.)
दिनांकः ४-४-२००६

संघ सेवक
नेमीचन्द बांठिया
अ. भा. सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६६९	७	णेगमट्ठसहस्स	णेगमट्ठसहस्सं
२६७०	१०	दुरुहइ	दुरुहह
२६८३	२०	वमानिक	वैमानिक
२६८८	७	द्रव्यवन्ध	द्रव्यबन्ध
२६९८	२	तिरिक्खजाणियइत्थीओ	तिरिक्खजोणियइत्थीओ
२७०१	१९	अवक्रिय	अवैक्रिय
२७०७	१९	विकुवणा	विकुर्वणा
२७०७	२३	वक्रिय	वैक्रिय
२७१०	९	व्यावहरिकनय	व्यावहारिकनय
२७२८	१२	सद्दिध	सद्दिध संगामं
२७३३	८	अरकुमाराणं	असुरकुमाराणं
२७३४	७	बाससयसहस्सेणं	वाससयसहस्सेणं
२७३५	१३	बह	वह
२७४६	१७	ह	है
२७७०	१६	लश्या	लेश्या
२८१४	१६	सच्चाभासाणिव्वत्ती	सच्चभासाणिव्वत्ती
२८१९	१	ती	तीन
२८२०	१०	अणगारोव......	अणागारोव........
२८२२	अंतिम	आरा-	ओरा-
२८३४	"	लायं	लोयं
२८६३	१३	वर्ण	वर्ण
२८६६	१४	यगा	यगा य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६०५	१७	अव्यववच्छेद	अव्यवच्छेद
२९०६	१२	बिमलनाथ	विमलनाथ
२९०७	१६	गायमा	गोयमा
२९२०	१६	वैमनिक	वैमानिक
२९२०	अंतिम	उव्वट्टृति	उव्वट्टृति
२९२८	१०	ने	वे
२९३६	१५	णगेहिं	णेगेहिं
२६४९	१०	-अलिसंदग-	-आलिसंदग-
२६७०	५	-पयलइ-	-पोवलइ-
२६७१	५	उत्कृत्ट	उत्कृष्ट
३०७१	४	कालदेसेणं	कालादेसेणं
३०७७	७	अंतमुहुत्तमब्भहियाइं	अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं
३०८१	१८	वक्तव्कयता	वक्तव्यता
३१२५	१२	भाणियव्वा	भाणियव्वा
३१३१	११	१९	२१
३१४८	८	ओगाहणसंठाणे	ओगाहणासंठाणे
३१६०	२	ग्रबेयक	ग्रैवेयक
३१६२	२	समदिट्ठी	सम्मदिट्ठी
३१७६	११	सम्वन्धी	सम्बन्धी
३१८९	अंतिम	विजत-	विजय-
३१८९	,,	कआ-	कओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रमणिका

शतक १८

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	उद्देशक १	
५९४	जीव प्रथम है या अप्रथम ?	२६४८
५९५	सलेशीपनादि प्रथम है या अप्रथम ?	६५२
५९६	योग उपयोगादि प्रथम है या अप्रथम?	२६५६
५९७	चरम अचरम	२६५८
	उद्देशक २	
५९८	कार्तिक श्रेष्ठी (सेठ)—शक्रेन्द्र का पूर्वभव	२६६५
	उद्देशक ३	
५९९	पृथिव्यादि से...मुक्त हो सकते हैं	२६७४
६००	निर्जरा के पुद्गल की सूक्ष्मता	२६७९
६०१	निर्जरा के पुद्गलों का ज्ञान	२६८०
६०२	संज्ञीभूत-असंज्ञीभूत	२६८१
६०३	द्रव्य और भाव-बन्ध के भेद	२६८५
६०४	पाप-कर्म में भेद	२६८८
	उद्देशक ४	
६०५	पाप की प्रवृत्ति-निवृत्ति और जीव-भोग	२६९२
६०६	कृतादि युग्म चतुष्क	२६९५
	उद्देशक ५	
६०७	देव की सुन्दरता-असुन्दरता	२७००
६०८	महाकर्म अल्पकर्म	२७०२
६०९	किस आयु का वेदन करते हैं ?	२७०४
६१०	विकुर्वणा सरल होती है या वक्र ?	२७०५
	उद्देशक ६	
६११	निश्चय व्यवहार से गुड़ आदि का वर्ण	२७०८
६१२	परमाणु और स्कन्ध में वर्णादि	२७१०
	उद्देशक ७	
६१३	केवली यक्षावेष्टित नहीं होते	२७१४
६१४	उपधि के भेद	२७१५
६१५	परिग्रह के भेद	२७१६
६१६	प्रणिधान	२७१७
६१७	मद्रुक श्रावक का अन्य तीर्थियों से वाद	२७२०
६१८	मद्रुक की मुक्ति का निर्णय	२७२७
६१९	वैक्रिय कृत हजारों शरीर में एक आत्मा	२७२८
६२०	देवासुर संग्राम और उनके शस्त्र	२७२९
६२१	देवों के कर्मक्षय का काल	२७३१
	उद्देशक ८	
६२२	साधु के पाँव से कुर्कुटादि मरे तो ?	२७३६
६२३	अन्यतीर्थियों से गौतमस्वामी का वाद	२७३७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक विषय	पृष्ठ
६२४ भ. महावीर द्वारा गौतम की प्रशंसा	२७४१
६२५ परमाणु आदि जानने की भजना	२७४२

उद्देशक ९

६२६ भव्य-द्रव्य नैरयिकादि	२७४६

उद्देशक १०

६२७ भावितात्मा अनगार की वैक्रिय-शक्ति	२७५०
६२८ वायु से परमाणु स्पृष्ट है ?	२७५१
६२९ मशक वायु से स्पृष्ट है ?	२७५२
६३० सोमिल ब्राह्मण का भगवद् वंदन	२७५४
६३१ यात्रा कैसी करते हैं ?	२७५६
६३२ यापनीय	२७५७
६३३ अव्याबाध	२७५८
६३४ प्रासुक विहार	२७५८
६३५ सरिसव भक्ष्य है या अभक्ष्य	२७५९
६३६ मास भक्ष्य है या अभक्ष्य	२७६२
६३७ कुलत्था भक्ष्य है ?	२७६३
६३८ आप एक हैं या अनेक ?	२७६४
६३९ सोमिल प्रतिबोधित हुआ	२७६६

शतक १९

उद्देशक १

६४० लेश्या	२७६९

उद्देशक २

६४१ गर्भ और लेश्या	२७७०

उद्देशक ३

६४२ स्थावर जीव साधारण शरीरी हैं ?	२७७१
६४३ पृथ्वीकाय में लेश्या, दृष्टि, ज्ञान	२७७२
६४४ पृथ्वीकाय के जीव पापी हैं ?	२७७५
६४५ अप्कायादि के साधारण शरीरादि	२७७९
६४६ स्थावर जीवों की अवगाहना	२७८१
६४७ स्थावर शरीर की सूक्ष्म-सूक्ष्मतरता	२७८५
६४८ स्थावरकाय की बादर-बादरतरता की अल्पबहुत्व	२७८६
६४९ पृथ्वीकायिक शरीर की विशालता	२७८८
६५० चक्रवर्ती की दासी का दृष्टान्त	२७९०
६५१ स्थावर जीवों की पीड़ा का उदाहरण	२७९१

उद्देशक ४

६५२ नैरयिक के महास्रवादि चतुष्क	२७९४

उद्देशक ५

६५३ चरम-परम नैरयिक के कर्म क्रियादि	२८०१

उद्देशक ६

६५४ द्वीप-समुद्र	२८०५

उद्देशक ७

६५५ देवावास रत्नमय हैं	२८०७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	उद्देशक ८	
६५६	जीव-निर्वृत्ति आदि	२८१०
	उद्देशक ९	
६५७	करण के भेद	२८२१
	उद्देशक १०	
६५८	देवों का आहार	२८२६

शतक २०

उद्देशक १

६५९ विकलेन्द्रिय के साधारण शरीरादि २८२८

६६० पंचेन्द्रिय जीवों के शरीरादि २८३०

उद्देशक २

६६१ लोकाकाश-अलोकाकाश २८३४

६६२ पंचास्तिकाय के अभिवचन २८३६

उद्देशक ३

६६३ आत्म-परिणत पाप-धर्म बुद्धि आदि २८४१

उद्देशक ४

६६४ इन्द्रियोपचय २८४४

उद्देशक ५

६६५ परमाणु और स्कन्ध के वर्णादि २८४५

६६६ द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव परमाणु २८८६

उद्देशक ६

६६७ आहार ग्रहण उत्पत्ति के पूर्व या पश्चात् २८८९

उद्देशक ७

६६८ अनन्तर-परम्पर बंध २८९६

उद्देशक ८

६६९ कर्मभूमि-अकर्मभूमि में उत्सर्पिणी काल २९०१

६७० महाविदेह के तीर्थंकरों का धर्म २९०३

६७१ भरत-क्षेत्र में २४ तीर्थंकर २९०४

६७२ जिनान्तरों में श्रुत व्यवच्छेद २९०५

६७३ भरत-क्षेत्र में पूर्वगत श्रुत कब तक? २९०६

६७४ भरत-क्षेत्र में जिन-धर्म कब तक? २९०७

६७५ तीर्थ और तीर्थंकर २९०८

उद्देशक ९

६७६ चारण-मुनियों की तीव्र-गति २९११

उद्देशक १०

६७७ सोपक्रम-निरुपक्रम आयुष्य २९१८

६७८ उत्पत्ति उद्वर्तन आत्म-ऋद्धि से २९२०

६७९ कति-अकति संचित २९२२

६८० षट्क-समर्जित नो षट्क-समर्जित २९२६

६८१ द्वादश-समर्जित २९३२

६८२ चौरासी-समर्जित २९३६

शतक २१

क्रमांक विषय पृष्ठ

वर्ग १ उद्देशक १

६८३ शालि आदि के मूल की उत्पत्ति २९४२

वर्ग १ उद्देशक २–१०

६८४ शालि आदि के कन्द की उत्पत्ति २९४७

वर्ग २ उद्देशक १–१०

६८५ कलाय, मसूर आदि के मूल की उत्पत्ति २९४९

वर्ग ३ उद्देशक १–१०

६८६ अलसी आदि के मूल की उत्पत्ति २९५०

वर्ग ४ उद्देशक १–१०

६८७ बांस आदि के मूल की उत्पत्ति २९५१

वर्ग ५ उद्देशक १–१०

६८८ इक्षु आदि के मूल की उत्पत्ति २९५२

वर्ग ६ उद्देशक १–१०

६८९ सेडिय आदि के मूल की उत्पत्ति २९५३

वर्ग ७ उद्देशक १–१०

६९० अभ्ररुह आदि के मूल की उत्पत्ति २९५४

वर्ग ८ उद्देशक १–१०

६९१ तुलसी आदि के मूल की उत्पत्ति २९५५

शतक २२

वर्ग १ उद्देशक १–१०

६९२ ताल-तमालादि की उत्पत्ति २९५८

वर्ग २ उद्देशक १–१०

६९३ नीम-आम्रादि के मूल की उत्पत्ति २९६२

वर्ग ३ उद्देशक १–१०

६९४ अगस्तिक आदि के मूल की उत्पत्ति २९६३

वर्ग ४ उद्देशक १–१०

६९५ बेंगनादि के मूल की उत्पत्ति २९६५

वर्ग ५ उद्देशक १–१०

६९६ सिरियकादि के मूल की उत्पत्ति २९६६

वर्ग ६ उद्देशक १–१०

६९७ पूसफलिकादि के मूल की उत्पत्ति २९६७

शतक २३

वर्ग १ उद्देशक १–१०

६९८ आलू आदि के मूल की उत्पत्ति २९७०

वर्ग २ उद्देशक १–१०

६९९ लोही आदि के मूल की उत्पत्ति २९७१

वर्ग ३ उद्देशक १–१०

७०० आय आदि के मूल की उत्पत्ति २९७२

वर्ग ४ उद्देशक १–१०

७०१ पाठा आदि के मूल की उत्पत्ति २९७३

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	विषय	पृष्ठ

वर्ग ५ उद्देशक १-१०

७०२ माषपर्णी आदि के मूल की उत्पत्ति २९७४

शतक २४

उद्देशक १

७०३ नैरयिकादि का उपपातादि २९७८
७०४ संज्ञी तिर्यंच का नरकोपपात ३००२
७०५ मनुष्यों का नरकोपपात ३०२३

उद्देशक २

७०६ असुरकुमारों का उपपात ३०३६

उद्देशक ३

७०७ नागकुमारों में उपपात ३०५५

उद्देशक ४-११

७०८ सुवर्णकुमारादि का उपपात ३०६४

उद्देशक १२

७०९ पृथ्वीकायिक जीवों की उत्पत्ति ३०६५

उद्देशक १३

७१० अप्कायिक जीवों की उत्पत्ति ३१०६

उद्देशक १४

७११ तेउकायिक जीवों की उत्पत्ति ३१०७

उद्देशक १५

७१२ वायुकायिक जीवों की उत्पत्ति ३१०८

क्रमांक	विषय	पृष्ठ

उद्देशक १६

७१३ वनस्पतिकायिक जीवों की उत्पत्ति ३१०९

उद्देशक १७

७१४ बेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति ३१११

उद्देशक १८

७१५ तेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति ३११३

उद्देशक १९

७१६ चौरिन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति ३११५

उद्देशक २०

७१७ पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की उत्पत्ति ३११६

उद्देशक २१

७१८ मनुष्य की विविध योनियों से उत्पत्ति ३१५०

उद्देशक २२

७१९ वाणव्यंतर देवों का उपपात ३१६६

उद्देशक २३

७२० ज्योतिषी देवों का उपपात ३१७०

उद्देशक २४

७२१ वैमानिक देवों का उपपात ३१७८

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अस्वाध्याय

निम्नलिखित बत्तीस कारण टालकर स्वाध्याय करना चाहिये।

आकाश सम्बन्धी १० अस्वाध्याय	**काल मर्यादा**
१. बड़ा तारा टूटे तो-	एक प्रहर
२. दिशा-दाह *	जब तक रहे
३. अकाल में मेघ गर्जना हो तो-	दो प्रहर
४. अकाल में बिजली चमके तो-	एक प्रहर
५. बिजली कड़के तो-	आठ प्रहर
६. शुक्ल पक्ष की १, २, ३ की रात-	प्रहर रात्रि तक
७. आकाश में यक्ष का चिह्न हो-	जब तक दिखाई दे
८-९. काली और सफेद धूंअर-	जब तक रहे
१०. आकाश मंडल धूलि से आच्छादित हो-	जब तक रहे

औदारिक सम्बन्धी १० अस्वाध्याय	
११-१३. हड्डी, रक्त और मांस,	ये तिर्यंच के ६० हाथ के भीतर हो। मनुष्य के हो, तो १०० हाथ के भीतर हो। मनुष्य की हड्डी यदि जली या धुली न हो, तो १२ वर्ष तक।
१४. अशुचि की दुर्गंध आवे या दिखाई दे-	तब तक
१५. श्मशान भूमि-	सौ हाथ से कम दूर हो, तो।

---

* आकाश में किसी दिशा में नगर जलने या अग्नि की लपटें उठने जैसा दिखाई दे और प्रकाश हो तथा नीचे अंधकार हो, वह दिशा-दाह है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१६. चन्द्र ग्रहण- खंड ग्रहण में ८ प्रहर, पूर्ण हो तो १२ प्रहर

(चन्द्र ग्रहण जिस रात्रि में लगा हो उस रात्रि के प्रारम्भ से ही अस्वाध्याय गिनना चाहिये।)

१७. सूर्य ग्रहण- खंड ग्रहण में १२ प्रहर, पूर्ण हो तो १६ प्रहर

(सूर्य ग्रहण जिस दिन में कभी भी लगे उस दिन के प्रारंभ से ही उसका अस्वाध्याय गिनना चाहिये।)

१८. राजा का अवसान होने पर, जब तक नया राजा घोषित न हो

१९. युद्ध स्थान के निकट जब तक युद्ध चले

२०. उपाश्रय में पंचेन्द्रिय का शव पड़ा हो, जब तक पड़ा रहे

(सीमा तिर्यंच पंचेन्द्रिय के लिए ६० हाथ, मनुष्य के लिए १०० हाथ। उपाश्रय बड़ा होने पर इतनी सीमा के बाद उपाश्रय में भी अस्वाध्याय नहीं होता। उपाश्रय की सीमा के बाहर हो तो यदि दुर्गन्ध न आवे या दिखाई न देवे तो अस्वाध्याय नहीं होता।)

२१-२४. आषाढ़, आश्विन, कार्तिक और चैत्र की पूर्णिमा दिन रात

२५-२८. इन पूर्णिमाओं के बाद की प्रतिपदा- दिन रात

२९-३२. प्रातः, मध्याह्न, संध्या और अर्द्ध रात्रि- इन चार सन्धिकालों में- १-१ मुहूर्त्त

उपरोक्त अस्वाध्याय को टालकर स्वाध्याय करना चाहिए। खुले मुंह नहीं बोलना तथा सामायिक, पौषध में दीपक के उजाले में नहीं वांचना चाहिए।

नोट - नक्षत्र २८ होते हैं उनमें से आर्द्रा नक्षत्र से स्वाति नक्षत्र तक नौ नक्षत्र वर्षा के गिने गये हैं। इनमें होने वाली मेघ की गर्जना और बिजली का चमकना स्वाभाविक है। अतः इसका अस्वाध्याय नहीं गिना गया है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री अ० भा० सुधर्म जैन सं० रक्षक संघ, जोधपुर आगम बत्तीसी प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित आगम

अंग सूत्र

क्रं.	नाम आगम	मूल्य
१.	आचारांग सूत्र भाग-१-२	५५-००
२.	सूयगडांग सूत्र भाग-१,२	६०-००
३.	स्थानांग सूत्र भाग-१, २	६०-००
४.	समवायांग सूत्र	२५-००
५.	भगवती सूत्र भाग १-७	३००-००
६.	ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र भाग-१, २	८०-००
७.	उपासकदशांग सूत्र	२०-००
८.	अन्तकृतदशा सूत्र	२५-००
९.	अनुत्तरोपपातिक दशा सूत्र	१५-००
१०.	प्रश्नव्याकरण सूत्र	३५-००
११.	विपाक सूत्र	३०-००

उपांग सूत्र

१.	उववाइय सुत्त	२५-००
२.	राजप्रश्नीय सूत्र	२५-००
३.	जीवाजीवाभिगम सूत्र भाग-१,२	८०-००
४.	प्रज्ञापना सूत्र भाग-१,२,३,४	१६०-००
५.	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति	५०-००
६-७.	चन्द्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति	२०-००
८-१२.	निरयावलिका (कल्पिका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा)	२०-००

मूल सूत्र

१.	दशवैकालिक सूत्र	३०-००
२.	उत्तराध्ययन सूत्र भाग-१, २	८०-००
३.	नंदी सूत्र	२५-००
४.	अनुयोगद्वार सूत्र	५०-००

छेद सूत्र

१-३.	त्रीणिछेदसुत्ताणि सूत्र (दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार)	५०-००
४.	निशीथ सूत्र	५०-००
१.	आवश्यक सूत्र	३०-००

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

गणधर भगवत्सुधर्मस्वामि प्रणीत

भगवती सूत्र

शतक १८

गाहा–१

१ पढमे २ विसाह ३ मायंदिए य ४ पाणाइवाय ५ असुरे य।
६ गुल ७ केवलि ८ अणगारे ९ भविए तह १० सोमिलट्ठारसे॥

भावार्थ–जीवादि के विषय में प्रथम-अप्रथम आदि भावों का प्रतिपादक प्रथम उद्देशक है। विशाला नगरी में श्रमण भगवान् महावीर पधारे, इस विषयक दूसरा उद्देशक है। माकन्दी पुत्र अनगार की पृच्छारूप तीसरा उद्देशक है। प्राणातिपातादि पाप और इनकी विरति विषयक चौथा उद्देशक है। असुरकुमार देव की वक्तव्यता का पांचवां उद्देशक है। गुड़ आदि के वर्णादि विषयक छठा उद्देशक है। केवलज्ञानी के विषय में अन्यतीर्थियों के मन्तव्य विषयक सातवां उद्देशक है। अनगार-क्रिया सम्बन्धी पृच्छा का आठवाँ उद्देशक है। भविक द्रव्य नैरयिक आदि विषयक नौवां उद्देशक है और सोमिल ब्राह्मण के प्रश्न युक्त दसवां उद्देशक है। इस प्रकार इस अठारहवें शतक में दस उद्देशक हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १९ उद्देशक १

जीव प्रथम है या अप्रथम ?

१ प्रश्न-तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी-जीवे णं भंते ! जीवभावेणं किं पढमे अपढमे ?

१ उत्तर-गोयमा ! णो पढमे, अपढमे। एवं णेरइए जाव वेमाणिए।

२ प्रश्न-सिद्धे णं भंते ! सिद्धभावेणं किं पढमे अपढमे ?

२ उत्तर-गोयमा ! पढमे, णो अपढमे।

३ प्रश्न-जीवा णं भंते ! जीवभावेणं किं पढमा अपढमा ?

३ उत्तर-गोयमा ! णो पढमा, अपढमा। एवं जाव वेमाणिया।१।

४ प्रश्न-सिद्धा णं पुच्छा।

४ उत्तर-गोयमा ! पढमा, णो अपढमा।

भावार्थ-१ प्रश्न-उस काल उस समय में राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-हे भगवन् ! जीव, जीवभाव से (जीवत्व की अपेक्षा) प्रथम है या अप्रथम ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जीव, जीवभाव की अपेक्षा प्रथम नहीं, अप्रथम है। इस प्रकार नैरयिक यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! सिद्ध जीव, सिद्धत्व की अपेक्षा प्रथम है या अप्रथम ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम है, अप्रथम नहीं ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! सभी जीव, जीवभाव की अपेक्षा प्रथम हैं या अप्रथम ?

३ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम नहीं, अप्रथम है । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! सभी सिद्ध जीव, सिद्धभाव की अपेक्षा प्रथम हैं या अप्रथम ?

४ उत्तर-हे गौतम वे प्रथम हैं, अप्रथम नहीं ।

५ प्रश्न-आहारए णं भंते ! जीवे आहारभावेणं किं पढमे अपढमे ?

५ उत्तर-गोयमा ! णो पढमे, अपढमे । एवं जाव वेमाणिए, पोहत्तिए एवं चेव ।

६ प्रश्न-अणाहारए णं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं पुच्छा ।

६ उत्तर-गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे ।

प्रश्न-णेरइए णं भंते० !

उत्तर-एवं णेरइए, जाव वेमाणिए णो पढमे, अपढमे । सिद्धे पढमे णो अपढमे ।

७ प्रश्न-अणाहारगा णं भंते ! जीवा अणाहारभावेणं पुच्छा ।

७ उत्तर-गोयमा ! पढमा वि अपढमा वि । णेरइया जाव वेमाणिया णो पढमा, अपढमा । सिद्धा पढमा, णो अपढमा । एक्केक्के पुच्छा भाणियव्वा । २ ।

८-भवसिद्धीए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धीए वि ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न-णोभवसिद्धीय-णोअभवसिद्धीए णं भंते ! जीवे णोभव० पुच्छा।

उत्तर-गोयमा ! पढमे, णो अपढमे ।

प्रश्न-णोभवसिद्धीय-णोअभवसिद्धीएणं भंते ! सिद्धे णोभव० ।

उत्तर-एवं पुहुत्तेण वि दोण्ह वि ।

९ प्रश्न-सण्णी णं भंते ! जीवे सण्णीभावेणं किं पढमे-पुच्छा ।

९ उत्तर-गोयमा ! णो पढमे, अपढमे । एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । एवं पुहुत्तेण वि । ३ । असण्णी एवं चेव एगत्तपुहुत्तेणं, णवरं जाव वाणमंतरा । णोसण्णी-णोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, णो अपढमे । एवं पुहुत्तेण वि । ४ ।

कठिन शब्दार्थ-भवसिद्धिए-भवान्त कर के सिद्धत्व प्राप्त करने के स्वभाव वाला ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! आहारक जीव, आहारक भाव से प्रथम है या अप्रथम ?

५ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम नहीं, अप्रथम है । इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये । बहुवचन में भी इसी प्रकार है ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! अनाहारक जीव, अनाहारक भाव की अपेक्षा प्रथम है या अप्रथम ?

६ उत्तर-हे गौतम ! कदाचित् प्रथम होता है और कदाचित् अप्रथम।

प्रश्न-नैरयिक जीव, अनाहारक भाव से प्रथम है या अप्रथम ?

उत्तर-प्रथम नहीं, अप्रथम है । इसी प्रकार नैरयिक से ले कर वैमानिक तक जानना चाहिये । सिद्धजीव, अनाहारक भाव की अपेक्षा प्रथम है, अप्रथम नहीं ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! अनाहारक जीव, अनाहारक भाव से प्रथम हैं या अप्रथम ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

७ उत्तर-हे गौतम ! वे प्रथम भी हैं और अप्रथम भी। इसी प्रकार नैरयिक से ले कर वैमानिक तक सभी प्रथम नहीं, अप्रथम हैं। सिद्ध प्रथम हैं, अप्रथम नहीं। इस प्रकार प्रत्येक दण्डक के विषय में प्रश्न करना चाहिये।

८ प्रश्न-आहारक जीव के समान भवसिद्धिक जीव, भवसिद्धिकपने प्रथम नहीं, अप्रथम है, इत्यादि वक्तव्यता एक वचन और बहुवचन से कहनी चाहिये। इसी प्रकार अभवसिद्धिक प्रश्न के उत्तर में भी जानना चाहिये। (प्रश्न) नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक जीव, नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक भाव की अपेक्षा प्रथम है या अप्रथम है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम है, अप्रथम नहीं।

प्रश्न-नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक जीव, नोभवसिद्धिक-नोअभव-सिद्धिक भाव से प्रथम हैं या अप्रथम ?

उत्तर-पूर्ववत्। इसी प्रकार जीव और सिद्ध दोनों के बहुवचन सम्बन्धी प्रश्नोत्तर भी जानना चाहिये।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! संज्ञी जीव, संज्ञी भाव की अपेक्षा प्रथम है या अप्रथम ?

९ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम नहीं, अप्रथम है। इस प्रकार विकलेन्द्रिय (एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, और चौरिन्द्रिय) को छोड़ कर यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये। इसी प्रकार बहुवचन सम्बन्धी वक्तव्यता भी जाननी चाहिये। असंज्ञी जीवों के विषय में भी एकवचन और बहुवचन पृच्छा इसी प्रकार जाननी चाहिये। विशेषता यह है कि यह वाणव्यन्तरों तक ही जाननी चाहिये। नोसंज्ञी नो असंज्ञी जीव, मनुष्य और सिद्ध, नो संज्ञी नो असंज्ञी भाव की अपेक्षा प्रथम हैं, अप्रथम नहीं। इस प्रकार बहुवचन सम्बन्धी प्रश्नोत्तर भी जान लेने चाहिये।

विवेचन-इस उद्देशक में जीवादि चौदह द्वारों में प्रथम, अप्रथम आदि भाव का विचार, चौवीस दण्डक और सिद्ध जीव के विषय में किया गया है। उन चौदह द्वारों को सूचित करने वाली संग्रह-गाथा इस प्रकार है—

जीवाहारग-भव-सण्णी, लेस्सा दिट्ठी य संजय-कसाए।
णाणे जोगुवओगे, वेए य सरीर-पज्जत्ती ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्थात्-१ जीव द्वार २ आहारक द्वार ३ भवसिद्धिक ४ संज्ञी ५ लेश्या ६ दृष्टि ७ संयत ८ कषाय ९ ज्ञान १० योग ११ उपयोग १२ वेद १३ शरीर और १४ पर्याप्ति द्वार।

इन चौदह द्वारों में से संज्ञी द्वार तक चार द्वारों का भावार्थ ऊपर दिया गया है। प्रथम, अप्रथम की व्याख्या इस प्रकार है-

जो जेण पत्तपुव्वो भावो, सो तेण अपढमो होइ ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ।।

अर्थात्-जिस जीव ने जो भाव पूर्व (पहले) भी प्राप्त किया है, उसकी अपेक्षा वह 'अप्रथम' कहलाता है। जैसे-जीव को जीवत्व अनादि काल से प्राप्त है। इसलिये जीवत्व की अपेक्षा जीव अप्रथम है। जो भाव जीव को पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ, उसे प्राप्त करना, उस भाव की अपेक्षा 'प्रथम' कहलाता है। जैसे-सिद्धत्व की अपेक्षा जीव प्रथम है। क्योंकि सिद्धत्व जीव को पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ था।

सिद्ध जीव और विग्रहगति प्राप्त संसारी जीव अनाहारक होते हैं। अनाहारक भाव की अपेक्षा सिद्ध प्रथम हैं, क्योंकि उन्हें अनाहारकत्व पहले प्राप्त नहीं हुआ था। संसारी जीव अप्रथम हैं, क्योंकि विग्रहगति में उसने अनाहारकपना अनन्त बार प्राप्त किया है। इस प्रकार दण्डक के क्रम से नैरयिक से ले कर वैमानिक तक के सभी जीव पूर्वोक्त हेतु से अनाहारक भाव की अपेक्षा अप्रथम है।

संज्ञी जीव, संज्ञी भाव से अप्रथम है, क्योंकि संज्ञीपना अनन्त बार प्राप्त हो चुका है। असंज्ञी द्वार में जीव और नैरयिक से ले कर दण्डक के क्रम से व्यन्तर तक के जीव असंज्ञी भाव से अप्रथम हैं, क्योंकि उनमें असंज्ञीपन भूतपूर्व गति की अपेक्षा तथा वहाँ आने पर भी कुछ देर तक नरक, भवनपति और वाणव्यन्तरों में पाया जाता है। असंज्ञी जीवों का उत्पाद वाणव्यन्तर तक होता है। पृथ्वीकायिकादि असंज्ञी जीव तो असंज्ञी भाव की अपेक्षा अप्रथम हैं।

सलेशीपनादि प्रथम है या अप्रथम ?

१० प्रश्न-सलेसे णं भंते ! पुच्छा ।

१० उत्तर-गोयमा ! जहा आहारए, एवं पुहुत्तेण वि । कण्ह-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव, णवरं जस्स जा लेसा अत्थि। अलेसे णं जीव-मणुस्स सिद्धे जहा णोसण्णीणोअसण्णी ।५।

११ प्रश्न-सम्मदिट्ठीए णं भंते ! जीवे सम्मदिट्ठिभावेणं किं पढमे-पुच्छा ।

११ उत्तर-गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं एगिंदिय-वज्जं जाव वेमाणिए । सिद्धे पढमे, णो अपढमे । पुहुत्तिया जीवा पढमा वि अपढमा वि, एवं जाव वेमाणिया । सिद्धा पढमा, णो अपढमा । मिच्छादिट्ठीए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारगा। सम्मामिच्छा-दिट्ठी एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, णवरं जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ।६।

१२-संजए जीवे मणुस्से य एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, असं-जए जहा आहारए, संजयासंजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी णोसंजए णोअसंजए णोसंजया-संजए जीवे सिद्धे य एगत्तपुहुत्तेणं पढमे, णो अपढमे ।७।

१३-सकसायी कोहकसायी जाव लोभकसायी एए एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, अकसायी जीवे सिय पढमे सिय अपढमे, एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमे, णो अपढमे; पुहुत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा, णो अपढमा । ८ ।

१४-णाणी एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, आभिणिबोहियणाणी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव मणपज्जवणाणी एगत्तपुहुत्तेणं एवं चेव, णवरं जस्स जं अत्थि, केवलणाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्तपुहुत्तेणं पढमा, णो अपढमा! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगणाणी एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए। ९।

कठिन शब्दार्थ–संजए–संयमी साधु, संजयासंजए–देश-विरत श्रावक।

भावार्थ–१० प्रश्न–हे भगवन् ! सलेशी जीव सलेश्यभाव से प्रथम है या अप्रथम ?

१० उत्तर–हे गौतम ! आहारक जीव के समान अप्रथम है। बहुवचन से भी इसी प्रकार है। कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या के विषय में भी ऐसा ही जानना चाहिये। विशेषता यह है कि जिस जीव के जो लेश्या हो, वही कहनी चाहिये। अलेशी जीव, मनुष्य और सिद्ध का स्वरूप नोसंज्ञीनोअसंज्ञी वत् है। ५।

११ प्रश्न–हे भगवन् ! सम्यग्दृष्टि जीव, सम्यग्दृष्टि भाव की अपेक्षा प्रथम है या अप्रथम ?

११ उत्तर–हे गौतम ! कदाचित् प्रथम भी होता है और अप्रथम भी। इस प्रकार एकेन्द्रियों के सिवाय यावत् वैमानिक तक सभी दण्डकों में जानना चाहिये। सम्यग्दृष्टि भाव की अपेक्षा सिद्ध प्रथम हैं, अप्रथम नहीं। बहुवचन से सम्यग्दृष्टि भाव की अपेक्षा जीव प्रथम भी है और अप्रथम भी। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये। सभी सिद्ध प्रथम हैं, अप्रथम नहीं। मिथ्यादृष्टि भाव की अपेक्षा एकवचन और बहुवचन से आहारक भाव के समान हैं और सम्यग्मिथ्यादृष्टि भाव से एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा सम्यग्दृष्टि के समान हैं। जिन जीवों के सम्यग्मिथ्यादृष्टि हों, उन्ही का कथन करना चाहिए। ६।

१२ प्रश्न–संयत जीव और मनुष्य में एकवचन और बहुवचन की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपेक्षा सम्यग्दृष्टि जीव की वक्तव्यता के समान जानना चाहिये । असंयत का कथन आहारक जीव के समान समझना चाहिये । संयतासंयत जीव, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य, इन तीन पदों में एकवचन और बहुवचन से सम्यग्दृष्टि के समान कदाचित् प्रथम और कदाचित् अप्रथम होता है । नोसंयत नोअसंयत-नोसंयतासंयत जीव और सिद्ध एकवचन और बहुवचन से प्रथम हैं, अप्रथम नहीं ।

१३-सकषायी, क्रोधकषायी, यावत् लोभकषायी-ये सब एकवचन और बहुवचन से आहारक जीव के समान हैं । अकषायी जीव कदाचित् प्रथम और कदाचित् अप्रथम होता है, इसी प्रकार अकषायी मनुष्य भी । सिद्ध प्रथम हैं, अप्रथम नहीं । बहुवचन से अकषायी जीव और मनुष्य प्रथम भी होते हैं और अप्रथम भी । सिद्ध जीव, बहुवचन से प्रथम है, अप्रथम नहीं ।

१४-ज्ञानी जीव, एकवचन और बहुवचन से सम्यग्दृष्टि जीव के समान कदाचित् प्रथम और कदाचित् अप्रथम होते हैं । आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यय ज्ञानी, एकवचन और बहुवचन से इसी प्रकार हैं, जिस जीव के जो ज्ञान हो, वही कहना चाहिये । केवलज्ञानी जीव, मनुष्य और सिद्ध-ये सब एकवचन और बहुवचन से प्रथम हैं, अप्रथम नहीं । अज्ञानी, मतिअज्ञानी, श्रुत-अज्ञानी और विभंगज्ञानी ये सभी एकवचन और बहुवचन से आहारक जीव के समान हैं ।

विवेचन-कोई सम्यग्दृष्टि जीव, प्रथम बार सम्यग्दर्शन को प्राप्त करता है, इस अपेक्षा वह प्रथम है और कोई सम्यग्दर्शन से गिर कर दूसरी-तीसरी बार पुनः सम्यग्दर्शन को प्राप्त करता है, इस अपेक्षा वह अप्रथम है । एकेन्द्रिय जीवों को सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं होता । इसलिये एकेन्द्रियों के पाँच दण्डक छोड़ कर शेष १९ दंडकों का कथन किया गया है।

सिद्ध सम्यग्दृष्टि भाव की अपेक्षा प्रथम हैं, क्योंकि सिद्धत्वसहचरित सम्यग्दर्शन मोक्ष गमन के समय प्रथम ही प्राप्त होता है ।

मिथ्यादृष्टि जीव, आहारक के समान एकवचन और बहुवचन से अप्रथम हैं, क्योंकि मिथ्यादर्शन अनादि है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संयत द्वार में मात्र जीव और मनुष्य-ये दो पद होते हैं। इनमें संयतपन सम्यग्दृष्टि के समान प्रथम और अप्रथम होता है।

अकषायी जीव, यथाख्यात चारित्र की प्रथम प्राप्ति के समय 'प्रथम' होते हैं और पुनः प्राप्ति के समय अप्रथम होते हैं। इसी प्रकार मनुष्य के विषय में भी जानना चाहिये। अकषायी सिद्ध प्रथम होते हैं, क्योंकि सिद्ध, सिद्धत्व सहित अकषाय भाव की अपेक्षा प्रथम हैं।

ज्ञान द्वार में ज्ञानी, सम्यग्दृष्टि के समान प्रथम और अप्रथम होता है। इनमें केवलज्ञानी, केवलज्ञान की अपेक्षा प्रथम हैं और अकेवली, केवलज्ञान के अतिरिक्त शेष ज्ञानों की प्रथम प्राप्ति में 'प्रथम' होते हैं और पुनः प्राप्ति में 'अप्रथम' होते हैं।

योग उपयोगादि प्रथम है या अप्रथम ?

१५-सजोगी, मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, णवरं जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जीव-मणुस्स-सिद्धा एगत्तपुहुत्तेणं पढमा, णो अपढमा।१०।

१६-सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्तपुहुत्तेणं जहा अणाहारए।११।

१७-सवेदगो जाव णपुंसगवेदगो एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, णवरं जस्स जो वेदो अत्थि। अवेदओ एगत्तपुहुत्तेणं तिसु वि पदेसु जहा अकसायी।१२।

१८-ससरीरी जहा आहारए, एवं जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, णवरं आहारगसरीरी एगत्तपुहुत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी। असरीरी जीवो सिद्धो एगत्तपुहुत्तेणं पढमो णो अपढमो।१३।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१९-पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारए, णवरं जस्स जा अत्थि, जाव वेमाणिया णो पढमा, अपढमा ।१४। इमा लक्खण-गाहा-

"जो जेणं पत्तपुव्वो भावो सो तेण अपढमओ होइ ।
सेसेसु होई पढमो अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥"

कठिन शब्दार्थ-सागरोवउत्त-ज्ञानोपयोग युक्त, अणागारोवउत्त-दर्शनोपयोगी ।

भावार्थ-१५-सयोगी, मनयोगी, वचनयोगी और काययोगी, ये सभी एकवचन और बहुवचन से आहारक जीवों के समान अप्रथम होते हैं । जिन जीवों के जो योग हो, वह उसी प्रकार जानना चाहिये । अयोगी जीव, मनुष्य और सिद्ध-ये सभी एकवचन और बहुवचन से प्रथम हैं, अप्रथम नहीं ।

१६-साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी एकवचन और बहुवचन से आहारक जीवों के समान हैं ।

१७-सवेदक यावत् नपुंसक वेद वाले एकवचन और बहुवचन से आहारक जीव के समान हैं । जिस जीव के जो वेद हो, वही जानना चाहिए । एकवचन और बहुवचन से अवेदक जीव, मनुष्य और सिद्ध, अकषायी जीव के समान है ।

१८-सशरीर जीव, आहारक के समान हैं । इसी प्रकार यावत् कार्मण-शरीरी जीव के विषय में भी समझना चाहिये । जिस जीव के जो शरीर हो, वही कहना चाहिये, किन्तु आहारक शरीरी के विषय में एकवचन और बहु-वचन से सम्यग्दृष्टि जीव के समान कहना चाहिये । अशरीरी जीव और सिद्ध, एकवचन और बहुवचन से प्रथम हैं, अप्रथम नहीं ।

१९-पाँच पर्याप्ति से पर्याप्त और पांच अपर्याप्ति से अपर्याप्त जीव, एकवचन और बहुवचन से आहारक के समान हैं । जिसके जो पर्याप्ति हो, वह कहनी चाहिये । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये । अर्थात् ये सब प्रथम नहीं, अप्रथम हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम और अप्रथम के स्वरूप को बतलाने वाली गाथा का अर्थ इस प्रकार है-जिन जीवों को जो भाव (अवस्था) पूर्व से प्राप्त है, तथा जो अनादि काल से हैं, उस भाव की अपेक्षा वह जीव, अप्रथम कहलाता है और जो भाव प्रथम बार ही प्राप्त हुआ है, उससे पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ, उसकी अपेक्षा वह जीव प्रथम कहलाता है।

विवेचन-साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी, अनाहारक के समान जानना चाहिये। वह जीव पद में सिद्ध की अपेक्षा प्रथम और संसारी की अपेक्षा अप्रथम है। नैरयिक से लेकर वैमानिक तक सभी दण्डकों में प्रथम नहीं, अप्रथम है। सिद्धत्व के विषय में प्रथम हैं, अप्रथम नहीं, क्योंकि साकारोपयोग और अनाकारोपयोग विशिष्ट सिद्धत्व की प्राप्ति प्रथम ही होती है।

चरम अचरम

२० प्रश्न-जीवे णं भंते ! जीवभावेणं किं चरिमे अचरिमे ?

२० उत्तर-गोयमा ! णो चरिमे, अचरिमे।

२१ प्रश्न-णेरइए णं भंते ! णेरइयभावेणं-पुच्छा।

२१ उत्तर-गोयमा ! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे।

२२ प्रश्न-जीवा णं-पुच्छा।

२२ उत्तर-गोयमा ! णो चरिमा, अचरिमा। णेरइया चरिमा वि अचरिमा वि, एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ।१।

२३-आहारए सव्वत्थ एगत्तेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुहुत्तेणं चरिमा वि अचरिमा वि। अणाहारओ जीवो सिद्धो य एग-त्तेण वि पुहुत्तेण वि णो चरिमे, अचरिमे। सेसट्ठाणेसु एगत्तपुहुत्तेणं जहा आहारओ ।२।

कठिन शब्दार्थ-चरिमे-चरम-(अन्तिम) सिय-स्यात् (कदाचित्)।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! जीव, जीवत्व (जीवभाव) की अपेक्षा चरम है या अचरम ?

२० उत्तर-हे गौतम ! चरम नहीं, अचरम है।

२१ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक, नैरयिकभाव की अपेक्षा चरम है या अचरम ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! कदाचित् चरम है और कदाचित् अचरम है। इस प्रकार वैमानिक तक जानना चाहिए। सिद्ध का कथन जीव के समान है।

२२ प्रश्न-जीवों के विषय में चरम, अचरम सम्बन्धी प्रश्न ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! जीव चरम नहीं, अचरम हैं। नैरयिक जीव, नैरयिकभाव से चरम भी हैं और अचरम भी। इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक समझना चाहिए। सिद्धों का कथन जीवों के समान है।

२३-आहारक सर्वत्र एक वचन से कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम होता है। बहुवचन से आहारक चरम भी होते हैं और अचरम भी। अनाहारक जीव और सिद्ध एकवचन और बहुवचन से चरम नहीं होते, अचरम होते हैं। शेष नैरयिकादि स्थानों में अनाहारक, एकवचन और बहुवचन से अनाहारक जीव के समान (कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम) है।

२४-भवसिद्धीओ जीवपए एगत्तपुहुत्तेणं चरिमे, णो अचरिमे, सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्तपुहुत्तेणं णो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चरिमे, अचरिमे। णोभवसिद्धीय-णोअभवसिद्धीय जीवा सिद्धा य एगत्तपुहुत्तेणं जहा अभवसिद्धीओ। ३।

२५-सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णी वि। णोसण्णी-णोअसण्णी जीवपए सिद्धपए य अचरिमे, मणुस्सपए चरिमे एगत्त-पुहुत्तेणं। ४।

२६-सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ, णवरं जस्स जा अत्थि। अलेस्सो जहा णोसण्णी-णोअसण्णी। ५।

२७-सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ, मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ, सम्मामिच्छादिट्ठी एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, पुहुत्तेणं चरिमा वि अचरिमा वि। ६।

भावार्थ २४-भवसिद्धिकजीव, एकवचन और बहुवचन से चरम हैं, अचरम नहीं। शेष स्थानों में आहारक के समान हैं। अभवसिद्धिक सर्वत्र एकवचन और बहुवचन से चरम नहीं, अचरम हैं। नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक जीव और सिद्ध, एकवचन और बहुवचन से अभवसिद्धिक के समान हैं।

२५-संज्ञी और असंज्ञी आहारक के समान हैं, नोसंज्ञी नोअसंज्ञी जीव और सिद्ध अचरम हैं। मनुष्य एकवचन और बहुवचन से चरम हैं।

२६-सलेशी यावत् शुक्ललेशी का कथन आहारक के समान हैं। जिस के जो लेश्या हो, वही कहनी चाहिये। अलेशी, नोसंज्ञी नोअसंज्ञी के समान हैं।

२७-सम्यग्दृष्टि, अनाहारक के समान हैं। मिथ्यादृष्टि आहारक के समान हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि, एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय छोड़ कर कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम हैं। बहुवचन से वे चरम भी हैं और अचरम भी।

विवेचन-जिसका कभी अन्त होता है, वह 'चरम' कहलाता है और जिसका कभी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भी अन्त नहीं होता, वह 'अचरम' कहलाता है। जीवत्व की अपेक्षा जीव का कभी अन्त नहीं होता, इसलिये वह चरम नहीं अचरम है।

जो नैरयिक, नरक गति से निकल कर फिर नरक में न जावे और मोक्ष चला जाय, तो वह नैरयिक भाव का सदा के लिये अन्त कर देता है, इसलिये चरम कहलाता है। इससे भिन्न नैरयिक अचरम कहलाता है। इस प्रकार वैमानिक तक जानना चाहिये। सिद्धत्व का कभी अन्त नहीं होता, इसलिये वह अचरम है। आहारक आदि सभी पदों में जीव कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम होता है अर्थात् जो मोक्ष चला जायगा वह चरम है, उससे भिन्न अचरम आहारक है।

मोक्ष प्राप्त होने पर भव्यत्व का अन्त हो जाता है, इसलिये भवसिद्धिक चरम है। अभवसिद्धिक का अन्त नहीं होने से वह अचरम है। नो-भवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक, सिद्ध होते हैं, वे अभवसिद्धिक के समान अचरम होते हैं। सम्यग्दृष्टि, अनाहारक के समान चरम और अचरम होते हैं। अनाहारकपना जीव और सिद्ध दोनों स्थानों में होता है। इसमें से जीव अचरम है, क्योंकि वह सम्यग्दर्शन से गिर कर पुनः सम्यग्दर्शन को अवश्य प्राप्त करता है, किंतु सिद्ध चरम है, क्योंकि वे सम्यग्दर्शन से कभी गिरते ही नहीं। सम्यग्दृष्टि नैरयिक आदि जो सम्यग्दर्शन को पुनः प्राप्त नहीं करेंगे, वे चरम हैं, उनसे भिन्न अचरम हैं। मिथ्यादृष्टि जीव, आहारक की तरह कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम होते हैं। जो मोक्ष में चले जायेंगे वे मिथ्यादृष्टिपन की अपेक्षा चरम हैं और उनसे भिन्न अचरम हैं। मिथ्यादृष्टि नैरयिक आदि जो मिथ्यात्व सहित नैरयिकादिपना पुनः प्राप्त नहीं करेंगे, वे चरम हैं और उनसे भिन्न अचरम हैं। एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय, मिश्रदृष्टि नहीं होते, इसलिये मिश्रदृष्टि के विषय में नैरयिक आदि दण्डक में एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय नहीं कहने चाहिये। सम्यग्दृष्टि के विषय में एकेन्द्रिय नहीं कहने चाहिये। क्योंकि सिद्धान्त के मतानुसार उनमें सास्वादन सम्यक्त्व नहीं होता। इसी प्रकार जिसका जिस विषय में सम्भव नहीं हो, उसका वहां कथन नहीं करना चाहिये। जैसे संज्ञी पद में एकेन्द्रिय आदि का, असंज्ञी पद में ज्योतिषी आदि का कथन नहीं करना चाहिये।

२८-संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ, असंजओ वि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तहेव, संजयासंजए वि तहेव, णवरं जस्स जं अत्थि। णोसंजय-णो-असंजय-णोसंजयासंजओ जहा णोभवसिद्धीय-णोअभवसिद्धीओ।७।

२९-सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ, अकसायी जीवपए सिद्धे य णो चरिमो, अचरिमो, मणुस्सपए सिय चरिमो, सिय अचरिमो। ८।

३०-णाणी जहा सम्मदिट्ठी सव्वत्थ, आभिणिबोहियणाणी, जाव मणपज्जवणाणी जहा आहारओ, णवरं जस्स जं अत्थि। केवलणाणी जहा णोसण्णी-णोअसण्णी, अण्णाणी जाव विभंगणाणी जहा आहारओ। ९।

३१-सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जहा णोसण्णी-णोअसण्णी। १०।

३२-सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ।११।

३३-सवेदओ जाव णपुंसगवेदओ जहा आहारओ, अवेदओ जहा अकसायी। १२।

३४-ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ, णवरं जस्स जं अत्थि। असरीरी जहा णोभवसिद्धीय-णोअभवसिद्धीओ।१३।

३५-पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं जहा आहारओ, सव्वत्थ एगत्तपुहुत्तेणं दंडगा भाणियव्वा।१४। इमा लक्खणगाहा-

"जो जं पाविहिइ पुणो भावं सो तेण अचरिमो होइ ।
अच्चंतविओगो जस्स जेण भावेण सो चरिमो ॥"

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ अठारसमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-पाविहिइ-प्राप्त करेगा ।

भावार्थ-२८-संयत जीव और मनुष्य, आहारक के समान है । असंयत और संयतासंयत भी इसी प्रकार है । जिसके जो भाव हो, वह जानना चाहिये। नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयत, नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक की तरह है ।

२९-सकषायी यावत् लोभकषायी, इन सभी स्थानों में आहारक के समान है । अकषायी जीव और सिद्ध चरम नहीं, अचरम हैं । मनुष्य पद में कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम कहना चाहिये ।

३०-ज्ञानी सर्वत्र सम्यग्दृष्टि के समान है । आभिनिबोधिक ज्ञानी यावत् मनःपर्यय ज्ञानी, आहारक के समान है । जिसके जो ज्ञान हो, वह कहना चाहिये । केवलज्ञानी का कथन नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी जैसा है । अज्ञानी यावत् विभंगज्ञानी, आहारक के समान है ।

३१-सयोगी यावत् काययोगी, आहारक के समान हैं । जिसके जो योग हो, वही लेना चाहिये । अयोगी, नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी के समान हैं ।

३२-साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी जीव, अनाहारक जैसे हैं ।

३३-सवेदी यावत् नपुंसकवेदी, आहारकवत् है और अवेदक अकषायी के समान हैं ।

३४-सशरीरी यावत् कार्मणशरीरी का कथन आहारक का-सा है । जिसके जो शरीर हो, वह कहना चाहिये । अशरीरी का कथन नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक जैसा है ।

३५-पांच पर्याप्तियों से पर्याप्त और पांच अपर्याप्तियों से अपर्याप्त का

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कथन आहारक के समान है। सर्वत्र ये चौदह ही दण्डक, एकवचन और बहुवचन से जानना चाहिये।

चरम और अचरम के स्वरूप को बतलाने वाली गाथा का अर्थ इस प्रकार है-जो जीव जिस भाव को पुनः प्राप्त करेगा, वह जीव उस भाव की अपेक्षा 'अचरम' कहलाता है और जिस भाव का जिस जीव के साथ सर्वथा वियोग हो जाता है, वह जीव, उस भाव की अपेक्षा 'चरम' कहलाता है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-संयत जीव चरम और अचरम दोनों प्रकार के होते हैं। जिसको पुनः संयतपन प्राप्त नहीं होता, वह चरम है और उससे भिन्न अचरम है। मनुष्य भी इसी तरह है। असंयत का कथन आहारक के समान-चरम और अचरम दोनों प्रकार का है और संयतासंयत (देशविरत) का कथन भी इसी प्रकार है, परन्तु देशविरति, जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य-इन तीनों में ही होता है। नोसंयत-नोअसंयत-नोसंयतासंयत (सिद्ध) अचरम हैं, क्योंकि सिद्धत्व नित्य होता है। इसलिये वह चरम नहीं होता।

सकषायी जीवादि कदाचित् चरम होते हैं और कदाचित् अचरम होते हैं। जो मोक्ष प्राप्त करेंगे, वे चरम हैं और अन्य अचरम हैं।

सम्यग्दृष्टि के समान ज्ञानी जीव और सिद्ध अचरम है। क्योंकि यदि जीव ज्ञानावस्था से गिर भी जाय तो वह उसे पुनः अवश्य प्राप्त करता है, अतः अचरम हैं और सिद्ध सदा ज्ञानावस्था में ही रहते हैं, इसलिये अचरम हैं। शेष जिन जीवों को ज्ञान सहित नारकत्वादि की प्राप्ति पुनः असम्भव है, वे चरम है, शेष अचरम है। आभिनिबोधिक ज्ञानी आहारक के समान चरम और अचरम दोनों प्रकार के होते हैं। जो जीव, आभिनिबोधिक आदि ज्ञान को केवलज्ञान हो जाने के कारण पुनः प्राप्त नहीं करेंगे, वे चरम हैं, शेष अचरम हैं। केवलज्ञानी अचरम होते हैं।

जहाँ-जहाँ आहारक का अतिदेश किया गया है, वहाँ-वहाँ 'कदाचित् चरम और कदाचित् अचरम'-ऐसा कहना चाहिए।

।। इति अठारहवें शतक का प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ।।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १८ उद्देशक २

कार्तिक श्रेष्ठी (सेठ)-शक्रेन्द्र का पूर्वभव

१-तेणं कालेणं तेणं समएणं विसाहा णामं णयरी होत्था। वण्णओ। बहुपुत्तिए चेइए। वण्णओ। सामी समोसढे जाव पज्जुवासइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे-एवं जहा सोलसमसए बिइयउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ। णवरं एत्थ आभियोगा वि अत्थि, जाव बत्तीसइविहं णट्टविहिं उवदंसेइ, उवदंसेत्ता जाव पडिगए।

भावार्थ-१-उस काल उस समय में विशाखा नाम की नगरी थी। वर्णन। वहाँ बहुपुत्रिक नामक उद्यान था। वर्णन। एक समय वहाँ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी पधारे यावत् परिषद् पर्युपासना करने लगी। उस काल उस समय में शक्र देवेन्द्र देवराज, वज्रपाणि, पुरन्दर इत्यादि सोलहवें शतक के दूसरे उद्देशक के अनुसार यावत् वह दिव्य यान में बैठ कर आया। अन्तर यह कि यहाँ आभियोगिक देव भी साथ थे यावत् इन्द्र ने बत्तीस प्रकार की नाटच विधि दिखलाई और जिस दिशा से आया था, उसी दिशा में लौट गया।

२ प्रश्न-'भंते' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव एवं वयासी-जहा तईयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठंतो, तहेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वभवपुच्छा, जाव अभिसमण्णागया ?

२ उत्तर-'गोयमा' दि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-'एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे णामं णयरे होत्था । वण्णओ । सहस्संबवणे उज्जाणे । वण्णओ । तत्थ णं हत्थिणापुरे णयरे कत्तिए णामं सेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, णेगमपढमासणिए, णेगमट्ठसहस्सस्स बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य-एवं जहा रायप्पसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए, णेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं जाव कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ--णेगमपढमासणिए--व्यापारियों में प्रथम स्थान रखने वाला, कज्जेसु-घर सम्बन्धी कार्यों में, कारणेसु-कृषि, पशुपालन, वाणिज्यादि कारणों में ।

भावार्थ-२ प्रश्न-'हे भगवन् !'-गौतम स्वामी ने श्रमण भगवन् महावीर स्वामी से पूछा-जिस प्रकार तीसरे शतक के प्रथम उद्देशक में ईशानेन्द्र के वर्णन में कूटागार शाला का दृष्टान्त और पूर्व-भव सम्बन्धी प्रश्न किया है, उसी प्रकार यहां भी यावत् 'ऋद्धि सम्मुख हुई है'-तक कहना चाहिये ।

२ उत्तर-'हे गौतम !'-श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी को सम्बोधन कर कहा-'हे गौतम ! इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में हस्तिनापुर नामक नगर था । वहां सहस्राम्र वन उद्यान था, उस हस्तिनापुर नगर में 'कार्तिक' नामक श्रेष्ठी (सेठ) रहता था, जो धनिक यावत् किसी से पराभव न पाने वाला, वणिकों में अग्र-स्थान प्राप्त करने वाला था । वह उन एक हजार आठ व्यापारियों के लिये बहुत कार्यों में, कारणों में और कुटुम्बों में पूछने

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

योग्य यावत् चक्षुरूप था। जिस प्रकार राजप्रश्नीय सूत्र में चित्त सारथि का वर्णन है, उसी प्रकार यहाँ भी समझना चाहिये। वह कार्तिक सेठ एक हजार आठ व्यापारियों का और अपने कुटुम्ब का अधिपति पद भोगता हुआ यावत् पालन करता हुआ रहता था। वह जीवाजीवादि तत्त्वों का ज्ञाता श्रमणोपासक था।

३-तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आइगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ। तएणं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० एवं जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव णिग्गओ, जाव पज्जुवासइ। तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स धम्मकहा जाव परिसा पडिगया।

३-उस काल उस समय में धर्म की आदि करने वाले इत्यादि सोलहवें शतक के पांचवें उद्देशक के वर्णनानुसार श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकर वहाँ पधारे यावत् परिषद् पर्युपासना करने लगी। कार्तिक सेठ भगवान् का पधारना सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ इत्यादि, ग्यारहवें शतक के ग्यारहवें उद्देशक में कथित सुदर्शन सेठ के समान वन्दन करने के लिये निकला यावत् पर्युपासना करने लगा। भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी ने उस महति परिषद् और कार्तिक सेठ को धर्मकथा कही यावत् परिषद् लौट गई।

विवेचन-कार्तिक सेठ आढच यावत् अपराभूत था। वह एक हजार आठ व्यापारियों के लिये तथा अपने कुटुम्ब के लिये 'मेढ़ी' प्रमाण, आधार, आलम्बन और चक्षुरूप था। जिस प्रकार भूसे में से धान निकालने के लिये खलिहान के बीच में एक स्तम्भ गाड़ा जाता है, जिसके साथ बन्धी हुई बैलों की पंक्ति, धान्य को गाहती है, उसी प्रकार जिसका अवलम्बन ले कर सभी व्यापारी और कुटुम्बीजन, करने योग्य कार्यों के विषय में विचार-विमर्श करते हैं, उस आधार को 'मेढ़ी' कहते हैं। प्रत्यक्ष आदि को 'प्रमाण' कहते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जिसके परामर्श से किये हुए कार्यों में कहीं विरोध न आवे, जो उचित कार्यों में प्रवृत्ति और अनुचित से निवृत्ति करवाने वाला है, ऐसा वह कार्तिक सेठ उन व्यापारियों और कुटुम्बीजनों के लिये 'प्रमाणभूत' था।

जिस प्रकार आधेय वस्तु के लिये आधार होता है, उसी प्रकार जो सभी लोगों के लिये सभी कार्यों में उपकारी हो, वह 'आधार' कहलाता है।

जिस प्रकार खड्डे आदि में पड़े हुए पुरुष को निकालने में रस्सी आलम्बन होती है। उसी प्रकार आपत्ति रूप खड्डे में पड़े हुए पुरुषों की आपत्ति को दूर करने वाला 'आलम्बन' कहलाता है।

जिस प्रकार आँख से सब दिखाई देता है, उसी प्रकार जो लोगों के लिये विविध प्रकार के कार्यों में प्रवृत्ति निवृत्ति रूप पथ-प्रदर्शक हो, वह 'चक्षु' कहलाता है। कार्तिक सेठ उपर्युक्त गुणों से युक्त था।

४-तएणं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वए० जाव णिसम्म हट्ठतुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता मुणिसुव्वयं जाव एवं वयासी-'एवमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं, णवरं देवाणुप्पिया ! णेगमट्ठ-सहस्सं आपुच्छामि, जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेमि, तएणं अहं देवाणु-प्पियाणं अंतियं पव्वयामि। अहासुहं जाव मा पडिबंधं।

भावार्थ-४-कार्तिक सेठ भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी से धर्म सुन कर यावत् अवधारण कर के प्रसन्न और सन्तुष्ट हो कर खड़ा हुआ और विनयपूर्वक बोला-'हे भगवन् ! आपका प्रवचन यथार्थ है। मैं अपने एक हजार आठ मित्रों से पूछ कर और ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंप कर, आपके पास प्रव्रजित होना चाहता हूँ।' "देवानुप्रिय ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो, धर्म साधना में विलम्ब मत करो।"

तए णं से कत्तिए सेट्ठी, जाव पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव सए गेहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मे णिसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तएणं अहं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे जाव पव्वयामि, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह, किं ववसह, किं भे हियइच्छिए, किं भे सामत्थे ?' तएणं तं णेगमट्ठसहस्स पि तं कत्तियं सेट्ठि एवं वयासी-'जइ णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा जाव पव्वइस्संति, अम्हं देवाणुप्पिया! किं अण्णे आलंबणे वा, आहारे वा, पडिबंधे वा ? अम्हे वि णं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिएहिं सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ जाव पव्वयामो।'

भावार्थ-कार्तिक सेठ उस धर्म-परिषद् से निकल कर अपने घर आया और अपने एक हजार आठ व्यापारी मित्रों को बुला कर कहा कि-"हे देवानुप्रियो ! मैंने मुनिसुव्रत स्वामी से धर्म सुना है। वह धर्म मुझे इष्ट, विशेष इष्ट और प्रिय लगा है। हे देवानुप्रियो ! मैं उस धर्म को सुन कर संसार के भय से उद्विग्न हुआ हूँ, यावत् प्रव्रज्या लेना चाहता हूं। तुम क्या करना चाहते हो, क्या प्रवृत्ति करना चाहते हो ? तुम्हें क्या इष्ट है और तुम्हारा क्या सामर्थ्य है।"

उन एक हजार आठ व्यापारियों ने कार्तिक सेठ से कहा-"हे देवानुप्रिय! यदि आप संसार त्याग कर प्रव्रज्या लेंगे, तो हमारे लिए यहां दूसरा कौनसा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आलम्बन है, कौनसा आधार है और कौनसा बन्धन रह जायगा ? अतएव हे देवानुप्रिय ! हम भी संसार के भय से उद्विग्न हैं तथा जन्म और मरण से भयभीत हुए हैं । हम भी आपके साथ अगारवास का त्याग करके मुनिसुव्रत-स्वामी के पास मुण्डित हो कर अनगार प्रव्रज्या ग्रहण करेंगे ।

५-तएणं से कत्तिए सेट्ठी तं णेगमट्ठसहस्सं एवं वयासी-'जइ णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धिं मुणिसुव्वय० जाव पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु-गिहेसु, विपुलं असणं जाव उवक्खडावेह, मित्तणाई० जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेह, जेट्ठं० २ ठावेत्ता तं मित्तणाइ० जाव जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्त-णाई० जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्वड्ढीए जाव रवेणं अकालपरिहीणं चेव मम अंतियं पाउब्भवह ।'

कठिन शब्दार्थ-पाउब्भवह-प्रकट होओ, अकालपरिहीणं-विलम्ब नहीं करते ।

भावार्थ-५-मित्रों का अभिप्राय जान कर कार्तिक सेठ ने उनसे कहा-'हे देवानुप्रियो ! यदि तुम भी मेरे साथ ही श्री मुनिसुव्रत स्वामी से प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहते हो तो अपने-अपने घर जाओ यावत् ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंप कर तथा उन मित्रादि और ज्येष्ठ पुत्र को पूछ कर, फिर एक हजार पुरुषों द्वारा उठाने योग्य शिविका में बैठ कर और मार्ग में उन मित्रादि द्वारा तथा ज्येष्ठ पुत्र द्वारा अनुसरण किये जाते हुए, सर्व ऋद्धि से युक्त यावत् वाद्यों के घोषपूर्वक विलम्ब रहित मेरे पास आओ ?'

तएणं ते णेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असण० जाव उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ० जाव तस्सेव मित्तणाइ० जाव पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेंति, जेट्ठ० २ ठावेत्ता तं मित्तणाइ० जाव जेट्ठपुत्ते य आपुच्छंति, जेट्ठ० २ आपुच्छेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहंति, दुरूहित्ता मित्त-णाइ० जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्वड्ढीए जाव रवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवंति।

भावार्थ-कार्तिक सेठ के कथन को विनयपूर्वक स्वीकार कर के वे सभी वणिक अपने-अपने घर गये और विपुल अशनादि तैयार करवा कर, अपने मित्र ज्ञाति स्वजनों को बुला कर, यावत् उनके समक्ष ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का भार सौंपा और उन मित्रादि एवं ज्येष्ठ पुत्र को पूछ कर, हजार पुरुषों द्वारा उठाने योग्य शिविका में बैठ कर, मार्ग में मित्र ज्ञाति यावत् परिजनादि और ज्येष्ठ पुत्र द्वारा अनुसरण किये जाते हुए यावत् सब ऋद्धि से युक्त, वादयों के घोषपूर्वक वे शीघ्र ही कार्तिक सेठ के पास उपस्थित हुए।

६-तएणं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असणं ४ जहा गंगदत्तो जाव मित्त-णाइ० जाव परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं णेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्वड्ढीए जाव रवेणं हत्थिणापुरं णयरं मज्झं-मज्झेणं जहा गंगदत्तो जाव आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए, जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ, तं इच्छामि णं भंते ! णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वियं, जाव धम्ममाइक्खियं।' तएणं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्ममाइक्खइ-'एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, जाव संजमियव्वं।'

भावार्थ-६-कार्तिक सेठ ने गंगदत्त के समान विपुल अशनादि तैयार करवाये यावत् मित्र-ज्ञाति परिवार एवं ज्येष्ठ पुत्र तथा एक हजार आठ वणिकों द्वारा अनुसरण किया जाता हुआ सर्व ऋद्धि से युक्त कार्तिक सेठ यावत् वाद्यों के घोषपूर्वक, गंगदत्त के समान निकला और भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी के समीप आ कर इस प्रकार बोला-"हे भगवन् ! यह संसार चारों ओर से जल रहा है। भगवन् ! यह संसार अत्यन्त प्रज्वलित हो रहा है, चारों ओर से अत्यन्त प्रज्वलित हो रहा है। मैं ऐसे प्रज्वलित संसार को त्याग कर इन एक हजार आठ वणिक मित्रों सहित आपसे प्रव्रज्या लेना चाहता हूं और आप से धर्म सुनना चाहता हूं।"

श्री मुनिसुव्रतस्वामी ने कार्तिक सेठ और एक हजार आठ वणिकों को प्रव्रज्या दी यावत् धर्म सुनाया-"हे देवानुप्रियो ! इस प्रकार चलना चाहिये, इस प्रकार खड़ा रहना चाहिये यावत् इस प्रकार संयम का पालन करना चाहिये।"

७-तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छइ, जाव संजमेइ, तएणं से कत्तिए सेट्ठी णेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं अणगारे जाए, ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी। तएणं से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, सा० २ अहिज्जित्ता बहूहिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थ छट्ठ-ट्ठम० जाव अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेइ, मा० २ झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, स० २ छेदेत्ता आलोइय० जाव कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव सक्के देविंदत्ताए उववण्णे। तए णं से सक्के देविंदे देवराया अहुणोववण्णमित्तए सेसं जहा गंगदत्तस्स जाव अंतं काहिइ, णवरं ठिई दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-पाउणइ-पालन करता है।

भावार्थ-७-कार्तिक सेठ और एक हजार आठ वणिकों ने भ. श्री मुनिसुव्रतस्वामी द्वारा उपदिष्ट धर्मोपदेश को सम्यक् रूप से स्वीकार किया और भगवान् की आज्ञा के अनुसार आचरण करने लगा यावत् संयम का पालन करने लगा।

वह कार्तिक सेठ एक हजार आठ वणिकों के साथ अनगार बन कर, ईर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बना। कार्तिक अनगार ने मुनिसुव्रतस्वामी के तथारूप के स्थविरों के समीप सामायिक से प्रारम्भ कर चौदह पूर्वो तक का अध्ययन किया और बहुत-से उपवास, बेला, तेला आदि तपस्या से आत्मा को भावित करता हुआ सम्पूर्ण बारह वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। तत्पश्चात् कार्तिक अनगार ने एक मास की संलेखना द्वारा अपने शरीर को झूषित कर, सांठ भक्त अनशन का छेदन कर और आलोचना प्रतिक्रमण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कर के यावत् काल के समय काल कर के सौधर्मकल्प में सौधर्मावतंसक विमान में रही हुई उपपात सभा के देवशयनीय में यावत् शक्र देवेन्द्र देवराजपने उत्पन्न हुआ। उत्पन्न हुआ शक्र देवेन्द्र देवराज इत्यादि सब वक्तव्यता गंगदत्त के समान कहनी चाहिये यावत् वह सभी दुःखों का अन्त करेगा। शक्र की स्थिति दो सागरोपम की है। शेष सब गंगदत्त के समान है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-हस्तिनापुर में कार्तिक सेठ तो बाद में सेठ हुए, परन्तु गंगदत्त पहले से श्रेष्ठी बने हुए थे। इनमें परस्पर प्रायः ईर्षाभाव रहता था। दोनों ने भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी के पास दीक्षा ली थी। वहाँ से काल कर के कार्तिक सेठ का जीव शक्रेन्द्र बना और गंगदत्त का जीव सातवें महाशुक्र देवलोक में देव हुआ।

॥ इति अठारहवें शतक का द्वितीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १८ उद्देशक ३

पृथिव्यादि से मनुष्य हो, मुक्त हो सकते हैं

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे होत्था। वण्णओ। गुणसिलए चेइए। वण्णओ। जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव अंतेवासी मागंदिय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए जहा मंडियपुत्ते जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-

१ प्रश्न-से णूणं भंते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभइ, मा० २ लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झइ, के० २ बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, जाव अंतं करेइ ?

१ उत्तर-हंता मागंदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेइ ।

२ प्रश्न-से णूणं भंते ! काउलेस्से आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभइ, मा० २ लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झइ, जाव अंतं करेइ ?

२ उत्तर-हंता मागंदियपुत्ता ! जाव अंतं करेइ ।

३-से णूणं भंते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए एवं चेव जाव अंतं करेइ । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं जाव णमंसित्ता जेणेव समणे णिग्गंथे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणे णिग्गंथे एवं वयासी-एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए जाव अंतं करेइ ।' तए णं ते समणा णिग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयट्ठं णो सद्दहंति ३, एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-

भावार्थ-उस काल उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वर्णन। गुणशील नामक उद्यान था। वर्णन। यावत् परिषद् वन्दना कर के चली गई। उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के अन्तेवासी यावत् प्रकृति के भद्र, माकन्दीपुत्र अनगार, तीसरे शतक के तीसरे उद्देशक में कथित मण्डितपुत्र अनगार के समान पर्युपासना करते हुए, श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से पूछा-

१ प्रश्न-हे भगवन् ! कापोतलेशी पृथ्वीकायिक जीव, कापोतलेशी पृथ्वीकायिक जीवों में से मर कर अन्तर रहित मनुष्य शरीर प्राप्त कर केवलज्ञान उपार्जन कर सिद्ध होता है यावत् सब दुःखों का अन्त करता है ?

१ उत्तर-हाँ, माकन्दीपुत्र ! कापोतलेशी पृथ्वीकायिक यावत् सब दुःखों का अन्त करता है।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! कापोतलेशी अप्कायिक जीव, कापोतलेशी अप्कायिक जीवों में से मर कर अन्तर रहित मनुष्य शरीर को प्राप्त कर एवं केवलज्ञान उपार्जन कर सिद्ध होता है यावत् सभी दुःखों का अन्त करता है ?

२ उत्तर-हाँ, माकन्दीपुत्र ! यावत् सर्व दुःखों का अन्त करता है।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! कापोतलेशी वनस्पतिकायिक जीव, वनस्पतिकायिक जीवों में से मर कर इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न ?

३ उत्तर-हाँ, यावत् सर्व दुःखों का अन्त करता है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यों कह कर माकन्दीपुत्र अनगार श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर के श्रमण-निर्ग्रन्थों के समीप आये और श्रमण-निर्ग्रन्थों से इस प्रकार बोले-'हे आर्यो ! कापोतलेशी पृथ्वीकायिक जीव यावत् सभी दुःखों का अन्त करता है, इसी प्रकार हे आर्यों ! कापोतलेशी अप्कायिक और कापोतलेशी वनस्पतिकायिक जीव, यावत् सभी दुःखों का अन्त करता है।'

माकन्दीपुत्र अनगार की इस प्ररूपणा को श्रमण-निर्ग्रन्थों ने मान्य नहीं की और श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के समीप आये। भगवान् को वन्दना नमस्कार कर के इस प्रकार पूछा-

प्रश्न-एवं खलु भंते ! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ-'एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव अंतं करेइ, एवं वणस्सइकाइए वि जाव अंतं करेइ, से कहमेयं भंते ! एवं ?'

उत्तर-'अज्जो' त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणे णिग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी-'जण्णं अज्जो ! मागंदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवं आइक्खइ, जाव परूवेइ-एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव अंतं करेइ, सच्चे णं एसमट्ठे, अहं पि णं अज्जो ! एवमाइक्खामि ४-एवं खलु अज्जो ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेहिंतो पुढविकाइएहिंतो जाव अंतं करेइ, एवं खलु अज्जो ! णीललेस्से पुढविकाइए जाव अंतं करेइ,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवं काउलेस्से वि, जहा पुढविकाइए एवं आउकाइए वि, एवं वणस्सइकाइए वि, सच्चे णं एसमट्ठे।

प्रश्न-'हे भगवन् ! माकन्दीपुत्र अनगार ने हमसे कहा यावत् प्ररूपित किया कि कापोतलेशी पृथ्वीकायिक, कापोतलेशी अप्कायिक और कापोतलेशी वनस्पतिकायिक जीव यावत् सभी दुःखों का अन्त करता है। हे भगवन् ! यह कथन सत्य कैसे हो सकता है ?'

उत्तर-'हे आर्यों !' इस प्रकार सम्बोधित कर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने उन श्रमण-निर्ग्रन्थों से कहा-'माकन्दिक पुत्र अनगार ने तुमसे जो इस प्रकार कहा यावत् प्ररूपित किया कि कापोतलेशी पृथ्वीकायिक, कापोतलेशी अप्कायिक और कापोतलेशी वनस्पतिकायिक यावत् सभी दुःखों का अन्त करता है-यह सत्य है। हे आर्यों ! मैं भी इसी प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपित करता हूं कि कृष्णलेशी पृथ्वीकायिक, कृष्णलेशी पृथ्वीकायिकों में से मर कर यावत् सभी दुःखों का अन्त करता है। इसी प्रकार हे आर्यो ! नीललेशी और कापोतलेशी पृथ्वीकायिक भी यावत् समस्त दुःखों का अन्त करता है। इसी प्रकार अप्कायिक और वनस्पतिकायिक भी अन्त करता है-यह सत्य है।'

'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव मागंदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मागंदियपुत्तं अणगारं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति।

कठिन शब्दार्थ-भुज्जो भुज्जो-बारंबार, खामेंति-खमाते हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर उन श्रमण-निर्ग्रन्थों ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वन्दना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नमस्कार किया और माकन्दिक-पुत्र अनगार के समीप आकर उन्हें वन्दना नमस्कार कर के उनके कथन पर सन्देह करने के कारण उन्हें सम्यक् प्रकार से विनयपूर्वक बारंबार खमाया।

विवेचन-पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय से निकल कर जीव, मनुष्य-भव प्राप्त कर के उसी भव में मोक्ष जा सकता है। तेउकाय और वायुकाय से निकला हुआ जीव मनुष्य-भव भी प्राप्त नहीं कर सकता। अतः यहां उसकी पृच्छा नहीं की है।

निर्जरा के पुद्गल की सूक्ष्मता

४-तएणं से मागंदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-

प्रश्न-अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेएमाणस्स, सव्वं कम्मं णिज्जरेमाणस्स, सव्वं मारं मरमाणस्स, सव्वं सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिमं कम्मं वेएमाणस्स, चरिमं कम्मं णिज्जरेमाणस्स, चरिमं मारं मरमाणस्स, चरिमं सरीरं विप्पजहमाणस्स, मारणंतियं कम्मं वेएमाणस्स, मारणंतियं कम्मं णिज्जरेमाणस्स, मारणंतियं मारं मरमाणस्स, मारणंतियं सरीरं विप्पजहमाणस्स जे चरिमा णिज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं लोगं पि णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ?

उत्तर-हंता, मागंदियपुत्ता ! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव ओगाहित्ता णं चिट्ठंति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कठिन शब्दार्थ-विप्पजहमाणस्स-छोड़ता हुआ, मारं-मरण, ओगाहित्ता-अवगाहन कर के।

भावार्थ-४-माकन्दिक-पुत्र अनगार श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आये और वन्दना नमस्कार कर के इस प्रकार पूछा-

प्रश्न-हे भगवन् ! सभी को वेदते हुए, सभी कर्मों को निर्जरते हुए सर्व मरण से मरते हुए और समस्त शरीर को छोड़ते हुए तथा चरमकर्म वेदते हुए, चरम कर्म निर्जरते हुए, चरम मरण मरते हुए, चरम शरीर छोड़ते हुए, एवं मारणान्तिक कर्म को वेदते हुए, मारणान्तिक कर्म निर्जरते हुए, मारणान्तिक मरण मरते हुए और मारणान्तिक शरीर छोड़ते हुए भावितात्मा अनगार के जो चरम निर्जरा के पुद्गल हैं, क्या वे पुद्गल सूक्ष्म कहे गये हैं ? और क्या वे पुद्गल समग्र लोग को अवगाहन कर के रहे हुए हैं ?

उत्तर-हाँ, माकन्दिक-पुत्र ! भावितात्मा अनगार के वे चरम निर्जरा के पुद्गल यावत् समग्रलोक को अवगाहन कर रहे हुए हैं।

निर्जरा के पुद्गलों का ज्ञान

५ प्रश्न-छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ?

५ उत्तर-एवं जहा इंदिय उद्देसए पढमे जाव वेमाणिया, जाव तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति, पासंति, आहारेंति, से तेणट्ठेणं णिक्खेवो भाणियव्वो त्ति ण पासंति, आहारंति।

६ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! णिज्जरापोग्गला ण जाणंति, ण पासंति, आहारंति ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

६ उत्तर-एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं।

कठिन शब्दार्थ-आणत्तं-अन्यत्व, णाणत्तं-भिन्नता, विविधता।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों के पारस्परिक पृथक् भाव और अपृथक् भाव (वर्णादि कृत नाना भाव) को जानता-देखता है ?

५ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! प्रज्ञापना सूत्र के पन्द्रहवें पद के प्रथम इन्द्रियोद्देशक के अनुसार यावत् इसी प्रकार वैमानिक तक जानना चाहिये। इनमें जो उपयोग युक्त हैं, वे उन पुद्गलों को जानते-देखते हैं और आहार के रूप में ग्रहण करते हैं। इस प्रकार समग्र निक्षेप (पाठ) कहना चाहिये यावत् जो उपयोग रहित हैं, वे उन पुद्गलों को जानते-देखते नहीं, परन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकों के विषय में पूर्वोक्त प्रश्न ?

६ उत्तर--वे उन निर्जरा पुद्गलों को जानते-देखते नहीं, परन्तु आहार रूप में ग्रहण करते हैं। इस प्रकार यावत् पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनि तक जानना चाहिये।

संज्ञीभूत असंज्ञीभूत

७ प्रश्न-मणुस्सा णं भंते ! णिज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति, उदाहु ण जाणंति ण पासंति णाहारेंति ?

७ उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति ३, अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति, आहारेंति।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'अत्थेगइया जाणंति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पासंति आहारेंति?

उत्तर-गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-सण्णीभूया य असण्णीभूया य। तत्थ णं जे ते असण्णीभूया ते ण जाणंति ण पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते सण्णीभूया ते दुविहा पण्णत्ता तं जहा-उवउत्ता अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणंति ण पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति ३, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-अत्थेगइया ण जाणंति, ण पासंति, आहारेंति, अत्थेगइया जाणंति ३। वाणमंतरजोइसिया जहा णेरइया।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! मनुष्य, निर्जरा के पुद्गलों को जानते-देखते हैं और आहार रूप से ग्रहण करते हैं ? या जानते नहीं, देखते नहीं और आहार रूप से ग्रहण भी नहीं करते ?

७ उत्तर-हे गौतम ! कुछ मनुष्य जानते हैं, देखते हैं और आहार रूप से ग्रहण करते हैं और कुछ नहीं जानते, नहीं देखते परन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं।

प्रश्न-हे भगवन् ! आपके इस कथन का क्या कारण है कि कुछ मनुष्य जानते हैं, देखते हैं और आहार करते हैं, तथा कुछ नहीं जानते, नहीं देखते परन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! मनुष्य दो प्रकार के कहे गये हैं। संज्ञीभूत और असंज्ञीभूत। जो असंज्ञीभूत हैं, वे नहीं जानते, नहीं देखते, किन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं। जो संज्ञीभूत हैं, वे दो प्रकार के कहे गये हैं। यथा-उपयुक्त और अनुपयुक्त। जो अनुपयुक्त हैं वे नहीं जानते, नहीं देखते, किन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं। और जो उपयुक्त हैं, वे जानते हैं, देखते हैं और आहार रूप से ग्रहण करते हैं। इसलिये हे गौतम ! ऐसा कहा गया है

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कि कुछ मनुष्य नहीं जानते, नहीं देखते और आहार रूप से ग्रहण करते हैं तथा कुछ जानते हैं, देखते हैं और आहार रूप से ग्रहण करते हैं। व्यन्तर और ज्योतिषी देवों का कथन नैरयिकों के समान जानना चाहिये।

८ प्रश्न-वेमाणिया णं भंते ! ते णिज्जरापोग्गले किं जाणंति ६?

८ उत्तर-गोयमा ! जहा मणुस्सा, णवरं वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-माइमिच्छदिट्ठीउववण्णगा य अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा य। तत्थ णं जे ते माइमिच्छदिट्ठीउववण्णगा ते णं ण जाणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जे ते अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-अणंतरोववण्णगा य परंपरोववण्णगा य। तत्थ णं जे ते अणंतरोववण्णगा ते णं ण जाणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जे ते परंपरोववण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं ण जाणंति, ण पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-उवउत्ता य अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं ण जाणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति, पासंति आहारेंति।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! वैमानिक देव उन निर्जरा पुद्गलों को जानते-देखते हैं और आहार रूप से ग्रहण करते हे ?

८ उत्तर-हे गौतम ! मनुष्यों के समान वैमानिक देव के विषय में भी जानना चाहिए। विशेष यह कि वमानिक देव दो प्रकार के हैं-१ मायी-मिथ्यादृष्टि और २ अमायी-सम्यग्दृष्टि। जो मायी-मिथ्यादृष्टि देव हैं, वे निर्जरा के पुद्गलों को

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नहीं जानते, नहीं देखते, किन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं और जो अमायी सम्यग्दृष्टि हैं, वे भी दो प्रकार के है। यथा-अनन्तरोपपन्नक और परम्परोपपन्नक। अनन्तरोपपन्नक (प्रथम समयोत्पन्न) नहीं जानते, नहीं देखते, किन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं। परम्परोपपन्नक भी दो प्रकार के हैं। यथा-पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपर्याप्तक नहीं जानते, नहीं देखते, किन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं। पर्याप्तक दो प्रकार के हैं। यथा-उपयुक्त और अनुपयुक्त। जो अनुपयुक्त हैं, वे नहीं जानते, नहीं देखते, परन्तु आहार रूप से ग्रहण करते हैं और जो उपयुक्त हैं, वे जानते-देखते हैं और आहार रूप से ग्रहण करते हैं।

विवेचन-चौथे प्रश्न का भावितात्मा अनगार 'केवली' है, भवोपग्राही चार कर्मों का वेदन, निर्जरा, आदि करते हुए एवं औदारिक आदि शरीर को छोड़ते हुए और आयु-कर्म के समस्त पुद्गलों की अपेक्षा अन्तिम मरण मरते हुए, केवली के सर्वान्तिम निर्जरा पुद्गल सूक्ष्म कहे गये हैं। वे सम्पूर्ण लोक को व्याप्त कर रहते हैं। इसलिये केवली तो उनको जानते ही हैं। अतः छद्मस्थ के जानने आदि विषयक प्रश्न पूछा गया है। जिसके लिये प्रज्ञापना सूत्र के पन्द्रहवें पद के प्रथम उद्देशक का अतिदेश किया गया है।

जो विशिष्ट अवधिज्ञानादि उपयोग युक्त हैं, वे सूक्ष्म कार्मण पुद्गलों को जानते देखते हैं, परन्तु जो विशिष्ट अवधिज्ञानादि उपयोग रहित हैं, वे सूक्ष्म कार्मण पुद्गलों को नहीं जानते-नहीं देखते हैं।

ओज आहार, लोम आहार और प्रक्षेप आहार, इन तीन प्रकार के आहारों में से यहाँ ओज आहार का ग्रहण समझना चाहिये। क्योंकि कार्मण शरीर द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करना ओज आहार कहलाता है। यही आहार यहाँ सम्भावित है। त्वचा के स्पर्श से लोम आहार होता है और मुख में डालने से प्रक्षेप आहार होता है।

मनुष्य सूत्र में 'संज्ञीभूत' शब्द से विशिष्ट अवधिज्ञानी आदि समझना चाहिये, जिन्हें वे निर्जरा के पुद्गल ज्ञानगोचर होते हैं।

वैमानिक सूत्र में 'विशिष्ट' अवधिज्ञानी उपयुक्त अमायी-सम्यग्दृष्टि का ग्रहण है। क्योंकि मायीमिथ्यादृष्टि विपरीत दृष्टा होने से उन पुद्गलों को जानते-देखते नहीं हैं।

प्रश्नकार माकन्दिकपुत्र हैं। इसलिये 'गौतम' शब्द से 'माकन्दिक' पुत्र का ही ग्रहण हुआ समझना चाहिये। अथवा यह पाठ प्रज्ञापना सूत्र से उद्धृत किया हुआ है और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञापना सूत्र की रचनाशैली प्रायः गौतमस्वामी के प्रश्न और भगवान् द्वारा उत्तर रूप होने से यहाँ प्रश्नकर्ता 'माकन्दिक पुत्र' होने पर भी 'गौतम स्वामी' को सम्बोधित कर उत्तर दिया है। अतः यहाँ प्रज्ञापना के उस संलग्न पाठ का ग्रहण किया हुआ समझना चाहिये।

द्रव्य और भाव-बन्ध के भेद

९ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?

९ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वबंधे य भावबंधे य।

१० प्रश्न-दव्वबंधे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१० उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-पओगबंधे य वीससाबंधे य।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

९ उत्तर-हे माकन्दिकपुत्र ! बन्ध दो प्रकार का कहा गया है। यथा-द्रव्यबन्ध और भावबन्ध।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! द्रव्यबंध कितने प्रकार का कहा गया है ?

१० उत्तर-हे माकन्दिकपुत्र ! दो प्रकार का कहा गया है। यथा-प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध (स्वाभाविक बन्ध)।

११ प्रश्न-वीससाबंधे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

११ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-साइयवीससाबंधे य अणाईयवीससाबंधे य।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! विस्रसाबन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

११ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! दो प्रकार का कहा गया है । यथा-सादि विस्रसाबन्ध और अनादि विस्रसाबन्ध ।

१२ प्रश्न-पयोगबंधे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१२ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-सिढिल-बंधणबंधे य धणियबंधणबंधे य ।

कठिन शब्दार्थ—सिढिल--शिथिल ।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रयोग बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

१२ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! दो प्रकार का कहा गया है । यथा-शिथिल बन्धन बन्ध और गाढ़ बंधन बंध ।

१३ प्रश्न-भावबंधे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१३ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-मूलपगडि-बंधे य उत्तरपगडिबंधे य ।

१४ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

१४ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडिबंधे य । एवं जाव वेमाणियाणं ।

भावार्थ-१३-प्रश्न-हे भगवन् ! भाव बंध कितने प्रकार का कहा गया है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१३ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! दो प्रकार का कहा गया है। यथा-मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध।

१४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीवों के कितने प्रकार का भाव-बन्ध कहा गया है ?

१४ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! दो प्रकार का भाव-बन्ध कहा गया है। यथा मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबंध। इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये।

१५ प्रश्न-णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कइविहे भाव-बंधे पण्णत्ते ?

१५ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे भाव बंधे पण्णत्ते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडिबंधे य।

१६ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

१६ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा-मूलपगडिबंधे य उत्तरपगडि०, एवं जाव वेमाणियाणं, जहा णाणा-वरणिज्जेणं दंडओ भणिओ एवं जाव अंतराइएणं भाणियव्वो।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का भाव-बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

१५ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! दो प्रकार का कहा गया है। यथा-मूल प्रकृति बन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीवों के ज्ञानावरणीय कर्म का भाव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

१६ उत्तर-हे माकन्दिकपुत्र ! दो प्रकार का कहा गया है। यथा-मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये। जिस प्रकार ज्ञानावरणीय का दण्डक कहा गया है, उसी प्रकार यावत् अन्तराय कर्म तक दण्डक कहना चाहिये।

विवेचन-द्रव्यबन्ध के आगम, नोआगम आदि के भेद से अनेक प्रकार हैं, किन्तु यहां केवल उभय व्यतिरिक्त द्रव्यबन्ध का ग्रहण है। रस्सी आदि के द्वारा बांधना अथवा द्रव्य का परस्पर बन्ध होना-द्रव्य-बन्ध कहलाता है। भाव-बन्ध के आगमतः और नो आगमतः ये दो भेद हैं। उनमें से यहाँ नोआगमतः भावबन्ध का ग्रहण किया गया है। भाव के द्वारा अर्थात् मिथ्यात्वादि के द्वारा अथवा उपयोग भाव से अतिरिक्त भाव का जीव के साथ बन्ध होना, भावबन्ध कहलाता है।

जीव के प्रयोग से द्रव्यों का बन्ध होना 'प्रयोगबन्ध' कहलाता है और स्वाभाविक रूप से बन्ध होना 'विस्रसा बन्ध' कहलाता है। इसके दो भेद हैं। बादलों आदि का बन्ध 'सादि विस्रसा बन्ध' कहलाता है। धर्मास्तिकाय आदि का परस्पर बन्ध, 'अनादि विस्रसा बंध' कहलाता है।

प्रयोग बन्ध के दो भेद हैं। घास के पुले आदि का बन्ध 'शिथिल' बन्ध है और रथ-चक्रादि का बन्ध 'गाढ' बन्ध है। भाव-बन्ध के दो भेद हैं- मूल प्रकृति बन्ध और उत्तर प्रकृति बन्ध। मूल प्रकृति बन्ध के ज्ञानावरणीयादि आठ भेद हैं। उत्तर प्रकृति बन्ध के १४८ भेद हैं।

पाप-कर्म में भेद

१७ प्रश्न-जीवाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जाव जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स केइ णाणत्ते ?

१७ उत्तर-हंता अत्थि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'जीवाणं पावे कम्मे जे य कडे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स णाणत्ते ?'

उत्तर-मागंदियपुत्ता ! से जहाणामए-केइ पुरिसे धणुं परामुसइ, धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसइ, उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाइ, ठाणं ठाएत्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ, आ० २ करेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, से णूणं मागंदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहासं उव्वीढस्स समाणस्स एयइ वि णाणत्तं, जाव तं तं भावं परिणमइ वि णाणत्तं ?

उत्तर-हंता भगवं ! एयइ वि णाणत्तं, जाव परिणमइ वि णाणत्तं, से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ-जाव तं तं भावं परिणमइ वि णाणत्तं ।

१८ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे० ?

१८ उत्तर-एवं चेव, णवरं जाव वेमाणियाणं ।

कठिन शब्दार्थ-उसुं-बाण को, परामुसइ-ग्रहण करता है, उव्विहइ-फेंकना, एयइ-कम्पन होना ।

भावार्थ--१७ प्रश्न--हे भगवन् ! जीव ने जो पापकर्म किया है, यावत् करेगा, उसमें परस्पर कुछ भेद है क्या ?

१७ उत्तर-हां, माकन्दिक पुत्र ! उसमें परस्पर भेद है ।

प्रश्न--हे भगवन् ! किस प्रकार के भेद हैं ?

उत्तर--हे माकन्दिक पुत्र ! जैसे कोई पुरुष, धनुष और बाण ले कर अमुक प्रकार के आकार से खड़ा रहे, फिर बाण को कान तक खींचे और ऊपर आकाश में फेंके, तो हे माकन्दिक पुत्र ! आकाश में ऊंचा फेंके हुए उस बाण के कम्पन यावत् परिणाम में भेद है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-हाँ, भगवन् ! उसके कम्पन में यावत् उस-उस प्रकार के परिणाम में भेद है ।

तो हे माकन्दिक पुत्र ! इस कारण कहा जा सकता है कि यावत् उस कर्म के उस-उस रूपादि परिणाम में भी भेद है ।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकों ने जो पाप-कर्म किया है, यावत् करेंगे, उस पाप-कर्म में कुछ भेद है ?

१८ उत्तर-हाँ, माकन्दिक पुत्र ! भेद है । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये ।

१९ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति, तेसि णं भंते ! पोग्गलाणं सेयकालंसि कइभागं आहारेंति, कइभागं णिज्जरेंति ?

१९ उत्तर-मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेंति, अणंतभागं णिज्जरेंति ।

२० प्रश्न-चक्किया णं भंते ! केइ तेसु णिज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?

२० उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, अणाहारणमेयं वुइयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए तईओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-तुयट्टित्तए-सोने, सेयकालंसि-भविष्य काल में, आसइत्तए-बैठने ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक, जिन पुद्गलों को आहारपने ग्रहण करते हैं, तो भविष्यत्काल में उन पुद्गलों का कितना भाग आहार रूप से गृहीत होता है और कितना भाग निर्जरता है।

१९ उत्तर-हे माकन्दिक पुत्र ! आहारपने ग्रहण किये हुए पुद्गलों का असंख्यातवां भाग आहार रूप से गृहीत होता है और अनन्तवां भाग निर्जरता है।

२० प्रश्न-हे भगवन् ! कोई पुरुष इन निर्जरा के पुद्गलों पर बैठने यावत् सोने में समर्थ है ?

२० उत्तर-हे माकन्दिक-पुत्र ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। हे आयुष्यमन् श्रमण ! निर्जरा के ये पुद्गल अनाधार रूप कहे गये हैं। वे कुछ भी धारण करने में समर्थ नहीं हैं। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिए।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-जैसे किसी पुरुष द्वारा आकाश में ऊँचे फेंके हुए बाण के कम्पन में उसके प्रयत्न की विशेषता से भेद होता है, उसी प्रकार पुरुष द्वारा किये हुए भूत, वर्तमान और भविष्यत्काल के कर्मों में भी तीव्र-मन्दादि परिणाम के भेद से भिन्नता होती है।

निर्जरा किये हुए पुद्गल आधार रूप नहीं होते। इसलिये वे किसी भी वस्तु को धारण करने में समर्थ नहीं हैं।

॥ इति अठारहवें शतक का तृतीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १८ उद्देशक ४

पाप की प्रवृत्ति-निवृत्ति और जीव-भोग

१ प्रश्न–तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव भगवं गोयमे एवं वयासी–अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए, जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे, मुसावाय० जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविक्काइए, जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवे असरीरपडिवद्धे, परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवण्णए अणगारे, सव्वे य बायरबोंदिधरा कलेवरा एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?

१ उत्तर–गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति अत्थेगइया जीवाणं जाव णो हव्वमागच्छंति ।

प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–पाणाइवाए जाव णो हव्वमागच्छंति ?

उत्तर–गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य बायरबोंदिधरा कलेवरा एए णं दुविहा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति। पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले सेलेसिं पडिवण्णए अणगारे एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए णो हव्वमागच्छंति, से तेणट्ठेणं जाव णो हव्वमागच्छंति।

२ प्रश्न-कइ णं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? ॥

२ उत्तर-गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा-कसाय-पयं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव 'णिज्जरिस्संति लोभेणं।'

कठिन शब्दार्थ-बायर बोंदिधरा-स्थूल शरीरधारी, कलेवरा-शरीर, अत्थेगइया-कुछ।

भावार्थ-१ प्रश्न-उस काल उस समय राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने पूछा-

हे भगवन् ! प्राणातिपात, मृषावाद, यावत् मिथ्यादर्शन-शल्य और प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण यावत् मिथ्यादर्शन-शल्य विवेक (त्याग) तथा पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर रहित जीव, परमाणु-पुद्गल शैलेशी अवस्था प्राप्त अनगार, और स्थूलाकार वाले सभी कलेवर, ये सब मिल कर दो प्रकार के हैं। इनमें से कुछ जीव-द्रव्य रूप हैं और कुछ अजीव-द्रव्य रूप हैं, तो हे भगवन् ! ये सभी जीव के परिभोग में आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! प्राणातिपातादि जीव-द्रव्य रूप और अजीव द्रव्य रूप हैं। इनमें से कुछ तो जीव के परिभोग में आते हैं और कुछ नहीं आते।

प्रश्न-हे भगवन् ! किस कारण ऐसा कहा गया कि प्राणातिपातादि यावत् कुछ तो जीव के परिभोग में आते हैं और कुछ नहीं आते ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-हे गौतम ! प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन-शल्य पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक और सभी स्थूलाकार कलेवरधारी बेइन्द्रियादि जीव, ये सब मिल कर जीव-द्रव्य रूप और अजीव द्रव्य रूप-दो प्रकार के हैं। ये सब जीव के परिभोग में आते हैं। प्राणातिपात विरमण यावत् मिथ्यादर्शन-शल्य विवेक धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय यावत् परमाणु-पुद्गल तथा शैलेशी अवस्था प्राप्त अनगार, ये सब मिलकर जीव-द्रव्य रूप और अजीवद्रव्य रूप-दो प्रकार के हैं। ये सब जीव के परिभोग में नहीं आते। इस कारण ऐसा कहा गया है कि 'कोई द्रव्य परिभोग में आते हैं और कोई द्रव्य परिभोग में नहीं आते।'

२ प्रश्न-हे भगवन् ! कषाय कितने प्रकार का कहा गया है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! कषाय के चार प्रकार कहे गये हैं। यहाँ प्रज्ञापना सूत्र का चौदहवां कषायपद समग्र यावत् लोभ के वेदन द्वारा आठ कर्म प्रकृतियों की निर्जरा करेंगे-तक कहना चाहिये।

विवेचन-प्राणातिपात आदि अठारह पाप और इन अठारह पापों का त्याग, पृथ्वीकाय आदि पाँच स्थावर, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अशरीरी जीव, परमाणु पुद्गल, शैलेशी अवस्था को प्राप्त अनगार, स्थूल आकार वाले त्रस कलेवर (बेइंद्रियादि)। ये ४८ द्रव्य सामान्य रूप से दो प्रकार के कहे गये हैं। इनमें से कितने ही जीव रूप हैं और कितने ही अजीव रूप हैं, किन्तु प्रत्येक के दो भेद नहीं हैं। इनमें से पृथ्वीकायिकादि जीव-द्रव्य हैं और धर्मास्तिकायादि अजीव द्रव्य हैं। प्राणातिपातादि अशुद्ध स्वभावरूप और प्राणातिपात विरमणादि शुद्ध स्वभावरूप जीव के धर्म हैं। इसलिए ये जीव रूप कहे जा सकते हैं। जब जीव प्राणातिपातादि का सेवन करता है, तब चारित्रमोहनीय कर्म उदय में आता है। उसके द्वारा प्राणातिपातादि जीव के परिभोग में आते हैं। पृथ्वीकायिकादि का परिभोग तो गमन-शौचादि द्वारा स्पष्ट ही है। प्राणातिपात विरमणादि जीव के शुद्ध स्वभाव रूप होने से चारित्रमोहनीय कर्म के उदय के हेतुभूत नहीं होते। इसलिए वे जीव के परिभोग में नहीं आते। धर्मास्तिकायादि चार द्रव्य अमूर्त्त हैं और परमाणु सूक्ष्म हैं, तथा शैलेशी प्राप्त अनगार उपदेशादि द्वारा प्रेरणादि नहीं करते। इसलिए ये जीव के परिभोग में नहीं आते। तात्पर्य यह है कि इन ४८ में से २४ (अठारह पाप, पाँच स्थावर और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बादर कलेवर) तो जीव के परिभोग में आते हैं और शेष २४ जीव के परिभोग में नहीं आते ।

क्रोध, मान, माया और लोभ, ये चार कषाय हैं । इनके लिए यहां प्रज्ञापना सूत्र के चौदह वें कषाय पद का अतिदेश किया गया है । नैरयिकादि जीवों के आठों कर्म उदय में रहते हैं । उदय में आये हुए कर्मों की निर्जरा अवश्य होती है । नैरयिकादि कषाय के उदय वाले हैं । कषाय का उदय होने पर कर्मों की निर्जरा होती हैं । इसलिए क्रोधादि के द्वारा नैरयिकादि के आठों कर्मों की निर्जरा होती है ।

कृतादि युग्म चतुष्क

३ प्रश्न-कइ णं भंते ! जुम्मा पण्णत्ता ?

३ उत्तर-गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा-१ कडजुम्मे, २ तेओगे, ३ दावरजुम्मे, ४ कलिओगे ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जाव कलिओगे ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं कडजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं तेयोए । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं दावरजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं कलिओगे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव कलिओगे ।

कठिन शब्दार्थ-जुम्मा-युग्म (राशि), **कडजुम्मे**-कृतयुग्म, तेयोगे-त्र्योज, **दावरजुम्मे**-द्वापरयुग्म, **कलिओगे**-कल्योज, **अवहारेणं**-निकालते ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! कितने युग्म (राशि) कहे गये हैं ?

३ उत्तर-हे गौतम ! चार युग्म कहे गये हैं। यथा-कृतयुग्म, त्र्योज, द्वापरयुग्म, कल्योज ।

प्रश्न--हे भगवन् ! किस कारण से इनको इन नामों से कहा गया है ?

उत्तर--हे गौतम ! जिस राशि में से चार-चार निकालते हुए अन्त में चार शेष रहें, वह राशि 'कृतयुग्म' कहलाती है । जिस राशि में से चार-चार निकालते हुए अन्त में तीन शेष रहें, वह राशि 'त्र्योज' कहलाती है । जिस राशि में से चार-चार निकालते हुए अन्त में दो शेष रहें, वह राशि 'द्वापरयुग्म' कहलाती है और जिस राशि में से चार-चार निकालते हुए अन्त में एक शेष रहे, वह राशि 'कल्योज' कहलाती है । इसलिए हे गौतम ! यावत् 'कल्योज' राशि कहलाती है ।

४ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा, तेयोगा, दावरजुम्मा, कलियोगा ४ ?

४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णपए कडजुम्मा, उक्कोसपए तेयोगा, अजहण्णुक्कोसपए सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एवं जाव थणियकुमारा ।

५ प्रश्न-वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ।

५ उत्तर-गोयमा ! जहण्णपए अपया, उक्कोसपए य अपया, अजहण्णुक्कोसपए सियकडजुम्मा जाव सिय कलियोगा ।

६ प्रश्न-बेइंदिया णं पुच्छा ।

६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णपए कडजुम्मा, उक्कोसपए दावरजुम्मा,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अजहण्णमणुक्कोसपए सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। एवं जाव चतुरिंदिया। सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया। सिद्धा जहा वणस्सइकाइया।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक कृतयुग्म हैं, त्र्योज हैं, द्वापरयुग्म हैं, या कल्योज हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वे जघन्य पद में कृतयुग्म हैं और उत्कृष्ट पद में त्र्योज हैं तथा अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पद में कदाचित् कृतयुग्म यावत् कदाचित् कल्योज रूप होते हैं। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक कहना चाहिये।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक कृतयुग्म यावत् कल्योज रूप हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! वे जघन्य और उत्कृष्ट पद की अपेक्षा अपद है, अर्थात् उनमें जघन्यपद और उत्कृष्ट पद सम्भव नहीं है। अजघन्योत्कृष्ट पद की अपेक्षा कदाचित् कृतयुग्म यावत् कदाचित् कल्योज रूप होते हैं।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! बेइन्द्रियों के विषय में प्रश्न ?

६ उत्तर-हे गौतम ! वे जघन्य पद में कृतयुग्म हैं और उत्कृष्ट पद में द्वापरयुग्म हैं। अजघन्यानुत्कृष्ट पद में कदाचित् कृतयुग्म यावत् कदाचित् कल्योज होते हैं। इस प्रकार यावत् चतुरिन्द्रिय तक कहना चाहिए। शेष एकेन्द्रियों का कथन बेइन्द्रियों के समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक यावत् वैमानिक तक का कथन नैरयिक के समान है। सिद्धों का कथन वनस्पतिकायिक के समान है।

७ प्रश्न-इत्थीओ णं भंते ! किं कडजुम्मा० ?

७ उत्तर-गोयमा ! जहण्णपए कडजुम्माओ, उक्कोसपए कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपए सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलि-

योगाओ, एवं असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारइत्थीओ। एवं तिरिक्खजोणियइत्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ।

८ प्रश्न-जावइया णं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा ?

८ उत्तर-हंता गोयमा ! जावइया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावइया परा अंधगवण्हिणो जीवा।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-जावइया-जितने, तावइया-उतने, वरा-अल्पायु, परा-उत्कृष्टायु

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! स्त्रियाँ कृतयुग्म हैं, इत्यादि प्रश्न ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वे जघन्य पद में कृतयुग्म है और उत्कृष्ट पद में भी कृतयुग्म हैं। अजघन्यानुत्कृष्ट पद में कदाचित् कृतयुग्म हैं यावत् कदाचित् कल्योज हैं। इस प्रकार असुरकुमार से ले कर यावत् स्तनितकुमार तक की स्त्रियाँ (देवियाँ) तिर्यञ्चयोनिक स्त्रियाँ, मनुष्य स्त्रियाँ, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देवों की स्त्रियाँ तक कहना चाहिए।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! जितने अल्प आयुष्य वाले अन्धकवन्हि जीव हैं, उतने उत्कृष्ट आयुष्य वाले अन्धकवन्हि जीव हैं ?

८ उत्तर-हाँ, गौतम ! जितने अल्प आयुष्य वाले अन्धकवन्हि जीव हैं उतने ही उत्कृष्ट आयुष्य वाले अन्धकवन्हि जीव हैं।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है-ऐसा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-गणित परिभाषा से समराशि 'युग्म' कही जाती है और विषम राशि 'ओज' कही जाती है। यहां जो राशि के चार भेद किये गये हैं, उनमें से दो युग्म-राशि है और दो ओज-राशि है तथापि यहां युग्म शब्द से सभी प्रकार की राशि का ग्रहण है। इसलिये चार युग्म अर्थात् राशियां कही गई हैं।

नैरयिक आदि की राशि का परिमाण इनसे किया गया है। जब वे अत्यन्त अल्प होते है, तब कृतयुग्म होते है। जब उत्कृष्ट होते हैं, तब त्र्योज होते हैं। मध्यम पद में वे चारों राशि वाले होते है ।

जघन्य पद और उत्कृष्ट पद निश्चित् संख्या रूप है। किसी समय नैरयिक आदि में यह पद घटित हो सकता है, परन्तु वनस्पतिकाय के विषय में घटित नहीं हो सकता, क्योंकि वनस्पति के जीव अनन्त हैं, फिर भी जितने जीव मोक्ष जाते हैं, उतने जीव उनमें से घटते ही हैं। उसका अनन्तपन कायम रहते हुए भी वह राशि अनियत (अनिश्चित) स्वरूप वाली है।

वनस्पतिकाय के समान सिद्ध जीवों में भी जघन्य पद और उत्कृष्ट पद सम्भव नहीं होता, क्योंकि सिद्ध जीवों की संख्या बढ़ती जाती है। इसलिये उनका परिमाण अनियत है।

टीकाकार कहते हैं कि अन्धक (अंह्रिप) नाम वृक्ष का है। वृक्ष को आश्रित कर रहने वाली अग्नि अर्थात् बादर अग्निकायिक जीव। दूसरे आचार्य तो 'अन्धक' शब्द का अर्थ करते हैं-सूक्ष्म नामकर्म के उदय से अप्रकाशक अर्थात् प्रकाश नहीं करने वाली अग्नि, यानि सूक्ष्म अग्निकायिक जीव। ये जितने अल्पायुष्य वाले हैं, उतने ही जीव दीर्घायुष्य वाले भी हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १८ उद्देशक ५

देव की सुन्दरता असुन्दरता

१ प्रश्न–दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णा, तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे पासाईए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे; एगे असुरकुमारे देवे से णं णो पासाईए–णो दरिसणिज्जे, णो अभिरूवे, णो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ?

१ उत्तर–गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–वेउव्वियसरीरा य अवेउव्वियसरीरा य, तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासाईए जाव पडिरूवे; तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं णो पासाईए जाव णो पडिरूवे।

प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं चेव जाव पडिरूवे ?

उत्तर–गोयमा ! से जहाणामए–इह मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति–एगे पुरिसे अलंकिय-विभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए, एएसि णं गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासाईए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे णो पासाईए जाव णो पडिरूवे, जे वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकियविभूसिए ? भगवं ! तत्थ णं जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासाईए, जाव पडिरूवे, तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे णो पासाईए जाव णो पडिरूवे, से तेणट्ठेणं जाव णो पडिरूवे ।

२ प्रश्न-दो भंते ! णागकुमारा देवा एगंसि णागकुमारावासंसि० ?

२ उत्तर-एवं चेव जाव थणियकुमारा । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया एवं चेव ।

कठिन शब्दार्थ-अलंकिय-अलंकृत ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! एक असुरकुमारावास में दो असुरकुमार, असुरकुमार देवपने उत्पन्न हुए । उनमें से एक असुरकुमार देव प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला, दर्शनीय, सुन्दर और मनोहर होता है और दूसरा प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला, दर्शनीय, सुन्दर और मनोहर नहीं होता । तो हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! असुरकुमार देव दो प्रकार के कहे गये हैं । यथा-वैक्रिय शरीर वाले (विभूषित शरीर वाले) और अवैक्रिय शरीर वाले (अविभूषित शरीर वाले) । जो असुरकुमार देव, वैक्रिय शरीर वाले हैं, वे प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले यावत् मनोहर होते हैं और जो अवैक्रिय शरीर वाले हैं, वे प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले यावत् मनोहर नहीं होते ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहते हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! जैसे इस मनुष्य लोक में दो पुरुष हों, उनमें से एक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुरुष आभूषणों से अलंकृत और विभूषित हो और एक अलंकृत और विभूषित न हो, तो हे गौतम ! इन दोनों पुरुषों में कौनसा पुरुष प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला यावत् मनोहर होता है और कौनसा नहीं होता ? क्या अलंकृत और विभूषित है वह, या जो अलंकृत और विभूषित नहीं है वह ?

हे भगवन् ! उन दोनों पुरुषों में जो अलंकृत और विभूषित है, वह प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला यावत् मनोहर है और जो पुरुष अलंकृत और विभूषित नहीं है, वह प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला और मनोहर नहीं है। इसलिये हे गौतम ! वह असुरकुमार यावत् मनोहर नहीं है, ऐसा कहा गया है।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! दो नागकुमार देव एक नागकुमारावास में नागकुमार देवपने उत्पन्न हुए इत्यादि प्रश्न ?

२ उत्तर-हे गौतम ! पूर्वोक्त रूप से समझना चाहिये। इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक जानना चाहिये और वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक के विषय में भी इसी प्रकार जानना चाहिये।

विवेचन-देव शय्या में जब देव उत्पन्न होता है, उस समय प्रथम ही प्रथम वह देव अलंकार आदि विभूषा से रहित होता है। इसके पश्चात् अनुक्रम से अलंकार आदि धारण कर वह विभूषित होता है। अतः यहाँ वैक्रिय शरीर का अर्थ 'विभूषित शरीर' है और अवैक्रिय शरीर का अर्थ 'अविभूषित शरीर' है।

महाकर्म अल्पकर्म

३ प्रश्न-दो भंते ! णेरइया एगंसि णेरइयावासंसि णेरइयत्ताए उववण्णा, तत्थ णं एगे णेरइए महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव; एगे णेरइए अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव; से कहमेयं भंते ! एवं ?

३ उत्तर-गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-मायिमिच्छ-

दिट्ठिउववण्णगा य अमायिसम्मदिट्ठिउववण्णगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववण्णए णेरइए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव; तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववण्णए णेरइए से णं अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव।

४ प्रश्न-दो भंते ! असुरकुमारा० ?

४ उत्तर-एवं चेव। एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिया।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! दो नैरयिक एक नरकावास में नैरयिकपने उत्पन्न हुए। उनमें से एक नैरयिक महाकर्म वाला यावत् महावेदना वाला होता है और एक नैरयिक अल्पकर्म वाला यावत् अल्पवेदना वाला होता है, तो हे भगवन् ! ऐसा क्यों होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं। यथा-मायी-मिथ्यादृष्टि उत्पन्न और अमायीसमदृष्टि रूप से उत्पन्न। इनमें से जो मायीमिथ्या-दृष्टि उपपन्नक नैरयिक हैं, वे महाकर्म वाले यावत् महावेदना वाले हैं और जो अमायीसमदृष्टि उपपन्नक नैरयिक हैं, वे अल्पकर्म वाले यावत् अल्पवेदना वाले हैं।

४ प्रश्न-दो असुरकुमारों के विषय महाकर्म आदि विषयक प्रश्न ?

४ उत्तर-हे गौतम ! पूर्वोक्त भेद से समझना चाहिये। इस प्रकार एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड़ कर यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये।

विवेचन-महाकर्म आदि चार पद हैं। यथा-महाकर्म, महाक्रिया, महाआश्रव और महावेदना। इन चारों की व्याख्या पहले की जा चुकी है। यहाँ 'एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय के सिवाय' कहने का कारण यह है कि एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय में मिथ्यादृष्टि ही होते हैं, सम्यग्दृष्टि नहीं होते। इसलिये उनमें से एक में सम्यग्दर्शन सापेक्ष अल्पकर्मता आदि तथा दूसरे में मिथ्यादर्शन सापेक्ष महाकर्मता आदि घटित नहीं होती, अपितु उन सभी में महाकर्मता आदि ही है।

मिथ्यात्वाभिमुख होने से सास्वादन सम्यग्दृष्टि वाले विकलेन्द्रियों के भी मिथ्यात्व की क्रिया नियमतः मानी है। इस दृष्टि से यहां विकलेन्द्रियों को सम्यग्दृष्टि नहीं बतलाया है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

किस आयु का वेदन करते है ?

५ प्रश्न-णेरइए णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेइ ?

५ उत्तर-गोयमा ! णेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठइ, एवं मणुस्सेसु वि, णवरं मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठइ।

६ प्रश्न-असुरकुमारा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए-पुच्छा।

६ उत्तर-असुरकुमाराउयं पडिसंवेदेइ, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठइ, एवं जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठइ, जत्थ ठिओ तं पडिसंवेदेइ जाव वेमाणिए, णवरं पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जइ, पुढविकाइयाउयं पडिसंवेदेइ, अण्णे य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठइ, एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएयव्वो, परट्ठाणे तहेव।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! जो नैरयिक मर कर अन्तर रहित पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक में उत्पन्न होने के योग्य है, वह किस आयुष्य का अनुभव करता है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ उत्तर-हे गौतम ! वह नैरयिक आयुष्य का अनुभव करता है और पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक के आयुष्य को उदयाभिमुख करता है। इसी प्रकार मनुष्य के विषय में भी समझना चाहिये। विशेष यह है कि वह मनुष्य के आयुष्य को उदयाभिमुख करता है।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! जो असुरकुमार मर कर अन्तर रहित पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होने योग्य हैं, इत्यादि प्रश्न।

६ उत्तर-हे गौतम ! वह असुरकुमार के आयुष्य का अनुभव करता है और पृथ्वीकायिक आयुष्य को उदयाभिमुख करता है। इस प्रकार जो जीव जहाँ उत्पन्न होने के योग्य हैं, वह उसके आयुष्य को उदयाभिमुख करता है और जहाँ रहा हुआ है, वहाँ के आयुष्य को वेदता है। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये। विशेष यह है कि जो पृथ्वीकायिक जीव, पृथ्वीकायिक में ही उत्पन्न होने के योग्य है, वह पृथ्वीकायिक अपने आयुष्य को वेदता है और अन्य पृथ्वीकायिक आयुष्य को उदयाभिमुख करता है। इस प्रकार यावत् मनुष्य तक स्वस्थान में उत्पाद के विषय में जानना चाहिये। परस्थान में उत्पाद के विषय में पूर्ववत् जानना चाहिये।

विवेचन--जब तक जीव नैरयिक का शरीर धारण किया हुआ है, तब तक वह नरक के आयुष्य को वेदता है और नैरयिक का शरीर छोड़ देने के बाद मनुष्य या तिर्यंच के आयुष्य को वेदता है।

विकुर्वणा सरल होती है या वक्र ?

७ प्रश्न-दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववण्णा, तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीइ उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीइ वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ, एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं

विउव्विस्सामीइ वंकं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीइ उज्जुयं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ णो तं तहा विउव्वइ, से कहमेयं भंते ! एवं ?

७ उत्तर-गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-मायिमिच्छदिट्ठीउववण्णगा य अमायिसम्मदिट्ठीउववण्णगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठीउववण्णए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीइ वंकं विउव्वइ, जाव णो तं तहा विउव्वइ। तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववण्णए असुरकुमारे देवे से उज्जुयं विउव्विस्सामीइ जाव तं तहा विउव्वइ।

८ प्रश्न-दो भंते ! तहा णागकुमारा० ?

८ उत्तर-एवं जाव थणियकुमारा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-उज्जुयं-ऋजुक-सरल, वंकं-वक्र-टेढ़ा।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! एक असुरकुमारावास में दो असुरकुमार, असुरकुमार देवपने उत्पन्न हुए। उनमें से एक असुरकुमार देव ऋजु (सरल) रूप से विकुर्वणा करने की इच्छा करे तो ऋजु विकुर्वणा कर सकता है और वक्र (टेढ़ा) रूप से विकुर्वणा करने की इच्छा करे, तो वक्र विकुर्वणा कर सकता है। वह जिस प्रकार और जिस रूप की विकुर्वणा करने की इच्छा करता है, तो उसी प्रकार की और उसी रूप की विकुर्वणा करता है और एक असुर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमार देव ऋजु विकुर्वणा करने की इच्छा करे तो वक्र रूप की विकुर्वणा हो जाती है और वक्र रूप की विकुर्वणा करना चाहे तो ऋजु रूप की विकुर्वणा हो जाती है। अर्थात् वह जिस प्रकार और जिस रूप की विकुर्वणा करना चाहता है, वह उस प्रकार और उस रूप की विकुर्वणा नहीं कर सकता।

७ प्रश्न-'हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?'

७ उत्तर-हे गौतम ! असुरकुमार दो प्रकार के कहे गये हैं। यथा-मायीमिथ्यादृष्टि उपपन्नक और अमायीसमदृष्टि उपपन्नक। इनमें से जो मायीमिथ्यादृष्टि उपपन्नक असुरकुमार देव हैं, वे ऋजु रूप की विकुर्वणा करना चाहे, तो वक्र रूप की विकुर्वणा हो जाती है, यावत् जिस प्रकार के रूप की विकुर्वणा करना चाहते हैं, उस प्रकार के रूप की विकुर्वणा नहीं कर सकते और जो अमायीसम्यग्दृष्टि उपपन्नक असुरकुमार देव हैं, वे ऋजु रूप की विकुर्वणा करना चाहे तो उसी प्रकार के रूप की यावत् विकुर्वणा कर सकते हैं।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! दो नागकुमार इत्यादि प्रश्न ?

८ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् जानना चाहिये। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक और इसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक के विषय में भी जानना चाहिये।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-कितने ही देव, अपनी इच्छानुसार सीधी या टेढ़ी विकुर्वणा कर सकते हैं इसका कारण यह है कि उन्होंने ऋजुता (सरलता) और सम्यग्दर्शन निमित्तक तीव्र रस वाले वैक्रिय नाम कर्म का बन्ध किया है और कितने ही देव टेढ़ी अपनी इच्छानुसार विकुर्वणा नहीं कर सकते, इसका कारण यह है कि उन्होंने मायामिथ्यादर्शन निमित्तक मन्द रस वाले वैक्रिय नामकर्म का बन्ध किया है। इसलिये ऐसा कहा गया है कि अमायी-समदृष्टि देव अपनी इच्छानुसार रूपों की विकुर्वणा कर सकते हैं और मायीमिथ्यादृष्टि देव अपनी इच्छानुसार रूपों की विकुर्वणा नहीं कर सकते।

॥ इति अठारहवें शतक का पाँचवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १८ उद्देशक ६

निश्चय-व्यवहार से गुड़ आदि का वर्ण

१ प्रश्न—फाणियगुले णं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते ?

१ उत्तर—गोयमा ! एत्थ णं दो णया भवंति, तं जहा—णिच्छइय-णए य वावहारियणए य । वावहारियणयस्स गोड्डे फाणियगुले, णेच्छइयणयस्स पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ।

२ प्रश्न—भमरे णं भंते ! कइवण्णे०—पुच्छा ।

२ उत्तर—गोयमा ! एत्थ णं दो णया भवंति, तं जहा—णिच्छइय-णए य वावहारियणए य । वावहारियणयस्स कालए भमरे, णेच्छ-इयणयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ।

३ प्रश्न—सुयपिच्छे णं भंते ! कइवण्णे ?०

३ उत्तर—एवं चेव, णवरं वावहारियणयस्स णीलए सुयपिच्छे, णेच्छइयणयस्स पंचवण्णे, सेसं तं चेव । एवं एएणं अभिलावेणं लोहिया मंजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा, सुक्किल्लए संखे, सुब्भिगंधे कोट्ठे, दुब्भिगंधे मयगसरीरे, तित्ते णिंबे, कडुया सुंठी, कसाए कविट्ठे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अंबा अंबिलिया, महुरे खण्डे, कक्खडे वइरे, मउए णवणीए, गरूए अए, लहुए उलुयपत्ते, सीए हिमे, उसिणे अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले।

४ प्रश्न-छारिया णं भंते !-पुच्छा।

४ उत्तर-गोयमा ! एत्थ दो णया भवंति, तं जहा-णिच्छइयणए य वावहारियणए य, वावहारियणयस्स लुक्खा छारिया, णेच्छइयणयस्स पंचवण्णा० जाव अट्ठफासा पण्णत्ता।

कठिन शब्दार्थ-फाणियगुले-गीला गुड़, णिच्छइयणए-निश्चय नय, वावहारियणए-व्यावहारिक नय, सुयपिच्छे-तोते की पांख, छारिया-राख।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! फाणित (गीला) गुड़ कितने वर्ण, कितने गन्ध, कितने रस और कितने स्पर्श वाला कहा गया है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! इस संबंध में नय (अपेक्षा) दो हैं। यथा-नैश्चयिक नय और व्यावहारिक नय। व्यावहारिक नय की अपेक्षा फाणित-गुड़ मधुर रस वाला कहा गया है और नैश्चयिक नय की अपेक्षा पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस और आठ स्पर्श वाला कहा गया है।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! भ्रमर कितने वर्ण वाला है, इत्यादि प्रश्न ?

२ उत्तर-हे गौतम ! व्यावहारिकनय से भ्रमर काला है और नैश्चयिक नय से भ्रमर पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस और आठ स्पर्श वाला है।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! तोते के पंख कितने वर्ण वाले हैं, इत्यादि प्रश्न ?

३ उत्तर-हे गौतम ! व्यावहारिक नय से तोते के पंख हरे हैं और नैश्चयिक नय से पांच वर्ण वाले इत्यादि पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये। इस प्रकार इस अभिलाप द्वारा मजीठ लाल है, हल्दी पीली है, शंख श्वेत है, कुष्ठ (पटवास-कपड़े में सुगन्ध देने की पत्ती) सुगन्धित है, मुर्दा (मृतक शरीर) दुर्गन्धित है, नीम (निम्ब) तिक्त (कड़वा) है, सूंठ कटुय (तीखा) है, कविठ कषैला है, इमली

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

खट्टी है, खांड (शक्कर) मधुर है, वज्र कर्कश (कठोर) है, नवनीत (मक्खन) मृदु (कोमल) है, लोह भारी है, उलुकपत्र (उल्लू की पांख) हल्का है, हिम (बर्फ) ठण्डा है, अग्निकाय उष्ण है और तेल स्निग्ध (चिकना) है। किन्तु नैश्चयिकनय से इन सब में पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस और आठ स्पर्श हैं।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! राख कितने वर्ण वाली है, इत्यादि प्रश्न ?

४ उत्तर-हे गौतम ! व्यावहारिक नय से राख रूक्ष स्पर्श वाली है और नैश्चयिक नय से राख पांच वर्ण, दो गन्ध, पांच रस और आठ स्पर्श वाली है।

विवेचन-व्यावहारिकनय लोक-व्यवहार का अनुसरण करता है। इसलिये जिस वस्तु का लोक-प्रसिद्ध जो वर्णादि होता है, वह उसी को मानता है। शेष वर्णादि की वह उपेक्षा करता है। नैश्चयिक नय वस्तु में जितने वर्णादि है उन सब को मानता है। परमाणु आदि में सब वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श विद्यमान है, इसलिये नैश्चयिक नय सब को मानता हैं।

परमाणु और स्कन्ध में वर्णादि

५ प्रश्न-परमाणुपोग्गले णं भंते ! कइवण्णे जाव कइफासे पण्णत्ते ?

५ उत्तर-गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते।

६ प्रश्न-दुपएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे-पुच्छा।

६ उत्तर-गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते। एवं तिपएसिए वि, णवरं सिय एगवण्णे सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे। एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपएसियस्स।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवं चउपएसिए वि, णवरं सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे। एवं रसेसु वि सेसं तं चेव। एवं पंचपएसिए वि, णवरं सिय एग-वण्णे, जाव सिय पंचवण्णे, एवं रसेसु वि, गंधफासा तहेव। जहा पंचपएसिओ एवं जाव असंखेज्जपएसिओ।

७ प्रश्न-सुहुमपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइवण्णे०?

७ उत्तर-जहा पंचपएसिए तहेव णिरवसेसं।

८ प्रश्न-बायरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइवण्णे -पुच्छा।

८ उत्तर-गोयमा ! सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे सिय दुगंधे, सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए छट्ठओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ—सुहुमपरिणए—सूक्ष्म परिणत।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! परमाणु-पुद्गल कितने वर्ण वाला यावत् स्पर्श वाला होता है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्श वाला होता है।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! द्विप्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला, इत्यादि प्रश्न ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

६ उत्तर-हे गौतम ! कदाचित् एक वर्ण और कदाचित् दो वर्ण, कदाचित् एक गन्ध या दो गन्ध, कदाचित् एक रस या दो रस, कदाचित् दो स्पर्श, तीन स्पर्श और कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है। इसी प्रकार त्रिप्रदेशी स्कन्ध के विषय में भी जानना चाहिये। विशेष यह है कि कदाचित् एकवर्ण, दो वर्ण और कदाचित् तीन वर्ण वाला होता है। इसी प्रकार रस के विषय में भी यावत् तीन रस वाला होता है। शेष सब द्विप्रदेशी स्कन्ध के समान जानना चाहिये। इसी प्रकार चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के विषय में भी जानना चाहिये। विशेष यह है कि कदाचित् एक वर्ण यावत् कदाचित् चार वर्ण वाला होता है। रस के विषय में भी इसी प्रकार जानना चाहिये। शेष सब पूर्ववत् है। इसी प्रकार पंचप्रदेशी स्कन्ध के विषय में भी जानना चाहिये। विशेष यह है कि वह कदाचित् एक वर्ण यावत् पांच वर्ण वाला होता है। इसी प्रकार रस के विषय में भी जानना चाहिये। गन्ध और स्पर्श पूर्ववत् जानना चाहिये। जिस प्रकार पंचप्रदेशी स्कन्ध का कहा गया है, उसी प्रकार यावत् असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तक जान लेना चाहिये।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! सूक्ष्म परिणाम वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ?

७ उत्तर-हे गौतम ! पञ्चप्रदेशी स्कन्ध के समान सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिये।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! बादर (स्थूल) परिणाम वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ?

८ उत्तर-हे गौतम ! वह कदाचित् एक वर्ण यावत् कदाचित् पांच वर्ण वाला। कदाचित् एक गन्ध या दो गन्ध वाला, कदाचित् एक रस यावत् पांच रस वाला, चार स्पर्श यावत् कदाचित् आठ स्पर्श वाला होता है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन-परमाणु पुद्गल में वर्ण विषयक पाँच, गन्ध विषयक दो और रस विषयक पाँच विकल्प हैं और स्पर्श विषयक चार विकल्प हैं। स्निग्ध, रूक्ष, शीत और उष्ण-इन चार स्पर्शों में से कोई भी दो अविरोधी स्पर्श पाये जाते हैं। यथा-शीत और स्निग्ध, शीत और रूक्ष, उष्ण और स्निग्ध या उष्ण और रूक्ष।

द्विप्रदेशी स्कन्ध में यदि एक वर्ण हो, तो पांच विकल्प और यदि दो वर्ण हों, (प्रत्येक प्रदेश में पृथक्-पृथक् वर्ण हो) तो दस विकल्प होते हैं। इसी प्रकार गन्धादि के विषय में भी समझना चाहिये। द्विप्रदेशी स्कन्ध जब शीत, स्निग्ध आदि दो स्पर्श वाला होता है, तब पूर्वोक्त चार विकल्प पाये जाते हैं। जब तीन स्पर्शवाला होता है, तब भी चार विकल्प पाये जाते हैं क्योंकि जिसमें दो प्रदेश शीत हैं, उसमें एक स्निग्ध और दूसरा रूक्ष होता है। इसी प्रकार दो प्रदेश उष्ण हों, तब दूसरा विकल्प होता है। दोनों प्रदेश स्निग्ध हों, उनमें एक शीत हो और एक उष्ण हो, तब तीसरा विकल्प बनता है। इसी प्रकार दोनों प्रदेश रूक्ष हो, तो चौथा विकल्प बनता है। जब द्विप्रदेशी स्कन्ध चार स्पर्शवाला होता है, तब एक विकल्प बनता है। इसी प्रकार तीन प्रदेशी आदि स्कन्धों में स्वयं घटित कर लेना चाहिये।

सूक्ष्म परिणाम वाले स्कन्ध में पूर्वोक्त शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष-ये चार स्पर्श पाये जाते हैं और बादर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में मृदु, कर्कश, गुरु और लघु-ये चार स्पर्श पाये जाते हैं-ऐसा टीकाकार ने लिखा है, किन्तु आगमानुसार यह कथन उचित नहीं है। बीसवें शतक के पाँचवें उद्देशक के अनुसार-बादर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में चार से लगा कर आठ तक स्पर्श पाये जाते हैं। चार हो, तो मृदु और कर्कश में से कोई एक, गुरु और लघु में से कोई एक, शीत और उष्ण में से कोई एक और स्निग्ध और रूक्ष में से एक, इस प्रकार चार स्पर्श पाये जाते हैं। पांच स्पर्श हो, तो चार युग्मों में से किसी भी युग्म के दो और शेष तीन युग्मों में से एक-एक, इस प्रकार पाँच स्पर्श पाये जाते हैं। छह स्पर्श हो, तो दो युग्म के दो-दो और दो युग्मों में से एक-एक, यों छह स्पर्श पाये जाते हैं। सात स्पर्श हो, तो तीन युग्मों के दो-दो और एक युग्म में से एक, ये सात स्पर्श पाये जाते हैं। आठ हो, तो चारों युग्मों के दो-दो, स्पर्श पाये जाते हैं।

॥ अठारहवें शतक का छठा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १८ उद्देशक ७

केवली यक्षावेष्टित नहीं होते

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एवं वयासी–अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति–'एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तं जहा–मोसं वा सच्चामोसं वा से कहमेयं भंते ! एवं ?

१ उत्तर–गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु; अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि ४–णो खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सइ, णो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासइ, तं जहा–मोसं वा सच्चामोसं वा, केवली णं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासइ, तं जहा–सच्चं वा असच्चामोसं वा ।

कठिन शब्दार्थ–जक्खाएसेणं–यक्ष के आवेश से, आइट्ठे–आवेसित–अधिष्टित । **आहच्च**–कदाचित्, **असावज्ज**–असावद्य–निरवद्य (पाप रहित) **अपरोवघाइयाओ**–जीवों को उपघात नहीं करने वाली ।

भावार्थ–१ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा–

हे भगवन् ! अन्यतीर्थिक इस प्रकार कहते हैं यावत् प्ररूपित करते हैं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कि केवली, यक्ष के आवेश से आविष्ट हो कर कदाचित् दो भाषा बोलते हैं। यथा-मृषा भाषा और सत्यमृषा (मिश्र) भाषा। तो हे भगवन् ! यह कैसे हो सकता है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! अन्यतीर्थिकों ने जो इस प्रकार कहा है, वह मिथ्या है। हे गौतम ! मैं इस प्रकार कहता हूँ यावत् प्ररूपित करता हूँ कि केवली, यक्ष के आवेश से आविष्ट ही नहीं होते और न दो भाषा बोलते हैं। केवली असावद्य और दूसरों को उपघात नहीं करने वाली ऐसी दो भाषा बोलते हैं-सत्यभाषा और असत्यामृषा (व्यवहार) भाषा।

विवेचन-केवली अनन्तवीर्य सम्पन्न होने से यक्ष के आवेश से आविष्ट नहीं होते, अतएव असत्य और मृषाभाषा नहीं बोलते।

उपधि के भेद

२ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?

२ उत्तर-गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा-कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभण्डमत्तोवगरणोवही।

३ प्रश्न-णेरइयाणं भंते !-पुच्छा।

३ उत्तर-गोयमा ! दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा-कम्मोवही य सरीरोवही य, सेसाणं तिविहे उवही एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं। एगिंदियाणं दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा-कम्मोवही य सरीरोवही य।

४ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४ उत्तर-गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा-सच्चित्ते, अचित्ते, मीसए, एवं णेरइयाण वि, एवं णिरवसेसं जाव वेमाणियाणं ।

कठिन शब्दार्थ—उवही—उपधि-उपकरण ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! उपधि कितने प्रकार की कही गई है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! उपधि तीन प्रकार की कही गई है । यथा-कर्मोपधि, शरीरोपधि और बाह्यभाण्डमात्रोपकरणोपधि ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकों के उपधि कितने प्रकार की कही गई है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! दो प्रकार की उपधि कही गई है । यथा-कर्मोपधि और शरीरोपधि । एकेन्द्रिय जीवों के सिवाय शेष सभी जीवों के यावत् वैमानिक तक तीन प्रकार की उपधि होती है । एकेन्द्रिय जीवों के दो प्रकार की उपधि होती है । यथा-कर्मोपधि और शरीरोपधि ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! उपधि कितने प्रकार की कही गई है ?

४-उत्तर-हे गौतम ! उपधि तीन प्रकार की कही गई है । यथा-सचित्त, अचित्त और मिश्र । नैरयिकों से ले कर यावत् वैमानिक तक तीनों प्रकार की उपधि होती है ।

विवेचन-जीवन निर्वाह में उपयोगी शरीर एवं वस्त्रादि को 'उपधि' कहते हैं । इसके दो भेद हैं । आभ्यन्तर और बाह्य । कर्म और शरीर आभ्यन्तर उपधि है । वस्त्र, पात्र, घर आदि बाह्य उपधि है ।

नैरयिक जीवों में सचित्त उपधि शरीर है, अचित्त उपधि उत्पत्ति स्थान है और श्वासोच्छ्वास आदि युक्त सचेतनाचेतन रूप मिश्र उपधि है ।

परिग्रह के भेद

५ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! परिग्गहे पण्णत्ते ?

५ उत्तर-गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा-१ कम्म-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिग्गहे, २ सरीरपरिग्गहे, ३ बाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे ।

६ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! ०

६ उत्तर-एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहा परिग्गहेणं वि दो दंडगा भाणियव्वा ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! परिग्रह कितने प्रकार का कहा गया है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! परिग्रह तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-कर्म परिग्रह, शरीर परिग्रह और बाह्य भाण्डमात्रोपकरण परिग्रह ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकों के कितने प्रकार का परिग्रह कहा गया है ?

६ उत्तर-हे गौतम जिस प्रकार उपधि के विषय में दो दण्डक कहे गये हैं, उसी प्रकार परिग्रह के विषय में भी दो दण्डक कहना चाहिये ।

विवेचन-जो ग्रहण किया जाय उसे 'परिग्रह' कहते हैं । परिग्रह और उपधि में यह भेद हैं कि जीवन-निर्वाह में उपयोगी कर्म, शरीर और वस्त्रादि ' उपधि कहलाते हैं । इन्हें ममत्व बुद्धि से ग्रहण किया जाय तो 'परिग्रह' कहलाता है । यही उपधि और परिग्रह में भेद है ।

प्रणिधान

७ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! पणिहाणे पण्णत्ते ?

७ उत्तर-गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा-मण-पणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ।

८ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! कइविहे पणिहाणे पण्णत्ते ?

८ उत्तर-एवं चेव, एवं जाव थणियकुमाराणं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

९ प्रश्न-पुढविकाइयाणं पुच्छा ।

९ उत्तर-गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ।

१० प्रश्न-बेइंदियाणं पुच्छा ।

१० उत्तर-गोयमा ! दुविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा-वइपणिहाणे य कायपणिहाणे य, एवं जाव चउरिंदियाणं, सेसाणं तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ।

११ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?

११ उत्तर-गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा-मणदुप्पणिहाणे०, जहेव पणिहाणेणं दंडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ।

१२ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?

१२ उत्तर-गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा-मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ।

१३ प्रश्न-मणुस्साणं भंते ! कइविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?

१३ उत्तर-एवं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' जाव विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ-पणिहाणे-प्रणिधान (किसी निश्चित विषय में योग को स्थिर करना) ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रणिधान कितने प्रकार का कहा गया है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! प्रणिधान तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मन-प्रणिधान, वचन-प्रणिधान और काय-प्रणिधान ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक के कितने प्रकार का प्रणिधान कहा गया है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! इसी प्रकार (तीनों) प्रणिधान होते हैं । इसी प्रकार यावत् स्तनित कुमार तक जानना चाहिये ।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों के विषय में प्रश्न ?

९ उत्तर-हे गौतम ! एक काय-प्रणिधान ही होता है । इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये ।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीवों के विषय में प्रश्न ?

१० उत्तर-हे गौतम ! दो प्रकार का प्रणिधान होता है । यथा-वचन-प्रणिधान और काय-प्रणिधान । इस प्रकार यावत् चतुरिन्द्रिय जीवों तक समझना चाहिये । शेष सभी जीवों के यावत् वैमानिकों तक तीन प्रणिधान होते हैं ।

११ प्रश्न-हे भगवन् ! दुष्प्रणिधान कितने प्रकार का कहा गया है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! दुष्प्रणिधान तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-मन-दुष्प्रणिधान, वचन-दुष्प्रणिधान और काय-दुष्प्रणिधान । जिस प्रकार प्रणिधान के विषय में दण्डक कहा गया है, उसी प्रकार दुष्प्रणिधान के विषय में भी कहना चाहिये ।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! सुप्रणिधान कितने प्रकार का कहा गया है ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! सुप्रणिधान तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-मन-सुप्रणिधान, वचन-सुप्रणिधान और काय-सुप्रणिधान ।

१३ प्रश्न-हे भगवन् ! मनुष्यों के कितने प्रकार का सुप्रणिधान होता है ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! तीनों प्रकार का सुप्रणिधान होता है ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-' कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं । तत् पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यावत् बाहर जनपद (देश) में विचरने लगे ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन–मन, वचन और काय योग को किसी एक पदार्थ में स्थिर करना–'प्रणिधान' कहलाता है। मन, वचन, काया की सुप्रवृत्ति को 'सुप्रणिधान' कहते हैं और दुष्ट प्रवृत्ति को दुष्प्रणिधान कहते हैं। दुष्प्रणिधान चौवीस ही दण्डक में पाया जाता है और सुप्रणिधान केवल मनुष्य (संयत–साधु) में ही होता है।

मद्दुक श्रावक का अन्य-तीर्थियों से वाद

१४–तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे। गुणसिलए चेइए। वण्णओ। जाव पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा–कालोदायी, सेलोदायी, एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से कहमेयं मण्णे एवं ? तत्थ णं रायगिहे णयरे मद्दुए णामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए अभिगय० जाव विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव समोसढे, परिसा जाव पज्जुवासइ। तए णं मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० जाव हियए, ण्हाए जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, स० २ पडिणिक्खमित्ता पादविहारचारेणं रायगिहं णयरं जाव णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीइवयइ। तए णं ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, अण्णमण्णं सद्दावेत्ता एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अम्हं इमा कहा अविप्पकडा, इमं च णं मद्दुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं वीइवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं मद्दुयं समणोवासयं एयमट्ठं पुच्छित्तए' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अण्णमण्णस्स० २ पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी-

कठिन शब्दार्थ-अविप्पकडा-विशेष तथा अप्रकट-अविदित, अथवा-विद्वत्ता से वञ्चित व्यक्ति द्वारा कथित।

भावार्थ-१४ उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था, गुणशील नामक उद्यान था (वर्णन) यावत् पृथ्वीशिलापट्ट था। गुणशील उद्यान के समीप बहुत-से अन्यतीर्थि रहते थे। यथा-कालोदायी, शैलोदायी इत्यादि, सातवें शतक के अन्यतीर्थिक उद्देशक वत् यावत् 'यह कैसे माना जा सकता है'-तक।

उस राजगृह नगर में धनाढ्य यावत् किसी से भी पराभूत नहीं होने वाला जीवाजीवादि तत्त्वों का ज्ञाता, मद्रुक नाम का श्रमणोपासक रहता था। अन्यदा किसी दिन श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहाँ पधारे। परिषद् यावत् पर्युपासना करने लगी। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी का आगमन जान कर मद्रुक श्रमणोपासक संतुष्ट हुआ। उसने स्नान किया यावत् अलंकृत हो कर अपने घर से निकला और पैदल चलता हुआ उन अन्यतीर्थिकों के समीप हो कर जाने लगा। उन अन्यतीर्थिकों ने मद्रुक श्रमणोपासक को जाता हुआ देखा और परस्पर एक-दूसरे से कहा-'हे देवानुप्रियो! वह मद्रुक श्रमणोपासक जा रहा है और हमें वह अविदित एवं असंभव तत्त्व पूछना है, तो हे देवानुप्रियो! हमें मद्रुक श्रमणोपासक से पूछना उचित है'-ऐसा विचार कर तथा परस्पर एक मत हो कर वे अन्यतीर्थिक मद्रुक श्रमणोपासक के निकट आये और मद्रुक श्रमणोपासक से इस प्रकार पूछा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१५-'एवं खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे णायपुत्ते पंच अत्थिकाये पण्णवेइ जहा सत्तमे सए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से कहमेयं मद्दुया ! एवं ?' तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-'जइ कज्जं कज्जइ जाणामो पासामो, अहे कज्जं ण कज्जइ ण जाणामो ण पासामो।' तए णं ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी-'केस णं तुमं मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि, जे णं तुमं एयमट्ठं ण जाणसि ण पाससि ?

कठिन शब्दार्थ-कज्जं कज्जइ-कार्य करते।

भावार्थ-१५-हे मद्रुक ! तुम्हारे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्र, **पाँच अस्तिकायों** की प्ररूपणा करते हैं इत्यादि, सातवें शतक के अन्यतीर्थिक (दसवें) उद्देशक वत् यावत् हे मद्रुक ! यह कैसे माना जाय ?

मद्रुक श्रमणोपासक ने उन अन्यतीर्थिकों से कहा-'वस्तु के कार्य से उसका अस्तित्व जाना और देखा जा सकता है। बिना कार्य के कारण दिखाई नहीं देता।'

अन्यतीर्थिकों ने मद्रुक श्रमणोपासक को आक्षेपपूर्वक कहा-'हे मद्रुक ! तू कैसा श्रमणोपासक है कि जो तू पंचास्तिकाय को जानता देखता नहीं है, फिर भी मानता है ?'

तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-'अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाइ ?' हंता अत्थि, तुब्भे णं आउसो ! 'वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?' णो इणट्ठे समट्ठे।

'अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ?' हंता अत्थि,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह ?' णो इणट्ठे समट्ठे ।

'अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाये ?' 'हंता अत्थि ।' तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?' णो इणट्ठे समट्ठे ।

'अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं ?' 'हंता अत्थि ।' 'तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ?' णो इणट्ठे समट्ठे ।

'अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ?' 'हंता अत्थि ।' 'तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ?' णो समट्ठे इणट्ठे ।

'एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं ण जाणइ ण पासइ तं सव्वं ण भवइ, एवं भे सुबहुए लोए ण भविस्सई' त्ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं पडिहणइ, एवं पडिहणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं जाव पज्जुवासइ ।

कठिन शब्दार्थ-घाणसहगया-घ्राण सहगत (गन्ध युक्त), पडिहणइ-प्रतिहत-निरुत्तर ।

भावार्थ-मद्दुक श्रमणोपासक ने अन्यतीर्थिकों से कहा-'हे आयुष्मन् ! वायु बहती (प्रवाहित होती) है, क्या यह ठीक है ?'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-'हां, यह ठीक है।'

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! बहती हुई वायु का रूप तुम देखते हो ?'

उत्तर-वायु का रूप दिखाई नहीं देता।

प्रश्न-' हे आयुष्मन् ! गन्ध गुण वाले पुद्गल हैं ?'

उत्तर-'हां, हैं'।

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! तुम उन गन्ध-गुण वाले पुद्गलों के रूप को देखते हो ?

उत्तर-यह अर्थ समर्थ नहीं।

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! क्या अरणी की लकड़ी में अग्नि है ?'

उत्तर-'हां, है।'

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! क्या तुम उस अरणी की लकड़ी में रही हुई अग्नि का रूप देखते हो ?'

उत्तर-'यह अर्थ समर्थ नहीं।'

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! समुद्र के उस पार पदार्थ हैं ?'.

उत्तर-'हां, हैं।'

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! तुम समुद्र के उस पार रहे हुए पदार्थों को देखते हो ?'

उत्तर-' यह अर्थ समर्थ नहीं।'

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! क्या देवलोकों में रहे हुए पदार्थ हैं ?'

उत्तर-'हां, हैं।'

प्रश्न-'हे आयुष्मन् ! क्या तुम देवलोकों में रहे हुए पदार्थों को देखते हो ?'

उत्तर-'यह अर्थ समर्थ नहीं।'

'हे आयुष्मन् ! मैं, तुम या कोई भी छद्मस्थ मनुष्य, जिन पदार्थों को नहीं जानते, नहीं देखते, उन सभी का अस्तित्व नहीं माना जाय, तो तुम्हारी मान्यतानुसार तो लोक के बहुत से पदार्थों का अभाव हो जायगा ?' यों कह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कर मद्दुक श्रमणोपासक ने उन अन्यतीर्थियों का पराभव किया और निरुत्तर किया। उन्हें निरुत्तर कर के वह गुणशील उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की सेवा में आया और पांच प्रकार के अभिगम से श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के समीप जा कर यावत् पर्युपासना करने लगा।

१६-'मद्दुयाई' ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी-'सुट्ठु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-साहू णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-जे णं मद्दुया ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं अदिट्ठं अस्सुयं अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेइ पण्णवेइ जाव उवदंसेइ, से णं अरिहंताणं आसायणाए वट्टइ, अरिहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, केवलीणं आसायणाए वट्टइ, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वट्टइ, तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहू णं तुमं मद्दुया ! जाव एवं वयासी।' तए णं मद्दुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य जाव परिसा पडिगया। मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव णिसम्म हट्ठ-तुट्ठे पसिणाइं पुच्छइ, प० २ पुच्छित्ता अट्ठाइं परियाइइ, अ० २ परियाइत्ता उट्ठाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उट्ठेइ, उ० २ उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जाव पडिगए।

कठिन शब्दार्थ-अण्णायं-अज्ञात, अमुयं-अमान्य, अविस्मृत।

भावार्थ-१६-'हे मद्रुक ! इस प्रकार सम्बोधित कर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने कहा-'हे मद्रुक ! तुमने उन अन्यतीर्थियों को ठीक उत्तर दिया है। हे मद्रुक ! तुमने उन अन्यतीर्थियों को यथार्थ उत्तर दिया है। हे मद्रुक ! जो व्यक्ति बिना जाने, बिना देखे और बिना सुने किसी अदृष्ट, अश्रुत, असम्मत, अविज्ञात अर्थ हेतु और प्रश्न का उत्तर बहुत-से मनुष्यों के बीच में कहता है, जतलाता है, यावत् दर्शाता है, वह अरिहन्तों की, अरिहन्त-कथित धर्म की, केवलज्ञानियों की और केवलिप्ररूपित धर्म की आशातना करता है। हे मद्रुक ! तुमने अन्यतीर्थियों को यथार्थ उत्तर दिया है।'

भगवान् के कथन को सुन कर मद्रुक श्रमणोपासक हृष्ट-तुष्ट हुआ और श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर के, न अति दूर एवं न अति निकट यावत् पर्युपासना करने लगा। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने मद्रुक श्रमणोपासक और उस परिषद् को धर्म-कथा, कही, यावत् परिषद् चली गई। उस मद्रुक श्रमणोपासक ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से यावत् धर्मोपदेश सुना, प्रश्न पूछे, अर्थ जाने और खड़े हो कर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना-नमस्कार कर के लौट गया।

विवेचन-राजगृह नगर के बाहर गुणशील उद्यान था। उसके समीप कालोदायी, शैलोदायी, शैवालोदायी, उदय, नामोदय, नर्मोदय, अन्यपालक, शैलपालक, शंखपालक और सुहस्ती नामक अन्यतीर्थि रहते थे। एक दिन वे सब एक साथ बैठे हुए धर्म-चर्चा कर रहे थे कि-ज्ञातपुत्र भगवान् महावीर, पांच अस्तिकाय की प्ररूपणा करते हैं। यथा-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय। इनमें से जीवास्तिकाय सचेतन है, शेष चार अचेतन हैं। इनमें से पुद्गलास्तिकाय रूपी है, शेष चार अरूपी हैं-यह श्रमण भगवान् महावीर का मत है। किन्तु यह अदृश्य एवं असम्भव है। इसे सचेतनाचेतन आदि रूप से कैसे माना जा सकता है ?'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उसी नगर में मद्रुक नामक एक धनाढ्य श्रावक रहता था। भगवान् महावीर स्वामी का आगमन जान कर वह भगवान् के दर्शनार्थ जाने लगा। उसे उन अन्यतीर्थियों ने देखा और उसके समीप आ कर अपनी चर्चा का विषय सुना कर पूछा-'तुम्हारे धर्मोपदेशक, धर्माचार्य श्रमण ज्ञातपुत्र, धर्मास्तिकायादि पाँच अस्तिकाय की प्ररूपणा करते हैं, किन्तु यह अदृश्य एवं असम्भव मत कैसे माना जा सकता है ? क्या तुम धर्मास्तिकायादि को जानते-देखते हो ?

मद्रुक ने उनको उत्तर दिया कि कोई पदार्थ, कुछ कार्य करे, तो हम उसे उस कार्य के द्वारा जान सकते हैं। जो कुछ भी कार्य नहीं करे और निष्क्रिय हो, तो उसे नहीं जान सकते। मद्रुक की यह बात सुन कर अन्यतीर्थियों ने उपालम्भपूर्वक कहा-'तुम श्रमणोपासक हुए और तुम्हें धर्मास्तिकायादि का भी ज्ञान नहीं है ?'

मद्रुक ने उन अन्यतीर्थियों को उत्तर देते हुए कहा-'वायु बहती है, यह बराबर है, परन्तु क्या तुम वायु को जान-देख सकते हो ? गन्ध वाले पुद्गल हैं, अरणी में अग्नि है, समुद्र के उस पार अनेक-पदार्थ हैं, देवलोक में अनेक पदार्थ हैं, क्या तुम उन सभी को जानते-देखते हो ?' अन्यतीर्थियों ने कहा कि-'हे मद्रुक ! हम इन्हें नहीं जानते।' तब मद्रुक ने कहा-'छद्मस्थ मनुष्य जिन पदार्थों को नहीं जानता, नहीं देखता है, यदि उनको नहीं माना जाय, तो संसार में बहुत से पदार्थों का अभाव हो जायगा। इसलिये छद्मस्थ धर्मास्तिकायादि को नहीं जानता, नहीं देखता है, इतने मात्र से उनका अभाव सिद्ध नहीं हो जाता।' ऐसा कह कर मद्रुक ने उनको निरुत्तर कर दिया। अन्य-तीर्थियों को निरुत्तर कर के मद्रुक भगवान् की सेवा में गया, यावत् भगवान् ने कहा-'हे मद्रुक ! तुमने अन्यतीर्थियों को ठीक और यथार्थ उत्तर दिया है।'

मद्रुक की मुक्ति का निर्णय

१७ प्रश्न-'भंते !' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-पभू णं भंते ! मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं जाव पव्वइत्तए ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, एवं जहेव संखे तहेव अरूणाभे जाव अंतं काहिइ।

भावार्थ-१७ प्रश्न-'हे भगवन्!' ऐसा कह कर गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार पूछा-'हे भगवन्! क्या मद्रुक श्रमणोपासक आप देवानुप्रिय के समीप यावत् प्रव्रज्या लेने में समर्थ है?'

१७ उत्तर-हे गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है इत्यादि, बारहवें शतक के प्रथम उद्देशक में शंख श्रमणोपासक के समान यावत् अरुणाभ विमान में देवपने उत्पन्न हो कर यावत् सभी दुःखों का अन्त करेगा।

वैक्रिय कृत हजारों शरीर में एक आत्मा

१८ प्रश्न-देवे णं भंते! महड्ढिए जाव महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामित्तए?

१८ उत्तर-हंता पभू।

१९ प्रश्न-ताओ णं भंते! बोंदीओ किं एगजीवफुडाओ अणेगजीवफुडाओ?

१९ उत्तर-गोयमा! एगजीवफुडाओ, णो अणेगजीवफुडाओ।

२० प्रश्न-ते णं भंते! तासिं णं बोंदीणं अंतरा किं एगजीवफुडा अणेगजीवफुडा?

२० उत्तर-गोयमा! एगजीवफुडा, णो अणेगजीवफुडा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२१ प्रश्न-पुरिसे णं भंते ! अंतरे णं हत्थेण वा० एवं जहा अट्ठमसए तइए उद्देसए जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

कठिन शब्दार्थ-बोंदि-शरीर, एगजीवफुडाओ-एक जीव से सम्बन्धित ।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! महद्धिक यावत् महासुख वाला देव हजार रूपों की विकुर्वणा कर के परस्पर संग्राम करने में समर्थ है ?

१८ उत्तर-हाँ, गौतम ! समर्थ है ।

१९ प्रश्न-हे भगवन् ! वैक्रिय किये हुए वे शरीर, क्या एक जीव के साथ सम्बन्धित होते है या अनेक जीवों के साथ सम्बन्धित होते हैं ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! वे सभी शरीर एक ही जीव के साथ सम्बन्धित होते हैं, अनेक जीवों के साथ नहीं ।

२० प्रश्न-हे भगवन् ! उन शरीरों के बीच का अन्तराल-भाग क्या एक जीव से सम्बन्धित है या अनेक जीवों से ?

२० उत्तर-हे गौतम ! उन शरीरों के बीच का अन्तराल-भाग एक जीव से सम्बन्धित है, अनेक जीवों से नहीं ।

२१ प्रश्न-हे भगवन् ! कोई पुरुष, उन शरीरों के अन्तरालों को अपने हाथ या पाँव से स्पर्श करता हुआ यावत् तीक्ष्ण शस्त्र से छेदता हुआ कुछ भी पीड़ा उत्पन्न कर सकता है ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! आठवें शतक के तीसरे उद्देशक वत्, यावत् उन पर शस्त्र नहीं लग सकता ।

देवासुर संग्राम और उनके शस्त्र

२२ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! देवासुराणं संगामे दे० २ ?

२२ उत्तर-हंता अत्थि ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२३ प्रश्न-देवासुरेसु णं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमइ ?

२३ उत्तर-गोयमा ! जण्णं ते देवा तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा परामुसंति तं णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमइ ।

२४ प्रश्न-जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ?

२४ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, असुरकुमाराणं देवाणं णिच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ।

कठिन शब्दार्थ-पहरणरयणत्ताए-प्रहरण-शस्त्र-रत्न के रूप मे ।

भावार्थ-२२ प्रश्न-हे भगवन् ! देव और असुरों में संग्राम होता है ?

२२ उत्तर-हाँ, गौतम ! होता है ।

२३ प्रश्न-हे भगवन् ! जब देव और असुरों में संग्राम होता है, तब उन देवों के कौनसी वस्तु शस्त्र रूप से परिणत होती है ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! तिनका, लकड़ी, पत्ता या कंकर आदि जिस वस्तु को वे स्पर्श करते हैं, वह उन देवों के शस्त्र रूप में परिणत हो जाती है ।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! जिस प्रकार देवों के लिए कोई भी वस्तु स्पर्श मात्र से शस्त्र रूप में परिणत हो जाती है, उसी प्रकार असुरों के भी होती है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं । असुरकुमार देवों के तो सदा वैक्रिय किये हुए शस्त्र-रत्न होते हैं ।

विवेचन-यहाँ देव शब्द से ज्योतिषी और वैमानिक देवों का ग्रहण है और असुर शब्द से भवनपति और वाणव्यन्तर देवों का ग्रहण है । देव और असुरों के संग्राम में देवों के लिये तृण आदि भी प्रहरण (शस्त्र) रूप हो जाते हैं । यह उनके अतिशय पुण्य का प्रभाव है । असुरकुमार उन देवों की अपेक्षा अल्प पुण्य वाले हैं । इसलिये उनके शस्त्र तो नित्य विकुर्वित ही होते हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२५ प्रश्न-देवे णं भंते ! महड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवण-समुद्दं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?

२५ उत्तर-हंता पभू ।

२६ प्रश्न-देवे णं भंते ! महड्ढिए एवं धायइसंडं दीवं जाव ?

२६ उत्तर-हंता पभू, एवं जाव रुयगवरं दीवं जाव हंता पभू, ते णं परं वीइवएज्जा, णो चेव णं अणुपरियट्टेज्जा ।

भावार्थ-२५ प्रश्न-हे भगवन् ! महर्द्धिक यावत महासुखी देव, लवण समुद्र के चारों ओर चक्कर लगा कर शीघ्र आने में समर्थ है ?

२५ उत्तर-हां, गौतम ! समर्थ है ।

२६ प्रश्न-हे भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुखी देव, धातकी खण्ड द्वीप के चारों ओर चक्कर लगा कर शीघ्र आने में समर्थ है ?

२६ उत्तर-हां, गौतम ! समर्थ है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! इसी प्रकार यावत् रुचकवर द्वीप तक चारों ओर चक्कर लगा कर शीघ्र आने में समर्थ है ?

उत्तर-हां, गौतम ! समर्थ है । इसके आगे के द्वीप-समुद्रों तक देव जाता है, किन्तु उसके चारों ओर चक्कर नहीं लगाता ।

विवेचन-रुचकवर द्वीप तक देव, उन द्वीप-समुद्रों के चारों ओर चक्कर लगा सकते हैं, किन्तु इससे आगे के द्वीप-समुद्रों में वे किसी एक ओर से जाते हैं, उनके चारों ओर चक्कर नहीं लगाते, क्योंकि तथाविध प्रयोजन का अभाव है ।

देवों के कर्मक्षय का काल

२७ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ?

२७ उत्तर-हंता अत्थि ।

२८ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ?

२८ उत्तर-हंता अत्थि ।

२९ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?

२९ उत्तर-हंता अत्थि ।

कठिन शब्दार्थ-कम्मंसे-कर्मांश, **खवयंति**-क्षय करे ।

भावार्थ-२७ प्रश्न-हे भगवन् ! इस प्रकार के देव भी हैं, जो अनन्त (शुभ प्रकृति रूप) कर्मांशों को जघन्य एक सौ वर्ष, दो सौ, तीन सौ और उत्कृष्ट पांच सौ वर्षों में क्षय करते हैं ?

२७ उत्तर-हाँ, गौतम ! ऐसे देव हैं ।

२८ प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसे देव भी हैं कि जो अनन्त कर्मांशों को जघन्य एक हजार, दो हजार, तीन हजार और उत्कृष्ट पांच हजार वर्षों में क्षय करते हैं ?

२८ उत्तर-हां, गौतम ! ऐसे देव हैं ।

२९ प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसे देव हैं, जो अन्त कर्मांशों को जघन्य एक लाख, दो लाख, तीन लाख वर्षों में और उत्कृष्ट पांच लाख वर्षों में क्षय करते हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२९ उत्तर-हाँ, गौतम ! ऐसे देव हैं।

३० प्रश्न-कयरे णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा जाव पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?

३० उत्तर-गोयमा ! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससएणं खवयंति, असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयंति, असुरकुमाराणं देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससएहिं खवयंति, गह-णक्खत्त-तारारूवा जोइसिया देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वास० जाव खवयंति, चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोइसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति।

भावार्थ-३० प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसे कौन-से देव हैं जो अनन्त कर्मांशों को जघन्य एक सौ वर्ष यावत् पाँच सौ वर्षों में खपाते हैं ? हे भगवन् ! ऐसे कौन-से देव हैं, जो यावत् पाँच हजार वर्षों में खपाते हैं ? हे भगवन् ! ऐसे कौन-से देव हैं, जो यावत् पाँच लाख वर्षों में क्षय करते हैं ?

३० उत्तर-हे गौतम ! वाणव्यन्तर देव अनन्त कर्मांशों को एक सौ वर्षों में क्षय करते हैं, असुरेन्द्र को छोड़ कर शेष भवनपति देव दो सौ वर्षों में, असुरकुमार देव तीन सौ वर्षों में, ग्रह, नक्षत्र और तारा रूप ज्योतिषी देव चार सौ वर्षों में, ज्योतिषी इन्द्र, ज्योतिषीराज चन्द्र और सूर्य पाँच सौ वर्षों में, खपाते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सोहम्मी-साणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं जाव खवयंति, सणंकुमार-माहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोग-लंतगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, महासुक्क-सहस्सारगा देवा अणंते चउहिं वाससहस्सेहिं, आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणंते पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, हिट्ठिमगेविज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति, मज्झिमगेवेज्जगा देवा अणंते दोहिं वाससय-सहस्सेहिं जाव खवयंति, उवरिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वास० जाव खवयंति, विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियगा देवा अणंते चउहिं वास० जाव खवयंति, सव्वट्ठसिद्धगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससय-सहस्सेहिं खवयंति, एएणट्ठेणं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति, एएणं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति, एएणट्ठेणं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-सौधर्म और ईशान कल्प के देव, अनन्त कर्मांशों को एक हजार वर्षों में, सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के देव दो हजार वर्षों में, इस प्रकार इस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अभिलाप से ब्रह्मदेवलोक और लान्तक कल्प के देव, तीन हजार वर्षों में, महाशुक्र और सहस्रार कल्प के देव चार हजार वर्षों में, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प के देव पाँच हजार वर्षों में, अधस्तन ग्रैवेयक के देव एक लाख वर्षों में, मध्यम ग्रैवेयक के देव दो लाख वर्षों में, उपरिम ग्रैवेयक के देव तीन लाख वर्षों में, विजय, वैजयंत, जयन्त और अपराजित के देव चार लाख वर्षों में और सर्वार्थसिद्ध के देव पाँच लाख वर्षों में अनन्त कर्मांशों को क्षय करते हैं। इसलिये हे गौतम ! ऐसे देव हैं जो अनन्त कर्मांशों को जघन्य एक सौ, दो सौ या तीन सौ वर्षों में यावत् पाँच लाख वर्षों में अनन्त कर्मांशों को क्षय करते हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन--देवों के पुण्य-कर्म पुद्गल प्रकृष्ट, प्रकृष्टतर और प्रकृष्टतम रस वाले होते हैं। अतः यहाँ अनन्त कर्मांशों को खपाने का जो क्रम बतलाया गया है, वह क्रमशः प्रकृष्ट, प्रकृष्टतर और प्रकृष्टतम रस वाले समझने चाहिये।

॥ अठारहवें शतक का सातवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १८ उद्देशक ८

साधु के पाँव से कुर्कुटादि मरे तो ?

१ प्रश्न—रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए वा परिया-वज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! किं ईरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ?

१ उत्तर—गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो जाव तस्स णं ईरियावहिया किरिया कज्जइ णो संपराइया किरिया कज्जइ ।

प्रश्न—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो णिक्खित्तो। 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' जाव विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जाव विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ—पेहाए—देखते हुए, **जुगमायाए**—युग प्रमाण—यूपप्रमाण, **रीयं रीय-माणस्स**—गमन करते—चलते, **कुक्कुडपोयए**—मुर्गी का बच्चा, **वट्टापोयए**—बतख नामक पक्षी का बच्चा, **कुलिंगच्छाए**—चींटी जैसा सूक्ष्म जीव, **पायस्स अहे**—पाँव के नीचे, **परिया-वज्जेज्जा**—मर जाय ।

भावार्थ—१ प्रश्न—राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा—

'हे भगवन् ! सामने और दोनों ओर युगमात्र (धूसरा प्रमाण) भूमि को देख कर गमन करते हुए भावितात्मा अनगार के पाँव के नीचे मुर्गी का बच्चा, बतख का बच्चा या कुलिंगच्छाय (चींटी जैसा सूक्ष्म जन्तु) आ कर मर जाय, तो हे भगवन् ! उस अनगार को ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है या साम्परायिकी क्रिया लगती है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! उस भावितात्मा अनगार को यावत् ऐर्यापथिकी क्रिया लगती है, साम्परायिकी क्रिया नहीं लगती ।

प्रश्न-हे भगवन् ! उसे यावत् साम्परायिकी क्रिया क्यों नहीं लगती ?

उत्तर-हे गौतम ! सातवें शतक के प्रथम संवृत उद्देशक के अनुसार जानना चाहिये, यावत् अर्थ का निक्षेप (निगमन) करना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-ऐसा कह कर यावत् विचरते हैं । तत्पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर स्वामी बाहर के जनपद में विचरते हैं ।

विवेचन—जिस भावितात्मा अनगार के क्रोधादि कषाय नष्ट हो गया है, उसे ऐर्यापथिकी क्रिया ही लगती हैं, साम्परायिकी क्रिया नहीं लगती । क्योंकि साम्परायिकी क्रिया सकषायी जीवों को ही लगती है अकषायी को नहीं ।

अन्यतीर्थियों से गौतम स्वामी का वाद

२-तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पुढविसिलापट्टए, तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी-'तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं असंजया जाव एगंतबाला यावि भवह ।'

३-तए णं भगवं गोयमे अण्णउत्थिए एवं वयासी-'से केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं असंजया जाव एगंतबाला यावि भवामो ।' तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-'तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह, अभिहणह, जाव उवद्दवेह, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ।'

कठिन शब्दार्थ-पेच्चेह-दबाते हुए, कुचलते हुए ।

भावार्थ-२-उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर, यावत् पृथ्वीशिलापट्ट था । उस गुणशील उद्यान के समीप बहुत-से अन्यतीर्थिक रहते थे । अन्यदा किसी समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहाँ पधारे, यावत् परिषद् वन्दना कर चली गई । उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति अनगार यावत् ऊर्ध्व जानु (दोनों घुटने ऊंचे कर के) तप संयम से आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे । उस समय वे अन्यतीर्थिक गौतम स्वामी के समीप आ कर कहने लगे कि-'हे आर्यो ! तुम त्रिविध-त्रिविध (तीन करण, तीन योग से) असंयत, अविरत यावत् एकान्त बाल हो ।'

३-अन्य यूथिकों का आक्षेप सुन कर गौतम स्वामी ने कहा-'हे आर्यो ! किस कारण हम त्रिविध-त्रिविध असंयत यावत् एकान्त बाल हैं ? तब अन्यतीर्थिकों ने कहा-'हे आर्य ! गमन करते हुए तुम जीवों को आक्रान्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

करते हो (दबाते हो) मारते हो यावत् उपद्रव करते हो। इसलिये प्राणियों को आक्रान्त यावत् उपद्रव करते हुए तुम त्रिविध-त्रिविध असंयत यावत् एकान्त बाल हो।

४-तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-'णो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उवद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च दिस्सा दिस्सा पदिस्सा पदिस्सा वयामो, तए णं अम्हे दिस्सा दिस्सा वयमाणा पदिस्सा पदिस्सा वयमाणा णो पाणे पेच्चेमो जाव णो उवद्दवेमो, तए णं अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह।'

कठिन शब्दार्थ-दिस्सा दिस्सा--देख-देख कर, पदिस्सा पदिस्सा—विशेष रूप से देख-देख कर।

भावार्थ-४ इस पर से गौतम स्वामी ने उन अन्यतीर्थियों से कहा-'हे आर्यो ! हम गमन करते हुए प्राणियों को आक्रान्त नहीं करते यावत् पीड़ा नहीं पहुंचाते। हम गमन करते हुए काययोग (संयम योग) और सूक्ष्मतापूर्वक (चपलता आदि रहित) देख-देख कर चलते हैं। इस प्रकार चलते हुए हम प्राणियों को आक्रान्त नहीं करते यावत् पीड़ा नहीं पहुंचाते। इस प्रकार प्राणियों को आक्रान्त नहीं करते हुए यावत् पीड़ित नहीं करते हुए हम त्रिविध-त्रिविध यावत् एकान्त पण्डित हैं। हे आर्यो ! तुम स्वयं ही त्रिविध-त्रिविध असंयत, अविरत यावत् एकान्त बाल हो।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५-तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी-'केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव भवामो ।' तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी-तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह, जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं जाव एगंतबाला यावि भवह ।' तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं पडिहणइ, पडिहणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।

भावार्थ-५-अन्यतीर्थियों ने गौतम स्वामी का कथन सुन कर इस प्रकार कहा-'हे आर्यों ! हम किस प्रकार त्रिविध-त्रिविध असंयत, अविरत यावत् एकान्त बाल हैं ?' तब गौतम स्वामी ने उन अन्यतीर्थियों से कहा-'हे आर्यों ! चलते हुए तुम प्राणियों को आक्रान्त करते हो यावत् पीड़ित करते हो। जीवों को आक्रान्त करते हुए यावत् पीड़ित करते हुए तुम त्रिविध-त्रिविध असंयत, अविरत यावत् एकान्त बाल हो ।'

इस प्रकार गौतम स्वामी ने उन अन्यतीर्थियों को निरुत्तर किया। इसके पश्चात् गौतम स्वामी श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की सेवा में आ कर उन्हें वन्दना नमस्कार कर के न अति दूर, न अति निकट यावत् पर्युपासना करने लगे ।

विवेचन-श्रमण निर्ग्रन्थ का शरीर चलने में समर्थ हो, तभी चलते हैं । क्योंकि वे नंगे पाँव विहार करते हैं, गाड़ी, घोड़ा आदि वाहन का वे उपयोग नहीं करते । वे योग के प्रयोजन से गमन करते हैं अर्थात् ज्ञान ग्रहण आदि कोई कारण हो या गोचरी आदि जाना हो, तभी चलते हैं, बिना कारण नहीं चलते । वे चपलता और शीघ्रता से रहित ईर्यापथ शोधनपूर्वक अर्थात् सूक्ष्मतापूर्वक देख कर चलते हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भ. महावीर द्वारा गौतम स्वामी की प्रशंसा

६-'गोयमाई !' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-'सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, अत्थि णं गोयमा ! ममं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा छउमत्था, जे णं णो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए, जहा णं तुमं, तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी । तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-

भावार्थ-६-'हे गौतम !' इस प्रकार सम्बोधित कर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी से कहा-'हे गौतम ! तुमने उन अन्यतीथियों को ठीक कहा, हे गौतम ! तुमने उन अन्यतीथियों को यथार्थ कहा । हे गौतम ! मेरे बहुत-से शिष्य श्रमण-निर्ग्रन्थ छद्मस्थ हैं । जो तुम्हारे समान उत्तर देने में समर्थ नहीं है । इसलिये हे गौतम ! तुमने उन अन्यतीथियों को ठीक कहा । हे गौतम ! तुमने उन अन्यतीथियों को बहुत ठीक कहा ।' जब श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने ऐसा कहा, तब हृष्ट-तुष्ट हो कर गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना-नमस्कार कर इस प्रकार पूछा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परमाणु आदि जानने की भजना

७ प्रश्न-छउमत्थे णं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं किं जाणइ पासइ, उदाहु ण जाणइ ण पासइ ?

७ उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइए जाणइ ण पासइ, अत्थेगइए ण जाणइ ण पासइ ।

८ प्रश्न-छउमत्थे णं भंते ! मणूसे दुपएसियं खंधं किं जाणइ पासइ ?

८ उत्तर-एवं चेव । एवं जाव असंखेज्जपएसियं ।

९ प्रश्न-छउमत्थे णं भंते ! मणूसे अणंतपएसियं खंधं किं-पुच्छा।

९ उत्तर-गोयमा ! १ अत्थेगइए जाणइ पासइ, २ अत्थेगइए जाणइ ण पासइ, ३ अत्थेगइए ण जाणइ पासइ, ४ अत्थेगइए ण जाणइ ण पासइ ।

१० प्रश्न-आहोहिए णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं० ?

१० उत्तर-जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं ।

११ प्रश्न-परमाहोहिए णं भंते ! मणूसे परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ तं समयं पासइ, जं समयं पासइ तं समयं जाणइ ?

११ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'परमाहोहिए णं मणुसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणइ णो तं समयं पासइ, जं समयं पासइ णो तं समयं जाणइ ?'

उत्तर-गोयमा ! सागारे से णाणे भवइ, अणगारे से दंसणे भवइ, से तेणट्ठेणं जाव णो तं समयं जाणइ, एवं जाव अणंतपएसियं ।

१२ प्रश्न-केवली णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं० ?

१२ उत्तर-जहा-परमाहोहिए तहा केवली वि जाव अणंतपएसियं ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य परमाणु-पुद्गल को जानता और देखता है ? या नहीं जानता, नहीं देखता है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! कोई जानता है, किन्तु देखता नहीं और कोई जानता भी नहीं और देखता भी नहीं ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या छद्मस्थ मनुष्य द्विप्रदेशी स्कन्ध को जानता-देखता है ? या नहीं जानता नहीं देखता है ?

उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । इसी प्रकार यावत् असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तक जानना चाहिये ।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! छद्स्थ मनुष्य, अनन्त प्रदेशी स्कन्ध को जानता हैं, इत्यादि प्रश्न ?

९ उत्तर-हे गौतम ! १-कोई जानता है और देखता है । २-कोई जानता है परन्तु देखता नहीं । ३-कोई जानता नहीं, किन्तु देखता है और ४-कोई जानता भी नहीं और देखता भी नहीं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१० प्रश्न-हे भगवन् ! क्या आधोऽवधिक (अवधिज्ञानी) मनुष्य, परमाणु-पुद्गल को जानता है, इत्यादि प्रश्न ?

१० उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार छद्मस्थ मनुष्य का कथन किया है, उसी प्रकार आधोऽवधिक का भी समझो। इस प्रकार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक कहना चाहिये।

११ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या परमावधिज्ञानी मनुष्य, परमाणु-पुद्गल को जिस समय जानता है, उसी समय देखता है ? और जिस समय देखता है, उस समय जानता है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि परमावधिज्ञानी मनुष्य परमाणु-पुद्गल को जिस समय जानता है, उस समय देखता नहीं और जिस समय देखता है, उस समय जानता नहीं ?

उत्तर-हे गौतम ! परमावधिज्ञानी का ज्ञान साकार (विशेष ग्राहक) होता है और दर्शन अनाकार (सामान्य ग्राहक) होता है। इसलिये ऐसा कहा गया है कि यावत् जिस समय देखता है, उस समय जानता नहीं। इस प्रकार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक जानना चाहिये।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! केवलज्ञानी परमाणु-पुद्गल को जिस समय जानता है, उस समय देखता है, इत्यादि प्रश्न ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार परमावधिज्ञानी के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार केवलज्ञानी के लिए भी कहना चाहिये। इस प्रकार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक कहना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-ऐसा कह कर यावत् गौतम स्वामी विचरते हैं।

विवेचन-यहाँ 'छद्मस्थ' शब्द से 'निरतिशय ज्ञानी छद्मस्थ' लिया गया है। ऐसा श्रुतोपयुक्त श्रुतज्ञानी परमाणु पुद्गल को जानता है, किन्तु देखता नहीं। क्योंकि श्रुत में देखने का अभाव है। श्रुतानुपयुक्त श्रुतज्ञानी नहीं जानता और नहीं देखता है। अनन्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी स्कन्ध के विषय में चार भंग हैं। यथा-१ स्पर्श आदि के द्वारा जानता है और आँख से देखता है। २ स्पर्शादि के द्वारा जानता है, किन्तु आँख का अभाव होने से नहीं देखता। ३ स्पर्शादि के अगोचर होने से कोई नहीं जानता है, किन्तु आँख से देखता है। ४ कोई न तो जानता है और न देखता है, इन्द्रियों का अविषय होने से।

'आधोऽवधिक'-सामान्य अवधिज्ञानी को कहते हैं। 'परमावधिक' उत्कृष्ट अवधिज्ञानी को कहते हैं। परमावधिज्ञानी को अन्तर्मुहूर्त में अवश्य केवलज्ञान उत्पन्न हो जाता है।

॥ अठारहवें शतक का आठवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १८ उद्देशक ९

भव्यद्रव्य नैरयिकादि

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-अत्थि णं भंते ! भवियदव्वणेरइया भवि० २ ?

१ उत्तर-हंता अत्थि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'भवियदव्वणेरइया भ० २ ?'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-गोयमा! जे भविए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा णेरइएसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं०। एवं जाव थणियकुमाराणं।

२ प्रश्न-अत्थि णं भंते! भवियदव्वपुढविकाइया भ० २?

२ उत्तर-हंता अत्थि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं०?

उत्तर-गोयमा! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं०। आउक्काइय-वणस्सइ-काइयाणं एवं चेव। तेउ-वाऊ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जे भविए णेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए वा, एवं मणुस्सा वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणि-याणं जहा णेरइया।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-

हे भगवन्! भव्यद्रव्य नैरयिक-'भव्यद्रव्य नैरयिक हैं'?

१ उत्तर-हाँ, गौतम है।

प्रश्न-हे भगवन्! क्या कारण ह कि भव्यद्रव्य नैरयिक-'भव्यद्रव्य नैरयिक' है?

उत्तर-हे गौतम! जो कोई पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच या मनुष्य, नैरयिकों में उत्पन्न होने के योग्य है, वह 'भव्यद्रव्य नैरयिक' कहलाता है। इसी प्रकार यावत् स्तनित कुमार तक जानना चाहिये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्यद्रव्य पृथ्वीकायिक, 'भव्यद्रव्य पृथ्वीकायिक' है ?

२ उत्तर-हां, गौतम है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! वह भव्यद्रव्य पृथ्वीकायिक क्यों है ?

उत्तर-हे गौतम ! जो कोई तिर्यंच मनुष्य या देव, पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होने के योग्य है, वह 'भव्यद्रव्य पृथ्वीकायिक' कहलाता है। इस प्रकार अप्कायिक और वनस्पतिकायिक के विषय में भी समझना चाहिये। अग्निकाय, वायुकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय के विषय में-जो कोई तिर्यंच या मनुष्य, उत्पन्न होने के योग्य हो, वह 'भव्यद्रव्य अग्निकायिकादि' कहलाता है। यदि कोई नैरयिक, तिर्यंच-योनिक, मनुष्य, देव या पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिकों में उत्पन्न होने के योग्य होता है, वह 'भव्यद्रव्य पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक' कहलाता है। इस प्रकार मनुष्यों के विषय में भी जानना चाहिये। वाणव्यन्तर, ज्योतिषिक और वैमानिक के विषय में नैरयिकों के समान जानना चाहिये।

विवेचन-भूतकाल की पर्याय का अथवा भविष्यकाल की पर्याय का जो कारण है, वह 'द्रव्य' कहलाता है। इसलिये भावी नरक-पर्याय का कारण तिर्यंच पंचेन्द्रिय अथवा मनुष्य, 'भव्यद्रव्य नैरयिक' कहलाता है। उसके तीन भेद है। एकभविक, बद्धायुष्क और अभिमुख नामगोत्र। १ इनमें जो एक विवक्षित अमुक भव के बाद तुरन्त ही अमुक दूसरे भव में उत्पन्न होंगे, वे 'एकभविक' हैं। २ पूर्वभव की आयु का तीसरा भाग आदि शेष हो, उस समय जिन्होंने अमुक भव का आयुष्य बांधा है, वे 'बद्धायुष्क' हैं। ३ जो पूर्वभव का त्याग करने के बाद अमुक भव का आयुष्य नाम और गोत्र साक्षात् वेदते हैं, वे 'अभिमुख नाम गोत्र' कहलाते हैं।

३ प्रश्न-भवियदव्वणेरइयस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४ प्रश्न-भवियदव्वअसुरकुमारस्स णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एवं जाव थणियकुमारस्स ।

५-भवियदव्वपुढविकाइयस्स णं पुच्छा ।

उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं । एवं आउक्काइयस्स वि । तेउ-वाऊ जहा णेरइयस्स। वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स । बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा णेरइयस्स । पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । एवं मणुस्सस्स वि । वाणमंतरजोइसिय-वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ अट्ठारसमे सए णवमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्य द्रव्य नैरयिक की स्थिति कितने काल की कही गई है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष (करोड़ पूर्व वर्ष) की कही गई है ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्य-द्रव्य असुरकुमार की स्थिति कितने काल की कही गई है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीन पल्योपम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

की कही गई है । इस प्रकार यावत् स्तनितकुमारों तक जानना चाहिये ।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्य-द्रव्य पृथ्वीकायिक की स्थिति कितनी कही गई है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागरोपम की कही गई है । इस प्रकार अप्कायिक के विषय में भी कहना चाहिये । भव्य-द्रव्य अग्निकायिक और भव्य-द्रव्य वायुकायिक का विषय नैरयिक के समान है । वनस्पतिकायिक का विषय पृथ्वीकायिक के समान है । भव्य-द्रव्य बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय की स्थिति नैरयिक के समान है । भव्य-द्रव्य पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की है । इसी प्रकार मनुष्य के विषय में भी जानना चाहिये । वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिकों का विषय असुरकुमारों के समान है ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-जो संज्ञी या असंज्ञी अन्तर्मुहूर्त की आयुष्य वाला जीव मर कर नरकगति में जाने वाला है, उसकी अपेक्षा भव्य-द्रव्य नैरयिक की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की कही गई है और उत्कृष्ट करोड़ पूर्व वर्ष की आयुष्य वाला जीव मर कर नरक गति में जावे, उसकी अपेक्षा से उत्कृष्ट स्थिति करोड़ पूर्व वर्ष की कही गई है ।

जघन्य अन्तर्मुहूर्त की आयुष्य वाले मनुष्य अथवा तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अपेक्षा भव्य-द्रव्य असुरकुमारादि की जघन्य स्थिति जाननी चाहिये और देवकुरु उत्तरकुरु के युगलिक मनुष्य की अपेक्षा तीन पल्योपम की उत्कृष्ट स्थिति जाननी चाहिये ।

भव्य-द्रव्य पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट स्थिति ईशान देवलोक की अपेक्षा साधिक दो सागरोपम है ।

भव्य-द्रव्य अग्निकायिक और वायुकायिक की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट करोड़ पूर्व वर्ष की है, क्योंकि देव और युगलिक मनुष्य, अग्निकाय और वायुकाय में उत्पन्न नहीं होते हैं ।

भव्य-द्रव्य पंचेन्द्रिय तिर्यंच की तेतीस सागरोपम की स्थिति सातवीं नरक के नैर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यिकों की अपेक्षा समझनी चाहिये और भव्य-द्रव्य मनुष्य की तेतीस सागरोम की स्थिति सर्वार्थसिद्ध से च्यव कर आने वाले देवों की अपेक्षा समझनी चाहिये ।

॥ अठारहवें शतक का नौवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १८ उद्देशक १०

भावितात्मा अनगार की वैक्रियशक्ति

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-अणगारे णं भंते ! भावियप्पा असिधारं खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?

१ उत्तर-हंता ओगाहेज्जा ।

प्रश्न-से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?

उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, णो खलु तत्थ सत्थं कमइ । एवं जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारे णं भंते ! भावियप्पा उदावत्तं जाव णो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

कठिन शब्दार्थ-खुरधारं-क्षुरधार-उस्तरे की धार, असिधारं-तलवार की धार,

ओगाहेज्जा-अवगाहे-रहे ।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-हे भगवन् ! क्या भावितात्मा अनगार (वैक्रिय लब्धि के सामर्थ्य से) तलवार की धार पर या उस्तरे की धार पर रह सकता है ?

१ उत्तर-हाँ, गौतम ! रह सकता है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! क्या वह वहाँ छिन्न-भिन्न होता है ?

उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, क्योंकि वहाँ शस्त्र नहीं संक्रमता (नहीं लगता) है, इत्यादि पांचवें शतक के सातवें उद्देशक में कथित परमाणु-पुद्गल की वक्तव्यता यावत् हे भगवन ! भावितात्मा अनगार उदकावर्त्त में यावत् प्रवेश करता है ? इत्यादि, वहाँ शस्त्र संक्रमण नहीं करता, आदि जानना चाहिए ।

वायु से परमाणु स्पृष्ट है ?

२ प्रश्न-परमाणुपोग्गले णं भंते ! वाउयाएणं फुडे, वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे ?

२ उत्तर-गोयमा ! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे, णो वाउयाए परमाणुपोग्गलेणं फुडे ।

३ प्रश्न-दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं० ?

३ उत्तर-एवं चेव, एवं जाव असंखेज्जपएसिए ।

४ प्रश्न-अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे वाउ-पुच्छा ।

४ उत्तर-गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे, वाउयाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अणंतपएसिएणं खंधेणं सिय फुडे, सिय णो फुडे ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! परमाणु-पुद्गल, वायुकाय से स्पृष्ट (व्याप्त) है, या वायुकाय परमाणु-पुद्गल द्वारा स्पृष्ट है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! परमाणु-पुद्गल वायुकाय से स्पृष्ट है, किन्तु वायुकाय परमाणु-पुद्गल से स्पृष्ट नहीं है ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! द्विप्रदेशी-स्कन्ध वायुकाय से स्पृष्ट है, या वायुकाय द्विप्रदेशी स्कन्ध से स्पृष्ट है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । इसी प्रकार यावत् असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तक जानना चाहिये ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! अनन्त प्रदेशी स्कन्ध वायुकाय से स्पृष्ट है, इत्यादि प्रश्न ?

४ उत्तर-हे गौतम ! अनन्त प्रदेशी स्कन्ध वायुकाय से स्पृष्ट है, किन्तु वायुकाय, अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से कदाचित् स्पृष्ट होता है और कदाचित् स्पृष्ट नहीं होता ।

विवेचन-वायु महान् (बड़ी) है और परमाणु-पुद्गल प्रदेश रहित है । इसलिये परमाणु में वायु क्षिप्त (व्याप्त) नहीं होती, क्योंकि वह उसमें नहीं समा सकती ।

अनन्त प्रदेशी स्कन्ध वायु से व्याप्त होता है, क्योंकि वह वायु की अपेक्षा सूक्ष्म है । जब वायुस्कन्ध की अपेक्षा अनन्तप्रदेशी स्कन्ध महान् होता है, तब वायु अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से व्याप्त होती है, अन्यथा नहीं । इसलिये ऐसा कहा गया है कि अनन्त प्रदेशी स्कन्ध वायु से व्याप्त होता है और वायु अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से कदाचित् व्याप्त होती है और कदाचित् नहीं होती ।

मशक वायु से स्पृष्ट है ?

५ प्रश्न-वत्थी भंते ! वाउयाएणं फुडे, वाउयाए वत्थिणा फुडे ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ उत्तर-गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे, णो वाउयाए वत्थिणा फुडे।

६ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ काल-णील-लोहिय-हालिद्द-सुक्किल्लाइं. गंधओ सुब्भि-गंधाइं, दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासओ कक्खड-मउय-गरुय-लहुय-सीय-उसिण-णिद्ध-लुक्खाइं, अण्ण-मण्णबद्धाइं. अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?

६ उत्तर-हंता अत्थि। एवं जाव अहेसत्तमाए।

प्रश्न-अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहे० ?

उत्तर-एवं चेव, एवं जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए। 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' जाव विहरइ। तएणं समणे भगवं महावीरे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ।

कठिन शब्दार्थ-वत्थी-वस्ति-मशक।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! वस्ति (मशक) वायुकाय से स्पृष्ट है, या वायुकाय वस्ति से स्पृष्ट है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! वस्ति, वायुकाय से स्पृष्ट है, वायुकाय, वस्ति से स्पृष्ट नहीं है।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे वर्ण से काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत, गन्ध से सुगन्धित और दुर्गन्धित, रस से तिक्त, कटुक, कषैला, अम्ल (खट्टा) और मधुर तथा स्पर्श से कर्कश (कठोर), मृदु (कोमल), गुरु (भारी), लघु (हलका), शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष-इन बीस बोलों से युक्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्य अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट यावत् अन्योन्य संबद्ध है ?

६ उत्तर-हाँ, गौतम ! हैं। इसी प्रकार यावत् अधःसप्तम पृथ्वी तक जानना चाहिये।

प्रश्न-हे भगवन् ! सौधर्मकल्प के नीचे इत्यादि, प्रश्न ?

उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक जानना चाहिए। 'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं। तत्पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यावत् बाहर जनपद में विचरते हैं।

विवेचन-मशक में जब हवा भरी जाती है, तब मशक, वायु से व्याप्त होती हैं, क्योंकि वह समस्त रूप से उसके भीतर समायी हुई है। किन्तु वायुकाय, मशक से व्याप्त नहीं है। वह वायुकाय के ऊपर चारों ओर परिवेष्टित है।

सोमिल ब्राह्मण का भगवद् वंदन

७-तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णामं णयरे होत्था। वण्णओ। दूइपलासए चेइए। वण्णओ। तत्थ णं वाणियगामे णयरे सोमिले णामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, रिउव्वेद० जाव सुपरिणिट्ठिए, पंचण्हं खंडियसयाणं, सयस्स कुडुंबस्स आहेवच्चं जाव विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे। जाव परिसा पज्जुवासइ। तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-'एवं खलु समणे णायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्ज-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माणे सुहंसुहेणं जाव इहमागए जाव दूइपलासए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ । तं गच्छामि णं समणस्स णायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिइ तओ णं वंदीहामि णमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि । अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं णो वागरेहिइ तो णं एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य णिप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामि' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव सरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव दुइपलासए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—

कठिन शब्दार्थ—णिप्पट्ठपसिणवागरणं—प्रश्न का वैसा उत्तर कि जिसमें पुनः पूछना नहीं पड़े ।

भावार्थ—७ उस काल उस समय में वाणिज्य ग्राम नामक नगर और द्युतिपलास नामक उद्यान था । (वर्णन) । वाणिज्य ग्राम नगर में सोमिल नामक ब्राह्मण रहता था । वह आढ्य यावत् अपराभूत था और ऋग्वेद, यावत् ब्राह्मणों के शास्त्रों में कुशल था । उसके पांच सौ शिष्य थे । वह अपने कुटुम्ब पर अधिपतिपना करता हुआ यावत् रहता था ।

किसी दिन श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वाणिज्य ग्राम के द्युतिपलास

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चैत्य में पधारे यावत् परिषद् पर्युपासना करने लगी। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी का आगमन जान कर, सोमिल ब्राह्मण को विचार उत्पन्न हुआ-'पूर्वानुपूर्वी (अनुक्रम) से विचरते हुए, ग्रामानुग्राम सुखपूर्वक पधारते हुए श्रमण ज्ञातपुत्र यहाँ पधारे हैं, यावत् दयुतिपलास उद्यान में यथायोग्य अवग्रह ग्रहण कर यावत् विचरते हैं। मैं श्रमण ज्ञातपुत्र के पास जाऊं और अर्थ यावत् व्याकरण (प्रश्नों के उत्तर) पूछूं। यदि वे मेरे अर्थ यावत् प्रश्नों का उत्तर देंगे, तो मैं उन्हें वन्दना-नमस्कार करूंगा यावत् उनकी पर्युपासना करूंगा। यदि वे मेरे अर्थ और प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकेंगे, तो मैं उन अर्थ और उत्तरों से उन्हें निरुत्तर करूंगा,'-ऐसा विचार कर, स्नान कर यावत् शरीर को अलंकृत कर के अपने एक सौ शिष्यों के साथ पैदल चलता हुआ वाणिज्य ग्राम नगर के मध्य हो कर दयुतिपलास उद्यान में, श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के निकट आया और इस प्रकार पूछने लगा-

यात्रा कैसी करते हैं ?

८ प्रश्न-'जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं,अव्वाबाहं, फासुयविहारं ?'

८ उत्तर-सोमिला ! 'जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे।'

९ प्रश्न-किं ते भंते ! जत्ता ?

९ उत्तर-सोमिला ! जं मे तव-णियम-संजम-सज्झाय-झाणावस्सयमाइएसु जोगेसु जयणा, सेत्तं जत्ता।

कठिन शब्दार्थ-जवणिज्जं-यापनीय, जत्ता-यात्रा, अव्वाबाहं-अव्याबाध-व्याधि रहित।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! आपके यात्रा, यापनीय, अव्याबाध और प्रासुक विहार है ?

८ उत्तर-हां, सोमिल ! मेरे यात्रा भी है, यापनीय भी है, अव्याबाध भी है और प्रासुक विहार भी है।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! आपके यात्रा कैसी है ?

९ उत्तर-हे सोमिल ! तप, नियम, संयम, स्वाध्याय, ध्यान और आवश्यक आदि योगों में जो मेरी यतना (प्रवृत्ति) है, वह मेरी यात्रा है।

यापनीय

१० प्रश्न-किं ते भंते ! जवणिज्जं ?

१० उत्तर-सोमिला ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-इंदियजवणिज्जे य णोइंदियजवणिज्जे य।

११ प्रश्न-से किं तं इंदियजवणिज्जे ?

११ उत्तर-इंदिय० २ जं मे सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं णिरुवहयाइं वसे वट्टंति। सेत्तं इंदियजवणिज्जे।

१२ प्रश्न-से किं तं णोइंदियजवणिज्जे ?

१२ उत्तर-णोइंदियजवणिज्जे जं मे कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा णो उदीरेंति, सेत्तं णोइंदियजवणिज्जे, सेत्तं जवणिज्जे।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! आपके यापनीय क्या है ?

१० उत्तर-हे सोमिल ! यापनीय दो प्रकार का कहा गया है। यथा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्रिय यापनीय और नोइन्द्रिय यापनीय ।

११ प्रश्न-हे भगवन् ! इन्द्रिय यापनीय किसे कहते हैं ?

११ उत्तर-हे सोमिल ! श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय, ये पाँचों इन्द्रियाँ निरुपहत (उपघात रहित) मेरे अधीन वर्तती है । यह मेरे इन्द्रिय यापनीय है ।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! नोइन्द्रिय यापनीय किसे कहते हैं ?

१२ उत्तर-हे सोमिल ! क्रोध, मान, माया और लोभ, ये चारों कषाय मेरे व्युच्छिन्न (नष्ट) हो गये हैं और उदय में नहीं हैं । यह मेरे नोइन्द्रिय यापनीय हैं । इस प्रकार मेरे ये यापनीय है ।

अव्याबाध

१३ प्रश्न-किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?

१३ उत्तर-सोमिला ! जं मे वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सण्णिवाइया विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता णो उदीरेंति । सेत्तं अव्वाबाहं ।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! आपके अव्याबाध क्या है ?

१३ उत्तर-हे सोमिल ! मेरे वात, पित्त, कफ और सन्निपातजन्य अनेक प्रकार के शरीर सम्बन्धी दोष और रोगातंक उपशान्त (नष्ट) हो गये हैं, उदय में नहीं आते हैं । यह मेरे अव्याबाध है ।

प्रासुक विहार

१४ प्रश्न-किं ते भंते ! फासुयविहारं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१४ उत्तर-सोमिला ! जण्णं आगमेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि, सेत्तं फासुय-विहारं ।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन् ! आपके प्रासुक विहार कौन-सा है ?

१४ उत्तर-हे सोमिल ! आराम (बगीचा), उद्यान, देवकुल, सभा, प्रपा (प्याऊ) आदि स्थान जो स्त्री, पशु, पण्डक (नपुंसक) रहित वसतियों में प्रासुक एषणीय पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक आदि प्राप्त कर के मैं विचरता हूँ । यह मेरे प्रासुक विहार है ।

विवेचन-सोमिल ब्राह्मण ने यात्रा, यापनीय आदि के विषय में प्रश्न किया । वह जानता था कि ये शब्द गम्भीर अर्थ वाले हैं । भगवान् को इनके अर्थों का ज्ञान नहीं होगा । इसलिए उसने भगवान् की योग्यता जानने के लिये ये प्रश्न किये थे । भगवान् ने उसके प्रश्नों का यथार्थ उत्तर दिया ।

संयम के विषय में प्रवृत्ति 'यात्रा' कहलाती है । मोक्ष साधना में संलग्न पुरुषों के इन्द्रियादि वश्यता रूप धर्म 'यापनीय' कहलाता है । शरीर सम्बन्धी बाधा-पीड़ा न होना 'अव्याबाध' कहलाता है । निर्दोष एवं निर्जीव शयनासन स्थानादि का ग्रहण 'प्रासुक विहार' कहलाता है ।

सरिसव भक्ष्य है या अभक्ष्य

१५ प्रश्न-सरिसवा ते भंते ! किं भक्खेया, अभक्खेया ?

१५ उत्तर-सोमिला ! सरिसवा [मे] भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'सरिसवा मे भक्खेया वि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अभक्खेया वि ?'

उत्तर-से णूणं ते सोमिला ! बंभण्णएसु णएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तं जहा-मित्तसरिसवा य धण्णसरिसवा य। तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते धण्णसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-जाइया य अजाइया य। तत्थ णं जे ते अजाइया ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते णं समणाणं णिग्गंथाणं भक्खेया, से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ-जाव 'अभक्खेया' वि।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! आपके लिये 'सरिसव' भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

१५ उत्तर-हे सोमिल ! 'सरिसव' मेरे भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न-हे भगवन् ! यह कैसे कहते हैं कि 'सरिसव' भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी ?

उत्तर-हे सोमिल ! तुम्हारे ब्राह्मण नयों (शास्त्रों) में दो प्रकार के 'सरिसव' कहे गये हैं। यथा-मित्र-सरिसव (समान वय वाला मित्र) और धान्य-सरिसव। जो मित्र सरिसव है, वह तीन प्रकार का कहा गया है। यथा-सहजात (एक साथ जन्मे हुए), सहवर्धित (एक साथ बड़े हुए) और सहपांशुक्रीड़ित (एक साथ धूल में खेले हुए)। ये तीनों प्रकार के सरिसव श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिये अभक्ष्य हैं।

धान्य-सरिसव दो प्रकार का कहा गया है। यथा-शस्त्र-परिणत (अचित्त-अग्नि आदि शस्त्र से निर्जीव बने हुए) और अशस्त्र-परिणत (सचित्त-अग्नि आदि शस्त्र से निर्जीव नहीं बने हुए)। जो अशस्त्रपरिणत हैं, वह श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिए अभक्ष्य है। जो शस्त्रपरिणत है, वह भी दो प्रकार का है। यथा-एषणीय (निर्दोष) और अनेषणीय (सदोष)। अनेषणीय तो श्रमण-निर्ग्रंथों के लिये अभक्ष्य है। एषणीय सरिसव दो प्रकार का है। यथा-याचित (माँग कर लिया हुआ) और अयाचित (बिना मांगा हुआ)। अयाचित तो श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिये अभक्ष्य है। याचित भी दो प्रकार का है। यथा-लब्ध (मिला हुआ) और अलब्ध (नहीं मिला हुआ)। अलब्ध तो श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिये अभक्ष्य है और जो लब्ध है, वह श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिये भक्ष्य है। इस कारण हे सोमिल ! ऐसा कहा गया है कि-'सरिसव' मेरे भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है।

विवेचन-उपरोक्त यथार्थ उत्तर सुनने के बाद उसने छल-पूर्वक निग्रह कर के उपहास करने की दृष्टि से 'सरिसव' आदि विषयक प्रश्न पूछे। 'सरिसव' प्राकृत भाषा का श्लिष्ट शब्द है। जिसकी संस्कृत छाया होने पर दो अर्थ निकलते हैं। संस्कृत छाया इस प्रकार है-'सर्षप' और 'सदृशवया'। 'सर्षप' का अर्थ है 'सरसों' और 'सदृशवया' का अर्थ है-'समान उम्र वाला'-मित्र।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मास भक्ष्य है या अभक्ष्य

१६ प्रश्न-मासा ते भंते ! किं भक्खेया, अभक्खेया ?

१६ उत्तर-सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ?

उत्तर-से णूणं ते सोमिला ! बंभण्णएसु णएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा-दव्वमासा य कालमासा य। तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं सावणाईया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा-सावणे, भद्दवए, आसोए, कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फागुणे, चित्ते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे, ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जे ते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-अत्थमासा य धण्णमासा य । तत्थ णं जे ते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-सुवण्णमासा य रूप्पमासा य, ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जे ते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य, एवं जहा धण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! 'मास' आपके भक्ष्य है या अभक्ष्य है ?

१६ उत्तर-हे सोमिल ! 'मास' भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहते हैं कि 'मास' मेरे भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-हे सोमिल ! तुम्हारे ब्राह्मण शास्त्रों में 'मास' दो प्रकार के कहे गये हैं। यथा-द्रव्यमास और कालमास। जो कालमास हैं, वे श्रावण से ले कर आषाढ़ मास पर्यंत बारह हैं। यथा-श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़। ये श्रमण-निर्ग्रंथों के लिये अभक्ष्य हैं। द्रव्य-मास दो प्रकार का है। अर्थमाष और धान्यमाष। अर्थमाष (सोना, चांदी तोलने का माषा) दो प्रकार का है। यथा-स्वर्णमाष और रौप्यमाष। ये श्रमण-निर्ग्रंथों के लिये अभक्ष्य हैं। धान्यमाष दो प्रकार का है। यथा-शस्त्रपरिणत और अशस्त्रपरिणत, इत्यादि सभी धान्य-सरिसव के समान कहना चाहिये, यावत् इस कारण 'मास' भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है।

विवेचन-'मास' यह प्राकृत का श्लिष्ट शब्द है। इसकी संस्कृत छाया दो होती है। यथा-'माष' और 'मास'। 'माष' का अर्थ है-'उड़द' नामक धान्य विशेष और 'मास' का अर्थ है-महीना (श्रावण, भाद्रपद आदि)।

कुलत्था भक्ष्य है ?

१७ प्रश्न-कुलत्था ते भंते ! किं भक्खेया अभक्खेया ?

१७ उत्तर-सोमिला ! कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ?

उत्तर-से णूणं सोमिला ! ते बंभण्णएसु णएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, तं जहा-इत्थिकुलत्था य धण्णकुलत्था य। तत्थ णं जे ते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-कुलकण्णया इ वा कुल-वहुया इ वा कुलमाउया इ वा, ते णं समणाणं णिग्गंथाणं

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

अभक्खेया । तत्थ णं जे ते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्णसरिसवा, से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! आपके 'कुलत्था' भक्ष्य है या अभक्ष्य ?

१७ उत्तर-हे सोमिल ! 'कुलत्था' भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहते हैं कि यावत् अभक्ष्य है ?

उत्तर-हे सोमिल ! तुम्हारे ब्राह्मण शास्त्रों में 'कुलत्था' दो प्रकार की कही गई है । यथा-स्त्रीकुलत्था (कुलस्था-कुलांगना) और धान्यकुलत्था (एक प्रकार का धान्य) । स्त्रीकुलत्था तीन प्रकार की कही गई है । यथा-कुलकन्या, कुलवधू और कुलमाता । ये श्रमण-निर्ग्रंथों के लिये अभक्ष्य हैं । धान्यकुलत्था के विषय में धान्यसरिसव के समान समझना चाहिये । इसलिये कुलत्था भक्ष्य भी है और अभक्ष्य भी ।

विवेचन-'कुलत्था' प्राकृत का श्लिष्ट शब्द है ! जिसकी संस्कृत छाया दो होती है । यथा-'कुलस्था' और 'कुलत्था' । 'कुलस्था' का अर्थ है-कुलांगना-कुलीन स्त्री । 'कुलत्था' का अर्थ है-कुलथी नामक धान्य विशेष, जो मेवाड़ में विशेष रूप से होता है ।

आप एक हैं या अनेक ?

१८ प्रश्न-एगे भवं, दुवे भवं, अक्खए भवं, अव्वए भवं, अवट्ठिए भवं, अणेगभूयभावभविए भवं ?

१८ उत्तर-सोमिला ! एगे वि अहं जाव अणेगभूयभावभविए वि अहं ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जाव 'भविए वि अहं ?'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-सोमिला ! दव्वट्टयाए एगे अहं, णाणदंसणट्टयाए दुविहे अहं, पएसट्टयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्टयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं, से तेणट्ठेणं जाव भविए वि अहं ।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! आप एक हैं, दो हैं, अक्षय हैं, अव्यय हैं, अवस्थित हैं, या अनेक, भूत-भाव-भविक (भूतकाल और भविष्यत्काल के अनेक परिणामों के योग्य) हैं ?

१८ उत्तर-हे सोमिल ! मैं एक भी हूँ यावत् अनेक भूत-भाव-भविक भी हूं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहते हैं कि मैं एक हूं यावत् अनेक भूत, वर्तमान और भावी परिणाम के योग्य भी हूं ?

उत्तर-हे सोमिल ! मैं द्रव्य रूप से एक हूं । ज्ञान और दर्शन भेद से मैं दो हूं । आत्म-प्रदेश से मैं अक्षय हूँ, अव्यय हूं और अवस्थित भी हूं । उपयोग की अपेक्षा मैं अनेक भूत, वर्तमान और भावी परिणामों के योग्य हूं । इस कारण हे सोमिल ! पूर्वोक्त प्रकार से कहा गया है ।

विवेचन-इसके पश्चात् अपमान एवं उपहास आदि भाव छोड़ कर, सोमिल ने वस्तु-तत्त्व के ज्ञान की जिज्ञासा से 'आप एक है या दो' इत्यादि प्रश्न पूछे हैं । उसके मन में यह था कि भगवान् इनमें से एक पक्ष ग्रहण कर उत्तर देंगे, तो मैं दूसरा पक्ष ले कर उनके कथन को दूषित कर दूंगा ।' किन्तु भगवान् ने सभी प्रकार के दोषों से रहित स्याद्वाद शैली से उत्तर दिया कि 'मैं जीव द्रव्य की अपेक्षा एक हूँ, प्रदेशों की अपेक्षा नहीं । ज्ञान और दर्शन की अपेक्षा मैं दो हूँ । एक ही पदार्थ किसी एक स्वभाव की अपेक्षा एक हो सकता है और वही पदार्थ दूसरे दो स्वभावों की अपेक्षा दो हो सकता है । इसमें किसी प्रकार का विरोध नहीं है । क्योंकि एक ही देवदत्तादि पुरुष, एक ही समय में उन-उन अपेक्षाओं से पिता, पुत्र, भ्राता, भातृव्य (भतीजा) आदि कहला सकता है । इसलिये भगवान् ने एक अपेक्षा से अपने-आप को एक और दूसरी अपेक्षा से दो कहा । प्रदेशों के सर्वथा क्षय न होने और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आत्मा असंख्य प्रदेशात्मक होने से भगवान् ने कहा-"मैं अक्षय-अक्षत हूँ" कुछ भी प्रदेशों का व्यय न होने से मैं 'अव्यय' हूँ, अतएव मैं अवस्थित अर्थात् नित्य हूँ। आत्मा की असंख्येय प्रदेशिता कदापि नष्ट नहीं होती, अतः आत्मा नित्य है। विविध विषयों का उपयोग वाला होने से मैं 'अनेक भूत-भाव-भविक' भी हूँ अर्थात् भूतकाल और भविष्यत्काल के अनेक परिणामों के योग्य भी हूँ।

सोमिल प्रतिबोधित हुआ

१९-एत्थ णं से सोमिले माहणे संबुद्धे, समणं भगवं महावीरं० जहा खंदओ जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर० एवं 'जहा रायप्पसेणइज्जे चित्तो जाव' दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ जाव पडिगए। तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए, अभिगयजीवा० जाव विहरइ। 'भंते' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-

प्रश्न-पभू णं भंते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता० जहेव संखे तहेव णिरवसेसं जाव अंतं काहिइ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ अट्ठारसमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१९-भगवान् की वाणी सुन कर सोमिल ब्राह्मण ने प्रतिबोध पाया। उसने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना-नमस्कार किया और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बोला-'हे भगवन् ! जैसा आप कहते हैं, वह वैसा ही है।' सारा वर्णन दूसरे शतक के प्रथम उद्देशक में कथित स्कन्दक के समान जानना चाहिये। 'हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार आपके समीप अनेक राजा-महाराजा आदि हिरण्यादि का त्याग कर के मुण्डित हो कर अनगार प्रव्रज्या स्वीकार करते हैं, उस प्रकार करने में मैं समर्थ नहीं हूँ, इत्यादि सब वर्णन राजप्रश्नीय सूत्रस्थ चित सारथि के समान यावत् बारह प्रकार का श्रावक-धर्म अंगीकार करता है। श्रावक-धर्म को अंगीकार कर के श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर यावत् अपने घर गया। वह सोमिल ब्राह्मण, जीवाजीवादि तत्त्वों का ज्ञाता श्रमणोपासक बन कर यावत् विचरने लगा।

'हे भगवन्'-गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार पूछा-'क्या सोमिल ब्राह्मण आप देवानुप्रिय के पास मुण्डित हो कर अनगार प्रव्रज्या लेने में समर्थ है, इत्यादि सब वर्णन बारहवें शतक के प्रथम उद्देशक में कथित शंख श्रावक के समान है, यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगा।'

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ अठारहवें शतक का दसवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

॥ अठारहवां शतक सम्पूर्ण ॥

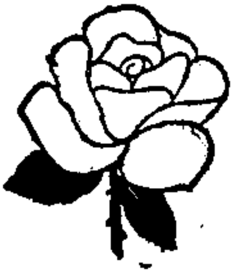

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १९

गाहा—

१ लेस्सा य २ गब्भ ३ पुढवी ४ महासवा ५ चरम ६ दीव ७ भवणा य।
८ णिव्वत्ति ९ करण १० वणचरसुरा य एगूणवीसइमे ॥

इस शतक में दस उद्देशक इस प्रकार हैं।

भावार्थ—१ लेश्या विषयक प्रथम उद्देशक है। २ गर्भ विषयक दूसरा उद्देशक है। ३ पृथ्वीकायिकादि विषयक तीसरा ४ 'महा आश्रव, महाक्रिया' आदि पृच्छा विषयक चौथा ५ चरम (अल्प स्थितिक) विषयक पांचवां, ६ द्वीप आदि विषयक छठा, ७ भवनादि विषयक सातवाँ ८ निर्वृत्ति (एकेन्द्रिय आदि जीवों की उत्पत्ति) विषयक आठवां, ९ द्रव्यादि करण विषयक नौवां और १० वनचरसुर (वाणव्यन्तरदेव) विषयक दसवाँ उद्देशक है। इस प्रकार उन्नीसवें शतक में दस उद्देशक हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १९ उद्देशक १

लेश्या

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-कइ णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

१ उत्तर-गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-एवं जहा पण्णवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो णिरवसेसो ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ एगूणवीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-'हे भगवन् ! लेश्याएँ कितनी कही गई हैं ?'

१ उत्तर-हे गौतम ! लेश्याएं छह कही गई हैं । प्रज्ञापना सूत्र के सतरहवें पद का चौथा लेश्या उद्देशक यहाँ सम्पूर्ण जानना चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन—कृष्णादि द्रव्य के सम्बन्ध मे आत्मा के परिणाम विशेष को 'लेश्या' कहते हैं । जब तक योग रहते हैं, तबतक लेश्या रहती है । योग के अभाव में चौदहवें गुण-स्थान में लेश्या भी नहीं होती । लेश्या योगान्तर्गत द्रव्य रूप है. अर्थात् मन, वचन और काया के अन्तर्गत शुभाशुभ परिणाम के कारणभूत कृष्णादि वर्ण वाले पुद्गल ही द्रव्य-लेश्या है । योगान्तर्गत पुद्गल आत्मा में रही हुई कषायों को बढ़ाते हैं । जैसे -पित्त के प्रकोप से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रोध की वृद्धि होती है।

कृष्ण-लेश्यादि के द्रव्य जब नील लेश्यादि के साथ मिलते हैं, तब वे नील लेश्यादि के स्वभाव तथा वर्णादि में परिणत हो जाते हैं। जैसे-दूध में छाछ डालने से वह दहा रूप में परिणत हो जाता है, एवं वस्त्र को मजीठ में भिगोने से वह मजीठ के वर्ण का हो जाता है। किन्तु लेश्या का यह परिणाम केवल मनुष्य और तिर्यंच की लेश्या के सम्बन्ध में ही है। देव और नारकी में द्रव्य-लेश्या अवस्थित होती है। इसलिये वहाँ अन्य लेश्या-द्रव्यों का सम्बन्ध होने पर भी अवस्थित लेश्या, सम्बध्यमान लेश्या के रूप में परिणत नहीं होती। वे अपने स्वरूप को रखती हुई सम्बध्यमान लेश्या द्रव्यों की छाया मात्र धारण करती है। जैसे-वैडूर्यमणि में लाल धागा पिरोने पर वह अपने नील वर्ण को रखते हुए धागे की लाल छाया को धारण करती है। इसी प्रकार कृष्णादि द्रव्य, अन्य लेश्या द्रव्यों के सम्बन्ध में आने पर वे अपने मूल स्वभाव और वर्णादि को नहीं छोड़ते हुए उनकी छाया (आकार मात्र) को धारण करते हैं।

इसका विशेष विस्तार प्रज्ञापना सूत्र के सतरहवें पद के चौथे उद्देशक में है।

॥ उन्नीसवें शतक का पहला उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १९ उद्देशक २

गर्भ और लश्या

१ प्रश्न-कइ णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

१ उत्तर-एवं जहा पण्णवणाए गब्भुद्देसो सो चेव णिरवसेसो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भाणियव्वो ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ एगूणवीसइमे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! लेश्याएँ कितनी कही गई हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के सतरहवें पद का छठा गर्भोद्देशक सम्पूर्ण जानना चाहिये ।।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-किस लेश्या वाला जीव, किस लेश्या वाले गर्भ को उत्पन्न करता है । इस प्रकार छह लेश्याओं के विषय में प्रश्नोत्तर किये गये हैं । इसका विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना सूत्र के सतरहवें पद के छठे उद्देशक में है ।

॥ उन्नीसवें शतक का दूसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १९ उद्देशक ३

स्थावर जीव साधारण शरीरी हैं ?

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पुढविकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति एग०२ बंधित्ता तओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?

१ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे। पुढविकाइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेय-परिणामा पत्तेयं सरीरं बंधंति, प० २ बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति । १ ।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-'हे भगवन् ! कदाचित् दो यावत् चार-पाँच पृथ्वीकायिक मिल कर एक साधारण शरीर बांधते हैं, बांध कर पीछे आहार करते हैं, फिर उस आहार का परिणमन करते हैं और फिर इसके बाद शरीर का बंध करते हैं ?'

१ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं, क्योंकि पृथ्वीकायिक जीव पृथक्-पृथक् आहार करने वाले हैं और उस आहार को पृथक्-पृथक् परिणमन करते हैं, इसलिये वे पृथक्-पृथक् शरीर बांधते हैं और इसके पश्चात् आहार करते हैं, उसे परिणमाते हैं और फिर शरीर बांधते हैं ।

पृथ्वीकाय में लेश्या, दृष्टि, ज्ञान

२ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

२ उत्तर-गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा, णीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा । २ ।

३ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ?

३ उत्तर-गोयमा ! णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी । ३ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं णाणी, अण्णाणी ?

४ उत्तर-गोयमा ! णो णाणी, अण्णाणी, णियमा दुअण्णाणी, तं जहा-मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । ४ ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों में कितनी लेश्याएँ कही गई हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! चार लेश्याएँ कही गई हैं । यथा-कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या और तेजोलेश्या ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव सम्यग्दृष्टि हैं, मिथ्यादृष्टि हैं, या सम्यग्-मिथ्यादृष्टि है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वे सम्यग्दृष्टि नहीं हैं, मिथ्यादृष्टि हैं । वे सम्यग्-मिथ्यादृष्टि भी नहीं है ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव ज्ञानी हैं या अज्ञानी ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वे ज्ञानी नहीं, अज्ञानी हैं । उन्हें दो अज्ञान अवश्य होते हैं । यथा-मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान ।

५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ?

५ उत्तर-गोयमा ! णो मणजोगी, णो वयजोगी, कायजोगी । ५ ।

६ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ?

६ उत्तर-गोयमा ! सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि । ६ ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव क्या मनोयोगी हैं, वचनयोगी हैं, या काययोगी हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ उत्तर-वे मनोयोगी नहीं, वचनयोगी भी नहीं है, एक काययोगी हैं।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव साकारोपयोगी हैं या अनाकारोपयोगी हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! वे साकारोपयोगी भी हैं और अनाकारोपयोगी भी।

७ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ?

७ उत्तर-गोयमा ! दव्वओ णं अणंतपएसियाइं दव्वाइं एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति । ७ ।

८ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा जमाहारेंति तं चिज्जंति, जं णो आहारेंति तं णो चिज्जंति, चिण्णे वा से उद्दाइ पलिसप्पइ वा ?

८ उत्तर-हंता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेंति तं चिज्जंति, जं णो जाव पलिसप्पइ वा ।

९ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाइ वा पण्णाइ वा मणोइ वा वईइ वा 'अम्हे णं आहारमाहारेमो' ?

९ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, आहारेंति पुण ते ।

१० प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाइ वा जाव वईइ वा 'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे फासे य पडिसंवेएमो ?

१० उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेएंति पुण ते ।

कठिन शब्दार्थ--चिज्जंति--चय करते हैं, सव्वप्पणयाए--सभी आत्मप्रदेशों से, सण्णाइ-संज्ञा, पण्णाइ-प्रज्ञा ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव कैसा आहार करते हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वे द्रव्य से अनन्तप्रदेशी द्रव्यों का आहार करते हैं। यह विषय प्रज्ञापना सूत्र के अट्ठाईसवें पद के प्रथम आहारोद्देशक के अनुसार यावत् 'सर्व आत्म-प्रदेशों से आहार ग्रहण करते हैं'-तक जानना चाहिये।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव जिसका आहार करते हैं, उसका चय होता है ? और जिसका आहार नहीं करते, उसका चय नहीं होता और जिसका चय हुआ है उस आहार का असार भाग बाहर निकलता है और सार भाग शरीर-इन्द्रियादिपने परिणमता है ?

८ उत्तर-हाँ, गौतम ! वे जिसका आहार करते हैं, उसका चय होता है और जिसका आहार नहीं करते, उसका चय नहीं होता यावत् सारभाग रूप आहार शरीर-इन्द्रियादिपने परिणमता है।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों को-'हम आहार करते हैं'-ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन और वचन है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् उन जीवों को 'हम आहार करते हैं'-ऐसी संज्ञादि नहीं है, तो भी वे आहार करते हैं।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों को 'हम इष्ट या अनिष्ट स्पर्श का अनुभव करते हैं'-ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन और वचन है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, तथापि वे वेदन तो करते हैं।

पृथ्वीकाय के जीव पापी हैं ?

११ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, मुसावाए, अदिण्णा० जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति ?

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

११ उत्तर-गोयमा! पाणाइवाए वि उववक्खाइज्जंति जाव मिच्छा-दंसणसल्ले वि उववक्खाइज्जंति। जेसिं पि णं जीवाणं ते जीवा एव-माहिज्जंति तेसिं पि णं जीवाणं णो विण्णाए णाणत्ते।८।

१२ प्रश्न-ते णं भंते! जीवा कओहिंतो उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति?

१२ उत्तर-एवं जहा वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ तहा भाणियव्वो।९।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन्! पृथ्वीकायिक जीव प्राणातिपात, मृषा-वाद, अदत्तादान यावत् मिथ्यादर्शन शल्य में रहे हुए हैं?

११ उत्तर-हे गौतम! वे प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य में रहे हुए हैं। जीव दूसरे जिन पृथ्वीकायिकादि जीवों की हिंसा करते हैं, उन जीवों को भी ऐसा ज्ञान नहीं है कि ये जीव हमारी हिंसा करने वाले हैं।

१२ प्रश्न-हे भगवन्! पृथ्वीकायिक जीव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं? क्या नैरयिकों से आ कर उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न?

१२ उत्तर-हे गौतम! जिस प्रकार प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद में पृथ्वीकायिकों का उत्पाद कहा है, उसी प्रकार यहां कहना चाहिये।

१३ प्रश्न-तेसि णं भंते! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?

१३ उत्तर-गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं।१०।

१४ प्रश्न-तेसि णं भंते! जीवाणं कइ समुग्घाया पण्णत्ता?

१४ उत्तर-गोयमा! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा-वेयणा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए।

१५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति, असमोहया मरंति ?

१५ उत्तर-गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति ।११।

१६ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति ?

१६ उत्तर-एवं उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए ।१२।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों की स्थिति कितने काल की कही गई है ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की कही गई है।

१४ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के कितनी समुद्घात कही गई हैं ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! तीन समुद्घात कही गई है। यथा-वेदना समुद्घात, कषाय समुद्घात और मारणान्तिक समुद्घात ।

१५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे मारणान्तिक समुद्घात कर के मरते हैं, या मारणान्तिक समुद्घात किये बिना मरते हैं ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! वे मारणान्तिक समुद्घात कर के भी मरते हैं और समुद्घात किये बिना भी मरते हैं।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव मर कर अन्तर रहित कहां जाते हैं, कहां उत्पन्न होते हैं ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद के अनुसार उनकी उद्वर्तना कहनी चाहिये।

विवेचन-यहाँ बारह द्वार कहे गये हैं। द्वार गाथा इस प्रकार है -

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिय-लेस-दिट्ठि-णाणे, जोगुवओगे तहा किमाहारो ।
पाणाइवाय-उप्पाय-ठिई, समुग्घाय-उव्वट्टी ॥

अर्थ--१ स्याद् द्वार, २ लेश्या, ३ दृष्टि, ४ ज्ञान, ५ योग, ६ उपयोग, ७ किमाहार, ८ प्राणातिपात, ९ उत्पाद, १० स्थिति, ११ समुद्घात और १२ उद्वर्तना द्वार ।

ये बारह द्वार पृथ्वीकायिक से ले कर वनस्पतिकायिक जीवों तक कहे गये हैं ।

पहला प्रश्न स्याद् द्वार की अपेक्षा किया गया है कि क्या कदाचित् अनेक पृथ्वीकायिक जीव मिल कर साधारण शरीर बांधते हैं और बाद में आहार करते हैं, तथा उसका परिणमन करते हैं और फिर शरीर का विशेष बन्ध करते हैं ? सामान्य रूप से सभी संसारी जीव प्रति समय निरन्तर आहार (पुद्गल) ग्रहण करते हैं । इसलिये प्रथम सामान्य शरीर बन्ध के समय भी आहार तो चालू ही है तथापि पहले शरीर बांधने का और पीछे आहार करने का जो प्रश्न किया गया है, वह विशेष आहार की अपेक्षा से जानना चाहिये । जीव उत्पत्ति के समय में प्रथम 'ओज' आहार करता है, फिर शरीर स्पर्श द्वारा 'लोम' आहार करता है, तदुपरान्त उसे परिणमाता है और उसके बाद विशेष-विशेष शरीर बन्ध करता है । यह प्रश्न है ।

उत्तर में कहा गया है कि पृथ्वीकायिक जीव, पृथक्-पृथक् आहार करते हैं और पृथक् परिणमाते हैं । इसलिये वे शरीर भी पृथक्-पृथक् ही बांधते हैं । वे साधारण शरीर नहीं बांधते । इसके बाद वे विशेष आहार, विशेष परिणाम और विशेष शरीर-बन्ध करते हैं ।

पृथ्वीकायिक जीवों में संज्ञा (व्यावहारिक अर्थ ग्रहण करने वाली अवग्रह रूप बुद्धि), प्रज्ञा (सूक्ष्म अर्थ को विषय करने वाली बुद्धि), मन और वचन नहीं होता । इसलिये वे परस्पर इस भेद को नहीं समझते हैं कि हम वध्य (मारे जाने वाले) हैं और ये वधिक (मारने वाले) हैं । परन्तु उनमें परस्पर प्राणातिपात क्रिया अवश्य होती है ।

पृथ्वीकायिक जीवों के आहार के विषय में प्रज्ञापना सूत्र के अट्ठाईसवें पद के प्रथम उद्देशक का अतिदेश किया गया है । क्षेत्र से वे असंख्यात प्रदेशों में रहे हुए, काल से जघन्य मध्यम या उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले और भाव से वर्ण, गन्ध, रस तथा स्पर्श वाले पुद्गल स्कन्धों का आहार करते हैं ।

पृथ्वीकायिक आदि जीवों में वचनादि का अभाव है, तथापि मृषावाद आदि की अविरति के कारण वे मृषावाद आदि में रहे हुए हैं-ऐसा जानना चाहिये ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पृथ्वीकायिक जीव नैरयिकों से आ कर उत्पन्न नहीं होते, वे तिर्यंच, मनुष्य और देवों से आ कर उत्पन्न होते हैं।

अप्कायादि के साधारण शरीरादि

१७ प्रश्न-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, एग० २ बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति ?

१७ उत्तर-एवं जो पुढविकाइयाणं गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टंति, णवरं ठिई सत्त वाससहस्साइं उक्कोसेणं, सेसं तं चेव।

१८ प्रश्न-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया० एवं चेव, णवरं उववाओ ठिई उव्वट्टणा य जहा पण्णवणाए, सेसं तं चेव। वाउकाइयाणं एवं चेव, णाणत्तं णवरं चत्तारि समुग्घाया।

१९ प्रश्न-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच वणस्सइकाइया०-पुच्छा।

१९ उत्तर-गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। अणंता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, एग० २ बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परि० २। सेसं जहा तेउकाइयाणं जाव उव्वट्टंति, णवरं आहारो णियमं छद्दिसिं, ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! कदाचित् दो, तीन, चार, या पांच

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्कायिक जीव मिल कर एक साधारण शरीर बांधते हैं और इसके पश्चात् आहार करते हैं ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकायिकों के विषय में जैसा कहा गया है, वैसा ही यहां भी-उद्वर्तना द्वार तक जानना चाहिये। विशेष में अप्कायिक जीवों की स्थिति उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की है। शेष सब पूर्ववत्।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! कदाचित् दो, तीन, चार या पांच आदि अग्निकायिक जीव इकट्ठे हो कर एक साधारण शरीर बांधते हैं, इत्यादि ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत्। विशेष यह कि उनका उत्पाद, स्थिति और उद्वर्तना प्रज्ञापना सूत्र के अनुसार जानना चाहिये। शेष सब पूर्ववत्। वायुकायिक जीवों का कथन भी इसी प्रकार है, परन्तु उनमें समुद्घात चार होती है।

१९ प्रश्न-हे भगवन् ! कदाचित् दो, तीन, चार या पांच आदि वनस्पतिकायिक जीव इकट्ठे हो कर एक साधारण शरीर बांधते हैं, इत्यादि ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। अनन्त वनस्पतिकायिक जीव मिलकर एक साधारण शरीर बांधते हैं, फिर आहार करते हैं और परिणमाते हैं, इत्यादि सब अग्निकायिकों के समान यावत् 'उद्वर्तते हैं'-तक। विशेष यह कि उनका आहार नियमतः छह दिशा का होता है। उनकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त की है। शेष सब पूर्ववत्।

विवेचन-अग्निकायिक जीव, तिर्यंच और मनुष्य में से ही आ कर उत्पन्न होते हैं। उनकी स्थिति उत्कृष्ट तीन अहोरात्र की होती है। अग्निकाय से निकल कर जीव तिर्यंचों में ही उत्पन्न होते है। लेश्या की अपेक्षा भी उनमें विशेषता है। पृथ्वीकायिक जीवों में चार लेश्या होती हैं और अग्निकायिक तथा वायुकायिक जीवों में तीन लेश्या होती हैं। वायुकायिक जीवों में वैक्रिय समुद्घात अधिक होने से चार समुद्घात होती हैं।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव लोकान्त के निष्कूटों (कोणों) में भी होते हैं। उनके तीन, चार, या पांच दिशाओं का आहार भी सम्भवित है, किन्तु यहां वनस्पतिकायिक

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

जीवों का आहार, अवश्य ही छह दिशाओं का बतलाया गया है, इसका कारण यह ज्ञात होता है कि यह सूत्र बादर निगोद (साधारण) वनस्पतिकाय की अपेक्षा सम्भवित है। उनमें अवश्य छह दिशा का आहार घटित हो सकता है। क्योंकि वे लोक के मध्यभाग में ही होते हैं, वे लोकान्त के निष्कुटों में नहीं होते।

स्थावर जीवों की अवगाहना की अल्पाबहुत्व

२० प्रश्न-एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाणं बायराणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा, ?

२० उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमणिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा १, सुहुमवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा २, सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३, सुहुमआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४, सुहुमपुढविकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५, बायरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ६, बायरतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ७, बायरआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८, बायरपुढविकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ९, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयस्स बायरणिओयस्स एएसि णं अपज्जत्तगाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १०-११, सुहुमणिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १२, तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १३, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४, सुहुमवाउ-काइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १५, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १६, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७, एवं सुहुमतेउ-काइयस्स वि १८-१९-२०, एवं सुहुमआउकाइयस्स वि २१-२२-२३, एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २४-२५-२६, एवं बायरवाउ-काइयस्स वि २७-२८-२९, एवं बायरतेउकाइयस्स वि ३०-३१-३२, एवं बायरआउकाइयस्स वि ३३-३४-३५, एवं बायरपुढवि-काइयस्स वि ३६-३७-३८, सव्वेसिं तिविहेणं गमेणं भाणियव्वं, बायरणिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३९, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४०, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१, पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४२, तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४३, तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४४।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, अपर्याप्त, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय जीवों की जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना, किसकी अवगाहना से किसकी अवगाहना अल्प, बहुत्व, तुल्य और विशेषाधिक है ?

२० उत्तर-हे गौतम ! १ अपर्याप्त सूक्ष्म निगोद की जघन्य अवगाहना सबसे अल्प है। २-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ३-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म अग्निकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ४-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ५-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ६-उससे अपर्याप्त बादर वायुकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ७-उससे अपर्याप्त बादर अग्निकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ८-उससे अपर्याप्त बादर अप्कायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। ९-उससे अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण है। १० से ११-उससे अपर्याप्त प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिक की और बादर निगोद की जघन्य अवगाहना असंख्य गुण और परस्पर तुल्य है। १२-उससे पर्याप्त सूक्ष्म निगोद की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। १३-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म निगोद की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। १४-उससे पर्याप्त सूक्ष्म निगोद की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। १५-उससे पर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। १६-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। १७-उससे पर्याप्त सूक्ष्म वायुकाय की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। १८-उससे पर्याप्त सूक्ष्म अग्निकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। १९-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म अग्निकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। २०-उससे पर्याप्त सूक्ष्म अग्निकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। २१-उससे पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। २२-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक की उत्कृष्ट

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

अवगाहना विशेषाधिक है। २३-उससे पर्याप्त सूक्ष्म अप्कायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। २४-उससे पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। २५-उससे अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। २६-उससे पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। २७-उससे पर्याप्त बादर वायुकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। २८-उससे अपर्याप्त बादर वायुकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। २९-उससे पर्याप्त बादर वायुकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३०-उससे पर्याप्त बादर अग्निकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। ३१-उससे अपर्याप्त बादर अग्निकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३२-उससे पर्याप्त बादर अग्निकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३३-उससे पर्याप्त बादर अप्कायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। ३४-उससे अपर्याप्त बादर अप्कायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३५-उससे पर्याप्त बादर अप्कायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३६-उससे पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। ३७-उससे अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३८-उससे पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ३९-उससे पर्याप्त बादर निगोद की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। ४०-उससे अपर्याप्त बादर निगोद की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ४१-उससे पर्याप्त बादर निगोद की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक है। ४२-उससे पर्याप्त प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय की जघन्य अवगाहना असंख्यात गुण है। ४३-उससे अपर्याप्त प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यात गुण है। ४४-उससे पर्याप्त प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यात गुण है।

विवेचन-पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय और निगोद, इनके सूक्ष्म और बादर भेद करने से दस भेद होते हैं। प्रत्येक वनस्पति को मिलाने से ग्यारह भेद होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इनके प्रत्येक के पर्याप्त और अपर्याप्त भेद से बाईस भेद होते हैं। इनकी जघन्य अवगाहना और उत्कृष्ट अवगाहना के भेद से ४४ भेद होते हैं। इन ४४ जीवभेदों में अवगाहना की अल्प-बहुत्व बतलाई गई है।

स्थावर शरीर की सूक्ष्म-सूक्ष्मतरता

२१ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे, कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?

२१ उत्तर-गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाए सव्वसुहुमतराए ।१।

२२ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउक्काइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे, कयरे काए सव्व-सुहुमतराए ?

२२ उत्तर-गोयमा ! वाउक्काए सव्वसुहुमे, वाउकाए सव्वसुहुम-तराए ।२।

२३ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स कयरे काए सव्वसुहुमे, कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?

२३ उत्तर-गोयमा ! तेउक्काए सव्वसुहुमे, तेउक्काए सव्वसुहुम-तराए ।३।

२४ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कयरे काए सव्वसुहुमे, कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?

२४ उत्तर-गोयमा ! आउक्काए सव्वसुहुमे, आउक्काए सव्वसुहुमतराए ।४।

कठिन शब्दार्थ-सव्वसुहुमतराए-सब से अधिक अत्यन्त सूक्ष्म ।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक-इन सब में कौन-सी काय सब से सूक्ष्म है और कौनसी सूक्ष्मतर है ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! वनस्पतिकायिक सब से सूक्ष्म और सब से सूक्ष्मतर है ।

२२ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकाय, अप्काय, अग्निकाय और वायुकाय में कौनसी काय सब से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! वायुकाय सब से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है ।

२३ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकाय, अप्काय और अग्निकाय में कौन-सी काय सब से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! अग्निकाय सब से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है ।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकाय और अप्काय में कौन-सी काय सब से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! अप्काय सब से सूक्ष्म और सूक्ष्मतर है ।

विवेचन-सूक्ष्म पृथिव्यादि चार काय की अपेक्षा वनस्पतिकाय सब से सूक्ष्म है और प्रत्येक वनस्पति की अपेक्षा सब से अधिक बादर है ।

स्थावरकाय की बादर-बादरतरता

२५ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स कयरे काए सव्वबादरे, कयरे काए सव्वबादरतराए ?

२५ उत्तर-गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वबादरे, वणस्सइकाए सव्वबादरतराए । १ ।

२६ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सव्वबादरे, कयरे काए सव्वबादरतराए ?

२६ उत्तर-गोयमा ! पुढविक्काए सव्वबादरे, पुढविकाए सव्वबादरतराए । २ ।

२७ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सव्वबादरे, कयरे काए सव्वबादरतराए ?

२७ उत्तर-गोयमा ! आउकाए सव्वबादरे, आउकाए सव्वबादरतराए । ३ ।

२८ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स कयरे काए सव्वबादरे, कयरे काए सव्वबादरतराए ?

२८ उत्तर-गोयमा ! तेउकाए सव्वबादरे, तेउकाए सव्वबादरतराए । ४ ।

कठिन शब्दार्थ-सव्वबादरतराए-सब से अधिक बादर ।

भावार्थ-२५ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकाय, अप्काय, अग्निकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय-इनमें कौन-सी काय सब से बादर और बादरतर है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२५ उत्तर-हे गौतम ! वनस्पतिकाय सब से बादर और बादरतर है।

२६ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकाय, अप्काय, अग्निकाय और वायुकाय में कौन-सी काय सब से बादर और बादरतर है ?

२६ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकाय सब से बादर और बादरतर है।

२७ प्रश्न-हे भगवन् ! अप्काय, अग्निकाय और वायुकाय में कौन-सी काय सब से बादर और बादरतर है।

२७ उत्तर-हे गौतम ! अप्काय सब से बादर और बादरतर है।

२८ प्रश्न-हे भगवन् ! अग्निकाय और वायुकाय में कौन-सी काय सब से बादर और बादरतर है ?

२८ उत्तर-हे गौतम ! अग्निकाय सबसे बादर और बादरतर है।

विवेचन-सूक्ष्म के कथन में वनस्पतिकाय को सूक्ष्म और सूक्ष्मतर बताया है। वह सूक्ष्म वनस्पतिकाय की अपेक्षा समझना चाहिये और यहाँ बादर के कथन में वनस्पतिकाय को सब से बादर और बादरतर बतलाया है, वह प्रत्येक वनस्पतिकाय की अपेक्षा समझना चाहिये।

पृथ्वीकायिक शरीर की विशालता

२९ प्रश्न-केमहालए णं भंते ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ?

२९ उत्तर-गोयमा ! अणंताणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढविसरीरे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे बायरवाउसरीरे, असंखेज्जाणं बायरवाउक्काइयाणं जावइया सरीरा से एगे बायरतेउसरीरे, असंखेज्जाणं बायरतेउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बायरआउसरीरे, असंखेज्जाणं बायरआउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बायरपुढविसरीरे। एमहालए णं गोयमा! पुढविसरीरे पण्णत्ते।

भावार्थ-२९ प्रश्न-हे भगवन्! पृथ्वीकायिक जीवों का शरीर कितना बड़ा कहा गया है?

२९ उत्तर-हे गौतम! अनन्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवों के जितने शरीर होते हैं, उतना एक सूक्ष्म वायुकाय का शरीर होता है। असंख्य सूक्ष्म वायुकायिक जीवों के जितने शरीर होते हैं, उतना एक सूक्ष्म अग्निकाय का शरीर होता है। असंख्य सूक्ष्म अग्निकाय के जितने शरीर होते हैं, उतना एक सूक्ष्म अप्काय का शरीर होता है। असंख्य सूक्ष्म अप्काय के जितने शरीर होते हैं, उतना एक सूक्ष्म पृथ्वीकाय का शरीर होता है। असंख्य सूक्ष्म पृथ्वीकाय के जितने शरीर होते हैं, उतना एक बादर वायुकाय का शरीर होता है। असंख्य बादर वायुकाय के जितने शरीर होते हैं, उतना एक बादर अग्निकाय का शरीर होता है। असंख्य बादर अग्निकाय के जितने शरीर होते हैं, उतना एक बादर अप्काय का शरीर होता है। असंख्य बादर अप्काय के जितने शरीर होते हैं, उतना एक बादर पृथ्वीकाय का शरीर होता है। हे गौतम! (अप्कायादि दूसरी कायों की अपेक्षा) इतना बड़ा पृथ्वीकाय का शरीर होता है।

विवेचन-अनन्त सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव मिल कर एक औदारिक शरीर बांधते हैं, ऐसे असंख्य औदारिक शरीरों की जितनी अवगाहना होती है, उतनी एक सूक्ष्म वायुकायिक जीव के शरीर की अवगाहना होती है। क्योंकि पहले यह बतलाया जा चुका है कि सूक्ष्म वनस्पति की अवगाहना की अपेक्षा सूक्ष्म वायुकायिक जीवों की अवगाहना असंख्यात गुण होती है। इसी प्रकार आगे-आगे तेउकाय आदि के विषय में भी समझ लेना चाहिये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चक्रवर्ती की दासी का दृष्टांत

३० प्रश्न-पुढविकाइयस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

३० उत्तर-गोयमा ! से जहाणामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलवं जुगवं जुवाणी अप्पायंका० वण्णओ जाव णिउणसिप्पोवगया, णवरं चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचियगत्त-काया ण भण्णइ, सेसं तं चेव जाव णिउणसिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेणं वइरामएणं वट्टावरएणं एगं महं पुढविकाइयं जउगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय प० २ पडिसंखि-विय पडि० २ जाव 'इणामेव' त्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो उप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगइया पुढविकाइया आलिद्धा अत्थेगइया पुढविकाइया णो आलिद्धा, अत्थेगइया संघट्टि (ट्टि) या अत्थेगइया णो संघट्टि (ट्टि) या, अत्थेगइया परियाविया अत्थेगइया णो परिया-विया, अत्थेगइया उद्दविया अत्थेगइया णो उद्दविया, अत्थेगइया पिट्ठा अत्थेगइया णो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ।

कठिन शब्दार्थ-**वण्णगपेसिया**-चन्दन घिसने वाली, **तिक्खाए**-तीक्ष्ण-कठोर, **वइरा-मईए**-वज्रमयी, **णिउणसिप्पोवगया**-कला में कुशल, **चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचियगत्त-काया**-चर्मेष्ट दुघण और मुष्टिकादि व्यायाम से दृढ़ हुए शरीर युक्त ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-३० प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव के शरीर की कितनी बड़ी अवगाहना कही गई है ?

३० उत्तर-हे गौतम ! जैसे चातुरन्त (चारों दिशा के स्वामी) चक्रवर्ती राजा की चन्दन घिसने वाली दासी हो, जो तरुणी, बलवती, युगवती (सुषम दुःषमा आदि तीसरे चौथे आरे में उत्पन्न हुई) वयप्राप्त, नीरोग इत्यादि वर्णन युक्त यावत् अत्यन्त कला-कुशल हो। (चर्मेष्ट, द्रुघण और मौष्टिक आदि व्यायाम के साधनों से मजबूत बने हुए शरीर वाली, इत्यादि विशेषण यहां नहीं कहने चाहिये। क्योंकि इन व्यायाम के साधनों की प्रवृत्ति स्त्री के लिये असम्भव एवं अयोग्य होने से इन विशेषणों के कथन का निषेध किया गया है) ऐसी दासी, चूर्ण पीसने की वज्रमयी कठोर शिला पर, वज्रमय कठोर शिलापुत्रक (लोढ़े) से लाख के गोले परिमाण एक बड़े पृथ्वीकाय का पिण्ड ले कर बारंबार इकट्ठा करती हुई और संक्षेप करती हुई पीसे यावत्-'यह मैं अभी तुरन्त पीस देती हूं'-ऐसा विचार कर इक्कीस बार पीसे, तो हे गौतम ! उनमें से कुछ पृथ्वीकायिक जीवों का उस शिला और शिलापुत्रक (पीसने का लोढ़ा) का मात्र स्पर्श होता है और कुछ का स्पर्श भी नहीं होता। कुछ का संघर्ष होता है और कुछ का संघर्ष भी नहीं होता, कुछ को पीड़ा होती है और कुछ को पीड़ा नहीं होती। कुछ मरते हैं और कुछ नहीं मरते तथा कुछ पीसे जाते हैं और कुछ पीसे भी नहीं जाते। हे गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव के शरीर की इतनी बड़ी (सूक्ष्म) अवगाहना होती है।

स्थावर जीवों की पीड़ा का उदाहरण

३१ प्रश्न-पुढविकाइए णं भंते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३१ उत्तर-गोयमा ! से जहाणामए-केइ पुरिसे तरुणे बलवं जाव णिउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुण्णं जराजज्जरियदेहं जाव दुब्बलं किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणिज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेणं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहए समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? अणिट्ठं समणाउसो ! तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स वेयणाहिंतो पुढविकाइए अक्कंते समाणे एत्तो अणिट्ठतरियं चेव अकंततरियं जाव अमणामतरियं चेव वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।

३२ प्रश्न-आउयाए णं भंते ! संघट्टिए समाणे केरिसियं वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।

३२ उत्तर-गोयमा ! जहा पुढविकाइए एवं चेव, एवं तेऊयाए वि, एवं वाऊयाए वि, एवं वणस्सइकाए वि जाव विहरइ ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ एगूणवीसइमे सए तईओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-**अक्कंते**-आक्रान्त, **जमलपाणिणा**-दोनों हाथों से-मुष्टि से, **किलंत**-क्लान्त, **जराजज्जरियदेहं**-जरा से जर्जरित शरीर वाला, **मुद्धाणंसि**-मस्तक पर ।

भावार्थ-३१ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव को आक्रान्त किया जाने पर वह कैसी पीड़ा का अनुभव करता है ?

३१ उत्तर-'हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष, युवक बलवान् यावत् अत्यन्त कला-कुशल हो, वह किसी बुढ़ापे से जीर्ण शरीरी पुरुष को जो जरा से जर्जरित

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शरीर वाला हो यावत् दुर्बल और क्लान्त (रोग से पीड़ित) हो, उसके सिर पर दोनों मुष्टि से प्रहार करे, तो उस पुरुष द्वारा मुष्टि-प्रहार किया जाने पर वह वृद्ध पुरुष कैसी पीड़ा का अनुभव करता है ?'

'हे भगवन् ! यह वृद्ध अत्यन्त अनिष्ट पीड़ा का अनुभव करता है ।'

हे गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव को आक्रान्त किया जाने पर वह उस वृद्ध पुरुष की वेदना की अपेक्षा अधिक अनिष्टतर, अकान्ततर (अप्रिय) यावत् अमनामतर (अत्यन्त अमनोज्ञ) पीड़ा का अनुभव करता है ।

३२ प्रश्न-हे भगवन् ! जब अप्कायिक जीव का संघट्टा (संघर्ष-स्पर्श) होता है तब वह कैसी वेदना का अनुभव करता है ?

३२ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकाय के समान अप्काय का भी जानो। इसी प्रकार अग्निकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय के लिए भी जानना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-पृथ्वीकायिकादि जीवों को किस प्रकार की पीड़ा होती है, यह छद्मस्थ पुरुषों के इन्द्रिय-गोचर नहीं हो सकती और न उनके ज्ञान का विषय हो सकती है । इसलिये भगवान् ने जरा-जीर्ण वृद्ध पुरुष का दृष्टान्त दे कर बतलाया है । परन्तु पृथ्वीकायिकादि के जीव उस वृद्ध पुरुष की अपेक्षा भी अत्यन्त अनिष्ट महावेदना को वेदते हैं ।

॥ उन्नीसवें शतक का तीसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १९ उद्देशक ४

नैरयिक के महास्रवादि चतुष्क

१ प्रश्न–सिय भंते ! णेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ?

१ उत्तर–गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

२ प्रश्न–सिय भंते ! णेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ?

२ उत्तर–हंता सिया ।

३ प्रश्न–सिय भंते ! णेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महाणिज्जरा ?

३ उत्तर–गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

४ प्रश्न–सिय भंते ! णेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ?

४ उत्तर–गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिक जीव, महास्रव, महाक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

१ उत्तर–हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक महास्रव, महाक्रिया, महावेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

२ उत्तर-हाँ, गौतम ! ऐसे हैं ?

३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक महास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

३ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक महास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

५ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ?

५ उत्तर-गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

६ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ?

६ उत्तर-गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

७ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महाणिज्जरा ?

७ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

८ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

८ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक महास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव महास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव महास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव महास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

८ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

९ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ?

९ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

१० प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ?

१० उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

११ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महाणिज्जरा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

११ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

१२ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ?

१२ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पाश्रव, महाक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

९ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, महाक्रिया, महावेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

१० उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ?

११ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना महानिर्जरा वाले हैं ?

११ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

२३ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ?

२३ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

१४ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पणिज्जरा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१४ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

१५ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्प-वेयणा महाणिज्जरा ?

१५ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे ।

१६ प्रश्न-सिय भंते ! णेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्प-वेयणा अप्पणिज्जरा ?

१६ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे । एए सोलस भंगा ।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

१४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

१५ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव अल्पास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । ये सोलह भंग हैं ।

विवेचन—जीवों के शुभाशुभ परिणामों के अनुसार आस्रव, क्रिया, वेदना और निर्जरा, ये चार बातें होती हैं । परिणामों की तीव्रता के कारण ये चार बातें 'महान्' और परिणामों की मन्दता के कारण 'अल्प' रूप में परिणत होती हैं । किन जीवों में किसकी 'महत्ता' और किसकी 'अल्पता' पाई जाती है—यह बताने के लिए 'आस्रव, क्रिया,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वेदना और निर्जरा' इन चार के चतुःसंयोगी सोलह भंग बनते हैं। वे इस प्रकार हैं—

१ महास्रव, महाक्रिया, महावेदना, महानिर्जरा।
२ महास्रव, महाक्रिया, महावेदना, अल्पनिर्जरा।
३ महास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना, महानिर्जरा।
४ महास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना, अल्पनिर्जरा।
५ महास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना, महानिर्जरा।
६ महास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना, अल्पनिर्जरा।
७ महास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना, महानिर्जरा।
८ महास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना, अल्पनिर्जरा।
९ अल्पास्रव, महाक्रिया, महावेदना, महानिर्जरा।
१० अल्पास्रव, महाक्रिया, महावेदना, अल्पनिर्जरा।
११ अल्पास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना, महानिर्जरा।
१२ अल्पास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना, अल्पनिर्जरा।
१३ अल्पास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना, महानिर्जरा।
१४ अल्पास्रव, अल्पक्रिया, महावेदना, अल्पनिर्जरा।
१५ अल्पास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना, महानिर्जरा।
१६ अल्पास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना, अल्पनिर्जरा।

नैरयिक जीवों में 'महास्रव, महाक्रिया, महावेदना और अल्पनिर्जरा' यह दूसरा भंग ही पाया जाता है, क्योंकि नैरयिक जीवों के कर्मों का बन्ध होता है, इसलिए वे 'महास्रवी' हैं। उनके 'कायिकी' आदि क्रिया बहुत होती है, इसलिए वे 'महाक्रिया' वाले हैं। उनके असातावेदनीय का तीव्र उदय है, इसलिए वे महावेदना वाले होते हैं। उनमें 'अविरति परिणाम' होने से निर्जरा बहुत थोड़ी होती है, इसलिए वे 'अल्पनिर्जरा' वाले हैं। इस प्रकार यह दूसरा भंग पाया जाता है। शेष पन्द्रह भंग नैरयिकों में नहीं पाये जाते।

१७ प्रश्न—सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे। एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो, सेसा पण्णरस भंगा खोडेयव्वा, एवं जाव थणियकुमारा।

१८ प्रश्न-सिय भंते! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महाणिज्जरा ?

१८ उत्तर-हंता सिया।

प्रश्न-एवं जाव सिय भंते! पुढविकाइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा ?

उत्तर-हंता सिया, एवं जाव मणुस्सा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ एगूणवीसइमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ—खोडेयव्वा—निषेध करना चाहिये।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमार महास्रव, महाक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। इस प्रकार यहां केवल चौथा भंग कहना चाहिये। शेष पन्द्रह भंगों का निषेध करना चाहिये। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमारों तक जानना चाहिये।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव महास्रव, महाक्रिया, महावेदना और महानिर्जरा वाले हैं ?

१८ उत्तर-हाँ, गौतम ! है। इस प्रकार यावत्।

प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव अल्पास्रव, अल्पक्रिया, अल्पवेदना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और अल्पनिर्जरा वाले हैं ?

उत्तर-हाँ गौतम ! हैं। इस प्रकार यावत् मनुष्यों तक जानना चाहिये। वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक को असुरकुमार के समान जानना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन---भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक देवों में 'महास्रव, महाक्रिया, अल्पवेदना, अल्पनिर्जरा'-यह चौथा भंग पाया जाता है। इनमें असातावेदनीय का उदय प्रायः नहीं होने से वेदना भी अल्प है और निर्जरा भी अल्प है। इस प्रकार देवों में यह एक भंग पाया जाता है। शेष पन्द्रह भंग इनमें नहीं पाये जाते।

एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय तेइंद्रिय, चतुरिन्द्रिय, तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य, इन सभी में परिणामानुसार सोलह-सभी-भंग पाये जाते हैं।

॥ उन्नीसवें शतक का चौथा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १९ उद्देशक ५

चरम-परम नैरयिक के कर्म-क्रियादि

१ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! चरिमा वि णेरइया परमा वि णेरइया ?

१ उत्तर-हंता अत्थि।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ प्रश्न-से णूणं भंते ! चरमेहिंतो णेरइएहिंतो परमा णेरइया महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयण-तरा चेव, परमेहिंतो वा णेरइएहिंतो चरमा णेरइया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव अप्पासवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ?

२ उत्तर-हंता गोयमा ! चरमेहिंतो णेरइएहिंतो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमेहिंतो वा णेरइएहिंतो चरमा णेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जाव 'अप्पवेयणतरा चेव' ?

उत्तर-गोयमा ! ठितिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव 'अप्पवेयणतरा चेव' ।

कठिन शब्दार्थ--चरिमा--अल्प स्थिति वाले, परमा—महास्थिति वाले ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक चरम (अल्प आयुष्य वाले) भी हैं और परम (अधिक आयुष्य वाले) भी हैं ?

१ उत्तर-हां, गौतम ! हैं ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! चरम नैरयिकों की अपेक्षा परम नैरयिक महाकर्म वाले, महाक्रिया वाले, महास्रव वाले और महावेदना वाले हैं ? तथा परम नैरयिकों की अपेक्षा चरम नैरयिक अल्प कर्म, अल्पक्रिया, अल्पास्रव और अल्पवेदना वाले हैं ?

२ उत्तर-हां, गौतम ! चरम नैरयिकों की अपेक्षा परम नैरयिक यावत् महावेदना वाले हैं और परम नैरयिकों की अपेक्षा चरम नैरयिक यावत् अल्प-वेदना वाले हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न-हे भगवन् ! क्या कारण है कि यावत् परम नैरयिकों की अपेक्षा चरम नैरयिक यावत् अल्पवेदना वाले हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! स्थिति (आयुष्य) की अपेक्षा यावत् अल्पवेदना वाले होते हैं।

३ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! चरमा वि असुरकुमारा परमा वि असुरकुमारा ० ?

३-उत्तर-एवं चेव, णवरं विवरीयं भाणियव्वं, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा। सेसं तं चेव जाव थणियकुमारा ताव एवमेव। पुढविकाइया जाव मणुस्सा एए जहा णेरइया। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा।

कठिन शब्दार्थ-विवरीयं-विपरीत।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमार चरम भी होते हैं और परम भी होते हैं ?

३ उत्तर-हां, गौतम ! होते हैं, इसी प्रकार। किंतु यहां पूर्व कथन से विपरीत कहना चाहिये, क्योंकि परम असुरकुमार (अशुभ कर्म की अपेक्षा) अल्पकर्म वाले हैं और चरम असुरकुमार महाकर्म वाले है। शेष पूर्ववत्, यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिए। जिस प्रकार नैरयिक के लिए कहा गया है, उसी प्रकार पृथ्वीकायिकादि यावत् मनुष्य तक वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक असुरकुमार के समान हैं।

४ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ?

४ उत्तर-गोयमा ! दुविहा वेयणा पण्णत्ता। तं जहा-णिदा य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अणिदा य ।

५ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं णिदायं वेयणं वेयंति, अणिदायं० ?

उत्तर-जहा पण्णवणाए जाव 'वेमाणिय' त्ति ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ❀

॥ एगूणवीसइमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! वेदना कितने प्रकार की कही गई है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वेदना दो प्रकार की कही गई है । यथा-निदा (ज्ञानपूर्वक-उपयोगपूर्वक वेदी जाने वाली) और अनिदा (अज्ञान-अनजानपूर्वक वेदी जाने वाली) ।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक निदा वेदना वेदते हैं या अनिदा वेदना ?

५ उत्तर-हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के पैंतीसवें पद के अनुसार । इसी प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-यहाँ 'चरम' का अर्थ है-अल्प स्थिति (आयुष्य) वाले और 'परम' का अर्थ है-दीर्घ स्थिति (लम्बी आयुष्य) वाले ।

जिन नैरयिकों की स्थिति दीर्घ (लम्बी) होती है, उनके अल्प स्थिति वाले नैरयिकों की अपेक्षा अशुभ कर्म अधिक होते हैं, इसलिए वे महाकर्म वाले, महाक्रिया वाले, महास्रव वाले और महावेदना वाले होते हैं जिन नैरयिकों की स्थिति अल्प होती है, उनके दीर्घ स्थिति वाले नैरयिकों की अपेक्षा अशुभकर्मादि अल्प होने से वे अल्पकर्म, अल्पक्रिया, अल्पास्रव और अल्पवेदना वाले होते हैं ।

ज्ञानपूर्वक अर्थात् उपयोगपूर्वक वेदी जाने वाली वेदना को शास्त्रीय भाषा में 'निदा'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वेदना कहते हैं और अज्ञानपूर्वक अर्थात् अनजानपने में वेदी जाने वाली वेदना को 'अनिदा' वेदना कहते हैं।

नैरयिक जीवों को दोनों प्रकार की वेदना होती है। जो संज्ञी जीवों से आ कर उत्पन्न होते हैं, वे 'निदा' वेदना वेदते हैं और जो असंज्ञी से आ कर उत्पन्न होते हैं, वे 'अनिदा' वेदना वेदते हैं। इस प्रकार असुरकुमार आदि देवों के विषय में भी जानना चाहिये। पृथ्वीकायिक आदि से ले कर चतुरिन्द्रिय जीवों तक केवल 'अनिदा' वेदना वेदते हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य और वाणव्यन्तर—ये नैरयिकों के समान दोनों प्रकार की वेदना वेदते हैं। ज्योतिषी और वैमानिक भी दोनों प्रकार की वेदना वेदते हैं, किन्तु दूसरों की अपेक्षा उनके कारण में अन्तर है। जो मायी-मिथ्यादृष्टि देव हैं, वे 'अनिदा' वेदना वेदते हैं और जो अमायी-समदृष्टि देव हैं, वे 'निदा' वेदना वेदते हैं।

॥ उन्नीसवें शतक का पाँचवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १९ उद्देशक ६

द्वीप-समुद्र

१ प्रश्न--कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केवइया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किंसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ?

१ उत्तर--एवं जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देसो सो चेव इह वि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जोइसियमंडिउद्देसगवज्जो भाणियव्वो जाव परिणामो, जीवउववाओ, जाव अणंतखुत्तो ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ❀

॥ एगूणवीसइसे सए छट्ठओ उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! द्वीप और समुद्र कहाँ और कितने हैं ? हे भगवन् ! द्वीप-समुद्रों का आकार कैसा कहा गया है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति में ज्योतिष्क-मण्डित उद्देशक को छोड़ कर, द्वीप-समुद्रोद्देशक यावत् 'परिणाम,' 'जीवों का उत्पाद यावत् अनन्त बार, तक जानना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के द्वीप-समुद्रोद्देशक में ज्योतिषी मण्डल का भी वर्णन किया गया है, किन्तु उसे यहाँ नहीं कहना चाहिये ।

स्वयम्भूरमण समुद्र तक असंख्यात द्वीप और समुद्र हैं । इनमें से जम्बूद्वीप का संस्थान चन्द्रमा या स्थाली के समान गोल हैं । शेष सब द्वीप समुद्रों का संस्थान चूड़ी के समान गोल है । क्योंकि ये एक-दूसरे को चारों ओर से घेरे हुए हैं । इनमें जीव पहले अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं ।

॥ उन्नीसवें शतक का छठा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १९ उद्देशक ७

देवावास रत्नमय हैं

१ प्रश्न-केवइया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

१ उत्तर-गोयमा ! चउसट्ठिं असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

२ प्रश्न-ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?

२ उत्तर-गोयमा ! सव्वरयणामया, अच्छा, सण्हा, जाव पडिरूवा। तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति, विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति। सासया णं ते भवणा दव्वट्ठयाए; वण्णपज्जवेहिं, जाव फासपज्जवेहिं असासया, एवं जाव थणियकुमारावासा।

कठिन शब्दार्थ-किंमया—किससे बने।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमारों के कितने लाख भवनावास कहे गये हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! असुरकुमारों के चौसठ लाख भवनावास कहे गये हैं।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे भवनावास किंमय (किससे बने हुए) हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! वे भवनावास सर्व रत्नमय, स्वच्छ, श्लक्ष्ण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(कोमल) यावत् प्रतिरूप (सुन्दर) हैं। वहां बहुत से जीव और पुद्गल उत्पन्न होते हैं और विनष्ट होते हैं, चवते हैं, उत्पन्न होते हैं। वे भवन द्रव्यार्थिक रूप से शाश्वत हैं और वर्ण-पर्यायों यावत् स्पर्श-पर्यायों की अपेक्षा अशाश्वत हैं। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमारों तक जानना चाहिये।

३ प्रश्न-केवइया णं भंते ! वाणमंतरभोमेज्जणयरावाससय-सहस्सा पण्णत्ता ?

३ उत्तर-गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरभोमेज्जणयरावाससय-सहस्सा पण्णत्ता।

४ प्रश्न-ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?

४ उत्तर-सेसं तं चेव।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! वाणव्यन्तर देवों के भूमि के अन्तर्गत कितने लाख नगर कहे गये हैं ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वाणव्यन्तरों के भूमि के अन्तर्गत असंख्यात लाख नगर कहे गये हैं।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! वाणव्यन्तर देवों के वे नगर किमय हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् !

५ प्रश्न-केवइया णं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा-पुच्छा।

५ उत्तर-गोयमा ! असंखेज्जा जोइसिय०।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

६ प्रश्न-ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?

६ उत्तर-गोयमा ! सव्वफालिहामया, अच्छा, सेसं तं चेव ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! ज्योतिषी देवों के कितने लाख विमान कहे गये हैं ।

५ उत्तर-हे गौतम ! असंख्य लाख विमान कहे गये हैं ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे विमानावास किस वस्तु से बने हुए हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! वे विमानावास सर्व स्फटिक रत्नमय है और स्वच्छ हैं । शेष सब पूर्ववत् ।

७ प्रश्न-सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवइया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

७ उत्तर-गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

८ प्रश्न-ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?

८ उत्तर-गोयमा ! सव्वरयणामया, अच्छा, सेसं तं चेव जाव अणुत्तरविमाणा, णवरं जाणेयव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा ।

❀ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ❀

॥ एगूणवीसइमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! सौधर्मकल्प में कितने लाख विमानावास कहे गये हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वहां बत्तीस लाख विमानावास कहे गये हैं ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे विमानावास किंमय हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

८ उत्तर-हे गौतम ! वे सर्व रत्नमय और स्वच्छ हैं। शेष सब पूर्ववत् यावत् अनुत्तर विमानों तक कहना चाहिये। विशेष यह है कि जहां जितने भवन या विमान हों उतने कहना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ उन्नीसवें शतक का सातवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १९ उद्देशक ८

जीव-निर्वृति आदि

१ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! जीवणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१ उत्तर-गोयमा ! पंचविहा जीवणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-एगिंदियजीवणिव्वत्ती जाव पंचिंदियजीवणिव्वत्ती।

२ प्रश्न-एगिंदियजीवणिव्वत्ती णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?

२ उत्तर-गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा-पुढविकाइय-एगिंदियजीवणिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिंदियजीवणिव्वत्ती।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३ प्रश्न-पुढविकाइयएगिंदियजीवणिव्वत्ती णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?

३ उत्तर-गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-सुहुमपुढविकाइय-एगिंदियजीवणिव्वत्ती य बायरपुढवि०, एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा वड्डगबंधो तेयगसरीरस्स, जाव-

प्रश्न-'सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पाईयवेमाणियदेवपंचिंदिय-जीवणिव्वत्ती णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?'

उत्तर-गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्ध-अणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियजीवणिव्वत्ती य अपज्जत्तगसव्वट्ठ-सिद्धाणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियजीवणिव्वत्ती य ।

कठिन शब्दार्थ-णिव्वत्ती-निर्वृत्ति-रचना ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! जीव-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जीव-निर्वृत्ति पाँच प्रकार की कही गई है । यथा-एकेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति यावत् पञ्चेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! पांच प्रकार की कही गई है । यथा-पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! दो प्रकार की कही गई है । यथा-सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एकेन्द्रिय-जीव-निर्वृत्ति और बादरपृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति। इस अभिलाप द्वारा आठवें शतक के नौवें उद्देशक में बृहद् बन्धाधिकार में कथित तैजस-शरीर के भेदों के समान यहाँ भी जानना चाहिये, यावत्–

प्रश्न–हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक वैमानिक देव पञ्चेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

उत्तर–हे गौतम ! दो प्रकार की कही गई है। यथा–पर्याप्त सर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक वैमानिक देव पञ्चेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति और अपर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक वैमानिक देव पञ्चेन्द्रिय जीव-निर्वृत्ति।

विवेचन–निर्वृत्ति का अर्थ है–रचना, निष्पत्ति अर्थात् बनावट की पूर्णता। यहाँ पर जीव-निर्वृत्ति आदि का वर्णन किया गया है। जो भावार्थ से ही स्पष्ट है।

४ प्रश्न–कइविहा णं भंते ! कम्मणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

४ उत्तर–गोयमा ! अट्ठविहा कम्मणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा–णाणावरणिज्जकम्मणिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मणिव्वत्ती।

५ प्रश्न–णेरइयाणं भंते ! कइविहा कम्मणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

५ उत्तर–गोयमा ! अट्ठविहा कम्मणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा–णाणावरणिज्जकम्मणिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मणिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणियाणं।

भावार्थ–४ प्रश्न–हे भगवन् ! कर्म-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

४ उत्तर–हे गौतम ! कर्म-निर्वृत्ति आठ प्रकार की कही गई है। यथा–ज्ञानावरणीय कर्म-निर्वृत्ति यावत् अन्तराय कर्म-निर्वृत्ति।

५ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिक जीवों के कितने प्रकार की कर्म-निर्वृत्ति कही गई है ?

५ उत्तर–हे गौतम ! आठ प्रकार की कर्म-निर्वृत्ति कही गई है। यथा–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानावरणीय कर्म-निर्वृत्ति यावत् अन्तराय कर्म-निर्वृत्ति। इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त।

६ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! सरीरणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

६ उत्तर-गोयमा ! पंचविहा सरीरणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-ओरालियसरीरणिव्वत्ती जाव कम्मगसरीरणिव्वत्ती।

७ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! ० ?

७ उत्तर-एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं। णवरं णायव्वं जस्स जइ सरीराणि।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! शरीर-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! शरीर-निर्वृत्ति पाँच प्रकार की कही गई है। यथा-औदारिक शरीर निर्वृत्ति यावत् कार्मण शरीर निर्वृत्ति।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीवों के कितने प्रकार की शरीर-निर्वृत्ति कही गई है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत्। यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये, किन्तु जिसके जितने शरीर हों, उतने कहने चाहिये।

८ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! सव्विंदियणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

८ उत्तर-गोयमा ! पंचविहा सव्विंदियणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदियणिव्वत्ती जाव फासिंदियणिव्वत्ती, एवं णेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

९ प्रश्न-पुढविकाइयाणं पुच्छा ।

९ उत्तर-गोयमा ! एगा फासिंदियणिव्वत्ती पण्णत्ता, एवं जस्स जइ इंदियाणि जाव वेमाणियाणं ।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! सर्वेन्द्रिय निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! सर्वेन्द्रिय निर्वृत्ति पांच प्रकार की कही गई है । यथा-श्रोत्रेन्द्रिय-निर्वृत्ति यावत् स्पर्शनेन्द्रिय निर्वृत्ति । इस प्रकार नैरयिक यावत् स्तनितकुमार तक।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों के कितनी इन्द्रिय-निर्वृत्ति कही गई है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! एक स्पर्शनेन्द्रिय निर्वृत्ति कही गई है । इस प्रकार जिसके जितनी इन्द्रियां हों, उतनी इन्द्रिय निर्वृत्ति कहनी चाहिये । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये ।

१० प्रश्न-कइविहा णं भंते ! भासाणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१० उत्तर-गोयमा ! चउव्विहा भासाणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-सच्चाभासाणिव्वत्ती, मोसभासाणिव्वत्ती, सच्चामोसभासाणिव्वत्ती, असच्चामोसभासाणिव्वत्ती । एवं एगिंदियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! भाषा-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! भाषा-निर्वृत्ति चार प्रकार की कही गई है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यथा-सत्यभाषा निर्वृत्ति, मृषाभाषा निर्वृत्ति, सत्यमृषा भाषा निर्वृत्ति और असत्यामृषा भाषा निर्वृत्ति। इस प्रकार एकेन्द्रिय को छोड़कर यावत् वैमानिक तक-जिसके जो भाषा हो उसके उतनी भाषा निर्वृत्ति कहनी चाहिये।

११ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! मणणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

११ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहा मणणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-१ सच्चमणणिव्वत्ती जाव असच्चामोसमणणिव्वत्ती। एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! मनो-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! मनो-निर्वृत्ति चार प्रकार की कही गई है। यथा-सत्यमनो-निर्वृत्ति, यावत् असत्यामृषा मनो-निर्वृत्ति। इस प्रकार एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड़कर यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये ?

१२ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! कसायणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१२ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहा कसायणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-कोहकसायणिव्वत्ती जाव लोभकसायणिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणियाणं।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! कषाय-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! कषाय-निर्वृत्ति चार प्रकार की कही गई है। यथा-क्रोधकषाय-निर्वृत्ति यावत् लोभकषाय-निर्वृत्ति। इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१३ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! वण्णणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१३ उत्तर-गोयमा ! पंचविहा वण्णणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-कालावण्णणिव्वत्ती जाव सुकिल्लवण्णणिव्वत्ती, एवं णिरवसेसं जाव वेमाणियाणं । एवं गंधणिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाणं । रसणिव्वत्ती पंचविहा जाव वेमाणियाणं । फासणिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाणं ।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! वर्ण निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! वर्ण-निर्वृत्ति पांच प्रकार की कही गई है । यथा-कृष्णवर्ण निर्वृत्ति यावत् शुक्लवर्ण-निर्वृत्ति । इस प्रकार सब यावत् वैमानिक पर्यन्त । इसी प्रकार दो प्रकार की गन्ध-निर्वृत्ति, पांच प्रकार की रस-निर्वृत्ति और आठ प्रकार की स्पर्श-निर्वृत्ति यावत् वैमानिक पर्यन्त ।

१४ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! संठाणणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१४ उत्तर-गोयमा ! छव्विहा संठाणणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-समचउरंससंठाणणिव्वत्ती जाव हुंडसंठाणणिव्वत्ती ।

१५ प्रश्न-णेरइयाणं पुच्छा ।

१५ उत्तर-गोयमा ! एगा हुंडसंठाणणिव्वत्ती पण्णत्ता ।

१६ प्रश्न-असुरकुमाराणं पुच्छा ।

१६ उत्तर-गोयमा ! एगा समचउरंससंठाणणिव्वत्ती पण्णत्ता, एवं जाव थणियकुमाराणं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ प्रश्न-पुढविकाइयाणं पुच्छा ।

१७ उत्तर-गोयमा ! एगा मसूरचंदसंठाणणिव्वत्ती पण्णत्ता, जस्स जं संठाण जाव वेमाणियाणं ।

कठिन शब्दार्थ-मसूरचंदसंठाण-मसूर की दाल के आकार अर्थात् हुण्डक संस्थान ।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन् ! संस्थान-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! संस्थान-निर्वृत्ति छह प्रकार की कही गई है । यथा-समचतुरस्र संस्थान-निर्वृत्ति यावत् हुण्डक संस्थान-निर्वृत्ति ।

१५ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकों के संस्थान-निर्वृत्ति कितनी है ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! एक हुण्डक संस्थान-निर्वृत्ति कही गई है ।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमारों के संस्थान-निर्वृत्ति कितनी है ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! एक समचतुरस्र संस्थान-निर्वृत्ति है । इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त ।

१७ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों के संस्थान निर्वृत्ति-कितनी है ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! एक मसूर-चन्द्र (मसूर की दाल के समान) संस्थान-निर्वृत्ति कही गई है । इस प्रकार जिसके जो संस्थान हो, वह कहना चाहिये । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक ।

१८ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! सण्णाणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१८ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहा सण्णा णिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-आहारसण्णाणिव्वत्ती जाव परिग्गहसण्णाणिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणियाणं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! संज्ञा-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! संज्ञा-निर्वृत्ति चार प्रकार की कही गई है। यथा-आहारसंज्ञा-निर्वृत्ति यावत् परिग्रहसंज्ञा-निर्वृत्ति । इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त ।

१९ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! लेस्साणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१९ उत्तर-गोयमा ! छव्विहा लेस्साणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-कण्हलेस्साणिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्साणिव्वत्ती, एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जइ लेस्साओ ।

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! लेश्या-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! लेश्या-निर्वृत्ति छह प्रकार की कही गई है। यथा-कृष्णलेश्या-निर्वृत्ति यावत् शुक्ललेश्या-निर्वृत्ति । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जिसके जितनी लेश्या हो, उतनी लेश्या-निर्वृत्ति कहनी चाहिये ।

२० प्रश्न-कइविहा णं भंते ! दिट्ठीणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

२० उत्तर-गोयमा ! तिविहा दिट्ठीणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-सम्मादिट्ठीणिव्वत्ती, मिच्छादिट्ठिणिव्वत्ती, सम्मामिच्छदिट्ठीणिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जइविहा दिट्ठी ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! दृष्टि-निर्वृत्ति कितने प्रकार की कही गई है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२० उत्तर-हे गौतम ! दृष्टि-निर्वृत्ति तीन प्रकार की कही गई है। यथा-सम्यग्दृष्टि-निर्वृत्ति, मिथ्यादृष्टि-निर्वृत्ति और सम्यग्मिथ्यादृष्टि-निर्वृत्ति। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जिसके जितनी दृष्टि हो।

२१ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! णाणणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

२१ उत्तर-गोयमा ! पंचविहा णाणणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-आभिणिबोहियणाणणिव्वत्ती जाव केवलणाणणिव्वत्ती। एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं जस्स जइ णाणा।

२२ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! अण्णाणणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

२२ उत्तर-गोयमा ! तिविहा अण्णाणणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-मइअण्णाणणिव्वत्ती, सुयअण्णाणणिव्वत्ती, विभंगणाणणिव्वत्ती। एवं जस्स जइ अण्णाणा जाव वेमाणियाणं।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन् ! ज्ञान-निर्वृत्ति कितने प्रकार की है ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! ज्ञान-निर्वृत्ति पांच प्रकार की कही गई है। यथा-आभिनिबोधिक ज्ञान-निर्वृत्ति यावत् केवलज्ञान-निर्वृत्ति। इस प्रकार एकेंद्रिय को छोड़ कर यावत् वैमानिक तक जिसमें जितने ज्ञान हों।

२२ प्रश्न-हे भगवन् ! अज्ञान-निर्वृत्ति कितने प्रकार की है ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! अज्ञान-निर्वृत्ति तीन प्रकार की कही गई है। यथा-मति-अज्ञान-निर्वृत्ति, श्रुत-अज्ञान-निर्वृत्ति और विभंग-ज्ञान-निर्वृत्ति। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जिसके जितने अज्ञान हों।

२३ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! जोगणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२३ उत्तर-गोयमा ! तिविहा जोगणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-मणजोगणिव्वत्ती, वयजोगणिव्वत्ती, कायजोगणिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जइविहो जोगो ।

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! योग-निर्वृत्ति कितने प्रकार की है ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! योग-निर्वृत्ति तीन प्रकार की कही गई है। यथा-मनोयोग-निर्वृत्ति, वचनयोग-निर्वृत्ति और काययोग-निर्वृत्ति । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जिसके जितने योग हों ।

२४ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! उवओगणिव्वत्ती पण्णत्ता ?

२४ उत्तर-गोयमा ! दुविहा उवओगणिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा-सागारोवओगणिव्वत्ती, अणगारोवओगणिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं (अत्र संग्रहणीगाथे वाचनान्तरे-)

"जीवाणं णिव्वत्ती कम्मप्पगडी सरीरणिव्वत्ती ।
सव्विंदियणिव्वत्ती भासा य मणे कसाया य ।।
वण्णे गंधे रसे फासे संठाणविहि य होइ बोद्धव्वो ।
लेसा दिट्ठी णाणे उवओगे चेव जोगे य ।।"

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ❀

।। एगूणवीसइमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ।।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! उपयोग-निर्वृत्ति कितने प्रकार की है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२४ उत्तर-हे गौतम ! उपयोग-निर्वृत्ति दो प्रकार की कही गई है। यथा--साकारोपयोग-निर्वृत्ति और अनाकारोपयोग-निर्वृत्ति। इस प्रकार यावत् वैमानिकों तक।

दूसरी वाचना की दो संग्रह गाथाओं का अर्थ इस प्रकार है-१ जीव, २ कर्म-प्रकृति, ३ शरीर, ४ सर्वेन्द्रिय, ५ भाषा, ६ मन, ७ कषाय, ८ वर्ण, ९ गन्ध, १० रस, ११ स्पर्श, १२ संस्थान, १३ संज्ञा, १४ लेश्या, १५ दृष्टि, १६ ज्ञान, १७ अज्ञान, १८ योग, १९ उपयोग। इन सब की निर्वृत्ति का कथन इस उद्देशक में किया गया है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ उन्नीसवें शतक का आठवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १९ उद्देशक ९

करण के भेद

१ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?

१ उत्तर-गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा--१ दव्व-

करणे, २ खेत्तकरणे, ३ कालकरणे, ४ भवकरणे, ५ भावकरणे।

२ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! कइविहे करणे पण्णत्ते ?

२ उत्तर-गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा-दव्वकरणे जाव भावकरणे। एवं जाव वेमाणियाणं।

कठिन शब्दार्थ-करणे-करण-क्रिया का साधन।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! करण कितने प्रकार का कहा गया है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! करण पांच प्रकार का कहा गया है। यथा-द्रव्य-करण, क्षेत्रकरण, कालकरण, भवकरण और भावकरण।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकों के कितने प्रकार के करण कहे गये हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! पांच प्रकार के करण कहे गये हैं। यथा-द्रव्य-करण यावत् भावकरण। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक।

विवेचन-जिसके द्वारा क्रिया की जाय, उस क्रिया के साधन को 'करण' कहते हैं। अथवा करने रूप क्रिया को करण कहते हैं।

शंका-करण और निर्वृत्ति में क्या अन्तर है ?

समाधान-क्रिया के प्रारम्भ को करण कहते हैं और क्रिया की निष्पत्ति (समाप्ति-पूर्णता) को निर्वृत्ति कहते हैं।

द्रव्यरूप दांतली (घास काटने का हँसिया) और चाकू आदि द्रव्य-करण है। अथवा शलाका (तृण की सलाइयाँ) से चटाई आदि बनाना 'द्रव्य-करण' हैं। क्षेत्ररूप-करण अथवा शाली क्षेत्र आदि का करना अथवा किसी क्षेत्रादि में स्वाध्यायादि करना 'क्षेत्र-करण' है। कालरूप करण अथवा काल के द्वारा या किसी काल में करना 'काल-करण' है। नरकादि भव करना 'भव करण' है। औपशमिकादि भाव को करना 'भाव-करण' है।

३ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! सरीरकरणे पण्णत्ते ?

३ उत्तर-गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पण्णत्ते, तं जहा-१ आरा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लियसरीरकरणे जाव कम्मगसरीरकरणे। एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जइ सरीराणि।

४ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! इंदियकरणे पण्णत्ते ?

४ उत्तर-गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पण्णत्ते, तं जहा-सोइंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे। एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जइ इंदियाइं। एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहे, लेसाकरणे छव्विहे, दिट्ठीकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-१ इत्थिवेदकरणे, २ पुरिसवेदकरणे, ३ णपुंसगवेदकरणे। एए सव्वे णेरइयाई दंडगा जाव वेमाणियाणं जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! शरीर-करण कितने प्रकार का कहा गया है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! शरीर करण पांच प्रकार का कहा गया है। यथा-औदारिक शरीरकरण यावत् कार्मणशरीर-करण। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जिसके जितने शरीर हों, उतने शरीर-करण कहने चाहिये।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! इन्द्रिय-करण कितने प्रकार का कहा गया है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! इन्द्रिय-करण पांच प्रकार का कहा गया है। यथा-श्रोत्रेन्द्रिय-करण यावत् स्पर्शनेन्द्रिय-करण। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक जिसके जितनी इन्द्रियां हों, उसके उतने इन्द्रिय करण हैं। इस क्रम से चार प्रकार का भाषा-करण, चार प्रकार का मनकरण, चार प्रकार का कषाय-करण, सात प्रकार का समुद्घात-करण, चार प्रकार का संज्ञा-करण, छह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकार का लेश्या-करण और तीन प्रकार का दृष्टि-करण है। वेद-करण, तीन प्रकार का कहा गया है। यथा—स्त्रीवेद-करण, पुरुषवेद-करण और नपुंसक-वेदकरण। इस प्रकार नैरयिक से ले कर यावत् वैमानिक तक जिसके जो हो—वे सब कहना चाहिए।

५ प्रश्न—कइविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पण्णत्ते ?

५ उत्तर—गोयमा ! पंचविहे पाणाइवायकरणे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियपाणाइवायकरणे जाव पंचिंदियपाणाइवायकरणे। एवं णिरव-सेसं जाव वेमाणियाणं।

भावार्थ—५ प्रश्न—हे भगवन् ! प्राणातिपात-करण कितने प्रकार का कहा गया है ?

५ उत्तर—हे गौतम ! प्राणातिपात-करण पांच प्रकार का कहा गया है ? यथा—एकेन्द्रिय प्राणातिपात-करण यावत् पञ्चेन्द्रिय प्राणातिपात-करण। इस प्रकार सर्व यावत् वैमानिक पर्यन्त।

६ प्रश्न—कइविहे णं भंते ! पोग्गलकरणे पण्णत्ते ?

६ उत्तर—गोयमा ! पंचविहे पोग्गलकरणे पण्णत्ते, तं जहा—१ वण्णकरणे, २ गंधकरणे, ३ रसकरणे, ४ फासकरणे, ५ संठाण-करणे।

७ प्रश्न—वण्णकरणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

७ उत्तर—गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णकरणे जाव सुक्किल्लवण्णकरणे, एवं भेदो, गंधकरणे दुविहे, रसकरणे पंचविहे, फासकरणे अट्ठविहे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

८ प्रश्न-संठाणकरणे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

८ उत्तर-गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-परिमंडलसंठाण-करणे जाव आयतसंठाणकरणे ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ एगूणवीसइमे सए णवमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! पुद्गल-करण कितने प्रकार का कहा गया है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! पुद्गल-करण पांच प्रकार का कहा गया है । यथा-वर्णकरण, गंधकरण, रसकरण, स्पर्शकरण और संस्थानकरण ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! वर्णकरण कितने प्रकार का कहा गया है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वर्ण-करण पांच प्रकार का कहा गया है । यथा-कृष्ण वर्णकरण यावत् शुक्ल वर्ण-करण । इस प्रकार पुद्गल-करण के वर्णादि भेद कहना चाहिये । इस तरह दो प्रकार का गंध-करण, पांच प्रकार का रसकरण और आठ प्रकार का स्पर्शकरण हैं ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! संस्थान-करण कितने प्रकार का कहा गया है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! संस्थान-करण पांच प्रकार का कहा गया है । यथा-परिमण्डल संस्थान-करण यावत् आयत संस्थान-करण ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

॥ उन्नीसवें शतक का नौवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक १९ उद्देशक १०

देवों का आहार

१ प्रश्न—वाणमंतरा णं भंते ! सव्वे समाहारा० एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसओ जाव 'अप्पिड्ढिय' त्ति ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ एगूणवीसइमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ एगूणवीसइमं सयं समत्तं ॥

भावार्थ—१ प्रश्न—हे भगवन् ! सभी वाणव्यन्तर समान आहार वाले होते हैं इत्यादि प्रश्न ।

१ उत्तर—हे गौतम ! सोलहवें शतक के ग्यारहवें द्वीपकुमारोद्देशक के अनुसार यावत् 'अल्पर्द्धिक' पर्यन्त जानना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'—कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन—कृष्णलेश्या वाले वाणव्यन्तरों की अपेक्षा नीललेश्या वाले वाणव्यन्तर महर्द्धिक हैं । यावत् तेजोलेश्या वाले वाणव्यन्तर सब से महर्द्धिक हैं, इत्यादि वर्णन सोलहवें शतक के ग्यारहवें उद्देशक में, द्वीपकुमारों का किया जा चुका है, तदनुसार यहाँ भी जानना चाहिये ।

॥ उन्नीसवें शतक का दसवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

॥ उन्नीसवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २०

१ बेइंदिय २ मागासे ३ पाणवहे ४ उवचए य ५ परमाणू ।
६ अंतर ७ बंधे ८ भूमी ९ चारण १० सोवक्कमा जीवा ॥

इस शतक में दस उद्देशक इस प्रकार है—

भावार्थ—१ बेइन्द्रियादि की वक्तव्यता विषयक प्रथम उद्देशक है। २ आकाशादि अर्थ विषयक ३ प्राणातिपातादि अर्थ को प्रतिपादन करने वाला ४ इन्द्रियोपचय विषयक ५ परमाणु से ले कर अनन्त प्रदेशीस्कन्ध विषयक ६ रत्नप्रभा आदि के अन्तराल विषयक ७ जीव प्रयोगादि बन्ध विषयक ८ कर्मभूमि अकर्मभूमि विषयक ९ विद्याचारणादि विषयक और १० सोपक्रम-निरुपक्रम आयुष्य वाले जीवों का प्रतिपादन करने विषयक दसवां उद्देशक है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २० उद्देशक १

विकलेन्द्रिय के साधारण-शरीरादि

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, एगयओ० २ बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?

१ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे। बेंदिया णं पत्तेयाहारा पत्तेय-परिणामा पत्तेयसरीरं बंधंति, प० २ बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति।

२ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

२ उत्तर-गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा-कण्हलेस्सा, णीललेस्सा, काउलेस्सा। एवं जहा एगूणवीसइमे सए तेउकाइयाणं जाव 'उव्वट्टंति'। णवरं सम्मदिट्ठी वि मिच्छादिट्ठी वि, णो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो णाणा, दो अण्णाणा णियमं, णो मणजोगी, वयजोगी वि, कायजोगी वि, आहारो णियमं छद्दिसिं।

३ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वई इ वा-'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेएमो' ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेएंति पुण ते । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस-संवच्छराइं, सेसं तं चेव, एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि, णाणत्तं इंदिएसु ठिईए य, सेसं तं चेव, ठिई जहा पण्णवणाए ।

कठिन शब्दार्थ---णाणत्तं--नानात्व (भेद), इट्ठाणिट्ठे--इष्ट-अनिष्ट ।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-

हे भगवन् ! कदाचित् दो, तीन, चार या पांच बेइन्द्रिय जीव मिल कर एक साधारण-शरीर बांधते हैं, इसके पश्चात् आहार करते हैं, आहार परिणमाते हैं और इसके पश्चात् विशिष्ट शरीर बाँधते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । क्योंकि बेइन्द्रिय जीव पृथक्-पृथक् आहार करने वाले और उसका भिन्न-भिन्न परिणमन करने वाले होते हैं । इसलिये वे पृथक्-पृथक् शरीर बांधते हैं, फिर आहार करते हैं, उसे परिणमाते हैं और विशिष्ट शरीर बांधते हैं ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीवों के कितनी लेश्याएँ कही गई हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! तीन लेश्याएँ कही गई हैं । यथा-कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या । उन्नीसवें शतक के तीसरे उद्देशक में वर्णित अग्निकायिक जीवों के विषय में जो कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी यावत् 'उद्वर्तते' हैं, तक जानना चाहिये । विशेष यह है कि बेइन्द्रिय जीव सम्यग्दृष्टि भी होते हैं और मिथ्यादृष्टि भी होते हैं, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होते । उनके अवश्य दो ज्ञान या दो अज्ञान होते हैं । उनके मनोयोग नहीं होता, वचनयोग और काययोग होते हैं । वे अवश्य छह दिशा का आहार लेते हैं ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों को हम 'इष्ट और अनिष्ट रस का तथा इष्ट और अनिष्ट स्पर्श का अनुभव करते हैं'-ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन या

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वचन होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। वे रसादि का संवेदन करते हैं। उनकी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बारह वर्ष की होती है। शेष सब पूर्ववत्। इस प्रकार तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों के विषय में भी जानना चाहिये। किन्तु उनकी स्थिति और इन्द्रियों में अन्तर है। शेष सब पूर्ववत्। स्थिति प्रज्ञापना सूत्र के चौथे पद के अनुसार जाननी चाहिये।

विवेचन-तेइन्द्रिय जीवों के तीन इन्द्रियाँ होती हैं। उनकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट ४९ अहोरात्र की होती है। चतुरिन्द्रियों के चार इन्द्रियाँ होती हैं। स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट छह महीनों की होती है।

पंचेन्द्रिय जीवों के शरीरादि

४ प्रश्न-सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहारणं० ?

४ उत्तर-एवं जहा बेइंदियाणं, णवरं छल्लेसाओ, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो।

५ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णा इ वा पण्णा इ वा जाव वई इ वा-'अम्हे णं आहारमाहारेमो' ?

५ उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सण्णा इ वा पण्णा इ वा मणे इ वा वई इ वा-'अम्हे णं आहारमाहारेमो'। अत्थेगइयाणं णो एवं सण्णा इ वा जाव वई इ वा-'अम्हे णं आहारमाहारेमो,' आहारेंति पुण ते।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! कदाचित् दो, तीन, चार या पांच आदि पञ्चेन्द्रिय मिल कर एक साधारण-शरीर बांधते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

४ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् बेइन्द्रियों के समान । विशेषता यह कि इनके छहों लेश्याएँ और तीनों दृष्टियां होती हैं । चार ज्ञान और तीन अज्ञान भजना (विकल्प) से होते हैं । तीन योग होते हैं ।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों को-'हम आहार ग्रहण करते हैं'-ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन और वचन होता है ?

५ उर-हे गौतम ! कितने ही जीवों को (संज्ञी जीवों को)-'हम आहार करते हैं'-ऐसी संज्ञा, प्रज्ञा, मन और वचन होता है और कितने ही जीवों को (असंज्ञी जीवों को) 'हम आहार ग्रहण करते हैं'-ऐसी संज्ञा यावत् वचन नहीं होता, परन्तु वे आहार ग्रहण करते हैं ।

विवेचन--पञ्चेन्द्रिय जीवों में मतिज्ञान आदि चार ज्ञान होते हैं । केवलज्ञान अनिन्द्रियों को होता है ।

'हम आहार ग्रहण करते हैं'-इस प्रकार का ज्ञान, संज्ञी जीवों को होता है, असंज्ञी जीवों को नहीं ।

६ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णा इ वा जाव वई इ वा-'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गंधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेएमो' ?

६ उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइयाणं एवं सण्णा इ वा जाव वई इ वा-'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे, जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेएमो,' अत्थेगइयाणं णो एवं सण्णा इ वा जाव वई इ वा-'अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेएमो, पडिसंवेएंति पुण ते ।'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों को-'हम इष्ट या अनिष्ट शब्द रूप, गन्ध, रस और स्पर्श का अनुभव करते हैं'-ऐसी संज्ञा यावत् वचन होता है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! हम इष्ट या अनिष्ट शब्द यावत स्पर्श का अनुभव करते हैं-ऐसी संज्ञा यावत् वचन कई (संज्ञी) जीवों को होता है और कई (असंज्ञी) जीवों को नहीं होता, परन्तु वे शब्द आदि का संवेदन करते हैं।

७ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति० ?

७ उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइया पाणाइवाए वि उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जंति, अत्थेगइया णो पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, णो मुसा० जाव णो मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति। जेसिं पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसिं पि णं जीवाणं अत्थेगइयाणं विण्णाए णाणत्ते, अत्थेगइयाणं णो विण्णाए णाणत्ते उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धाओ, ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, छस्समुग्घाया केवलिवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छंति जाव सव्वट्ठसिद्धं इ, सेसं जहा बेइंदियाणं।

कठिन शब्दार्थ--उवक्खाइज्जंति-कहे जाते हैं।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव प्राणातिपात में रहे हुए हैं, इत्यादि कहा जाता है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! उन जीवों में से कई प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य में रहे हुए हैं-ऐसा कहा जाता है और कई जीव प्राणातिपात

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मृषावाद यावत् मिथ्यादर्शनशल्य में नहीं रहे हुए हैं–ऐसा कहा जाता है। वे जिन जीवों का प्राणातिपात करते हैं, उन जीवों में से भी कई जीवों को–'हम मारे जाते हैं और ये हमें मारने वाले हैं'–इस प्रकार का ज्ञान होता है और कई जीवों को इस प्रकार का ज्ञान नहीं होता। उन जीवों का उत्पाद सर्व जीवों से यावत् सर्वार्थसिद्ध से भी होता है। स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की होती है। उनमें केवली-समुद्घात के सिवाय छह समुद्घात होती हैं। वे मर कर सर्वत्र यावत् सर्वार्थसिद्ध तक जाते हैं। शेष बेइंद्रियों के समान जानना चाहिये।

८ प्रश्न–एएसि णं भंते ! बेइंदियाणं जाव पंचिंदियाणं य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

८ उत्तर–गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ–८ प्रश्न–हे भगवन् ! पूर्वोक्त बेइन्द्रिय यावत् पञ्चेन्द्रिय जीवों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ?

८ उत्तर–हे गौतम ! सब से थोड़े पञ्चेन्द्रिय जीव हैं, उनसे चतुरिन्द्रिय जीव विशेषाधिक हैं, उनसे तेइन्द्रिय जीव विशेषाधिक हैं और उनसे बेइन्द्रिय जीव विशेषाधिक हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'–ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन—असंयत जीव प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य वाले होते हैं और संयत जीव प्राणातिपातादि से रहित होते हैं।

'हम वध्य हैं और ये वधिक हैं अर्थात् हम मारे जाते हैं और ये हमें मारने वाले हैं'—ऐसा ज्ञान, संज्ञी जीवों को होता है, असंज्ञी जीवों को नहीं।

॥ बीसवें शतक का पहला उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २० उद्देशक २

लोकाकाश-अलोकाकाश

१ प्रश्न—कइविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?

१ उत्तर—गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे य अलोयागासे य।

२ प्रश्न—लोयागासे णं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा ?

२ उत्तर—एवं जहा बिइयसए अत्थिउद्देसे तह चेव इह वि भाणियव्वं, णवरं अभिलावो जाव 'धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं चिट्ठइ,' एवं जाव पोग्गलत्थिकाए ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! आकाश कितने प्रकार का कहा गया है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! दो प्रकार का कहा गया है । यथा-लोकाकाश और अलोकाकाश ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! लोकाकाश, जीव रूप है या जीव देश रूप है, इत्यादि प्रश्न ?

२ उत्तर-हे गौतम ! दूसरे शतक के दसवें अस्ति-उद्देशक के अनुसार यहां भी जानना चाहिये । विशेष में यह अभिलाप भी यहाँ कहना चाहिये-

प्रश्न-हे भगवन् ! धर्मास्तिकाय कितना बड़ा है ?

उत्तर-हे गौतम ! धर्मास्तिकाय लोकरूप, लोकमात्र, लोकप्रमाण, लोकस्पृष्ट और लोक को अवगाह कर रहा हुआ है-' इस प्रकार यावत् पुद्गलास्तिकाय तक जानना चाहिये ।

३ प्रश्न-अहेलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं ओगाढे ?

३ उत्तर-गोयमा ! साइरेगं अद्धं ओगाढे, एवं एएणं अभिलावेणं जहा बिइयसए जाव 'ईसिपब्भारा णं भंते ! पुढवी लोयागासस्स किं संखेज्जइभागं० ओगाढा-पुच्छा । गोयमा ! णो संखेज्जइभागं ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, णो संखेज्जे भागे ओगाढा, णो असंखेज्जे भागे ओगाढा, णो सव्वलोयं ओगाढा ।' सेसं तं चेव ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! अधोलोक, धर्मास्तिकाय के कितने भाग को अवगाहित कर रहा हुआ है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! कुछ अधिक अर्द्ध भाग को अवगाहित कर रहा हुआ है । इस प्रकार इस अभिलाप द्वारा दूसरे शतक के दसवें उद्देशक के अनु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सार जानना चाहिये ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी लोकाकाश के संख्यातवें भाग या असंख्यातवें भाग आदि अवगाहित कर रही हुई है ?

उत्तर-हे गौतम ! लोकाकाश के संख्यातवें भाग को अवगाहित नहीं किया है, किन्तु असंख्यातवें भाग को अवगाहित किया है । संख्यात और असंख्यात भागों को भी अवगाहित नहीं किया है और सर्वलोक को भी अवगाहित नहीं किया है । शेष सब पूर्ववत् ।

पंचास्तिकाय के अभिवचन

४ प्रश्न-धम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवइया अभिवयणा पण्णत्ता ?

४ उत्तर-गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा-धम्मे इ वा धम्मत्थिकाये इ वा पाणाइवायवेरमणे इ वा मुसावायवेरमणे इ वा एवं जाव परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, इरियासमिई इ वा, भासासमिई इ वा, एसणासमिई इ वा, आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिई इ वा, उच्चार-पासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिई इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ।

कठिन शब्दार्थ-अभिवयणा-नाम ।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! धर्मास्तिकाय के अभिवचन (अभि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धायक शब्द) कितने कहे गये हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! अनेक अभिवचन कहे गये हैं । यथा-धर्म, धर्मास्तिकाय, प्राणातिपात-विरमण, मृषावाद-विरमण, यावत् परिग्रह-विरमण, क्रोध-विवेक, यावत् मिथ्यादर्शनशल्य विवेक (त्याग), ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभाण्ड मात्र-निक्षेपणा-समिति, उच्चार-प्रस्रवण-खेल-जल्ल-सिंघानक-परिष्ठापनिका-समिति, मन-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति, धर्मास्तिकाय के ये सब तथा इनके समान दूसरे भी अभिवचन हैं ।

५ प्रश्न-अधम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवइया अभिवयणा पण्णत्ता ?

५ उत्तर-गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा-अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा जाव मिच्छादंसणसल्ले इ वा, इरियाअसमिई इ वा जाव उच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणियाअसमिई इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! अधर्मास्तिकाय के कितने अभिवचन कहे गये हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! अनेक अभिवचन कहे गये हैं । यथा-अधर्म, अधर्मास्तिकाय, प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य, ईर्या सम्बन्धी असमिति यावत् उच्चार-प्रस्रवण-खेल-जल्ल-सिंघानक-परिष्ठापनिका सम्बन्धी असमिति, मन-अगुप्ति, वचन-अगुप्ति, काय-अगुप्ति, अधर्मास्तिकाय के ये सब और इनके समान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्य भी अनेक अभिवचन-अधर्मास्तिकाय के हैं।

६ प्रश्न-आगासत्थिकायस्स णं-पुच्छा।

६ उत्तर-गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा-आगासे इ वा, आगासत्थिकाये इ वा, गगणे इ वा, णभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अंबरे इ वा, अंबरसे इ वा, छिड्डे इ वा, झुसिरे इ वा, मग्गे इ वा, विमुहे इ वा, अद्दे इ वा, (अट्टे इ वा) वियद्दे इ वा, आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अंतरिक्खे इ वा, सामे इ वा, उवासंतरे इ वा, अगमि इ वा, फलिहे इ वा, अणंते इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! आकाशास्तिकाय के कितने अभिवचन कहे गये है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! अनेक अभिवचन कहे गये हैं। यथा-आकाश, आकाशास्तिकाय, गगन, नभ, सम, विषम, खह, विहायस्, वीचि, विवर, अम्बर, अम्बरस (अम्ब-जल रूपी रस जिससे प्राप्त हो) छिद्र, शुषिर, मार्ग, विमुख (मुख आदि प्रारंभ से रहित), अर्द, व्यर्द, आधार, व्योम, भाजन, अन्तरिक्ष, श्याम, अवकाशान्तर, अगम, स्फटिक (स्वच्छ), अनन्त, ये सब और इनके समान अन्य भी अनेक अभिवचन-आकाशास्तिकाय के हैं।

७ प्रश्न-जीवत्थिकायस्स णं भंते ! केवइया अभिवयणा पण्णत्ता ?

७ उत्तर-गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा-जीवे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इ वा, जीवत्थिकाये इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, वेया इ वा, चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रंगणा इ वा, हिंडुए इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जंतु इ वा, जोणी इ वा, सयंभू इ वा, ससरीरी इ वा, णायए इ वा, अंतरप्पा इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स अभिवयणा ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! जीवास्तिकाय के कितने अभिवचन हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! जीवास्तिकाय के अनेक अभिवचन कहे गये हैं । यथा-जीव, जीवास्तिकाय, प्राण, भूत, सत्त्व, विज्ञ, चेता (पुद्गलों का संचय करने वाला), जेता (कर्म रूप शत्रु को जीतने वाला) आत्मा, रंगण (रागयुक्त) हिण्डुक (गमन करने वाला) पुद्गल, मानव (नया नहीं, प्राचीन-अनादि) कर्त्ता, विकर्ता, (विविध कर्मों का करने वाला) जगत् (गमनशील) जन्तु, योनि, (उत्पादक) स्वयंभूति, शरीरी, नायक, अन्तरात्मा, जीवास्तिकाय के ये और इसके समान अन्य अनेक अभिवचन हैं ।

८ प्रश्न-पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते ! पुच्छा ।

८ उत्तर-गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा-पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाये इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपए-सिए इ वा, तिपएसिए इ वा जाव असंखेज्जपएसिए इ वा, अणंतपए-सिए इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ वीसइमे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकाय के कितने अभिवचन हैं?

८ उत्तर-हे गौतम ! पुद्गलास्तिकाय के अनेक अभिवचन कहे गये हैं। यथा-पुद्गल, पुद्गलास्तिकाय, परमाणुपुद्गल, द्विप्रदेशी, त्रिप्रदेशी यावत् असंख्यात प्रदेशी और अनन्त प्रदेशी-ये और इसके समान अन्य अनेक अभिवचन हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-पर्यायवाची शब्दों को 'अभिवचन' कहते हैं। यहां यह प्रश्न किया गया है कि 'धर्मास्तिकाय' शब्द के द्वारा कहे जाने वाले अर्थ के वाचक कितने शब्द हैं? इसका उत्तर यह है कि धर्मास्तिकाय शब्द के प्रतिपाद्य दो अर्थ है-धर्मास्तिकाय द्रव्य और सामान्य धर्म तथा विशेष धर्म। धर्मास्तिकाय द्रव्य प्रतिपादक और सामान्य धर्म प्रतिपादक-'धर्म' शब्द हैं। 'प्राणातिपात-विरमण' आदि शब्द विशेष धर्म प्रतिपादक हैं। इसके सिवाय सामान्य रूप अथवा विशेष रूप से चारित्र धर्म के प्रतिपादक जो पर्यायवाची शब्द हैं, वे सब धर्मास्तिकाय के अभिवचन हैं। इसी प्रकार अधर्मास्तिकाय आदि के विषय में भी जानना चाहिये। यहां जो पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं, उनके निरुक्ति से भिन्न-भिन्न अर्थ किये गये हैं। जीव शब्द के भी अनेक पर्यायवाची नाम दिये गये हैं। उनमें से प्राण-भूतादि प्रसिद्ध हैं। उनका अर्थ इस प्रकार है--

> **प्राणाः द्वि-त्रि-चतुः प्रोक्ताः, भूतास्तु तरवः स्मृताः।**
> **जीवाः पञ्चेन्द्रियाः प्रोक्ताः, शेषाः सत्त्वा उदीरिताः॥**

अर्थ-प्राण-बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों को 'प्राण' कहते हैं। वनस्पतिकाय को 'भूत' कहते हैं। पञ्चेन्द्रिय प्राणियों को 'जीव' कहते हैं। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वायुकाय, इन चार स्थावर जीवों को 'सत्त्व' कहते हैं।

इनका प्रकारान्तर से भी अर्थ किया गया है। यथा-प्राण वायु को भीतर खींचने और बाहर छोड़ने अर्थात् श्वासोच्छ्वास लेने के कारण जीव को 'प्राण' कहा जाता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जीता है अर्थात् प्राण धारण करता है और आयुकर्म तथा जीवत्व का अनुभव करता है, इसलिये इसे जीव कहते हैं। जीव शुभाशुभ कर्मों के साथ सम्बद्ध है, अच्छे और बुरे कार्य करने में समर्थ हैं अथवा सत्ता वाला है, इसलिये इसे 'शक्त, सक्त या सत्त्व' कहते हैं। कड़वे, कषैले, खट्टे, मीठे आदि रसों को जानता है। इसलिये जीव 'विज्ञ' कहलाता है। जीव सुख-दुःख का भोग करता है, इसलिये वह 'वेद' कहलाता है। यह नवीन नहीं, प्राचीन है अर्थात् अनादि है, इसलिये यह 'मानव' कहलाता है। यह नाना गतियों में हिण्डन (भ्रमण) करता है, इसलिये इसे 'हिण्डुक' कहते हैं। इस प्रकार अन्यान्य नामों के भी निरुक्ति से भिन्न-भिन्न अर्थ हैं। परन्तु वे सब उन्हीं के पर्यायवाची शब्द हैं।

॥ बीसवें शतक का दूसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २० उद्देशक ३

आत्म-परिणत पाप-धर्म बुद्धि आदि

१ प्रश्न–अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया जाव पारिणामिया, उग्गहे जाव धारणा, उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे, णेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी ३, चक्खु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे जाव विभंगणाणे, आहारसण्णा ४, ओरालियसरीरे ५, मणजोगे ३ सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते णण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

१ उत्तर-हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते णण्णत्थ आयाए परिणमंति ।

२ प्रश्न-जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे, कइवण्णे, कइगंधे० ?

२ उत्तर-एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव 'कम्मओ णं जए, णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ' ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए तईओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-आयाए-आत्मा के, **वक्कममाणे**-गर्भ में उत्पन्न होता हुआ ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! प्राणातिपात मृषावाद यावत् मिथ्या-दर्शनशल्य, प्राणातिपात-विरमण यावत् मिथ्यादर्शनशल्य-विवेक, औत्पत्तिकी यावत् पारिणामिकी, अवग्रह यावत् धारणा, उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार-पराक्रम, नैरयिकपन, असुरकुमारपन यावत् वैमानिकपन, ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय, कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या, सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यग्मिथ्या-दृष्टि, चक्षुदर्शन यावत् केवलदर्शन, आभिनिबोधिकज्ञान यावत् विभंगज्ञान, आहारसंज्ञा यावत् परिग्रह-संज्ञा, औदारिक-शरीर यावत् कार्मण-शरीर, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, साकारोपयोग, अनाकारोपयोग, ये सब और इसके समान अन्य धर्म, क्या आत्मा के सिवाय अन्यत्र परिणमन नहीं करते ?

१ उत्तर-हां गौतम ! प्राणातिपात यावत् अनाकारोपयोग ये सब

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आत्मा के सिवाय अन्यत्र परिणमन नहीं करते ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव, कितने वर्ण, गंध, रस, स्पर्श वाले परिणामों से युक्त होता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! बारहवें शतक के पांचवें उद्देशक के अनुसार यावत् 'कर्म से जगत् है, कर्म के सिवाय जीव में विविध परिणाम नहीं होता'- तक जानना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'- कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-प्राणातिपातादि उपर्युक्त सभी धर्म जीव के हैं । धर्मी को छोड़ कर धर्म नहीं रहते । धर्म और धर्मी कथंचित् एक रूप हो कर रहते हैं । इसलिये उपर्युक्त सर्व-धर्म आत्मा में होते हैं, अन्यत्र नहीं होते ।

गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव तैजस्-कार्मण शरीर सहित रहता हुआ औदारिक शरीर ग्रहण करता है और शरीर तो पुद्गलमय है, वर्णादि युक्त होता है और जीव वर्णादि से रहित होता है । इसलिये वर्ण, गन्ध, रस इत्यादि विषयक प्रश्न किया गया है । जिसका उत्तर है कि गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव, पांच वर्ण, पांच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले परिणामों से परिणमता है, इत्यादि वर्णन बारहवें शतक के पाँचवें उद्देशक से जान लेना चाहिये ।

।। बीसवें शतक का तीसरा उद्देशक सम्पूर्ण ।।

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

शतक २० उद्देशक ४

इन्द्रियोपचय

१ प्रश्न–कइविहे णं भंते ! इंदियउवचए पण्णत्ते ?

१ उत्तर–गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा–सोइंदियउवचए० एवं बिइओ इंदियउद्देसओ णिरवसेसो भाणियव्वो जहा पण्णवणाए ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–इंदियोवचए–इन्द्रियों का उपचय ।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! इन्द्रियोपचय कितने प्रकार का है ?

१ उत्तर–हे गौतम ! इन्द्रियोपचय पांच प्रकार का है । यथा–श्रोत्रेन्द्रियोपचय इत्यादि प्रज्ञापना सूत्र के पन्द्रहवें पद के दूसरे इन्द्रियोद्देशक के अनुसार जानना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'–कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

॥ बीसवें शतक का चौथा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २० उद्देशक ५

परमाणु और स्कन्ध के वर्णादि

१ प्रश्न-परमाणुपोग्गले णं भंते ! कइवण्णे, कइगंधे, कइरसे, कइफासे पण्णत्ते ?

१ उत्तर-गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते, तं जहा-जइ एगवण्णे सिय कालए, सिय णीलए, सिय लोहिए, सिय हालिद्दए, सिय सुक्किल्लए, जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे जइ एगरसे सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले सिय महुरे, जइ दुफासे सिय सीए य णिद्धे य १, सिय सीए य लुक्खे य २, सिय उसिणे य णिद्धे य ३, सिय उसिणे य लुक्खे य ४ ।

कठिन शब्दार्थ-णिद्धे-स्निग्ध ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! परमाणु पुद्गल कितने वर्ण, गंध, रस और स्पर्श वाला है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! एक वर्ण, एक गंध, एक रस और दो स्पर्श वाला है । यथा-यदि एक वर्ण वाला हो, तो १ कदाचित् काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला और ५ कदाचित् श्वेत होता है । यदि एक गन्ध वाला हो, तो-६ कदाचित् सुरभिगंध या ७ दुरभिगंध वाला होता है । यदि एक रस वाला होता हो, तो-८ कदाचित् तीखा, ९ कटुक, १० कषैला, ११ खट्टा और १२ कदाचित् मधुर होता है । यदि दो स्पर्श वाला होता हो, तो-१३ कदाचित् शीत और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्निग्ध, १४ शीत और रूक्ष, १५ उष्ण और स्निग्ध या १६ उष्ण और रूक्ष होता है। इस प्रकार परमाणु पुद्गल में वर्ण के पाँच, गन्ध के दो, रस के पांच और स्पर्श के चार, ये सभी मिल कर सोलह भंग होते हैं।

२ प्रश्न-दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे० ?

२ उत्तर-एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव 'सिय चउफासे पण्णत्ते'। जइ एगवण्णे सिय कालए जाव सिय सुक्किल्लए, जइ दुवण्णे सिय कालए य णीलए य १, सिय कालए य लोहियए य २, सिय कालए य हालिद्दए य ३, सिय कालए य सुक्किल्लए य ४, सिय णीलए य लोहियए य ५, सिय णीलए य हालिद्दए य ६, सिय णीलए य सुक्किल्लए य ७, सिय लोहियए य हालिद्दए य ८, सिय लोहियए य सुक्किल्लए य ९, सिय हालिद्दए य सुक्किल्लए य १०। एवं एए दुयासंजोगे दस भंगा। जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे १, सिय दुब्भिगंधे य २, जइ दुगंधे सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य। रसेसु जहा वण्णेसु। जइ दुफासे सिय सीए य णिद्धे य, एवं जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे २, सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे ३, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४। जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, एए णव भंगा फासेसु।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! द्विप्रदेशी स्कन्ध कितने वर्णादि वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ उत्तर-हे गौतम ! अठारहवें शतक के छठे उद्देशक के अनुसार जानना चाहिये यावत् कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है। यदि वह एक वर्ण वाला होता है तो १-५ कदाचित् काला यावत् श्वेत होता है। यदि वह दो वर्ण वाला होता है तो-६ काला और नीला, ७ काला और लाल, ८ काला और पीला और ९ काला और श्वेत। १० नीला और लाल, ११ नीला और पीला, १२ नीला और श्वेत। १३ लाल और पीला, १४ लाल और श्वेत और १५ पीला और श्वेत होता है। (इस प्रकार द्विक-संयोगी दस भंग होते हे) यदि वह एक गन्ध वाला होता है, तो-१६ सुरभिगन्ध या १७ दुरभिगन्ध होता है। यदि दो गन्ध वाला होता है तो-१८ सुरभिगंध और दुरभिगन्ध होता है। १९ से ३३-जिस प्रकार वर्ण के भंग कहे हैं, उसी प्रकार रस सम्बन्धी पन्द्रह भंग जानना चाहिये। जब दो स्पर्श वाला होता है तो ३४-३७ शीत और स्निग्ध इत्यादि चार भंग परमाणु-पुद्गल के समान जानना चाहिये। यदि वह तीन स्पर्श वाला होता है, तो ३८-सर्वशीत होता है और उसका एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। ३९-सर्व उष्ण होता है और उसका एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा ४०-सर्व स्निग्ध होता है और एक देश शीत और एक देश उष्ण होता है। अथवा ४१-सर्व रूक्ष होता है और एक देश शीत और एक देश उष्ण होता है। यदि वह चार स्पर्श वाला होता है तो ४२-उसका एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। इस प्रकार स्पर्श के नौ भंग होते हैं। (इस प्रकार द्विप्रदेशी स्कन्ध में वर्ण के १५, गन्ध के ३, रस के १५ और स्पर्श के ९, सब *मिल कर ४२ भंग होते हैं।)*

विवेचन-*परमाणु-पुद्गल में शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष इन चार स्पर्शों में से* अविरोधी दो स्पर्श पाये जाते हैं।

द्विप्रदेशी स्कन्ध में जब दोनों प्रदेश एक वर्ण वाले होते हैं तब असंयोगी ५ भंग होते हैं। जब दोनों प्रदेश भिन्न वर्ण वाले होते है, तब द्विकसंयोगी दस भंग होते हैं। गन्ध में जब दोनों प्रदेश एक गन्ध वाले होते हैं, तब असंयोगी दो भंग होते हैं और जब दोनों

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेश दो गन्ध वाले होते हैं, तब द्विकसंयोगी एक भंग होता है। रस में जब दोनों प्रदेश एक रस वाले हों, तब असंयोगी ५ भंग होते हैं और जब भिन्न-भिन्न दो रस वाले हों, तब दस भंग होते हैं। स्पर्श के द्विकसंयोगी ४ भंग और त्रिकसंयोगी ४ भंग तथा चतुःसंयोगी एक भंग होता है। इस प्रकार वर्ण के १५, गन्ध के ३, रस के १५ और स्पर्श के ९, ये कुल मिला कर ४२ भंग होते हैं।

३ प्रश्न-तिपएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे० ?

३ उत्तर-जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसे जाव चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे सिय कालए जाव सुकिल्लए ५। जइ दुवण्णे सिय कालए य सिय णीलए य १, सिय कालए य सिय णीलगा य २, सिय कालगा य णीलए य ३, सिय कालए य लोहियए य १, सिय कालए य लोहियगा य २, सिय कालगा य लोहियए य ३, एवं हालिद्दएण वि समं भंगा ३, एवं सुकिल्लएण वि समं ३, सिय णीलए य लोहियए य एत्थ वि भंगा ३, एवं हालिद्दएण वि समं भंगा ३, एवं सुक्किल्लएण वि समं भंगा ३, सिय लोहियए य हालिद्दए य भंगा ३, एवं सुक्किल्लएण वि समं भंगा ३, सिय हालिद्दए य सुक्किल्लए य भंगा ३, एवं सव्वे ते दस दुयासंजोगा भंगा तीसं भवंति।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ?

३ उत्तर-हे गौतम ! अठारहवें शतक के छठे उद्देशक के अनुसार यावत् 'कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है'-तक जानना चाहिए। (५) यदि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एक वर्ण वाला होता है तो कदाचित् काला होता है, यावत् श्वेत होता है। जब दो वर्ण वाला होता है, तो १-उसका एक अंश कदाचित् काला और एक अंश नीला होता है। २-एक अंश काला और दो अंश नीले होते हैं। ३-दो अंश काले और एक अंश नीला होता है। ४-एक अंश काला और एक अंश लाल होता है। ५-एक देश काला और दो देश लाल होते हैं। ६-दो देश काले और एक देश लाल होता है। इसी प्रकार काले वर्ण के पीले वर्ण के साथ तीन भंग जानना चाहिये। इसी प्रकार काले वर्ण के साथ श्वेत वर्ण के तीन भंग जानना चाहिये। नीले वर्ण के लाल वर्ण के साथ पूर्ववत् तीन भंग जानना चाहिये। इसी प्रकार नीले वर्ण के तीन भंग पीले के साथ और तीन भंग श्वेत के साथ जानना चाहिये। लाल और पीले के भी तीन भंग होते हैं। इस प्रकार लाल वर्ण के तीन भंग श्वेत के साथ जानना चाहिये। पीले और श्वेत के भी तीन भंग जानना चाहिये। ये सब मिल कर द्विक संयोगी तीस भंग होते हैं।

जइ तिवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य १, सिय कालए य णीलए य हालिद्दए य २, सिय कालए य णीलए य सुक्किल्लए य ३, सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य लोहियए य सुक्किल्लए य ५, सिय कालए य हालिद्दए य सुक्किलए य ६, सिय णीलए य लोहियए य हालिद्दए य ७, सिय णीलए य लोहियए य सुक्किल्लए य ८, सिय णीलए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ९, सिय लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १० एवं एए दस तियासंजोगा। जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे १, सिय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दुब्भिगंधे २ । जइ दुगंधे सिय सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य ३ भंगा। रसा जहा वण्णा । जइ दुफासे सिय सीए य णिद्धे य, एवं जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा ४। जइ तिफासे सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे सीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, सव्वे सीए देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ३ एत्थ वि भंगा तिण्णि, सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि ९, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि एवं १२।

भावार्थ-जब त्रिप्रदेशी स्कन्ध तीन वर्ण वाला होता है, तो कदाचित् काला, नीला और लाल होता है, या काला, नीला और पीला होता है, या काला, नीला और श्वेत होता है, या काला, लाल और पीला होता है, या काला, लाल और श्वेत होता है, अथवा काला, पीला और श्वेत होता है अथवा नीला, लाल और पीला होता है, कदाचित् नीला, लाल और श्वेत होता है, या नीला, पीला और श्वेत होता है, कदाचित् लाल, पीला और श्वेत होता है। इस प्रकार त्रिकसंयोगी दस भंग होते हैं।

यदि एक गन्ध वाला होता है, तो कदाचित् सुगन्धित होता है, या दुर्गन्धित होता है। यदि दो गन्ध वाला होता है, तो सुगन्धित और दुर्गन्धित होता है। यहां एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा तीन भंग होते हैं।

जिस प्रकार वर्ण के ४५ भंग कहे हैं, उसी प्रकार रस के भी ४५ भंग जानना चाहिये।

यदि दो स्पर्श वाला होता है, तो कदाचित् शीत और स्निग्ध, इत्यादि चार भंग द्विप्रदेशी स्कन्ध के समान जानना चाहिये। जब वह तीन स्पर्श वाला होता है तो १-सर्वशीत, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। २-अथवा-सर्वशीत, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होता है। ३-अथवा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सर्वशीत, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है । ४-अथवा सर्व उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है । यहां भी पूर्ववत् तीन भंग जानना चाहिये । अथवा-कदाचित् सर्व स्निग्ध, एक देश शीत और एक देश उष्ण होता है । यहां भी पूर्ववत् तीन भंग होते हैं । सब मिला कर त्रिकसंयोगी बारह भंग होते हैं ।

जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, देसे सीए देसे उसिणे देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसा लुक्खा ५, देसे सीए देसा उसिणा देसा णिद्धा देसे लुक्खे ६, देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ७, देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसा लुक्खा, ८, देसा सीया देसे उसिणे देसा णिद्धा देसे लुक्खे ९, एवं एए तिगसिए फासेसु पणवीसं भंगा ।

भावार्थ-जब वह चार स्पर्श वाला होता है, तो १ एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा २ एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं । ३ अथवा एक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। ४ अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष । ५ अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष । ६ अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष । ७ अथवा अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

८ अथवा अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष। ९ अथवा अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष। इस प्रकार त्रिप्रदेशी स्कन्ध में स्पर्श के कुल पच्चीस भंग होते हैं। (इस प्रकार त्रिप्रदेशी स्कन्ध में वर्ण के ४५, गन्ध के ५, रस के ४५ और स्पर्श के २५, ये सब मिल कर १२० भंग होते हैं।)

विवेचन-त्रिप्रदेशी स्कन्ध में तीन प्रदेश होते हैं, तथापि परिणाम के कारण वे तीनों कदाचित् एक प्रदेशावगाही, द्विप्रदेशावगाही और त्रिप्रदेशावगाही होते हैं। जब वे एक प्रदेशावगाही होते हैं, तब उनमें अंश की कल्पना नहीं हो सकती। जब द्विप्रदेशावगाही होते हैं, तब उनमें दो अंशों की और जब त्रिप्रदेशावगाही होते हैं, तब तीन अंशों की कल्पना हो सकती है। जब तीनों ही प्रदेश कालादि एक वर्ण रूप परिणाम वाले होते हैं, तब उनके पांच विकल्प होते हैं। जब दो वर्ण रूप परिणाम होता है, तब एक प्रदेश काला और दो प्रदेश एक प्रदेशावगाही होने से एक अंश नीला होता है। इस प्रकार द्विकसंयोगी प्रथम भंग होता है। अथवा एक प्रदेश काला होता है और दो प्रदेश भिन्न-भिन्न द्विप्रदेशावगाही होने से दो अंश नीले होते हैं। इस प्रकार विवक्षा हो सकती है। इसी प्रकार दूसरा भंग भी जानना चाहिये। इसी प्रकार दो अंश काले और एक अंश नीला होता है। इस प्रकार एक द्विकसंयोग के तीन-तीन भंग होने से दस द्विकसंयोग के तीस भंग होते हैं।

गन्ध के एक गन्ध परिणाम हो, तब दो भंग होते हैं और दो गन्ध परिणाम होता है, तब एक अंश और अनेक अंश की कल्पना से पूर्ववत् तीन भंग होते हैं।

वर्ण के समान त्रिप्रदेशी स्कन्ध के द्विकसंयोगी तीस भंग, त्रिकसंयोगी दस भंग और असंयोगी पांच भंग, इस प्रकार कुल ४५ भंग रस सम्बन्धी होते है।

जब त्रिप्रदेशी स्कन्ध दो आकाश प्रदेशों पर अवगाढ़ होता है तब दोनों आकाश-प्रदेशस्थ तीनों प्रदेश शीत होने से सर्व शीत, एक प्रदेशात्मक एक देश स्निग्ध और एक प्रदेशावगाढ़ द्विप्रदेशात्मक एक देश रूक्ष होता है तब प्रथम भंग बनता है। जब त्रिप्रदेशी स्कंध तीन आकाश प्रदेशों पर अवगाढ़ होता है तब तीनों प्रदेश शीत होने से सर्वशीत, एक प्रदेशात्मक एक देश स्निग्ध और द्विप्रदेशावगाढ़ दो प्रदेश रूप अनेक देश रूक्ष होते हैं तब दूसरा भंग बनता है। जब तीन प्रदेशी स्कंध तीन आकाश प्रदेशों पर अवगाढ़ होता हैं तब तीनों प्रदेश शीत होने से सर्वशीत, द्विप्रदेशावगाढ दो प्रदेश स्निग्ध होने से अनेक देश स्निग्ध और एक प्रदेशात्मक एक देश रूक्ष होता है तब तीसरा भंग बनता है। इसी प्रकार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सर्व उष्ण सर्व स्निग्ध सर्व रूक्ष के साथ भी तीन-तीन भंग जानने चाहिए। इसी प्रकार चतुः प्रदेशी आदि स्कंधों में भी यथायोग्य समझ लेना चाहिए।

जब त्रिप्रदेशी स्कंध दो आकाश प्रदेश पर अवगाढ हो, एक आकाश प्रदेश पर रहा हुआ एक परमाणु शीत और स्निग्ध हो और दूसरे आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो परमाणु उष्ण और रूक्ष हो तब क्षेत्र की प्रधानता करके और द्रव्य (दो परमाणु) गौणता करके उन्हें एक देश ही समझा जाता है तब चार स्पर्श का प्रथम भंग (एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष) बनता है। जब उसी स्कंध के एक आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो परमाणुओं में जो उष्ण और रूक्ष स्पर्श है, उन में से उष्ण स्पर्श को क्षेत्र की प्रधानता का विवक्षा से एक देश मानने पर एवं रूक्ष स्पर्श में द्रव्य की प्रधानता की विवक्षा करने से अनेक देश मानने पर 'एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध, अनेक देश रूक्ष' रूप दूसरा भंग बनता है। जब त्रिप्रदेशी स्कंध दो आकाश प्रदेश पर अवगाढ हों, एक आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो परमाणु उष्ण और स्निग्ध हों और दूसरे आकाश प्रदेश पर रहा हुआ एक परमाणु शीत और रूक्ष हो। एक आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो परमाणुओं में रहे हुए उष्ण स्पर्श को क्षेत्र की प्रधानता एवं द्रव्य की गौणता से एक देश मानने पर एवं स्निग्ध स्पर्श को द्रव्य की प्रधानता एवं क्षेत्र की गौणता से अनेक देश मानने पर 'एक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष' रूप तीसरा भंग बनता है। जब इसी स्कंध में उष्ण स्पर्श को द्रव्य की प्रधानता एवं क्षेत्र की गौणता से अनेक देश मान लिया जाता है तथा स्निग्ध स्पर्श में क्षेत्र की प्रधानता एवं द्रव्य की गौणता से एक देश मान लिया जाता है तब 'एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष' रूप चौथा भंग बनता है। जब त्रिप्रदेशी स्कंध तीन आकाश प्रदेशों पर रहा हुआ हो। एक आकाश प्रदेश पर स्थित एक प्रदेश शीत और स्निग्ध हो, दो आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो प्रदेश उष्ण और रूक्ष हो तब 'एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष 'रूप पांचवां भंग बनता है। जब त्रिप्रदेशावगाढ त्रिप्रदेशी स्कंध का एक प्रदेश शीत और रूक्ष हो और दो प्रदेश उष्ण और स्निग्ध हों तब 'एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष' रूप छठा भंग बनता है। जब त्रिप्रदेशी स्कंध दो आकाश प्रदेशों पर अवगाढ़ होता है, उनमें से एक आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो परमाणु पुद्गल शीत एवं रूक्ष हों तथा दूसरे आकाश प्रदेश पर रहा हुआ परमाणु उष्ण और स्निग्ध हो तब एक आकाश प्रदेश पर रहे हुए दो परमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णुओं में जो शीत और रूक्ष स्पर्श है उनमें से शीत स्पर्श को द्रव्य की प्रधानता से और क्षेत्र की गौणता से अनेक देश मानने पर तथा रूक्ष स्पर्श को क्षेत्र की प्रधानता और द्रव्य की गौणता से एक देश मानने पर 'अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष' रूप सातवां भंग बनता है। जब त्रिप्रदेशावगाढ़ त्रिप्रदेशी स्कंध का एक प्रदेश उष्ण और स्निग्ध होता है शेष दो प्रदेश शीत और रूक्ष होते हैं तब 'अनेक देश शीत एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष' रूप आठवां भंग पाया जाता है। जब त्रिप्रदेशावगाढ़ त्रिप्रदेशी स्कंध का एक प्रदेश उष्ण और रूक्ष होता है, शेष दो प्रदेश शीत और स्निग्ध होते हैं तब 'अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष' रूप नौवां भंग बनता है। इसी प्रकार आगे भी चार प्रदेशी आदि स्कंधों में भी उपयोग लगा कर द्रव्य क्षेत्र की प्रधानता गौणता से यथायोग्य भंग बना लेना चाहिए। उपर्युक्त प्रकार से एक ही भंग में एक स्पर्श में द्रव्य की मुख्यता गौणता तो दूसरे स्पर्श में क्षेत्र की मुख्यता गौणता करने से ही ये भंग बनते हैं अन्यथा प्रकार से ये संभव नहीं हैं। प्रसिद्ध सिद्धान्तवादी श्री जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण भी अपनी विशेषणवती के सतरहवें विशेषण में शंका समाधान के रूप में इस बात को इसी प्रकार कहा है। यथा–

बीसइमसउद्देसे चउप्पए साइए चउप्फासे।
एग बहुवयणमीसा बी आइया कहं भंगा॥ १॥
देसो देसाबमया दव्वखेत्तवसओ विवक्खाए।
संघाइयभेयतदुभय भावाओऽवी वयणकाले॥ २॥

भावार्थ–शंका–बीसवें शतक के पांचवें उद्देशक में चतुःप्रदेशी आदि स्कंधों के चार स्पर्श सम्बंधी एक वचन बहुवचन के मिश्र (सम्मिलित) द्वितीयादि भंग किस प्रकार समझना?

समाधान-शीत उष्ण के एक देश और स्निग्ध रूक्ष के अनेक देश या स्निग्ध या स्निग्ध रूक्ष के एक देश और शीत उष्ण के अनेक देश इस प्रकार एक देश, अनेक देश रूप जो द्वितीयादि मिश्र भंग हैं, वे विवक्षा भेद से द्रव्य और क्षेत्र की प्रधानता गौणता के कारण से बने हैं। अर्थात् एक वचन के स्पर्श में द्रव्य की प्रधानता मान ली गई है। इस प्रकार कथन के समय में अर्थात् भंग रचना के समय में संघातित (अवगाहित क्षेत्र की प्रधानता) भेद (द्रव्य की प्रधानता) और तदुभयता (द्रव्य और क्षेत्र की प्रधानता) होने से ये चार स्पर्श सम्बन्धी द्वितीयादि भंग होते हैं।

इस प्रकार श्री जिनभद्र गणि भी इन भंगों की संगति इसी प्रकार बिठाते हैं। इसलिए भंगों की संगति उपर्युक्त प्रकार से ही समझनी चाहिए।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४ प्रश्न-चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे० ?

४ उत्तर-जहा अट्ठारसमसए जाव 'सिय चउफासे पण्णत्ते'। जइ एगवण्णे सिय कालए य जाव सुक्किल्लए ५। जइ दुवण्णे सिय कालए य णीलए य १, सिय कालए य णीलगा य २, सिय कालगा य णीलए य ३, सिय कालगा य णीलगा य ४। सिय कालए य लोहियए य। एत्थ वि चत्तारि भंगा ४। सिय कालए य हालिद्दए य ४। सिय कालए य सुक्किल्लए य ४। सिय णीलए य लोहियए य ४। सिय णीलए य हालिद्दए य ४। सिय णीलए य सुक्किल्लए य ४। सिय लोहियए य हालिद्दए य ४। सिय लोहियए य सुक्किल्लए य ४। सिय हालिद्दए य सुक्किल्लए य ४। एवं एए दस दुयासंजोगा भंगा पुण चत्तालीसं ४०।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! चतुष्प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ?

४ उत्तर-हे गौतम ! अठारहवें शतक के छठे उद्देशकवत् यावत् 'वह कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है' तक।

जब वह एक वर्ण वाला होता है, तो ५-कदाचित् काला होता है यावत् श्वेत होता है। जब दो वर्ण वाला होता है, तो १-कदाचित् उसका एक अंश काला और एक अंश नीला होता है, २-कदाचित् एक देश काला और अनेक देश नीले होते हैं, ३-कदाचित् अनेक देश काले और एक देश नीला होता है, ४-अथवा अनेक देश काले और अनेक देश नीले होते हैं। अथवा कदाचित् एक अंश काला और एक अंश लाल होता है। यहाँ भी पूर्ववत् चार भंग कहने चाहिये। कदाचित् एक अंश काला और एक अंश पीला, पूर्ववत् चार

भंग । कदाचित् एक अंश काला और एक अंश श्वेत, पूर्ववत् चार भंग । कदाचित् एक अंश नीला और एक अंश लाल आदि पूर्ववत् चार भंग । कदाचित् नीला और पीला के पूर्ववत् चार भंग । कदाचित् नीला और श्वेत के चार भंग । कदाचित् लाल और पीला के चार भंग । कदाचित् लाल और श्वेत के चार भंग । कदाचित् पीला और श्वेत के चार भंग । इस प्रकार इन दस द्विकसंयोग के ४० भंग होते हैं ।

जइ तिवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य १, सिय कालए णीलए लोहियगा य २, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य ३, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य एए भंगा ४ । एवं कालणीलहालिद्दएहिं भंगा ४, कालणीलसुक्किल्ल० ४, काललोहियहालिद्द० ४, काललोहियसुक्किल्ल० ४, कालहालिद्दसुक्किल्ल० ४ । णीललोहियहालिद्दगाणं ४ भंगा, णीललोहियसुक्किल्ल० ४, णीलहालिद्दसुक्किल्ल० ४, लोहियहालिद्दसुक्किल्लगाणं ४ भंगा । एवं एए दसतियासंजोगा, एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, सव्वे ते चत्तालीसं भंगा ४० । जइ चउवण्णे सिय कालए णीलए लोहियए हालिद्दए य १, सिय कालए णीलए लोहियए सुक्किल्लए २, सिय कालए णीलए हालिद्दए सुक्किल्लए ३, सिय कालए लोहियए हालिद्दए सुक्किल्लए ४, सिय णीलए लोहियए हालिद्दए सुक्किल्लए य ५ । एवमेते चउक्कगसंजोए पंच भंगा । एए सव्वे णउइ भंगा ।

भावार्थ-यदि वह तीन वर्ण वाला होता है तो (१) कदाचित् काला, नीला और लाल होता है । अथवा एक देश काला, एक देश नीला और अनेक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देश लाल होते हैं। अथवा एक देश काला, अनेक देश नीला और एक देश लाल होता है। अथवा अनेक देश काला, एक देश नीला और एक देश लाल होता है। इस प्रकार एक त्रिक संयोग के चार भंग होते हैं। (२) इस प्रकार काला, नीला और पीला वर्ण के चार भंग। (३) काला, नीला और श्वेत वर्ण के चार भंग। (४) काला, लाल और पीला वर्ण के चार भंग। (५) काला, लाल और श्वेत वर्ण के चार भंग। अथवा (६) काला, पीला और श्वेत वर्ण के चार भंग। (७) अथवा नीला, लाल और पीला वर्ण के चार भंग। (८) अथवा नीला, लाल और श्वेत वर्ण के चार भंग (९) अथवा नीला, पीला और श्वेत वर्ण के चार भंग। (१०) कदाचित् लाल, पीला और श्वेत वर्ण के चार भंग। इस प्रकार दस त्रिक संयोग होते हैं और एक-एक त्रिक संयोग में चार-चार भंग होते हैं। ये सब मिल कर ४० भंग होते हैं। जब वह चार वर्ण का होता है तो कदाचित् काला, नीला, लाल और पीला होता है। कदाचित् काला, नीला, लाल और श्वेत होता है। अथवा कदाचित् काला, नीला, पीला और श्वेत होता है। अथवा कदाचित् काला, लाल, पीला और श्वेत होता है। अथवा कदाचित् नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। इस प्रकार चतुःसंयोग के पांच भंग होते हैं। सब मिल कर वर्ण सम्बन्धी ९० भंग होते हैं।

जइ एगगंधे सिय सुब्भिगंधे १, सिय दुब्भिगंधे य २, जइ दुगंधे +सुब्भिगंधे य +दुब्भिगंधे य ४। रसा जहा वण्णा।

भावार्थ-जब वह चतुःसंयोगी स्कन्ध एक गन्ध वाला होता है, तो कदाचित् सुरभिगन्ध और कदाचित् दुरभिगन्ध होता है। जब वह दो गन्ध

+ यहां मूल पाठ में दोनों स्थान पर 'सिय' शब्द-पं. भगवानदास वाली प्रति में है और दूसरा वाली में भी है, परन्तु सुत्तागमे वाली में नहीं है। हमें सुत्तागमे वाला पाठ ठीक लगा। दोनों गन्ध जहां हो, वहां 'सिय' शब्द की आवश्यकता ही नहीं रहती—डोशी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वाला होता है, तो सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध। इसके चार भंग होते हैं। इस प्रकार गन्ध सम्बन्धी छह भंग होते हैं।

जिस प्रकार वर्ण के ९० भंग कहे गये हैं, उसी प्रकार रस के ९० भंग कहने चाहिये।

जइ दुफासे जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे सीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, सव्वे सीए देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे सीए देसा णिद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एवं भंगा ४, सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४। एए तिफासे सोलस भंगा।

भावार्थ-जब वह दो स्पर्श वाला होता है, तो उसके परमाणु पुद्गल के समान चार भंग होते हैं। जब वह तीन स्पर्श वाला होता है, तो सर्व शीत और एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा सर्व शीत, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। अथवा सर्व शीत, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा सर्व शीत, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। अथवा सर्व उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग। अथवा सर्व स्निग्ध, एक देश शीत, एक देश उष्ण के चार भंग होते हैं। अथवा सर्व रूक्ष, एक देश शीत और एक देश उष्ण के चार भंग। इस प्रकार सब मिल कर तीन स्पर्श के सोलह भंग होते हैं।

जइ चउफासे देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १ देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, देसे सीए देसे उसिणे देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, देसे सिए देसे उसिणे देसा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णिद्धा देसा लुक्खा ४, देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ५, देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसा लुक्खा ६, देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धा देसे लुक्खे ७, देसे सीए देसा उसिणा देसा णिद्धा देसा लुक्खा ८, देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ९, एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उसिणा देसा णिद्धा देसा लुक्खा। सव्वे एए फासेसु छत्तीसं भंगा।

भावार्थ-कदाचित् चार स्पर्श वाला हो तो उसका एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। अथवा एक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा एक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। अथवा एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। अथवा अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। इस प्रकार चार स्पर्श के सोलह भंग कहने चाहिये, यावत् अनेक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। ये सब मिल कर द्विकसंयोगी चार, त्रिकसंयोगी सोलह और चतुःसंयोगी सोलह, इस प्रकार स्पर्श सम्बन्धी ३६ भंग होते हैं। (चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के ९०, गन्ध के ६, रस के ९०, और स्पर्श के ३६, ये सब मिल कर २२२ भंग होते हैं।)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन-वर्ण सम्बन्धी ९० भंग ऊपर बतला दिये गये हैं। उसी के अनुसार रस के भी ९० भंग जानने चाहिये।

५ प्रश्न-पंचपएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे० ?

५ उत्तर-जहा अट्ठारसमसए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे एगवण्णदुवण्णा जहेव चउप्पएसिए। जइ तिवण्णे सिय कालए णीलए लोहियए य १, सिय कालए णीलए लोहियगा य २, सिय कालए णीलगा य लोहियए य ३, सिय कालए णीलगा य लोहियगा य ४, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य ५, सिय कालगा य णीलए य लोहियगा य ६, सिय कालगा य णीलगा य लोहियए य ७। सिय कालए णीलए हालिद्दए य। एत्थ वि सत्त भंगा ७। एवं कालगणीलगसुक्किल्लएसु सत्त भंगा, कालगलोहिय-हालिद्देसु ७, कालगलोहियसुक्किल्लेसु ७, कालगहालिद्दसुक्किल्लेसु ७, णीलगलोहियहालिद्देसु ७, णीलगलोहियसुक्किल्लेसु सत्त भंगा ७, णीलगहालिद्दसुक्किल्लेसु ७, लोहियहालिद्दसुक्किल्लेसु वि सत्त भंगा ७। एवमेए तियासंजोए सत्तरि भंगा।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! पञ्चप्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला है, इत्यादि प्रश्न ?

५ उत्तर-हे गौतम ! अठारहवें शतक के छठे उद्देशक के अनुसार यावत् 'वह कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है'-तक जानना चाहिये। जब वह एक वर्ण वाला या दो वर्ण वाला होता है तो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के समान (उसके ५ और ४०) जानना चाहिये। जब वह तीन वर्ण वाला होता है तो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला और एक-देश लाल होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला और अनेक देश लाल होते हैं। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला और एक देश लाल होता है। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला और अनेक देश लाल होते हैं। अथवा अनेक देश काला, एक देश नीला और एक देश लाल होता है। अथवा अनेक देश काला, एक देश नीला और अनेक देश लाल होते हैं। अथवा अनेक देश काला, अनेक देश नीला और एक देश लाल होता है। अथवा कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला और एक देश पीला होता है। इस त्रिकसंयोग के भी सात भंग होते हैं। इसी प्रकार काला, नीला और श्वेत के भी सात भंग होते हैं। अथवा काला, लाल और पीला, इसके भी सात भंग होते हैं। अथवा काला, लाल और श्वेत के सात भंग। अथवा काला, पीला और श्वेत के सात भंग। अथवा नीला, लाल और पीला इनके सात भंग। अथवा नीला, लाल और श्वेत के सात भंग। अथवा नीला, पीला और श्वेत के सात भंग। अथवा लाल पीला और श्वेत के सात भंग। इस प्रकार दस त्रिक संयोग के सात-सात भंग होने से ७० भंग होते हैं।

जइ चउवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए हालिद्दए य १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य २, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य ३, सिय कालए णीलगा य लोहियगे य हालिद्दगे य ४, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य ५। एए पंच भंगा। सिय कालए य णीलए य लोहियए य सुक्किल्लए य एत्थ वि पंच भंगा ५, एवं कालगणीलगहालिद्दसुक्किल्लेसु वि पंच भंगा ५, कालगलोहियहालिद्दसुक्किल्लएसु वि

पंच भंगा ५, णीलगलोहियहालिद्दसुक्किल्लेसु वि पंच भंगा ५, एवमेए चउक्कगसंजोएणं पणवीसं भंगा।

भावार्थ-यदि वह चार वर्ण वाला होता है तो कदाचित् एक देश काला एक देश नीला, एक देश लाल और एक देश पीला होता है। अथवा एक देश काला, नीला, लाल, अनेक देश पीला होता। अथवा एक देश काला, नीला, अनेक देश लाल और एक देश पीला होता है। अथवा एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल और एक देश पीला होता है। अथवा अनेक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल और एक देश पीला होता है। इस प्रकार चतुःसंयोगी पांच भंग होते हैं इसी प्रकार कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल और श्वेत के पांच भंग। एक देश काला, नीला, पीला और श्वेत के पांच भंग। अथवा काला, लाल, पीला और श्वेत के पांच भंग। अथवा नीला लाल, पीला और श्वेत के पांच भंग होते हैं। इस प्रकार चतुःसंयोगी पच्चीस भंग होते हैं।

जइ पंचवण्णे कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य। सव्वमेए एक्कग-दुयग-तियग-चउक्क-पंचगसंजोएणं ईयालं भंगसयं भवइ। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स।

भावार्थ-यदि वह पांच वर्ण वाला हो तो काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। इस प्रकार असंयोगी ५, द्विक संयोगी ४०, त्रिक संयोगी ७०, चतुःसंयोगी २५, और पंच संयोगी एक, इस प्रकार सब मिल कर वर्ण के १४१ भंग होते हैं। गन्ध के चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के समान छह भंग होते है। रस के वर्ण के समान १४१ भंग होते है। स्पर्श के ३६ भंग, चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के समान होते हैं। (पञ्चप्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के १४१, गन्ध के ६,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रस के १४१ और स्पर्श के ३६, ये कुल मिला कर ३२४ भंग होते है।)

६ प्रश्न-छप्पएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे० ?

६ उत्तर-एवं जहा पंचपएसिए जाव 'सिय चउफासे पण्णत्ते'। जइ एगवण्णे एगवण्ण-दुवण्णा जहा पंचपएसियस्स । जइ तिवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य, एवं जहेव पंचपएसियस्स सत्त भंगा जाव सिय कालगा य णीलगा य लोहियए य ७, सिय कालगा य णीलगा य लोहियगा ८ । एए अट्ठ भंगा। एवमेए दस तियासंजोगा, एक्केक्कए संजोगे अट्ठ भंगा, एवं सव्वे वि तियग-संजोगे असीइ भंगा।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! छह प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न।

६ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार पञ्चप्रदेशी स्कन्धवत्, यावत् 'कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है'-तक। यदि वह एक वर्ण या दो वर्ण वाला है, तो पञ्चप्रदेशी स्कन्ध के समान एक वर्ण के ५ और दो वर्ण के ४ भंग होते हैं। जब वह तीन वर्ण वाला है तो कदाचित् काला, नीला और लाल होता है। जिस प्रकार पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध के सात भंग कहे हैं, उसी प्रकार, यावत् 'कदाचित् अनेक देश काला, नीला और एक देश लाल होता है। कदाचित् अनेक देश काला, नीला और लाल होते हैं। इस प्रकार त्रिकसंयोग के ८ भंग होते हैं इस तरह दस त्रिक संयोगों' के ८० भंग होते हैं।

जइ चउवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य २, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य ३, सिय कालए य

णीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य ४, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य हालिद्दए य ५, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य हालिद्दगा य ६, सिय कालए य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य ७, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य ८, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य ९, सिय कालगा य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य १०, सिय कालगा य णीलगा य लोहियए य हालिद्दए य ११। एए एक्कारस भंगा एवमेए पंचचउक्कसंजोगा कायव्वा, एक्केक्कसंजोए एक्कारस भंगा, सव्वे ते चउक्कसंजोएणं पणपण्णं भंगा।

भावार्थ-यदि वह चार वर्ण का होता है तो कदाचित् एक देश काला नीला, लाल और पीला होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला एक देश लाल और अनेक देश पीला होता है। अथवा एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल और एक देश पीला होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल और अनेक देश पीला होता है। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल और एक देश पीला होता है। अथवा एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल और अनेक देश पीला होता है। अथवा एक देश काला, अनेक देश नीला, अनेक देश लाल और एक देश पीला होता है। अथवा अनेक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल और एक देश पीला होता है। कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल और अनेक देश पीला होता है। कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल और एक देश पीला होता है। अथवा अनेक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल और एक देश

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पीला होता है। इस प्रकार चतुःसंयोगी ग्यारह भंग होते हैं। इस प्रकार पांच चतुःसंयोग कहने चाहिये। प्रत्येक चतुःसंयोग में ग्यारह-ग्यारह भंग होने से सब मिल कर ५५ भंग होते हैं।

जइ पंचवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य २, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य ३, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ४, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ५, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ६, एवं एए छब्भंगा भाणियव्वा, एवमेए सव्वे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेसु छासीयं भंगसयं भवइ। गंधा जहा पंचपएसियस्स। रसा जहा एयस्सेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स।

भावार्थ-यदि वह पांच वर्ण का है तो कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल, एक देश पीला और अनेक देश श्वेत होता है। अथवा एक देश काला, नीला, लाल तथा अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, एक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। अथवा एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल, एक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। अथवा अनेक देश काला एक देश नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। इस प्रकार छह भंग होते हैं। इस प्रकार असंयोगी ५, द्विक संयोगी ४०, त्रिकसंयोगी ८०, चतुःसंयोगी ५५

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और पंच संयोगी ६, सब मिल कर वर्ण सम्बन्धी १८६ भंग होते हैं। गन्ध सम्बन्धी छह भंग पञ्चप्रदेशी स्कन्ध के समान होते हैं। वर्ण के समान रस के १८६ भंग होते हैं। स्पर्श के भंग चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के समान जान लेना चाहिये।

विवेचन-छह प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के १८६, गन्ध के ६, रस के १८६ और स्पर्श के ३६, ये कुल मिलाकर ४१४ भंग होते हैं।

७ प्रश्न-सत्तपएसिए णं भंते ! खंधे कइवण्णे० ?

७ उत्तर-जहा पंचपएसिए जाव 'सिय चउफासे' पण्णत्ते। जइ एगवण्णे० एवं एगवण्णदुवण्णतिवण्णा जहा छप्पएसियस्स। जइ चउवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य २, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य ३, एवमेए चउक्कगसंजोगेणं पण्णरस भंगा भाणियव्वा जाव 'सिय कालगा य णीलगा य लोहियगा हालिद्दए य १५। एवमेए पंचचउक्कसंजोगा णेयव्वा, एक्केक्के संजोए पण्णरस भंगा, सव्वमेए पंचसत्तरि भंगा भवइ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! सात प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण का होता है, इत्यादि प्रश्न ?

७ उत्तर-हे गौतम ! पंच प्रदेशिक स्कन्ध समान यावत् 'कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है'-तक। जब वह एकादि वर्ण वाला होता है, तो एक वर्ण, दो वर्ण और तीन वर्ण के भंग छह प्रदेशी स्कन्ध के समान जानना चाहिये। जब वह चार वर्ण वाला होता है तो कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल और पीला होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और अनेक देश पीला होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल और एक देश पीला होता है। (कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल और अनेक देश पीला होता है।) इस प्रकार चतुःसंयोग में पन्द्रह भंग जानना चाहिये, यावत् कदाचित् अनेक देश काला, अनेक देश नीला, अनेक देश लाल और एक देश पीला होता है। इस प्रकार पांच चतुःसंयोगी भंग होते हैं। एक-एक चतुःसंयोग में पन्द्रह-पन्द्रह भंग होते हैं। सब मिल कर ७५ भंग होते हैं।

जइ पंचवण्णे सिय कालए णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य २, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य ३, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लगा य ४, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ५, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य ६, सिय कालए य णीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य ७, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ८, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य ९, सिय कालए य णीलगा य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य १०, सिय कालए य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य ११, सिय कालगा य णीलगे य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

य १२, सिय कालगा य णीलए य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य १३, सिय कालगा य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य १४, सिय कालगा य णीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १५, सिय कालगा य णीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १६। एए सोलस भंगा, एवं सव्वमेए एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेणं दो सोला भंगसया भवइ। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स।

भावार्थ-जब वह पांच वर्ण का होता है तो कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल पीला और अनेक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल, अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, एक देश लाल, अनेक देश पीला और अनेक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, एक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। अथवा एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, एक देश पीला और अनेक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल, एक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल, पीला और अनेक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला, एक देश लाल, अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, अनेक देश नीला, लाल, एक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पीला और श्वेत होता है। कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल, पीला और अनेक देश श्वेत होता है। कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल, अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, एक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। कदाचित् अनेक देश काला, नीला, एक देश लाल, पीला और श्वेत होता है। इस प्रकार सोलह भंग होते हैं। असंयोगी ५, द्विक संयोगी ४०, त्रिक संयोगी ८०, चतुःसंयोगी ७५ और पंच संयोगी १६ भंग होते हैं। ये सब मिला कर वर्ण के २१६ भंग होते हैं। गन्ध के छह भंग चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के समान कहने चाहिये। वर्ण के समान रस के २१६ भंग कहने चाहिये और स्पर्श के भंग चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के समान कहने चाहिये।

विवेचन-सप्त प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के २१६, गन्ध के ६, रस के २१६ और स्पर्श के ३६ ये सब मिला कर कुल ४७४ भंग होते हैं।

८ प्रश्न-अट्ठपएसियस्स णं भंते ! खंधे०-पुच्छा।

८ उत्तर-गोयमा ! सिय एगवण्णे० जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते जइ एगवण्णे, एवं एगवण्णदुवण्णतिवण्णा जहेव सत्तपएसिए। जइ चउवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव 'सिय कालगा य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दगे य १५, सिय कालगा य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य १६'। एए सोलस भंगा, एवमेए पंच चउक्कसंजोगा, एवमेए असीइ भंगा ८०।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! आठ प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

८ उत्तर-हे गौतम ! जब वह एक वर्ण वाला होता है, इत्यादि वर्णन सात प्रदेशी स्कन्ध के समान यावत् कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है इत्यादि कहना चाहिये। उसके एक वर्ण, दो वर्ण और तीन वर्ण के [illegible] सात प्रदेशी स्कन्ध के समान कहना चाहिये। जब वह चार वर्ण वाला होता है तो कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल और पीला होता है। कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल और अनेक देश पीला होता है। इस प्रकार सात प्रदेशी स्कन्ध के समान पन्द्रह भंग यावत् 'अनेक देश काला, नीला, लाल और एक देश पीला होता है (सोलहवां भंग)। कदाचित् अनेक देश काला, नीला, लाल और पीला होता है। एक चतुःसंयोग में सोलह भंग होते हैं। पांच चतुःसंयोगों के सोलह-सोलह भंग होने से ८० भंग होते हैं।

जइ पंचवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १, सिय कालए य णीलए य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किल्लगा य २, एवं एएणं कमेणं भंगा चारेयव्वा जाव सिय कालए य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किल्लगे य १५, एसो पण्णरसमो भंगो, सिय कालगा य णीलगे य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किल्लए य १६, सिय कालगा य णीलगे य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किल्लगा य १७, सिय कालगा य णीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य १८, सिय कालगा य णीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किल्लगा य १९, सिय कालगा य णीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य २०, सिय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कालगा य णीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य २१, सिय कालगा य णीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य २२, सिय कालगा य णीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किल्लए य २३, सिय कालगा य णीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किल्लगा य २४, सिय कालगा य णीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किल्लए य २५, सिय कालगा य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किल्लए य २६, एए पंचसंजोएणं छव्वीसं भंगा भवइ, एवमेए सपुव्वावरेणं एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहिं दो एक्कतीसं भंगसया भवइ। गंधा जहा सत्तपएसियस्स, रसा जहा एयस्स चेव वण्णा, फासा जहा चउप्पएसियस्स।

भावार्थ--जब वह पांच वर्ण वाला होता है, तो कदाचित् एक देश काला नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है, कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल, पीला और अनेक देश श्वेत होता है। इस प्रकार अनुक्रम से भंग कहने चाहिये। १५-यावत् एक देश काला, अनेक देश नीला, लाल, पीला और एक देश श्वेत होता है। १६-कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। १७-कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल, पीला और अनेक देश श्वेत होता है। १८-कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल, अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है। १९-कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, लाल और अनेक देश पीला और श्वेत होता है। २०-कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, एक देश पीला और श्वेत होता है। २१-कदाचित् अनेक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, एक देश पीला और अनेक देश श्वेत होता है। २२-कदा-

चत् अनेक देश काला, एक देश नीला, अनेक देश लाल, पीला और एक देश श्वेत होता है । २३-कदाचित् अनेक देश काला, नीला, एक देश लाल, पीला, और श्वेत होता है । २४-कदाचित् अनेक देश काला, नीला, एक देश लाल, पीला और अनेक देश श्वेत होता है । २५-कदाचित् अनेक देश काला, नीला, एक देश लाल, अनेक देश पीला और एक देश श्वेत होता है । २६-कदाचित् अनेक देश काला, नीला, लाल, एक देश पीला और श्वेत होता है । इस प्रकार पंच-संयोगी २६ भंग होते हैं । ये सब मिला कर अर्थात् असंयोगी पांच, द्विक-संयोगी ४०, त्रिक-संयोगी ८०, चतुःसंयोगी ८० और पंच-संयोगी २६, ये वर्ण सम्बन्धी २३१ भंग होते हैं । गन्ध के सप्त-प्रदेशी के समान ६ भंग होते हैं । वर्ण के समान रस के २३१ भंग होते हैं और स्पर्श के चतुष्प्रदेशी के समान ३६ भंग होते हैं ।

विवेचन-अष्ट-प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के २३१, गन्ध के ६, रस के २३१ और स्पर्श के ३६, ये सब मिला कर ५०४ भंग होते हैं ।

९ प्रश्न-णवपएसियस्स पुच्छा ।

९ उत्तर-गोयमा ! सिय एगवण्णे, जहा अट्ठपएसिए जाव 'सिय चउफासे' पण्णत्ते । जइ एगवण्णे एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्ठपएसियस्स । जइ पंचवण्णे सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुकिल्लए १, सिय कालए य णीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुकिल्लगा य २, एवं परिवाडीए एकतीसं भंगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य णीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुकिल्लए य । एए एकत्तीसं भंगा । एवं एक्कग-दुयग-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहिं दो छत्तीसा भंगसया भवंति। गंधा जहा अट्ठपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा फासा जहा चउप्पएसियस्स।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! नव-प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न।

९ उत्तर-हे गौतम ! अष्ट-प्रदेशी स्कन्ध के समान यावत् कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है-तक जानना चाहिये। उसके एक वर्ण, दो वर्ण, तीन वर्ण और चार वर्ण के भंग अष्ट-प्रदेशी स्कन्ध के समान कहने चाहिये। जब वह पांच वर्ण वाला होता है, तो कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है। कदाचित् एक देश काला, नीला, लाल, पीला और अनेक देश श्वेत होता है। इस प्रकार क्रमपूर्वक ३१ भंग कहने चाहिये। यावत् कदाचित् अनेक देश काला, नीला, लाल, पीला और एक देश श्वेत होता है। इस प्रकार ३१ भंग जानने चाहिये। इस प्रकार वर्ण की अपेक्षा असंयोगी ५, द्विक-संयोगी ४०, त्रिक-संयोगी ८०, चतुःसंयोगी ८०, और पञ्च-संयोगी ३१, ये सब मिला कर वर्ण सम्बन्धी २३६ भंग होते हैं। गन्ध विषयक ६ भंग अष्टप्रदेशी के समान है। वर्ण के समान रस के २३६ भंग हैं और स्पर्श के विषय में चतुः-प्रदेशी के समान ३६ भंग होते हैं।

विवेचन-नव-प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के २३६, गंध के ६, रस के २३६ और स्पर्श के ३६ ये सभी मिलाकर ५१४ भंग होते हैं।

१० प्रश्न-दसपएसिए णं भंते ! खंधे-पुच्छा।

१० उत्तर-गोयमा ! सिय एगवण्णे० जहा णवपएसिए जाव 'सिय चउफासे पण्णत्ते'। जइ एगवण्णे एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चउवण्णा जेहेव णवपएसियस्स। पंचवण्णे वि तहेव, णवरं बत्तीसइमो भंगो भण्णइ । एवमेए एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएसु दोण्णि सत्तईसा भंगसया भवंति । गंधा जहा णवपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स । जहा दसपए-सिओ एवं संखेज्जपएसिओ वि, एवं असंखेज्जपएसिओ वि, सुहुमपरि-णओ अणंतपएसिओ वि एवं चेव ।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! दस प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न ।

१० उत्तर-हे गौतम ! नव-प्रदेशिक स्कन्ध के समान यावत् कदाचित् चार स्पर्श वाला होता है-तक कहना चाहिये । इसके एक वर्ण, दो वर्ण, तीन वर्ण और चार वर्ण सम्बन्धी भंग नव-प्रदेशी स्कन्ध के समान कहना चाहिये । जब वह पांच वर्ण वाला होता है, तो नव-प्रदेशी की तरह कहना चाहिये । परन्तु यहां 'अनेक देश काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत होता है,' यह बत्तीसवां भंग अधिक कहना चाहिये। इस प्रकार असंयोगी ५, द्विक-संयोगी ४०, त्रिक-संयोगी ८०, चतुःसंयोगी ८० और पंच-संयोगी ३२, ये सब मिला कर वर्ण के २३७ भंग होते हैं । गन्ध के ६ भंग नव-प्रदेशी स्कन्ध के समान है । वर्ण के समान रस के २३७ भंग होते हैं और स्पर्श सम्बन्धी ३६ भंग चतुष्प्रदेशी के समान होते हैं । दस-प्रदेशी के समान संख्यात-प्रदेशी, असंख्यात-प्रदेशी और सूक्ष्म-परिणाम वाला अनन्त-प्रदेशी स्कन्ध भी कहना चाहिये ।

विवेचन-दस-प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वर्ण के २३७, गन्ध के ६, रस के २३७ और स्पर्श के ३६, ये सब मिला कर ५१६ भंग होते हैं । इसी प्रकार संख्यात-प्रदेशी, असंख्यात-प्रदेशी और सूक्ष्म-परिणाम वाले अनन्त-प्रदेशी स्कन्ध के विषय में भी भंग कहने चाहियें ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

११ प्रश्न-बायरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कइ-वण्णे० ?

११ उत्तर-एवं जहा अट्ठारसमसए जाव 'सिय अट्ठफासे पण्णत्ते'। वण्ण-गंध-रसा जहा दसपएसियस्स। जइ चउफासे सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे णिद्धे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे २, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे णिद्धे ३, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे णिद्धे ५, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे ६, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे णिद्धे ७, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे ८, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे णिद्धे ९, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे १०, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे णिद्धे ११, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे १२, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे णिद्धे १३, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे १४, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे णिद्धे १५, सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे १६। एए सोलस भंगा।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! बादर परिणाम वाला (स्थूल) अनन्त-प्रदेशी स्कन्ध कितने वर्ण वाला होता है, इत्यादि प्रश्न।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

११ उत्तर-हे गौतम ! अठारहवें शतक के छठे उद्देशक के अनुसार यावत् 'कदाचित् आठ स्पर्श वाला भी कहा गया है'-तक जानना चाहिये। अनन्त-प्रदेशी बादर परिणाम वाले स्कन्ध के वर्ण, गन्ध और रस के भंग, दस प्रदेशी स्कन्ध के समान कहने चाहिये। यदि वह चार स्पर्श वाला होता है, तो १-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत और सर्व स्निग्ध होता है। २-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत और सर्व रूक्ष होता है। ३-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व उष्ण और सर्व स्निग्ध होता है। ४-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व उष्ण और सर्व रूक्ष होता है। ५-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व लघु, सर्व शीत और सर्व स्निग्ध होता है। ६-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व लघु, सर्व शीत और सर्व रूक्ष होता है। ७-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व लघु, सर्व उष्ण और सर्व स्निग्ध होता है। ८-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व लघु, सर्व उष्ण और सर्व रूक्ष होता है। ९-कदाचित् सर्व मृदु (कोमल), सर्व गुरु, सर्व शीत और सर्व स्निग्ध होता है। १०-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व शीत और सर्व रूक्ष होता है। ११-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व उष्ण और सर्व स्निग्ध होता है। १२-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व उष्ण और सर्व रूक्ष होता है। १३-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व लघु, सर्व शीत और सर्व स्निग्ध होता है। १४-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व लघु, सर्व शीत और सर्व रूक्ष होता है। १५-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व लघु, सर्व उष्ण और सर्व स्निग्ध होता है। १६-कदाचित् सर्व मृदु, सर्व लघु, सर्व उष्ण और सर्व रूक्ष होता है।

जइ पंचफासे सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा णिद्धा देसे लुक्खे ३, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा णिद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, एवं एए कक्खडेणं सोलस भंगा। सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, एवं मउएण वि सोलस भंगा, एवं बत्तीसं भंगा। सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे णिद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए बत्तीसं भंगा। सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे णिद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, एवं सव्वे ते पंचफासे अट्ठावीसं भंगसयं भवइ।

भावार्थ-जब वह पांच स्पर्श वाला होता है, तो-(१) सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। २-अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होता है। ३-अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत, अनेक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। ४-अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व शीत, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होता है। अथवा (२) कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के पूर्ववत् चार भंग। (३) अथवा सर्व कर्कश, सर्व लघु, सर्व शीत, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग। (४) अथवा कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व लघु, सर्व उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग। इस प्रकार कर्कश के साथ सोलह भंग होते हैं। अथवा सर्व मृदु, सर्व गुरु, सर्व शीत, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के पूर्ववत् चार भंग होते हैं। इस प्रकार मृदु के साथ भी कहने चाहिये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ये सोलह भंग हुए। इस प्रकार सब मिला कर ३२ भंग होते हैं। अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व स्निग्ध, एक देश शीत और एक देश उष्ण के सोलह भंग। अथवा सर्व कर्कश, सर्व गुरु, सर्व रूक्ष, एक देश शीत और एक देश उष्ण के सोलह भंग। ये सब मिला कर बत्तीस भंग होते हैं। अथवा कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व शीत, सर्व स्निग्ध, एक देश गुरु और एक देश लघु के पूर्ववत् ३२ भंग। अथवा कदाचित् सर्व गुरु, सर्व शीत, सर्व स्निग्ध, एक देश मृदु के भी पूर्ववत् ३२ भंग। इस प्रकार सब मिला कर पांच स्पर्श के १२८ भंग होते हैं।

जइ छफासे सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसा लुक्खा २, एवं जाव सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा णिद्धा देसा लुक्खा १६, एए सोलस भंगा। सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा। सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा। सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एए वि चउसट्ठिं भंगा। सव्वे कक्खडे सव्वे णिद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे १,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा। सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा णिद्धा देसा मउया देसा लुक्खा, एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे गरुए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे सीए सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए चउसट्ठिं भंगा। सव्वे ते छक्कासे तिण्णि चउरासीया भंगसया भवंति ३८४।

भावार्थ-जब वह छह स्पर्श वाला होता है तो, (१) सर्व कर्कश, सर्व गुरु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। २-कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व गुरु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होता है। इस प्रकार यावत् सर्व कर्कश, सर्व गुरु अनेक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष-यह सोलहवां भंग है। इस प्रकार १६ भंग होते है। (२) कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के सोलह भंग। (३) कदाचित् सर्व मृदु, सर्व गुरु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के सोलह भंग। (४) कदाचित् सर्व मृदु, सर्व लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के १६ भंग। ये सब मिला कर ६४ भंग होते हैं। अथवा कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व शीत, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

है । इस प्रकार यावत् सर्व मृदु सर्व उष्ण, अनेक देश गुरु, अनेक देश लघु, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं । यह चौसठवां भंग है । इस प्रकार इसके भी ६४ भंग होते हैं । कदाचित् सर्व कर्कश, सर्व स्निग्ध, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत और एक देश उष्ण होता है, यावत् कदाचित् सर्व मृदु, सर्व रूक्ष, अनेक देश गुरु, अनेक देश लघु, अनेक देश शीत और अनेक देश उष्ण होते हैं । यह चौसठवां भंग है । इस प्रकार यहां भी ६४ भंग होते हैं । कदाचित् सर्व गुरु, सर्व शीत, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है । इस प्रकार यावत् सर्व लघु, सर्व उष्ण, अनेक देश कर्कश, अनेक देश मृदु, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं । यह चौसठवां भंग है । इस प्रकार यहां भी ६४ भंग होते हैं । कदाचित् सर्व शीत, सर्व स्निग्ध, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश शीत और एक देश उष्ण होता है । इस प्रकार यावत् कदाचित् सर्व लघु, सर्व रूक्ष, अनेक देश कर्कश, अनेक देश मृदु, अनेक देश शीत और अनेक देश उष्ण होते हैं । यह चौसठवां भंग है । इस प्रकार यहां भी ६४ भंग होते हैं । कदाचित् सर्व शीत, सर्व स्निग्ध, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु और एक देश लघु होता है । इस प्रकार यावत् कदाचित् सर्व उष्ण, सर्व रूक्ष, अनेक देश कर्कश, अनेक देश मृदु, अनेक देश गुरु और अनेक देश लघु होता है । यह चौसठवां भंग है । इस प्रकार यहां पर भी ६४ भंग होते हैं । ये सब मिला कर छह स्पर्श सम्बन्धी ३८४ भंग होते हैं ।

जइ सत्तफासे सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे १, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा णिद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे

कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे। सव्वे ते सोलस भंगा भाणियव्वा। सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एवं गरुएणं एगत्तेणं लहुएणं पुहुत्तेणं एए वि सोलस भंगा। सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा। सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा। एवमेए चउसट्ठिं भंगा कक्खडेणं समं। सव्वे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एवं मउएण वि समं चउसट्ठिं भंगा भाणियव्वा। सव्वे गरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एवं गरुएण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एवं लहुएण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एवं सीएण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एवं उसिणेण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। सव्वे णिद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लहुए देसे सीए देसे उसिणे । एवं णिद्धेण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा । सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे । एवं लुक्खेण वि समं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा । एवं सत्तफासे पंच बारसुत्तरा भंगसया भवंति । १५

जब वह सात स्पर्श वाला होता है, तो (१) सर्व कर्कश, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है । ४-४-कदाचित् सर्व कर्कश, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं । (इस प्रकार चार भंग कहने चाहिये) (२) कदाचित् सर्व कर्कश, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग । (३) कदाचित् सर्व कर्कश, एक देश गुरु, एक देश लघु, अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग । (४) कदाचित् सर्व कर्कश, एक देश गुरु, एक देश लघु, अनेक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग । ये सब १६ भंग होते हैं । (२) कदाचित् सर्व कर्कश, एक देश गुरु, अनेक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है । इस प्रकार 'गुरु' पद को एक वचन में और 'लघु' पद को अनेक (बहु) वचन में रख कर पूर्ववत् सोलह भंग यहां भी कहने चाहिये । (३) कदाचित् सर्व कर्कश, अनेक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के १६ भंग । (४) कदाचित् सर्व कर्कश, अनेक देश गुरु, अनेक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के १६ भंग । ये ६४ भंग हुए । ये ६४ भंग 'सर्व कर्कश' के साथ बने

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हैं। (२) कदाचित् सर्व मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। इस प्रकार मृदु के साथ भी ६४ भंग होते हैं। (३) कदाचित् सर्व गुरु एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष इस प्रकार 'गुरु' के साथ भी ६४ भंग होते हैं। (४) कदाचित् सर्व लघु, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष, इस प्रकार लघु के साथ भी ६४ भंग होते हैं। (५) कदाचित् सर्व शीत, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष, इस प्रकार शीत के साथ भी ६४ भंग कहने चाहियें। (६) कदाचित् सर्व उष्ण, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष, इस प्रकार उष्ण के साथ भी ६४ भंग कहने चाहिये। (७) कदाचित् सर्व स्निग्ध, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत और एक देश उष्ण होता है। इस प्रकार स्निग्ध के साथ भी ६४ भंग होते हैं। (८) कदाचित् सर्व रूक्ष, एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु एक देश लघु, एक देश शीत और एक देश उष्ण, इस प्रकार रूक्ष के साथ भी ६४ भंग यावत् सर्व रूक्ष, अनेक देश कर्कश, अनेक देश मृदु, अनेक देश गुरु, अनेक देश लघु, अनेक देश शीत और अनेक देश उष्ण होता है। इस प्रकार ये सब मिला कर सात स्पर्श के ५१२ भंग होते हैं।

जइ अट्ठफासे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहु[illegible]ा सीया देसे उसिणे

देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे णिद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भंगा। देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे, एवं एए गरुएणं एगत्तएणं लहुएणं पुहत्तएणं सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एए वि सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे णिद्धे देसे लुक्खे। एए वि सोलस भंगा कायव्वा। सव्वे वि ते चउसट्ठिं भंगा कक्खड-मउएहिं एगत्तएहिं। ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं मउएणं पुहत्तेणं एते चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे एएहिं चेव दोहि वि पुहत्तेहिं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा जाव 'देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा णिद्धा देसा लुक्खा' एसो अपच्छिमो भंगो। सव्वे ते अट्ठफासे दो छप्पण्णा भंगसया भवंति। एवं एए बायरपरिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु बारस छण्णउया भंगसया भवंति।

भावार्थ-जब वह आठ स्पर्श वाला होता है, तो (१) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, एक देश

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष होता है। इसके चार भंग कहने चाहिये। (२) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग। (३) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, अनेक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग। (४) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, एक देश लघु, अनेक देश शीत, अनेक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के चार भंग। इस प्रकार चार चतुष्क के १६ भंग होते हैं। (२) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, एक देश गुरु, अनेक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष। इस प्रकार 'गुरु' पद को एक वचन में और 'लघु' पद को बहुवचन में रख कर पूर्ववत् १६ भंग कहने चाहिये। (३) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, अनेक देश गुरु, एक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के १६ भंग। (४) कदाचित् एक देश कर्कश, एक देश मृदु, अनेक देश गुरु, अनेक देश लघु, एक देश शीत, एक देश उष्ण, एक देश स्निग्ध और एक देश रूक्ष के १६ भंग। ये सब मिला कर ६४ भंग 'कर्कश और मृदु' को एक वचन में रखने से बनते हैं। (२) इन्हीं भंगों में 'कर्कश' को एक वचन में और मृदु को बहुवचन में रख कर पूर्ववत् ६४ भंग कहने चाहिये। (३) 'कर्कश' को बहुवचन में और 'मृदु' को एक वचन में रख कर फिर पूर्ववत् ६४ भंग कहने चाहिये। (४) 'कर्कश' और 'मृदु' दोनों को बहुवचन में रख कर फिर ६४ भंग कहने चाहिये यावत् अनेक देश कर्कश, अनेक देश मृदु, अनेक देश गुरु, अनेक देश लघु, अनेक देश शीत, अनेक देश उष्ण, अनेक देश स्निग्ध और अनेक देश रूक्ष होते हैं। यह अन्तिम भंग है। ये सब मिला कर आठ स्पर्श के २५६ भंग होते हैं। इस प्रकार बादर परिणत अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के सब संयोग के मिला कर १२९६ भंग स्पर्श सम्बन्धी होते हैं।

विवेचन-इस प्रकार बादर अनन्तप्रदेशी-स्कन्ध में स्पर्श के चतुःसंयोगी १६, पंच-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संयोगी १२८, षट्संयोगी ३८४, सप्तसंयोगी ५१२ और अष्टसंयोगी २५६, ये कुल मिला कर १२९६ भंग होते है। एक परमाणु से ले कर सूक्ष्म अनन्तप्रदेशी-स्कन्ध तक स्पर्श के ३९८ भंग होते हैं और बादर अनन्तप्रदेशी-स्कन्ध के १२९६ भंग होते हैं।

परमाणु से ले कर बादर अनन्तप्रदेशी-स्कन्ध तक वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श के ६४७० भंग होते हैं, जो पहले गिना दिये गये हैं।

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव परमाणु

१२ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! परमाणू पण्णत्ते ?

१२ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, तं जहा-१ दव्वपरमाणू, २ खेत्तपरमाणू, ३ कालपरमाणू, ४ भावपरमाणू ।

१३ प्रश्न-दव्वपरमाणू णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१३ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-१ अच्छेज्जे, २ अभेज्जे, ३ अडज्झे, ४ अगेज्झे ।

१४ प्रश्न-खेत्तपरमाणू णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१४ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-१ अणद्धे, २ अमज्झे, ३ अपएसे, ४ अविभाइमे ।

१५ प्रश्न-कालपरमाणू-पुच्छा ।

१५ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-१ अवण्णे, २ अगंधे, ३ अरसे, ४ अफासे ।

१६ प्रश्न-भावपरमाणू णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१६ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-१ वण्णमंते, २ गंधमंते, ३ रसमंते, ४ फासमंते ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए पंचमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-अच्छेज्जे-अछेदय, अभेज्जे अभेदय, अडज्झे-अदाह्य, अगेज्झे-अग्राह्य ।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! परमाणु कितने प्रकार का कहा गया है ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! परमाणु चार प्रकार का है । यथा-द्रव्य-परमाणु, क्षेत्र-परमाणु, काल-परमाणु और भाव-परमाणु ।

१३ प्रश्न-हे भगवन् ! द्रव्य-परमाणु कितने प्रकार का कहा गया है ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! द्रव्य-परमाणु चार प्रकार का है । यथा-अछेदय, अभेदय, अदाह्य और अग्राह्य ।

१४ प्रश्न-हे भगवन् ! क्षेत्र-परमाणु कितने प्रकार का कहा गया है ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! क्षेत्र-परमाणु चार प्रकार का कहा गया है । यथा-अनर्द्ध, अमध्य, अप्रदेश और अविभाग ।

१५ प्रश्न-हे भगवन् ! काल-परमाणु कितने प्रकार का कहा गया है ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! काल-परमाणु चार प्रकार का कहा गया हैं । यथा-अवर्ण, अगन्ध, अरस और अस्पर्श ।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! भाव-परमाणु कितने प्रकार का कहा गया है ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! भाव-परमाणु चार प्रकार का कहा गया है । यथा-वर्णवान्, गन्धयुक्त, रस सहित और स्पर्श्य ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-वर्णादि धर्म की विवक्षा किये बिना एक परमाणु को 'द्रव्य-परमाणु' कहते हैं । क्योंकि यहां केवल द्रव्य की ही विवक्षा की गई है। एक आकाश प्रदेश को 'क्षेत्र-परमाणु' कहते हैं । एक समय को 'काल-परमाणु' कहते हैं । वर्णादि धर्म की प्रधानता की विवक्षापूर्वक परमाणु को 'भाव-परमाणु' कहते हैं ।

द्रव्य-परमाणु शस्त्रादि के द्वारा काटा नहीं जा सकता । इसलिये वह 'अछेदय' कहलाता है । सूई आदि के द्वारा भेदन नहीं किया जा सकता, इसलिये वह 'अभेदय' कहलाता है । अग्नि से जलाया नहीं जा सकता, इसलिये 'अदाह्य' कहलाता है और हस्तादि से पकड़ा नहीं जा सकता, इसलिये वह 'अग्राह्य' कहलाता है। परमाणु अति सूक्ष्म है, इसलिये उसमें छेदन, भेदन, दहन, ग्रहणादि क्रिया नहीं हो सकती ।

परमाणु के सम-संख्या वाले अवयव नहीं होते । इसलिये वह 'अनर्द्ध' कहलाता है । विषम संख्या वाले अवयव नहीं हैं, इसलिये 'अमध्य' कहलाता है । अवयव नहीं है, इसलिये वह 'अप्रदेश' कहलाता है । परमाणु का विभाग नहीं हो सकता, इसलिये वह 'अविभाग' कहलाता है ।

॥ बीसवें शतक का पांचवा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

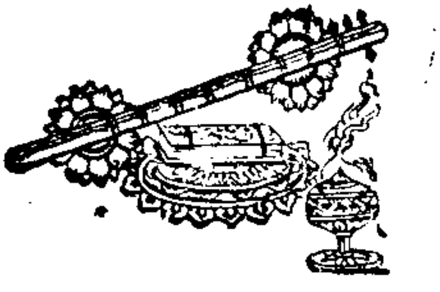

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २० उद्देशक ६

आहार ग्रहण उत्पत्ति के पूर्व या पश्चात्

१ प्रश्न–पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा, पुव्विं आहारित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ?

१ उत्तर–गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता० एवं जहा सत्तरसम-सए छट्ठुद्देसे जाव से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'पुव्विं वा जाव उववज्जेज्जा'। णवरं तेहिं संपाउणणा, इमेहिं आहारो भण्णइ, सेसं तं चेव ।

२ प्रश्न–पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ?

२ उत्तर–एवं चेव, एवं जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।

कठिन शब्दार्थ–अंतरा–मध्य, समोहए–समवहत–समुद्घात की ।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव, इस रत्नप्रभा पृथ्वी और शर्कराप्रभा पृथ्वी के बीच में मरण समुद्घात कर के सौधर्म-कल्प

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

में पृथ्वीकायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, वे पहले उत्पन्न हो कर पीछे आहार करते हैं, या पहले आहार कर के पीछे उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! वे पहले उत्पन्न हो कर पीछे आहार करते हैं। अथवा पहले आहार कर के पीछे उत्पन्न होते हैं, इत्यादि वर्णन सतरहवें शतक के छठे उद्देशक के अनुसार। इसलिये हे गौतम ! ऐसा कहा जाता है कि यावत् पीछे उत्पन्न होते हैं। विशेष यह है कि वहां पृथ्वीकायिक 'सम्प्राप्त करते हैं-पुद्गल ग्रहण करते हैं'-कथन है और यहां 'आहार करते है'-कहना चाहिए। शेष सब पूर्ववत्।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव, इस रत्नप्रभा और शर्करा-प्रभा पृथ्वी के मध्य में मरण समुद्घात कर के ईशानकल्प में पृथ्वीकायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, वे पहले उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ?

२ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत्। इस प्रकार यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक उपपात जानो।

३ प्रश्न-पुढविक्काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसी-पब्भाराए।

३ उत्तर-एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए उववाए-यव्वो।

४ प्रश्न-पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मी-साणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए से णं भंते ! पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा ?

४ उत्तर-सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं जाव णिक्खेवओ ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव, शर्कराप्रभा और वालुकाप्रभा के मध्य में मरण-समुद्घात कर के, सौधर्म-कल्प में यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी में उत्पन्न होने के योग्य हैं, इत्यादि प्रश्न ?

३ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । इस प्रकार इस क्रम से यावत् तमःप्रभा और अधःसप्तम पृथ्वी के मध्य में मरण-समुद्घात पूर्वक पृथ्वीकायिक जीवों का सौधर्म-कल्प में यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी में उपपात जानना चाहिए ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव, सौधर्म, ईशान और सनत्कुमार, माहेन्द्र-कल्प के मध्यम मरण-समुद्घात कर के इस रत्नप्रभा पृथ्वी में पृथ्वीकायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, वे पहले उत्पन्न हो कर, पीछे आहार करते हैं, इत्यादि प्रश्न ?

४ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । यावत् इस कारण से ऐसा कहा जाता है, इत्यादि उपसंहार कहना चाहिये ।

५ प्रश्न-पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मी-साणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ?

५ उत्तर-एवं चेव, एवं जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एवं सणंकुमार-माहिंदाणं बंभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो, एवं बंभलोगस्स लंत-

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

गस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं लंतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं सहस्सारस्स आणयपाणकप्पाणं य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं आणय-पाणयाणं आरण-अच्चुयाण य कप्पाणं अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं आरण-च्चुयाणं गेवेज्जविमाणाण य अंतरा जाव अहेसत्तमाए, गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए, एवं अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भाराए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ।१।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव, सौधर्म, ईशान और सनत्कुमार माहेन्द्रकल्प के मध्य में मरण-समुद्घात कर के शर्करापृथ्वी में पृथ्वीकायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, इत्यादि प्रश्न ।

५ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । इस प्रकार यावत् अधःसप्तम पृथ्वी तक उपपात कहना चाहिये । इस प्रकार सनत्कुमार, माहेन्द्र और ब्रह्मलोक कल्प के मध्य में मरण-समुद्घात कर के पुनः रत्नप्रभा से ले कर यावत् अधः-सप्तम पृथ्वी तक उपपात जानना चाहिये । इस प्रकार ब्रह्मलोक और लान्तक के अन्तराल में मरण-समुद्घातपूर्वक यावत् अधःसप्तम पृथ्वी तक । इस प्रकार लान्तक और महाशुक्र कल्प के अन्तराल में, महाशुक्र और सहस्रार-कल्प के मध्य में, सहस्रार और आनत तथा प्राणत-कल्प के बीच में आनत, प्राणत और आरण तथा अच्युत-कल्प के मध्य में आरण, अच्युत और ग्रैवेयक विमानों के आंतरे में, ग्रैवेयक विमान और अनुत्तर विमानों के अन्तराल में तथा अनुत्तर विमान और ईषत्प्राग्भारापृथ्वी के बीच में मरण-समुद्घातपूर्वक रत्नप्रभा से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ले कर यावत् अधःसप्तम पृथ्वी तक पृथ्वीकायिक जीवों का उपपात जानना चाहिये।

विवेचन-जो जीव गेंद के समान समुद्घात कर के मरता है, वह पहले उत्पन्न होता है और पीछे आहार करता है अर्थात् उत्पत्ति स्थान में उत्पन्न हो कर शरीर प्रायोग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है। जो जीव ईलिका गति रूप समुद्घात कर के उत्पन्न होता है, वह पहले आहार करता है अर्थात् उत्पत्ति क्षेत्र में पहुँचे हुए प्रदेशों के द्वारा आहार ग्रहण करता है और इसके बाद पूर्व-शरीर में रहे हुए प्रदेशों को उत्पत्ति क्षेत्र में खींचता है।

६ प्रश्न-आउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ।

६ उत्तर-सेसं जहा पुढविक्काइयस्स जाव से तेणट्ठेणं० । एवं पढम-दोच्चाणं अंतरा समोहए जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो, एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो आउक्काइयत्ताए ।

७ प्रश्न-आउयाए णं भंते ! सोहम्मी-साणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ?

७ उत्तर-सेसं तं चेव, एवं एएहिं चेव अंतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वाएयव्वो, एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो । २ ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! जो अप्कायिक जीव इस रत्नप्रभा और शर्कराप्रभा पृथ्वी के बीच में मरण-समुद्घात कर के सौधर्मकल्प में अप्कायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, इत्यादि पृथ्वीकायिक के समान प्रश्न ।

६ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् पृथ्वीकायिक के समान । इस प्रकार पहली और दूसरी पृथ्वी के मध्य मरण-समुद्घातपूर्वक अप्कायिक जीवों का यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक उपपात जानना चाहिये । इस क्रम से यावत् तमःप्रभा और अधःसप्तम पृथ्वी के मध्य में मरण-समुद्घातपूर्वक अप्कायिक जीवों का यावत् ईषत्प्राग्भारापृथ्वी तक अप्कायिकपने उपपात जानना चाहिये।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! जो अप्कायिक जीव सौधर्म, ईशान और सनत्कुमार माहेन्द्र-कल्प के बीच में मरण-समुद्घात कर के रत्नप्रभा पृथ्वी में घनोदधि और घनोदधि वलयों में अप्कायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, इत्यादि प्रश्न ?

७ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । इस प्रकार पूर्व-कथित अन्तरालों में मरण-समुद्घात को प्राप्त अप्कायिक जीवों का अधःसप्तम पृथ्वी तक के घनोदधि और घनोदधि-वलयों में अप्कायिकपने उपपात कहना चाहिये । इस प्रकार यावत् अनुत्तर विमान और ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के बीच मरण-समुद्घात प्राप्त अप्कायिक जीवों का यावत् अधःसप्तम पृथ्वी तक के घनोदधि और घनोदधि-वलयों में अप्कायिकपने उपपात जानना चाहिये ।

८ प्रश्न-वाउकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ?

८ उत्तर-एवं जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, णवरं अंतरेसु समोहणा णेयव्वा, सेसं तं चेव जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ वीसइमे सए छट्ठओ उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! जो वायुकायिक जीव, इस रत्नप्रभा और शर्कराप्रभा पृथ्वी के मध्य में मरण-समुद्घात कर के सौधर्म कल्प में वायुकायिकपने उत्पन्न होने के योग्य हैं, इत्यादि प्रश्न ।

८ उत्तर-हे गौतम ! सतरहवें शतक के दसवें वायुकायिक उद्देशक के अनुसार यहां भी जानना चाहिये । विशेष यह है कि रत्नप्रभा आदि पृथ्वियों के अन्तरालों में मरण-समुघात पूर्वक कहना चाहिये, शेष सब पूर्ववत् है । इस प्रकार यावत् अनुत्तर विमान और ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के मध्य में मरणसमुद्घात कर के जो वायुकायिक जीव घनवात और तनुवात में तथा घनवात वलयों और तनुवात वलयों में वायुकायिकपने उत्पन्न होने के योग्य है, इत्यादि सब पूर्ववत् । यावत् इस कारण उत्पन्न होते हैं ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

॥ बीसवें शतक का छठा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २० उद्देशक ७

अनन्तर-परम्पर बंध

१ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?

१ उत्तर-गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा-१ जीवप्पओग-बंधे, २ अणंतरबंधे, ३ परंपरबंधे ।

२ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

२ उत्तर-एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं ।

३ प्रश्न-णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

३ उत्तर-गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा-जीवप्पओग-बंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ।

४ प्रश्न-णेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

४ उत्तर-एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव अंतराइयस्स ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! बन्ध तीन प्रकार का कहा गया है ; यथा-जीव-प्रयोग बन्ध, अनन्तर बन्ध और परम्पर बन्ध ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ प्रश्न—हे भगवन् ! नैरयिक जीवों के बन्ध कितने प्रकार के हैं ?

२ उत्तर—हे गौतम ! पूर्ववत्, यावत् वैमानिक पर्यन्त ।

३ प्रश्न—हे भगवन् ! ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध कितने प्रकार का है ?

३ उत्तर—हे गौतम ! तीन प्रकार का है । यथा—जीव-प्रयोग बन्ध, अनन्तर बन्ध और परम्पर बन्ध ।

४ प्रश्न—हे भगवन् ! नैरयिकों के ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है ?

४ उत्तर—हे गौतम ! पूर्ववत्, यावत् वैमानिक पर्यन्त, अन्तराय कर्म तक का बन्ध जानना चाहिये ।

५ प्रश्न—णाणावरणिज्जोदयस्स णं भंते ! कम्मस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

५ उत्तर—गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते एवं चेव, एवं णेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं, एवं जाव अंतराइयउदयस्स ।

६ प्रश्न—इत्थीवेयस्स णं भंते ! कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

६ उत्तर—गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते एवं चेव ।

७ प्रश्न—असुरकुमाराणं भंते ! इत्थीवेयस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

७ उत्तर—एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स इत्थिवेओ अत्थि, एवं पुरिसवेयस्स वि, एवं णपुंसगवेयस्स वि जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जो अत्थि वेओ ।

भावार्थ—५ प्रश्न—हे भगवन् ! उदय प्राप्त ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध कितने प्रकार का है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । इस प्रकार नैरयिकों से ले कर यावत् वैमानिकपर्यन्त यावत् अन्तरायोदय कर्म-बन्ध तक जानना चाहिये ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! (उदय प्राप्त) स्त्री-वेद का बन्ध कितने प्रकार का है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् तीन प्रकार का है ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमारों के (उदय प्राप्त) स्त्री-वेद का बन्ध कितने प्रकार का है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् तीन प्रकार का है । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक । विशेष में जिसके स्त्री-वेद है उसके लिये ही जानना चाहिये । इस प्रकार पुरुषवेद और नपुंसकवेद के विषय में भी जानना चाहिये, यावत् वैमानिक पर्यन्त । यहां भी जिनके जो वेद हो वही जानना चाहिये ।

८ प्रश्न-दंसणमोहणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

८ उत्तर-एवं चेव, णिरंतरं जाव वेमाणियाणं । एवं चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाणं । एवं एएणं कमेणं ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स, आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए आभिणिबोहियणाणस्स जाव केवलणाणस्स, मइअण्णाणस्स, सुयअण्णाणस्स, विभंगणाणस्स, एवं आभिणिबोहियणाणविसयस्स भंते ! कइविहे बंधे पण्णत्ते जाव केवलणाणविसयस्स मइअण्णाणविसयस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुयअण्णाणविसयस्स विभंगणाणविसयस्स एएसिं सव्वेसिं पयाणं तिविहे बंधे पण्णत्ते। सव्वे एए चउव्वीसं दंडगा भाणियव्वा, णवरं जाणियव्वं जस्स जं अत्थि। जाव-

प्रश्न-वेमाणियाणं भंते ! विभंगणाणविसयस्स कइविहे बंधे पण्णत्ते ?

उत्तर-गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा-जीवप्पओगबंधे अणंतरबंधे परंपरबंधे।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! दर्शन-मोहनीय कर्म का बन्ध कितने प्रकार का है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् तीन प्रकार का है। इस प्रकार यावत् वैमानिक-पर्यन्त तथा इसी प्रकार चारित्र-मोहनीय के विषय में भी यावत् वैमानिक तक।

प्रश्न-इस क्रम से औदारिक-शरीर यावत् कार्मण-शरीर, आहारसंज्ञा यावत् परिग्रह-संज्ञा, कृष्ण-लेश्या यावत् शुक्ल-लेश्या, सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि, मतिज्ञान यावत् केवलज्ञान, मति-अज्ञान, श्रुत-अज्ञान और विभंगज्ञान इन सब का बन्ध-हे भगवन् ! कितने प्रकार का है ?

उत्तर-हे गौतम ! इन सब का बन्ध तीन प्रकार का है। इन सब के विषय में २४ दण्डक से जानना चाहिये। विशेष यह है कि जिसके जो हो, वही जानना चाहिये। यावत्-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न–हे भगवन् ! वैमानिक के विभंगज्ञान का बन्ध कितने प्रकार का है?

उत्तर–हे गौतम ! तीन प्रकार का है। यथा–जीव-प्रयोग बन्ध, अनन्तर बन्ध और परम्पर बन्ध।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'– कह कर यावत् गौतम स्वामी विचरते हैं।

विवेचन–जीव के प्रयोग से अर्थात् मन, वचन, काया के व्यापार से कर्म-पुद्गलों का आत्मा के साथ सम्बन्ध होना 'जीव-प्रयोग बन्ध' कहलाता है। कर्म-पुद्गलों का बन्ध होने के बाद के समय में जो बन्ध होता है, उसे 'अनन्तर बन्ध' कहते हैं। इसके पश्चात् द्वितीयादि समय में जो बन्ध होता है, उसे 'परम्पर बन्ध' कहते हैं।

उदय प्राप्त ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध पूर्व-काल की अपेक्षा जानना चाहिये। अथवा ज्ञानावरणीयपने जिसका उदय है, ऐसे कर्म का बन्ध समझना चाहिये, क्योंकि कर्म, विपाक से और प्रदेशों से–दोनों तरह से वेदा जाता है। अतः यहाँ विपाकोदय से वेदे जाने योग्य कर्म का बन्ध समझना चाहिये। अथवा ज्ञानावरणीय कर्म के उदय में जो कर्म बंधता है अथवा वेदा जाता है, उस कर्म का बन्ध जानना चाहिये।

आत्मा के साथ कर्मों के सम्बन्ध को 'बन्ध' कहते हैं–यह बात पहले कही जा चुकी है। परन्तु यहाँ कर्म-पुद्गलों का अथवा अन्य पुद्गलों का आत्मा के साथ सम्बन्ध होना 'बन्ध' माना जाय, तो औदारिकादि शरीर, आहार आदि संज्ञाजनक कर्म और कृष्णादि लेश्या का बन्ध तो घटित हो सकता है, परन्तु दृष्टि, ज्ञान, अज्ञान और तद् विषयक बन्ध कैसे हो सकता है ? क्योंकि ये सब अपौद्गलिक (आत्मिक) है। इसका उत्तर यह है कि यहाँ का बन्ध का अर्थ केवल सम्बन्ध विवक्षित है, इसलिये सम्यग्दृष्टि आदि का जीव प्रयोगादि बन्ध घटित हो जाता है।

॥ बीसवें शतक का सातवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २० उद्देशक ८

कर्मभूमि-अकर्मभूमि में उत्सर्पिणी आदि काल

१ प्रश्न–कइ णं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?

१ उत्तर–गोयमा ! पण्णरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं, पंच महाविदेहाइं ।

२ प्रश्न–कइ णं भंते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?

२ उत्तर–गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पंच हेमवयाइं, पंच हेरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइं, पंच रम्मगवासाइं, पंच देवकुराइं, पंच उत्तरकुराइं ।

३ प्रश्न–एयासु णं भंते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि उस्सप्पिणीइ वा ओसप्पिणीइ वा ?

३ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे ।

४ प्रश्न–एएसु णं भंते ! पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु अत्थि उस्सप्पिणीइ वा ओसप्पिणीइ वा ?

४ उत्तर–हंता अत्थि । एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु०? णेवत्थि उस्सप्पिणी, णेवत्थि ओसप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ- १ प्रश्न-हे भगवन् ! कर्मभूमियां कितनी कही गई हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! कर्मभूमियां पन्द्रह कही गई हैं । यथा-पांच भरत, पांच ऐरवत और पांच महाविदेह ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! अकर्मभूमियां कितनी कही गई हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! अकर्मभूमियां तीस कही गई हैं । यथा-पांच हैमवत, पांच हैरण्यवत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यकवर्ष, पांच देव कुरु और पांच उत्तर कुरु ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! उपरोक्त तीस अकर्मभूमियों में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी रूप काल है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! पांच भरत और पांच ऐरवत क्षेत्रों में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल है ?

४ उत्तर-हां, गौतम ! है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! पांच महाविदेह क्षेत्र में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल है ?

उत्तर-हे गौतम ! नहीं है । हे आयुष्यमन् श्रमण ! वहां एक अवस्थित काल कहा गया है ।

विवेचन-जिन क्षेत्रों में असि (शस्त्र और युद्ध विद्या) मषि (लेखन और पठन-पाठन) और कृषि तथा आजीविका के दूसरे साधन रूप कर्म (व्यवसाय) हों, उन्हें 'कर्म-भूमि' कहते हैं । जहां असि, मषि, कृषि आदि न हों, किन्तु कल्पवृक्षों से निर्वाह होता हो, उन्हें 'अकर्म-भूमि' कहते हैं ।

कर्मभूमि पन्द्रह हैं । उनमें से जम्बूद्वीप में एक भरत, एक ऐरवत और एक महा-विदेह है । धातकी खण्ड द्वीप में दो भरत, दो ऐरवत और दो महाविदेह हैं । अर्द्ध पुष्कर द्वीप में दो भरत, दो ऐरवत और दो महाविदेह हैं । इस प्रकार ये पन्द्रह कर्मभूमि हैं ।

अकर्मभूमि तीस हैं । उनमें से एक हैमवत, एक हैरण्यवत, एक हरिवर्ष एक रम्यक-वर्ष, एक देवकुरु और एक उत्तरकुरु-ये छह जम्बूद्वीप में हैं और इससे द्विगुण-बारह धातकी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

खण्ड द्वीप में और बारह अर्द्ध पुष्कर द्वीप में हैं।

जिस काल में जीवों के संहनन और संस्थान क्रमशः अधिकाधिक शुभ होते जाय, आयु और अवगाहना बढ़ते जाय तथा उत्थान-कर्म-बल-वीर्य-पुरुषकार पराक्रम की वृद्धि होती जाय, वह 'उत्सर्पिणी' काल है। इस काल में पुद्गलों के वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श भी क्रमशः शुभ होते जाते हैं। अशुभतम, अशुभतर और अशुभ भाव क्रमशः शुभ, शुभतर होते हुए शुभतम हो जाते हैं। इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि होते हुए क्रमशः उच्चतम अवस्था आ जाती है। उत्सर्पिणी काल दस क्रीड़ाक्रोड़ी सागरोपम का होता है।

जिस काल में जीवों के संहनन और संस्थान क्रमशः हीन होते जाय, आयु और अवगाहना घटती जाय तथा उत्थान-कर्म-बल-वीर्य और पुरुषकार पराक्रम का ह्रास होता जाय, वह 'अवसर्पिणी' काल है। इस काल में पुद्गलों के वर्ण-गन्ध-रस और स्पर्श हीन होते जाते हैं। शुभ भाव घटते जाते हैं और अशुभ भाव बढ़ते जाते हैं। अवसर्पिणी काल भी दस क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम का होता है।

महाविदेह के तीर्थंकरों का धर्म

५ प्रश्न-एएसु णं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति ?

५ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे। एएसु णं (भंते !) पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं (पंचाणुव्वइयं) सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति, अवसेसा णं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति। एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! पांच महाविदेह में अरिहन्त भगवान् पांच महाव्रत और सप्रतिक्रमण धर्म का उपदेश करते हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है । पांच भरत और पांच ऐरवत क्षेत्रों में प्रथम और अन्तिम-ये दो अरिहन्त भगवान्, पांच महाव्रत (और पांच अणुव्रत) और सप्रतिक्रमण धर्म का उपदेश करते हैं । शेष अरिहन्त भगवान् चार याम रूप धर्म का उपदेश करते हैं और पांच महाविदेह में भी अरिहन्त भगवान् चार याम रूप धर्म का उपदेश करते हैं ।

भरत-क्षेत्र में २४ तीर्थंकर

६ प्रश्न-जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कइ तित्थगरा पण्णत्ता ?

६ उत्तर-गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा-उसभ-अजिय-संभव- अभिणंदण- सुमइ- सुप्पभ- सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-सेज्जंस-वासुपुज्ज-विमल-अणंत- धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-णमि-णेमि-पास-वद्धमाणा ।

७ प्रश्न-एएसि णं भंते ! चउवीसाए तित्थगराणं कइ जिणंतरा पण्णत्ता ?

७ उत्तर-गोयमा ! तेवीसं जिणंतरा पण्णत्ता ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! इस जम्बूद्वीप के भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में कितने तीर्थंकर हुए हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! चौबीस तीर्थंकर हुए हैं । यथा-१-ऋषभ, २-अजित, ३-संभव, ४-अभिनन्दन, ५-सुमति, ६-सुप्रभ, (पद्मप्रभ) ७-सुपार्श्व, ८-शशि, (चन्द्रप्रभ), ९-पुष्पदन्त (सुविधि), १०-शीतल, ११-श्रेयांस,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१२-वासुपूज्य, १३-विमल, १४-अनन्त, १५-धर्म, १६-शान्ति, १७-कुन्थु, १८-अर, १९-मल्लि, २०-मुनिसुव्रत, २१-नमि, २२-नेमि, २३-पार्श्व, २४-वर्धमान।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! इन चौबीस तीर्थंकरों के कितने अन्तर (व्यवधान) कहे हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! तेईस अन्तर कहे हैं ?

जिनान्तरों में श्रुत व्यवच्छेद

८ प्रश्न-एएसि णं भंते ! तेवीसाए जिणंतरेसु कस्स कहिं कालियसुयस्स वोच्छेए पण्णत्ते ?

८ उत्तर-गोयमा ! एएसु णं तेवीसाए जिणंतरेसु पुरिमपच्छिम-एसु अट्ठसु २ जिणंतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स अवोच्छेए पण्णत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणंतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स वोच्छेए पण्णत्ते, सव्वत्थ वि णं वोच्छिण्णे दिट्ठिवाए।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! इन तेईस जिनान्तरों में किस जिन के अन्तर में कालिकश्रुत का व्यवच्छेद कहा है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! इन तेईस जिनान्तरों में पहले आठ और पिछले आठ जिनान्तरों में कालिकश्रुत का अव्यववछेद कहा है और मध्य के सात जिनान्तरों में कालिकश्रुत का व्यवच्छेद हुआ है। दृष्टिवाद का व्यवच्छेद तो सभी जिनान्तरों में हुआ है।

विवेचन-जिन सूत्रों का अध्ययनादि काल में ही अर्थात् दिन के और रात्रि के प्रथम प्रहर और अन्तिम प्रहर में किया जा सकता है, वे सूत्र 'कालिक' कहलाते हैं, जैसे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आचारांग आदि। जिन सूत्रों का अध्ययनादि अस्वाध्याय काल को छोड़ कर शेष सब काल में किया जा सकता है, उन्हें 'उत्कालिक श्रुत' कहते हैं-दशवैकालिक आदि।

नौवें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ स्वामी से ले कर सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ स्वामी तक सात अन्तरों (मध्य काल) में कालिकश्रुत का विच्छेद हो गया था, और दृष्टि-वाद का विच्छेद तो सभी जिनान्तरों में हुआ और होता है।

सात जिनान्तरों में कालिकश्रुत का विच्छेद काल इस प्रकार है-

चउभागो चउभागो तिण्णि य, चउभाग पलियमेगं च।
तिण्णेव य चउभागा, चउत्थभागो य चउभागो॥

अर्थात्-सुविधिनाथ और शीतलनाथ के बीच में पल्योपम का चतुर्थ भाग, शीतलनाथ और श्रेयांसनाथ के बीच में पल्योपम का चतुर्थ भाग, श्रेयांसनाथ और वासुपूज्य के मध्य में पल्योपम का तीन चौथाई भाग (पौन पल्योपम), वासुपूज्य और विमलनाथ के मध्य एक पल्योपम, बिमलनाथ और अनन्तनाथ के मध्य पल्योपम का तीन चौथाई भाग, अनन्तनाथ और धर्मनाथ के मध्य पल्योपम का चतुर्थ भाग तथा धर्मनाथ और शान्तिनाथ के मध्य पल्योपम का चतुर्थ भाग तक कालिकश्रुत का विच्छेद हो गया था।

भरत-क्षेत्र में पूर्वगत श्रुत कब तक ?

९ प्रश्न-जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवइयं कालं पुव्वगए अणुसज्जिस्सइ ?

९ उत्तर-गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए ममं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसज्जिस्सइ।

१० प्रश्न-जहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसज्जिस्सइ, तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए अव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सेसाणं तित्थगराणं केवइयं कालं पुव्वगए अणुसज्जित्था ?

१० उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइयाणं संखेज्जं कालं, अत्थेगइयाणं असंखेज्जं कालं ।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! इस जम्बूद्वीप के भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में आप देवानुप्रिय का पूर्वगत श्रुत कितने काल तक रहेगा ?

९ उत्तर-हे गौतम ! इस जम्बूद्वीप के भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में मेरा पूर्वगत श्रुत एक हजार वर्ष तक रहेगा ।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! जिस प्रकार इस जम्बूद्वीप के भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में आप देवानुप्रिय का पूर्वगत श्रुत एक हजार वर्ष तक रहेगा, उसी प्रकार शेष दूसरे तीर्थंकरों का पूर्वगत श्रुत कितने काल तक रहा था ?

१० उत्तर-हे गौतम ! कितने ही तीर्थंकरों का पूर्वगत श्रुत संख्यात काल तक रहा और कितने ही तीर्थंकरों का असंख्यात काल तक रहा ।

भरत-क्षेत्र में जिन-धर्म कब तक ?

११ प्रश्न-जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवइयं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सइ ?

११ उत्तर-गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए ममं एगवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सइ ।

१२ प्रश्न-जहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एकवीसं वाससहस्साइं तित्थं अणुसज्जिस्सइ तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साणं चरि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मतित्थगरस्स केवइयं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सइ ?

१२ उत्तर-गोयमा ! जावइए णं उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइं संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सइ ।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! इस जम्बूद्वीप के भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में आप देवानुप्रिय का तीर्थ कितने काल तक रहेगा ?

११ उत्तर-हे गौतम ! जम्बूद्वीप के इस भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में मेरा तीर्थ इक्कीस हजार वर्ष तक रहेगा ।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! जिस प्रकार इस जम्बूद्वीप के भरत-क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में आप देवानुप्रिय का तीर्थ इक्कीस हजार वर्ष तक रहेगा, उसी प्रकार हे भगवन् ! इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में भावी तीर्थंकरों में से अन्तिम तीर्थंकर का तीर्थ कितने काल तक रहेगा ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! कौशल देशोत्पन्न ऋषभ देव अरिहन्त का जितना जिनपर्याय है, उतना (एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व) वर्ष तक भावी तीर्थंकरों में से अन्तिम तीर्थंकर का तीर्थ रहेगा ।

विवेचन-श्रमण भगवान् महावीर स्वामी का तीर्थ इक्कीस हजार वर्ष तक चलेगा और पश्चानुपूर्वी के क्रम मे पार्श्वनाथ स्वामी आदि तीर्थंकरों का तीर्थ संख्यात काल तक रहा था और ऋषभदेव आदि का तीर्थ असंख्यात काल तक रहा था ।

तीर्थ और तीर्थंकर

१३ प्रश्न-तित्थं भंते ! तित्थं, तित्थगरे तित्थं ?

१३ उत्तर-गोयमा ! अरहा ताव णियमं तित्थगरे, तित्थं पुण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चाउवण्णाइण्णे समणसंघे, तं जहा-समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ।

१४ प्रश्न-पवयणं भंते ! पवयणं, पावयणी पवयणं ?

१४ उत्तर-गोयमा ! अरहा ताव णियमं पावयणी, पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तं जहा-आयारो जाव दिट्ठिवाओ।

१५ प्रश्न-जे इमे भंते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया, कोरव्वा एए णं अस्सिं धम्मे ओगाहंति, अस्सिं० २ ओगाहित्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, अट्ठ० २ पवाहित्ता तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेंति ?

१५ उत्तर-हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा भोगा तं चेव जाव अंतं करेंति, अत्थेगइया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति।

१६ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! देवलोया पण्णत्ता ?

१६ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, तं जहा-भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ वीसइमे सए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-इक्खागा-इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! 'तीर्थ' को तीर्थ कहते हैं, या तीर्थंकर को तीर्थ कहते हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१३ उत्तर-हे गौतम ! अरिहन्त तो अवश्य तीर्थंकर हैं (तीर्थ नहीं) परन्तु ज्ञानादि गुणों से युक्त चार प्रकार का श्रमण-संघ तीर्थ कहलाता है। यथा-साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका।

१४ प्रश्न-हे भगवन् ! 'प्रवचनकार' ही 'प्रवचन' कहलाता है या उनके द्वारा उपदिष्ट 'प्रवचन' ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! अरिहन्त अवश्य प्रवचनी हैं (प्रवचन नहीं) और द्वादशांग गणिपिटक प्रवचन है। यथा-आचारांग यावत् दृष्टिवाद।

१५ प्रश्न-हे भगवन् ! जो उग्रकुल, भोगकुल, राजन्यकुल, इक्ष्वाकुकुल, ज्ञातकुल और कौरव्यकुल, इन कुलों में उत्पन्न क्षत्रिय, इस धर्म में प्रवेश करते हैं और प्रवेश कर के आठ प्रकार के कर्म रूपी रज-मैल को धुनते हैं (नष्ट करते हैं) इसके पश्चात् वे सिद्ध होते हैं, यावत् सर्व दुःखों का अन्त करते हैं ?

१५ उत्तर-हाँ, गौतम ! उग्रकुल आदि कुलों में उत्पन्न क्षत्रिय है, वे यावत् सर्व दुःखों का अन्त करते हैं और कितने ही किन्हीं देवलोकों में देवपने उत्पन्न होते हैं।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! देवलोक कितने प्रकार के कहे हैं ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! देवलोक चार प्रकार के कहे हैं। यथा-भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-संघ को 'तीर्थ' कहते हैं, या 'तीर्थंकर' को 'तीर्थ' कहते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया है कि तीर्थंकर तो तीर्थ के प्रवर्तक होते हैं, इसलिये वे 'तीर्थ' नहीं कहलाते, किन्तु साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका रूप संघ 'तीर्थ' कहलाता है।

दूसरा प्रश्न किया गया है कि 'प्रवचन' किसे कहते हैं ? इसका उत्तर दिया गया है कि-

'प्रकर्षेणोच्यतेऽभिधेयमनेनेतिप्रवचनम्-आगमः।'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

-विशिष्ट रूप से जो कहा जाय, उसे 'प्रवचन' कहते हैं, अर्थात् 'आगम' को 'प्रवचन' कहते हैं। तीर्थंकर भगवान् प्रवचन के प्रणेता होते हैं। इसलिये वे 'प्रवचनी' कहलाते हैं।

॥ बीसवें शतक का आठवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २० उद्देशक ९

चारण-मुनियों की तीव्र-गति

१ प्रश्न-कइविहा णं भंते ! चारणा पण्णत्ता ?

१ उत्तर-गोयमा ! दुविहा चारणा पण्णत्ता, तं जहा-विज्जाचारणा य, जंघाचारणा य।

२ प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'विज्जाचारणा' २ ?

२ उत्तर-गोयमा ! तस्स णं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं विज्जाए उत्तरगुणलद्धिं खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी णामं लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणा २।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! चारण कितने प्रकार के कहे हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! चारण दो प्रकार के कहे हैं। यथा-विद्या-

Jain Education International   For Personal & Private Use Only   www.jainelibrary.org

चारण और जंघाचारण ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! विद्याचारण मुनि को 'विद्याचारण' क्यों कहते हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! निरन्तर बेले-बेले के तपपूर्वक पूर्वगत श्रुत रूप विद्या द्वारा उत्तरगुण-लब्धि (तपोलब्धि) को प्राप्त मुनि को विद्याचारण नामक लब्धि उत्पन्न होती है । इससे यावत् 'विद्याचारण' कहते हैं ।

३ प्रश्न-विज्जाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गई, कहं सीहे गइविसए पण्णत्ते ?

३ उत्तर-गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव किंचिविसेसा-हिए परिक्खेवेणं, देवे णं महड्ढीए जाव महेसक्खे जाव 'इणामेव' त्तिकट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गई, तहा सीहे गइविसए पण्णत्ते ।

४ प्रश्न-विज्जाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवइयं गइविसए पण्णत्ते ?

४ उत्तर-गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेइ, माणु० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता बिइएणं उप्पाएणं णंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, णंदीस० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता तओ पडिणियत्तइ, तओ पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, इहमागच्छित्ता इह चेइयाइं वंदइ । विज्जा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चारणस्स णं गोयमा ! तिरियं एवइए गइविसए पण्णत्ते ।

५ प्रश्न-विज्जाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवइए गइविसए पण्णत्ते ?

५ उत्तर-गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ, णंद० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता विइएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ, पंडग० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता तओ पडिणियत्तइ, तओ पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, इहमागच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदइ । विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवइए गइविसए पण्णत्ते । से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ, णत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

कठिन शब्दार्थ-सीहा-शीघ्र, उप्पाएणं-उत्पात-उड़ान ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! विद्याचारण की शीघ्र-गति कैसी होती है और उनका गति विषय कितना शीघ्र होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! यह जम्बूद्वीप यावत् जिसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन से कुछ विशेषाधिक है, उसके चारों ओर कोई महद्धिक यावत् महासुख वाला देव यावत् 'यह चक्कर लगाता हूँ'-ऐसा कह कर तीन चुटकी बजावे, उतने समय में, तीन बार चक्कर लगा कर शीघ्र आवे, ऐसी शीघ्र गति विद्याचारण की है और इस प्रकार का शीघ्र-गति का विषय कहा है ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! विद्याचारण की तिर्च्छी-गति का विषय कितना कहा गया है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! विद्याचारण एक उत्पात (उड़ान) से मानुषोत्तर पर्वत पर समवसरण करते हैं (वहां जा कर ठहरते हैं)। वहां चैत्य वन्दन करते हैं। वन्दना कर के वहां से दूसरे उत्पात से नन्दीश्वर द्वीप में समवसरण (स्थिति) करते हैं। फिर वहां चैत्य वन्दन करते हैं। फिर वहां से एक ही उत्पात से वापिस यहां आते हैं। यहां आ कर चैत्य वन्दन करते हैं। हे गौतम ! विद्याचारण की तिर्च्छी-गति का विषय ऐसा है।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! विद्याचारण की ऊर्ध्व-गति का विषय कितना है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! विद्याचारण एक उत्पात द्वारा नन्दन वन में समवसरण करता है, फिर वहां चैत्य वन्दन करता है। फिर दूसरे उत्पात द्वारा पण्डकवन में समवसरण करता है। वहां चैत्य वन्दन करता है। फिर वहां से एक ही उत्पात द्वारा वापिस यहां आ जाता है। यहां आ कर चैत्य वन्दन करता है। हे गौतम ! विद्याचारण की ऊर्ध्व-गति का विषय ऐसा कहा है। हे गौतम ! वह विद्याचारण लब्धि का प्रयोग करने सम्बन्धी पापस्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाय, तो आराधक नहीं है और यदि उस पापस्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण कर के काल करे, तो वह आराधक होता है।

६ प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'जंघाचारणा' २ ?

६ उत्तर-गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स जंघाचारणलद्धी णाम लद्धी समुप्पज्जइ, से तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणा २।

७ प्रश्न-जंघाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गई, कहं सीहे गइविसए पण्णत्ते ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

७ उत्तर-गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे० एवं जहेव विज्जाचारणस्स, णवरं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गई, तहा सीहे गइविसए पण्णत्ते ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! 'जंघाचारण' क्यों कहते हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! निरन्तर तेले-तेले की तपस्यापूर्वक आत्मा को भावित करते हुए मुनि को 'जंघाचारण' नामक लब्धि उत्पन्न होती है । इस कारण उसे 'जंघाचारण' कहते हैं ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! जंघाचारण की शीघ्र गति कैसी होती है और उसकी शीघ्र गति का विषय कितना होता है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! यह जम्बूद्वीप यावत् जिसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन से कुछ विशेषाधिक है, इत्यादि वर्णन विद्याचारणवत् । विशेष यह है कि कोई महद्धिक देव, तीन चुटकी बजावे, उतने में इस जम्बूद्वीप की इक्कीस बार परिक्रमा कर ले । हे गौतम ! जंघाचारण की इतनी शीघ्र गति और शीघ्र गति का विषय है ।

८ प्रश्न-जंघाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवइए गइविसए पण्णत्ते ?

८ उत्तर-गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरे दीवे समोसरणं करेइ, रुयग० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता तओ पडिणियत्तमाणे बिइएणं उप्पाएणं णंदीसरवरदीवे समोसरणं करेइ, णंदी० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इहमागच्छइ, इहमागच्छित्ता इह चेइयाइं वंदइ, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं एवइए गइविसए पण्णत्ते ।

९ प्रश्न-जंघाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवइए गइविसए पण्णत्ते ?

९ उत्तर-गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ, स० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता तओ पडिणियत्तमाणे बिइएणं उप्पाएणं णंदणवणे समोसरणं करेइ, णंदण० २ करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, तहिं० २ वंदित्ता इहमागच्छइ, इह चेइयाइं वंदइ, जंघाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवइए गइविसए पण्णत्ते । से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ णत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति । जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए णवमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! जंघाचारण की तिर्च्छी-गति का विषय कितना कहा है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! जंघाचारण एक उत्पात से रूचकवर द्वीप में समवसरण करता है, फिर वहां चैत्य वन्दन करता है । वन्दन कर के वहां से लौटते समय एक उत्पात से नन्दीश्वर द्वीप में समवसरण करता है । वहां चैत्य वन्दन कर दूसरे उत्पात से यहां आता है । यहां आकर चैत्य वन्दन करता है । हे गौतम ! जंघाचारण की तिर्च्छी-गति और तिर्च्छी-गति का विषय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इतना शीघ्र कहा है।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! जंघाचारण की ऊर्ध्व-गति का विषय कितना कहा है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! जंघाचारण एक उत्पात से पण्डकवन में समवसरण करता है। फिर वहां चैत्य वन्दन करता है। वहां से लौटते हुए एक उत्पात से नन्दनवन में समवसरण करता है। वहां चैत्य वन्दन करता है। फिर दूसरे उत्पात से यहां आ कर चैत्य वन्दन करता है। हे गौतम ! जंघाचारण का ऐसा ऊर्ध्व गति का विषय कहा है। वह जंघाचारण उस लब्धि प्रयोग सम्बन्धी पाप-स्थान की आलोचना, प्रतिक्रमण किये बिना यदि काल कर जाय, तो आराधक नहीं होता और उस पाप-स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण कर के काल करे, तो वह आराधक होता है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-लब्धि के प्रभाव से आकाश में अतिशय गमन करने की शक्ति वाले मुनि को 'चारण' कहते हैं। चारण दो प्रकार के होते हैं। यथा-विद्याचारण अर्थात् पूर्वगत श्रुत से गमन करने की लब्धि को प्राप्त मुनि 'विद्याचारण' कहलाते हैं। जंघा के व्यापार से गमन करने की लब्धि वाले मुनि 'जंघाचारण' कहलाते हैं। उपर्युक्त विधिपूर्वक निरन्तर बेले-बेले की तपस्या करने वाले मुनि को विद्याचारण लब्धि प्राप्त होती है और तेले-तेले की तपस्या करने वाले मुनि को जंघाचारण लब्धि प्राप्त होती है। विद्याचारण की अपेक्षा जंघाचारण की गति सात गुण शीघ्र होती है।

लब्धि का प्रयोग करना प्रमाद है। लब्धि का प्रयोग किया हो और उसकी आलोचना नहीं की, तो उसे चारित्र की आराधना नहीं होती।

विद्याचारण का गमन दो उत्पात से और आगमन एक उत्पात से होता है तथा जंघाचारण का गमन एक उत्पात से और आगमन दो उत्पात से होता है। यह उस लब्धि का स्वभाव समझना चाहिये। इस विषय में किन्हीं आचार्यों का कथन है कि-विद्याचारण की विद्या आतेसमय विशेष अभ्यास वाली हो जाती है, किन्तु गमन के समय वह वैसी अभ्यास वाली नहीं होती। इसलिये आते समय तो वह एक ही उत्पात से यहाँ आ जाता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

है, परन्तु जाते समय दो उत्पात से वहां पहुँचता है। जंघाचारण की लब्धि का ज्यों-ज्यों प्रयोग होता है, त्यों-त्यों वह अल्प सामर्थ्य वाली होती जाती है। इसलिये वह जाते समय तो एक ही उत्पात से वहाँ पहुँच जाता है, परन्तु लौटते समय दो उत्पात से पहुँचता है।

जंघाचारण और विद्याचारण लब्धि वाले मुनि जब मानुषोत्तर पर्वत, नन्दीश्वर द्वीप आदि में पहुँचते हैं, तब वहां चैत्य वन्दन करते हैं अर्थात् ज्ञानियों की स्तुति करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि नन्दीश्वर द्वीप आदि की रचना का वर्णन उन लब्धिधारी मुनियों ने ज्ञानियों से सुना था अथवा आगमों से जाना था, वैसी ही रचना को साक्षात् देखते हैं, तब वे ज्ञानियों की स्तुति करते हैं। यहां मूलपाठ में जो 'चेइयाइं' (चैत्य) शब्द दिया है, उसका अर्थ 'ज्ञानी' है और 'वंदइ' का अर्थ-स्तुति करना है, क्योंकि-'वदि अभिवादन स्तुत्योः' के अनुसार 'वदि' धातु का अर्थ स्तुति करना है। यदि चैत्य का अर्थ मन्दिर किया जाय, तो यह अर्थ संगत नहीं होता, क्योंकि मानुषोत्तर पर्वत पर मन्दिरों का वर्णन नहीं है और स्वस्थान अर्थात् जहां से उन्होंने उत्पात किया है, वह भी मन्दिर नहीं है। अतः चैत्य का अर्थ मन्दिर-मूर्ति करना संगत नहीं है, 'ज्ञानी' अर्थ ही संगत है।

॥ बीसवें शतक का नौवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २० उद्देशक १०

सोपक्रम-निरुपक्रम आयुष्य

१ प्रश्न-जीवा णं भंते ! किं सोवक्कमाउया, णिरुवक्कमाउया ?

१ उत्तर-गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउया वि णिरुवक्कमाउया वि।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ प्रश्न-णेरइयाणं-पुच्छा ।

२ उत्तर-गोयमा ! णेरइया णो सोवक्कमाउया, णिरुवक्कमाउया । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जहा जीवा, एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा णेरइया ।

३ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं आओवक्कमेणं उववज्जंति, परोवक्कमेणं उववज्जंति, णिरुवक्कमेणं उववज्जंति ?

३ उत्तर-गोयमा ! आओवक्कमेण वि उववज्जंति, परोवक्कमेण वि उववज्जंति, णिरुवक्कमेण वि उववज्जंति, एवं जाव वेमाणियाणं ।

४ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं आओवक्कमेणं उव्वट्टंति, परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, णिरुवक्कमेणं उव्वट्टंति ?

४ उत्तर-गोयमा ! णो आओवक्कमेणं उव्वट्टंति, णो परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, णिरुवक्कमेणं उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टंति, सेसा जहा णेरइया, णवरं जोइसिय-वेमाणिया चयंति ।

कठिन शब्दार्थ--सोवक्कमाउया--उपक्रम युक्त आयुष्य वाले, **णिरुवक्कमाउया**--निरुपक्रम आयुष्य वाले ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! जीव सोपक्रम आयुष्य वाले होते हैं, या निरुपक्रम आयुष्य वाले ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जीव सोपक्रम आयुष्य वाले भी होते हैं और निरुपक्रम आयुष्य वाले भी होते हैं ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव सोपक्रम आयुष्य वाले होते हैं, या

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

निरुपक्रम आयुष्य वाले ?

२ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक जीव सोपक्रम-आयुष्य वाले नहीं होते, निरुपक्रम-आयुष्य वाले होते हैं। इस प्रकार स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिये। पृथ्वीकायिकों का कथन औधिक जीवों के समान है। इस प्रकार यावत् मनुष्य पर्यन्त। वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक का कथन नैरयिकों के समान है।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव, आत्मोपक्रम से उत्पन्न होते हैं, या परोपक्रम अथवा निरुपक्रम से ?

३ उत्तर-हे गौतम ! आत्मोपक्रम से भी उत्पन्न होते हैं और परोपक्रम तथा निरुपक्रम से भी उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यंत।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक आत्मोपक्रम से उद्वर्तते (मरते) हैं, परोपक्रम से या निरुपक्रम से उद्वर्तते हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वे आत्मोपक्रम और परोपक्रम से नहीं, किन्तु निरुपक्रम से उद्वर्तते हैं। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक। पृथ्वीकायिक यावत् मनुष्य तक तीनों उपक्रमों से उद्वर्तते हैं। शेष सब नैरयिकों के समान। विशेष यह है कि ज्योतिषी और वैमनिक में-'चवते हैं'-कहना चाहिये।

उत्पत्ति उद्वर्तन आत्म-ऋद्धि से

५ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं आइड्ढीए उववज्जंति परिड्ढीए उववज्जंति ?

५ उत्तर-गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जंति, णो परिड्ढीए उववज्जंति एवं जाव वेमाणिया।

६ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं आइड्ढीए उव्वट्टंति, परिड्ढीए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उव्वट्टंति ?

६ उत्तर-गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टंति, णो परिड्ढीए उव्वट्टंति, एवं जाव वेमाणिया, णवरं जोइसिया वेमाणिया य चयंतीइ अभिलावो ।

७ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं आयकम्मुणा उववज्जंति, परकम्मुणा उववज्जंति ?

७ उत्तर-गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जंति, णो परकम्मुणा उववज्जंति, एवं जाव वेमाणिया । एवं उव्वट्टणादंडओ वि ।

८ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं आयप्पओगेणं उववज्जंति, परप्पओगेणं उववज्जंति ?

८ उत्तर-गोयमा ! आयप्पओगेणं उववज्जंति, णो परप्पओगेणं उववज्जंति, एवं जाव वेमाणिया, एवं उव्वट्टणादंडओ वि ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक आत्म-ऋद्धि (स्व सामर्थ्य) से उत्पन्न होते है, या पर-ऋद्धि से ?

५ उत्तर-हे गौतम ! वे आत्म-ऋद्धि से उत्पन्न होते हैं, पर-ऋद्धि से नहीं होते, इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक आत्म-ऋद्धि से उद्वर्तते हैं, या पर-ऋद्धि से ?

६ उत्तर-हे गौतम ! वे आत्म-ऋद्धि से उद्वर्तते हैं, पर-ऋद्धि से नहीं । इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त । किन्तु ज्योतिषी और वैमानिक-'चवते हैं' ऐसा अभिलाप कहना चाहिये ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक आत्म-कर्म से उत्पन्न होते हैं, या पर-कर्म से ?

७ उत्तर-हे गौतम ! आत्म-कर्म से उत्पन्न होते हैं, पर-कर्म से नहीं । इस

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त। इसी प्रकार उद्वर्तना दण्डक भी जानना चाहिये।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं, या परप्रयोग से ?

८ उत्तर-हे गौतम ! वे आत्मप्रयोग से उत्पन्न होते हैं, परप्रयोग से नहीं। इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त। इसी प्रकार उद्वर्तना दण्डक भी जानना चाहिये।

विवेचन-जिन जीवों का आयुष्य, व्यवहार से अप्राप्त काल (असमय) में ही समाप्त हो जाता है, वे जीव 'सोपक्रम आयुष्य' वाले कहलाते हैं और इसके अतिरिक्त दूसरे जीव 'निरुपक्रम आयुष्य वाले' कहलाते हैं। देव, नैरयिक और असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच और मनुष्य, उत्तम पुरुष तथा चरम शरीरा जीव, ये सब निरुपक्रम आयुष्य वाले होते हैं। शेष सभी संसारी जीव, सोपक्रम और निरुपक्रम-दोनों प्रकार के आयुष्य वाले होते हैं।

व्यवहार दृष्टि से आयुष्य को स्वयमेव घटा देना-'आत्मोपक्रम' कहलाता है। श्रेणिक नरेशवत् और अन्य के द्वारा आयुष्य का घटाया जाना अर्थात् परकृत मरण से मरना 'परोपक्रम' कहलाता है। यथा-कोणिक। उपक्रम के अभाव से मरना-'निरुपक्रम' कहलाता है। यथा-कालशौकरिक।

जीव आत्मऋद्धि अर्थात् स्व-सामर्थ्य से मरते हैं, ईश्वरादि के प्रभाव से नहीं। इसी प्रकार आत्मकृत कर्मों और आत्मप्रयोग से मरते हैं, परकृत कर्म और परप्रयोग से नहीं मरते।

कति-अकति संचित

१ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं कइसंचिया, अकइसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया ?

१ उत्तर-गोयमा ! णेरइया कइसंचिया वि, अकइसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं णेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया कइसंचिया, जे णं णेरइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया अकइसंचिया, जे णं णेरइया एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया अवत्तव्वगसंचिया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ।

१० प्रश्न-पुढविक्काइयाणं पुच्छा ।

१० उत्तर-गोयमा ! पुढविकाइया णो कइसंचिया, अकइसंचिया, णो अवत्तव्वगसंचिया ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ-जाव 'णो अवत्तव्वगसंचिया' ?

उत्तर-गोयमा ! पुढविकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति से तेणट्ठेणं जाव णो अवत्तव्वगसंचिया, एवं जाव वणस्सइकाइया, बेंदिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया ।

कठिन शब्दार्थ-कइसंचिया-कतिसंचित-एक समय में संख्यात उत्पन्न, **अवत्तव्वगसंचिया**-अवक्तव्यसंचित-एक समय में एक उत्पन्न ।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक कतिसञ्चित हैं, अकतिसञ्चित हैं, या अवक्तव्यसञ्चित हैं ?

९ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक कतिसञ्चित भी हैं, अकतिसञ्चित भी हैं और अवक्तव्यसञ्चित भी हैं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहा गया कि-यावत् अवक्तव्यसंचित भी हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तर-हे गौतम ! जो नैरयिक नरक-गति में एक साथ संख्यात प्रवेश करते हैं (उत्पन्न होते हैं) वे कतिसंचित हैं, जो नैरयिक असंख्यात प्रवेश करते हैं, वे अकतिसंचित हैं और जो नैरयिक एक-एक प्रवेश करते हैं, वे अवक्तव्यसंचित हैं। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिये।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक कतिसंचित है, इत्यादि प्रश्न।

१० उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव, कतिसंचित नहीं, अवक्तव्य-संचित भी नहीं, किन्तु अकतिसंचित है।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहा गया कि यावत् अवक्तव्यसंचित नहीं है ?

उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकायिक एक साथ असंख्य प्रवेशनक से प्रवेश करते हैं, इसलिये वे अकतिसंचित हैं, परन्तु यावत् अवक्तव्यसंचित नहीं। इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये। बेइन्द्रिय से ले कर यावत् वैमानिक तक का कथन नैरयिकों के समान है।

११ प्रश्न-सिद्धाणं पुच्छा।

११ उत्तर-गोयमा ! सिद्धा कइसंचिया, णो अकइसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया वि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव 'अवत्तव्वगसंचिया वि' ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कइसंचिया, जे णं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवत्तव्वगसंचिया, से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि।

१२ प्रश्न-एएसि णं भंते ! णेरइयाणं कइसंचियाणं अकइसंचि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

याणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

१२ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया अवत्तव्वगसंचिया, कइसंचिया संखेज्जगुणा, अकइसंचिया असंखेज्जगुणा, एवं एगिंदिय-वज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पाबहुगं, एगिंदियाणं णत्थि अप्पाबहुगं।

१३ प्रश्न-एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कइसंचियाणं अवत्तव्वग-संचियाण य कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

१३ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कइसंचिया, अवत्तव्वग-संचिया संखेज्जगुणा।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! सिद्ध कतिसंचित हैं, इत्यादि प्रश्न ?

११ उत्तर-हे गौतम ! सिद्ध कतिसंचित और अवक्तव्यसंचित हैं, अकतिसंचित नहीं हैं।

प्रश्न-हे भगवन् ! क्या कारण है कि सिद्ध यावत् अवक्तव्यसंचित हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! जो सिद्ध संख्यात प्रवेशनक से प्रवेश करते हैं, वे कतिसंचित हैं और जो सिद्ध एक-एक प्रवेश करते हैं, वे अवक्तव्यसंचित हैं। इसलिये सिद्ध यावत् अवक्तव्यसंचित हैं।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! कतिसंचित, अकतिसंचित और अवक्तव्यसंचित नैरयिकों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! अवक्तव्यसंचित नैरयिक सब-से थोड़े हैं। उनसे कतिसंचित नैरयिक संख्यात गुण है और अकतिसंचित उनसे असंख्यात गुण हैं। इस प्रकार एकेन्द्रिय के सिवाय यावत् वैमानिकों तक अल्प-बहुत्व कहनी चाहिये। एकेन्द्रियों का अल्प-बहुत्व नहीं है।

१३ प्रश्न-हे भगवन् ! कतिसंचित और अवक्तव्यसंचित सिद्धों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१३ उत्तर-हे गौतम ! कतिसंचित सिद्ध सब से थोड़े है और उनसे अवक्तव्यसंचित सिद्ध संख्यात गुण हैं।

विवेचन-जो जीव दूसरी जाति में से आ कर एक समय में, एक साथ संख्यात उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'कतिसंचित' कहते हैं। दो से ले कर उत्कृष्ट संख्याता तक की संख्या को यहां 'कतिसंचित' कहा है। जो एक समय में, एक साथ असंख्यात उत्पन्न होते है, उन्हें 'अकति-संचित' कहते है। जो एक समय में एक उत्पन्न हो, उसे 'अवक्तव्यसंचित' कहते हैं।

नैरयिक जीव तीनों प्रकार के होते हैं। क्योंकि वे एक समय में, एक साथ एक से ले कर असंख्यात तक उत्पन्न होते हैं।

पृथ्वीकायिकादि पांच स्थावर अकतिसंचित हैं, क्योंकि वे एक समय में एक साथ असंख्यात उत्पन्न होते हैं, एक-दो नहीं। यद्यपि वनस्पतिकायिक जीव एक समय में, एक साथ अनन्त उत्पन्न होते हैं, किन्तु यहां विजातीय जीवों से आ कर उत्पन्न होने वाले जीवों की विवक्षा है। इससे वे असंख्यात ही उत्पन्न होते हैं। अनन्त तो स्वजाति के वनस्पति जीव, स्वजाति में ही उत्पन्न होते हैं।

सिद्ध भगवान् अकतिसंचित नहीं हैं, क्योंकि मोक्ष जाने वाले जीव एक समय में एक साथ एक से ले कर संख्यात (एक सौ आठ तक) ही सिद्ध होते हैं। असंख्यात जीव एक समय में एक साथ सिद्ध नहीं होते।

एकेन्द्रिय को छोड़ कर शेष का जो अल्प-बहुत्व कहा गया है, वह इस प्रकार है-अवक्तव्यसंचित सब से थोड़े हैं, क्योंकि अवक्तव्य स्थान एक है। उनसे कतिसंचित संख्यात गुण हैं, क्योंकि उनके संख्यात स्थान हैं और अकतिसंचित असंख्यात गुण हैं, क्योंकि असंख्यात स्थान भी असंख्य हैं। इस विषय में कुछ आचार्यों का कथन इस प्रकार है कि इसमें स्थान की अल्पता कारण नहीं है, किन्तु वस्तु-स्वभाव ही ऐसा है। क्योंकि कति-संचित स्थान बहुत्व होने पर भी कतिसंचित सिद्ध सब से थोड़े हैं और अवक्तव्य स्थान एक होने पर भी अवक्तव्यसंचित सिद्ध उनसे संख्यात गुण हैं, क्योंकि दो आदि रूप से केवली अल्प संख्या में सिद्ध होते हैं। अतः वस्तु-स्वभाव और लोक-स्वभाव ऐसा ही हैं-यह मानना चाहिये।

षट्क-समर्जित नो-षट्क-समर्जित

१४ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं छक्कसमज्जिया १, णोछक्क-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समज्जिया २, छक्केण य णोछक्केण य समज्जिया ३, छक्केहि य समज्जिया ४, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया ५ ?

१४ उत्तर-गोयमा ! णेरइया छक्कसमज्जिया वि १, णोछक्क-समज्जिया वि २, छक्केण य णोछक्केण य समज्जिया वि ३, छक्केहि य समज्जिया वि ४, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया वि ५।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-णेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया वि ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं णेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया छक्कसमज्जिया १। जे णं णेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया णोछक्कसमज्जिया २। जे णं णेरइया एगेणं छक्कएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं पंच-एणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया छक्केण य णोछक्केण य समज्जिया ३। जे णं णेरइया णेगेहिं छक्केहिं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया छक्केहि य समज्जिया ४। जे णं णेरइया णेगेहिं छक्केहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्को-सेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया ५। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कठिन शब्दार्थ-छक्कसमज्जिया-षट्क-समर्जित-छह का समुदाय रूप।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक षट्क-समर्जित हैं, नो-षट्क-समर्जित हैं, षट्क और नो-षट्क-समर्जित हैं, अनेक षट्क-समर्जित है, अथवा अनेक षट्क-समर्जित और एक नो-षट्क-समर्जित है ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक जीव षट्क-समर्जित भी हैं, नो-षट्क-समर्जित भी हैं, एक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित भी हैं, अनेक षट्क-समर्जित भी हैं और अनेक षट्क-समर्जित और एक नो-षट्क-समर्जित भी हैं।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहा गया ?

उत्तर-हे गौतम ! जो नैरयिक एक समय में, एक साथ छह की संख्या से प्रवेश करते हैं, वे नैरयिक 'षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। जो नैरयिक जघन्य एक, दो अथवा तीन और उत्कृष्ट पांच संख्या में प्रवेश करते हैं, वे 'नो-षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। जो नैरयिक एक षट्क संख्या से और अन्य जघन्य एक, दो या तीन तथा उत्कृष्ट पांच की संख्या में प्रवेश करते हैं, वे 'षट्क और नो-षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। जो नैरयिक अनेक षट्क संख्या में प्रवेश करते हैं, वे नैरयिक 'अनेक षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। जो नैरयिक अनेक षट्क तथा जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट पांच संख्या में प्रवेश करते हैं, वे नैरयिक 'अनेक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। इसलिये हे गौतम ! इस प्रकार कहा गया है कि यावत् अनेक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित भी होते हैं। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार पर्यंत।

१४ प्रश्न-पुढविकाइयाणं-पुच्छा।

१५ उत्तर-गोयमा ! पुढविकाइया णो छक्कसमज्जिया १ णो णोछक्कसमज्जिया २, णो छक्केण य णोछक्केण य समज्जिया ३, छक्केहिं समज्जिया ४, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया वि ५।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव 'समज्जिया वि' ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं पुढविक्काइया णेगेहिं छक्कएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहिं समज्जिया । जे णं पुढविकाइया णेगेहिं छक्कएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं पुढविकाइया छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया, से तेणट्ठेणं जाव 'समज्जिया वि'। एवं जाव वणस्सइकाइया । बेंदिया जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा णेरइया ।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव षट्क-समर्जित हैं, इत्यादि प्रश्न ।

१५ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकायिक षट्क-समर्जित नहीं, नो-षट्क-समर्जित नहीं और एक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित भी नहीं हैं । किन्तु अनेक षट्क-समर्जित हैं तथा अनेक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित भी हैं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा गया कि यावत् समर्जित भी हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! जो पृथ्वीकायिक जीव अनेक षट्क से प्रवेश करते हैं, वे अनेक षट्क-समर्जित हैं । जो पृथ्वीकायिक अनेक षट्क से तथा जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट पांच संख्या से प्रवेश करते हैं, वे अनेक षट्क और एक नो-षट्क समर्जित कहलाते हैं । इसलिये हे गौतम ! वे यावत् समर्जित हैं । इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना चाहिये । बेइन्द्रिय से लेकर यावत् वैमानिक तक । सिद्धों का कथन नैरयिक के समान है ।

१६ प्रश्न-एएसि णं भंते ! णेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णोछक्कसमज्जियाणं, छक्केण य णोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहि य समज्जियाणं, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

१६ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया छक्कसमज्जिया, णोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य णोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केहि य समज्जिया असंखेज्जगुणा, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एवं जाव थणियकुमारा।

१७ प्रश्न-एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं छक्केहिं समज्जियाणं, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

१७ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! १-षट्क-समर्जित, २-नो-षट्क-समर्जित ३-एक षट्क और नो-षट्क-समर्जित, ४-अनेक षट्क-समर्जित, ५-अनेक षट्क और नो-षट्क-समर्जित नैरयिकों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक है ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! १-एक षट्क-समर्जित नैरयिक सब से कम है। २-नो-षट्क-समर्जित नैरयिक उनसे संख्यात गुण हैं। ३-एक षट्क और नो-षट्क-समर्जित नैरयिक उनसे संख्यात गुण हैं। ४-अनेक षट्क-समर्जित नैरयिक उनसे असंख्यात गुण हैं। ५-अनेक षट्क और नो-षट्क समर्जित नैरयिक उनसे संख्यात गुण है। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ प्रश्न-हे भगवन् ! अनेक षट्क-समर्जित और अनेक षट्क तथा नो-षट्क-समर्जित पृथ्वीकायिकों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! अनेक षट्क-समर्जित पृथ्वीकायिक सब से कम हैं। अनेक षट्क और नो-षट्क-समर्जित पृथ्वीकायिक उनसे संख्यात गुण है। इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक। बेइन्द्रिय से ले कर वैमानिक तक का कथन नैरयिकों की भांति जानना चाहिए।

१८ प्रश्न-एएसि णं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं णोछक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहि य णोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

१८ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य णोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य णोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, णोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! षट्क-समर्जित नो-षट्क-समर्जित यावत् अनेक षट्क और नो-षट्क-समर्जित सिद्धों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! अनेक षट्क और नो-षट्क-समर्जित सिद्ध सब से कम है। उनसे अनेक षट्क-समर्जित सिद्ध संख्यात गुण हैं। उनसे एक षट्क और नो-षट्क-समर्जित सिद्ध संख्यात गुण हैं। उनसे षट्क-समर्जित सिद्ध संख्यात गुण हैं और उनसे नो-षट्क-समर्जित सिद्ध संख्यात गुण हैं।

विवेचन-जो एक साथ, एक समय में छह उत्पन्न हुए हों, उन्हें 'षट्क-समर्जित' कहते हैं। जो एक साथ, एक समय में एक, दो, तीन, चार या पांच उत्पन्न हुए हों, वे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'नो-षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। जो एक समय में एक साथ एकादि अधिक छह उत्पन्न हुए हों, अर्थात् सात, आठ, नौ, दस और ग्यारह तक उत्पन्न हुए हो, वे 'षट्क, नो षट्क-समर्जित' कहलाते हैं एक समय में जो छह-छह के समुदाय रूप से अनेक उत्पन्न हुए हों, वे 'अनेक षट्क-समर्जित' कहलाते हैं। जो एक समय में अनेक षट्क समुदाय रूप से और एकादि अधिक रूप से उत्पन्न हुए हों, वे 'अनेक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित' कहलाते हैं।

नैरयिक जीवों में ये पाँचों भंग पाये जाते हैं, क्योंकि नैरयिकों में एक समय में एक से ले कर असंख्यात तक उत्पन्न होते हैं। असंख्यातों में भी ज्ञानियों के ज्ञान से षट्क आदि की व्यवस्था बन जाती है।

एकेन्द्रियों में एक समय में असंख्यात उत्पन्न होते हैं, इसलिये उनमें अनेक षट्क-समर्जित तथा अनेक षट्क और एक नो-षट्क-समर्जित ये दो विकल्प ही पाये जाते हैं।

षट्क-समर्जित आदि का जो अल्प-बहुत्व बतलाया गया है, वह स्थान के अल्प-बाहुल्य की अपेक्षा समझना चाहिये, अथवा वस्तु-स्वभाव ही ऐसा है-समझना चाहिये।

द्वादश-समार्जित

१९ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं बारससमज्जिया १, णोबारस-समज्जिया २, बारसएण य णोबारसएण य समज्जिया ३, बारस-एहिं समज्जिया ४, बारसएहि य णोबारसएण य समज्जिया ५ ?

१९ उत्तर-गोयमा ! णेरइया बारससमज्जिया वि जाव बारसएहि य णोबारसएण य समज्जिया वि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव 'समज्जिया वि' ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं णेरइया बारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया बारससमज्जिया १। जे णं णेरइया जहण्णेणं एक्केण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं, एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया णोबारससमज्जिया २ । जे णं णेरइया बारसएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया बारसएण य णोबारसएण य समज्जिया ३ । जे णं णेरइया णेगेहिं बारसएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं णेरइया बारसएहिं समज्जिया ४ । जे णं णेरइया णेगेहिं बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया बारसएहिं य णोबारसएण य समज्जिया ५ । से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ।

कठिन शब्दार्थ-बारससमज्जिया-द्वादश समर्जित ।

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव द्वादश-समर्जित हैं, या नो-द्वादश-समर्जित हैं, या द्वादश, नो-द्वादश-समर्जित हैं, या अनेक द्वादश-समर्जित हैं, या अनेक द्वादश और नो-द्वादश-समर्जित हैं ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक द्वादश-समर्जित भी हैं, यावत् अनेक द्वादश और नो-द्वादश-समर्जित भी हैं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! किस कारण ऐसा कहा गया कि नैरयिक यावत् अनेक द्वादश और नो-द्वादश-समर्जित भी हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! जो नैरयिक एक समय में बारह की संख्या में प्रवेश करते हैं, वे द्वादश-समर्जित हैं । जो नैरयिक जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट ग्यारह तक प्रवेश करते हैं, वे नो-द्वादश-समर्जित हैं । जो नैरयिक एक समय में बारह और जघन्य एक, दो, तीन तथा उत्कृष्ट ग्यारह तक प्रवेश करते हैं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वे द्वादश, नो-द्वादश-समर्जित हैं । जो नैरयिक एक समय में अनेक बारह-बारह की संख्या में प्रवेश करते है, वे अनेक द्वादश-समर्जित हैं । जो नैरयिक एक समय में अनेक बारह-बारह की संख्या में तथा जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट ग्यारह तक प्रवेश करते हैं, वे अनेक द्वादश, नो-द्वादश-समर्जित हैं । इस कारण हे गौतम ! यावत् वे अनेक द्वादश, नो-द्वादश-समर्जित कहलाते हैं । इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार पर्यंत ।

२० प्रश्न-पुढविक्काइयाणं-पुच्छा ।

२० उत्तर-गोयमा ! पुढविक्काइया णो बारससमज्जिया १, णो णोबारससमज्जिया २ णो बारसएण य णोबारसएण य समज्जिया ३, बारसएहिं समज्जिया ४, बारसएहि य णोबारसएण य समज्जिया वि ५।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव 'समज्जिया वि'?

उत्तर-गोयमा ! जे णं पुढविक्काइया णेगेहिं बारसएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं पुढविक्काइया बारसएहिं समज्जिया। जे णं पुढविक्काइया णेगेहिं बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं पुढविक्काइया बारसएहिं य णोबारसएण य समज्जिया, से तेणट्ठेणं जाव 'समज्जिया वि'। एवं जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिया जाव सिद्धा जहा णेरइया ।

२१ प्रश्न-एएसि णं भंते ! णेरइयाणं बारससमज्जियाणं०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं, णवरं बारसाभिलावो, सेसं तं चेव ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! क्या पृथ्वीकायिक द्वादश-समर्जित हैं, इत्यादि प्रश्न ।

२० उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकायिक द्वादश-समर्जित नहीं हैं, नो-द्वादश-समर्जित नहीं हैं । द्वादश, नो-द्वादश-समर्जित भी नहीं है । परन्तु अनेक द्वादश-समर्जित और अनेक द्वादश नो-द्वादश-समर्जित हैं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहा गया कि यावत् समर्जित हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! जो पृथ्वीकायिक अनेक द्वादश प्रवेश करते हैं, वे अनेक द्वादश-समर्जित हैं । जो पृथ्वीकायिक अनेक द्वादश तथा अन्य जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट ग्यारह प्रवेशनक से प्रवेश करते हैं, वे अनेक द्वादश-समर्जित और एक नो-द्वादश-समर्जित हैं । इस कारण हे गौतम ! यावत् समर्जित हैं-ऐसा कहा गया है । इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक । बेइन्द्रियों से ले कर वैमानिक तक तथा सिद्धों का कथन नैरयिकों के समान है ।

२१ प्रश्न-हे भगवन् ! द्वादश-समर्जित यावत् अनेक द्वादश, नो-द्वादश-समर्जित नैरयिकों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ।

२१ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार षट्क-समर्जित का अल्प-बहुत्व कहा, उसी प्रकार द्वादश-समर्जित का भी अल्प-बहुत्व भी कहना चाहिये । विशेष यह है कि षट्क के स्थान में 'द्वादश' ऐसा अभिलाप कहना चाहिये । शेष पूर्ववत् ।

विवेचन-बारह-बारह के समुदाय रूप से एक साथ, एक समय में उत्पन्न हों, उन्हें 'द्वादश-समर्जित' कहते हैं । एक से ले कर ग्यारह तक जो उत्पन्न हों, उन्हे 'नो-द्वादश-समर्जित' कहते हैं । शेष कथन षट्क-समर्जित के समान समझना चाहिये । इनका अल्प-बहुत्व भी षट्क-समर्जित है ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चौरासी-समर्जित

२२ प्रश्न-णेरइया णं भंते ! किं चुलसीइसमज्जिया १, णोचुलसीइसमज्जिया २, चुलसीईए य णोचुलसीईए य समज्जिया ३, चुलसीईहिं समज्जिया ४, चुलसीईहि य णोचुलसीईए य समज्जिया ५।

२२ उत्तर-गोयमा ! णेरइया चुलसीइसमज्जिया वि जाव चुलसीईहि य णोचुलसीईए य समज्जिया वि ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव 'समज्जिया वि' ?

उत्तर-गोयमा ! जे णं णेरइया चुलसीईएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया चुलसीइसमज्जिया १। जे णेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं तेसीइपवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया णोचुलसीइसमज्जिया २। जे णं णेरइया चुलसीईए णं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा जाव उक्कोसेणं तेसीईएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं णेरइया चुलसीईए य णोचुलसीईए य समज्जिया ३। जे णं णेरइया णेगेहिं चुलसीईएहिं पवेसणगं पविसंति ते णं णेरइया चुलसीईएहिं समज्जिया ४। जे णं णेरइया णेगेहिं चुलसीईएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा जाव उक्कोसेणं तेसीईएणं जाव पविसंति ते णं णेरइया चुलसीईहि य णोचुलसीईए य समज्जिया ५, से तेणट्ठेणं जाव 'सम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्जिया वि'। एवं जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया तहेव पच्छिल्लएहिं, णवरं अभिलावो चुलसीईओ, एवं जाव वणस्सइकाइया। बेंदिया जाव वेमाणिया जहा णेरइया।

कठिन शब्दार्थ-चुलसीइसमज्जिया-चतुरशीति (चौरासी) समर्जित।

भावार्थ-२२ प्रश्न-हे भगवन्! नैरयिक चौरासी-समर्जित हैं या नो-चौरासी-समर्जित हैं, या चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित है, या अनेक चौरासी-समर्जित हैं, या अनेक चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित हैं ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक चौरासी-समर्जित भी हैं और यावत् अनेक चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित भी हैं।

प्रश्न-हे भगवन्! उपरोक्त कथन का क्या कारण है ?

उत्तर-हे गौतम ! जो नैरयिक एक साथ, एक समय में चौरासी प्रवेशनक से प्रवेश करते हैं, वे चौरासी-समर्जित हैं। जो नैरयिक जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट तिरयासी प्रवेश करते हैं, वे नो-चौरासी-समर्जित हैं। जो नैरयिक एक साथ, एक समय में चौरासी और अन्य जघन्य एक, दो, तीन यावत् उत्कृष्ट तिरयासी प्रवेश करते हैं, वे चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित हैं। जो नैरयिक एक साथ, एक समय में अनेक चौरासी प्रवेश करते हैं, वे अनेक चौरासी-समर्जित हैं। जो नैरयिक एक साथ, एक समय में अनेक चौरासी और अन्य जघन्य एक, दो, तीन यावत् उत्कृष्ट तिरयासी प्रवेशनक से प्रवेश करते हैं, वे अनेक चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित हैं। इस कारण हे गौतम ! ऐसा कहा गया है कि यावत् समर्जित भी है। इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त। पृथ्वीकायिक जीवों के विषय में अनेक चौरासी-समर्जित तथा अनेक चौरासी और नो चौरासी-समर्जित-ये पिछले दो भंग जानना चाहिये। इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक जानना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चाहिये । बेइन्द्रियों से ले कर वैमानिक तक नैरयिकों के समान ।

२३ प्रश्न-सिद्धाणं-पुच्छा ।

२३ उत्तर-गोयमा ! सिद्धा चुलसीइसमज्जिया वि १, णोचुलसीइसमज्जिया वि २, चुलसीईए य णोचुलसीईए य समज्जिया वि ३, णो चुलसीईहिं समज्जिया ४, णोचुलसीईहि य णोचुलसीईए य समज्जिया ५ ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव 'समज्जिया' ।

उत्तर-गोयमा ! जे णं सिद्धा चुलसीईएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीइसमज्जिया । जे णं सिद्धा जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं तेसीइएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा णोचुलसीइसमज्जिया । जे णं सिद्धा चुलसीइएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं तेसीइएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीईए य णोचुलसीईए य समज्जिया । से तेणट्ठेणं जाव 'समज्जिया' ।

२४ प्रश्न-एएसि णं भंते ! णेरइयाणं चुलसीइसमज्जियाणं णोचुलसीइसमज्जियाण० ?

२४ उत्तर-सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं अभिलावो चुलसीईओ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२५ प्रश्न-एएसि णं भंते ! सिद्धाणं चुलसीइसमज्जियाणं, णोचुलसीइसमज्जियाणं, चुलसीईए य णोचुलसीईए य समज्जियाणं कयरे कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

२५ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीईए य णोचुलसीईए य समज्जिया, चुलसीईसमज्जिया अणंतगुणा, णोचुलसीइसमज्जिया अणंतगुणा ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ वीसइमे सए दसमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ वीसइमं सयं समत्तं ॥

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! सिद्ध चौरासी-समर्जित हैं, इत्यादि प्रश्न ।

२३ उत्तर-हे गौतम ! सिद्ध चौरासी-समर्जित भी हैं, नो-चौरासी-समर्जित भी हैं, चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित भी हैं, किन्तु अनेक चौरासी-समर्जित नहीं हैं तथा अनेक चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-समर्जित भी नहीं हैं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! उपरोक्त कथन का कारण क्या है ?

उत्तर-हे गौतम ! जो सिद्ध एक साथ, एक समय में चौरासी संख्या में प्रवेश करते हैं, वे चौरासी-समर्जित हैं । जो सिद्ध जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट तिरयासी संख्या में प्रवेश करते हैं, वे नो-चौरासी-समर्जित हैं । जो सिद्ध एक समय में, एक साथ चौरासी और जघन्य एक, दो तीन और उत्कृष्ट तिरयासी तक प्रवेश करते हैं, वे चौरासी-समर्जित और नो-चौरासी-

समर्जित हैं। इस कारण हे गौतम ! यावत् पूर्वोक्त प्रकार से कहा गया है।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! चौरासी-समर्जित आदि नैरयिकों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! चौरासी-समर्जित, नो-चौरासी-समर्जित इत्यादि नैरयिकों का अल्प-बहुत्व षट्क-समर्जित के समान है। इस प्रकार यावत् वैमानिक पर्यंत। विशेष यह है कि यहाँ षट्क के स्थान में 'चौरासी' समझना चाहिये।

२५ प्रश्न-हे भगवन् ! चौरासी-समर्जित, नो-चौरासी-समर्जित और चौरासी, नो-चौरासी-समर्जित सिद्धों में कौन किससे यावत् विशेषाधिक हैं ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! चौरासी, नो-चौरासी-समर्जित सिद्ध सब से थोड़े हैं। उनसे चौरासी-समर्जित सिद्ध अनन्त गुण हैं। उनसे नो-चौरासी-समर्जित सिद्ध अनन्त गुण हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-एक समय में, एक साथ चौरासी संख्या का समुदाय रूप उत्पन्न हो, उसे 'चौरासी-समर्जित' कहते हैं। एक से ले कर तिरयासी तक उत्पन्न हों, उनको 'नो-चौरासी-समर्जित' कहते हैं। इसी प्रकार आगे के शब्दों का भी अर्थ है। शेष सब सुगम है।

सिद्धों में चौरासी-समर्जित के तीन भंग कहे हैं। उनमें से तीसरे भंग में (चौरासी, नो-चौरासी-समर्जित में) यहां 'नो-चौरासी' में एक से ले कर चौवीस तक ही लेने चाहिये। चौरासी में चौवीस संख्या को जोड़ने से १०८ हो जाते हैं। एक समय में १०८ से अधिक सिद्ध नहीं होते, इसलिये यहां सिद्धों के विषय में चौरासी के साथ 'नो-चौरासी' में उत्कृष्ट संख्या तिरयासी तक न ले कर चौवीस तक ही लेनी चाहिये।

।। बीसवें शतक का दसवां उद्देशक सम्पूर्ण ।।

।। बीसवाँ शतक सम्पूर्ण ।।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २१

सालि कल अयसि वंसे, इक्खू दब्भे य अब्भ तुलसी य।
अट्ठेए दस वग्गा, असीइं पुण होंति उद्देसा॥

भावार्थ—इस शतक में आठ वर्ग इस प्रकार हैं—शालि आदि धान्य के विषय में, दस उद्देशात्मक प्रथम वर्ग है। कलाय (मटर) आदि धान्य के विषय में दूसरा वर्ग है। अलसी आदि धान्य के विषय में तीसरा वर्ग है। बांस आदि पर्व वाली वनस्पति के लिये चौथा वर्ग है। इक्षु आदि पर्व वाली वनस्पति से सम्बन्धित पाँचवां वर्ग है। दर्भ (डाभ) आदि तृण के विषय में छठा वर्ग है। अभ्र आदि वनस्पति का प्रतिपादक सातवां वर्ग है और तुलसी आदि वनस्पति का प्रतिपादक आठवां वर्ग है। इस प्रकार इक्कीसवें शतक में आठ वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग में दस उद्देशक हैं। इस प्रकार इस शतक में कुल अस्सी उद्देशक हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २१ वर्ग १ उद्देशक १

शाली आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एवं वयासी–अह भंते ! साली·वीही·गोधूम० जाव जवजवाणं, एएसि णं भंते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमंति? ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति–किं णेरइएहिंतो० जाव उववज्जंति तिरि०, मणु०, देवे ?

१ उत्तर–जहा वक्कंतीए तहेव उववाओ, णवरं देववज्जं ।

२ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

२ उत्तर–गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । अवहारो जहा उप्पलुद्देसे ।

३ प्रश्न–तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

३ उत्तर–गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुहपुहुत्तं ।

कठिन शब्दार्थ–वीही–व्रीही–साधारण शालि ।

भावार्थ–१ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पृच्छा-'हे भगवन् ! शालि, व्रीहि, गेहूँ यावत् जवजव, इन सब धान्यों के मूल में जो उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिक, तिर्यञ्च, मनुष्य या देवों से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद के अनुसार इनका उपपात जानना चाहिए। विशेषता यह है कि देवगति से आ कर मूल-पने उत्पन्न नहीं होते।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं। उनका अपहार ग्यारहवें शतक के प्रथम उत्पलोद्देशक के अनुसार है।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी होती है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट धनुष पृथक्त्व (दो से नौ धनुष तक) की कही गई है।

४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा, अबंधगा ?

४ उत्तर-जहा उप्पलुद्देसे, एवं वेए वि, उदए वि, उदीरणाए वि।

५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, णील० काउ० ?

५ उत्तर-छव्वीसं भंगा, दिट्ठी जाव इंदिया जहा उप्पलुद्देसे।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव ज्ञानावरणीय कर्म के बन्धक हैं, या अबन्धक हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! ग्यारहवें शतक के प्रथम उत्पलोद्देशक के अनु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सार। इसी प्रकार कर्मों की वेदना, उदय और उदीरणा के विषय में भी जानना चाहिये।

५ प्रश्न-हे भगवन्! वे जीव कृष्ण-लेशी, नील-लेशी, या कापोत-लेशी होते हैं?

५ उत्तर-हे गौतम! यहां तीन लेश्या सम्बन्धी छब्बीस भंग कहने चाहिये। दृष्टि यावत् इन्द्रियों के विषय में उत्पलोद्देशक के अनुसार है।

६ प्रश्न-ते णं भंते! साली-वीही-गोधूम० जाव जवजवगमूलग-जीवे कालओ केवचिरं होइ?

६ उत्तर-गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं।

७ प्रश्न-से णं भंते! साली-वीही-गोधूम० जाव जवजवग-मूलगजीवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-वीही-जाव जवजवगमूलगजीवे केवइयं कालं सेवेज्जा, केवइयं कालं गइरागइं करेज्जा?

७ उत्तर-एवं जहा उप्पलुद्देसे। एएणं अभिलावेणं जाव मणुस्स-जीवे, आहारो जहा उप्पलुद्देसे, ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं, समुग्घाय (या), समोहया, उव्वट्टणा य जहा उप्पलुद्देसे।

८ प्रश्न-अह भंते! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-वीही-जाव जवजवगमूलगजीवत्ताए उववण्णपुव्वा?

८ उत्तर-हंता गोयमा! असइं अदुवा अणंतखुत्तो।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ एगवीसइमे सए पढमवग्गस्स पढमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! शालि, व्रीहि, गोधूम यावत् जवजव, इन सब धान्यों के मूल का जीव कितने काल तक रहता है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रहता है।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! शालि, व्रीहि, गोधूम यावत् जवजव, इन सभी के मूल का जीव यदि पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न हो और फिर पीछा शालि, व्रीहि यावत् जवजव के मूलपने उत्पन्न हो, तो इस प्रकार कितने काल तक सेवन (गमनागमन) करता रहता है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! ग्यारहवें शतक के पहले उत्पलोद्देशक के अनुसार जानना चाहिये। इस अभिलाप से यावत् मनुष्यों तक कहना चाहिये। उनके आहार का कथन भी उत्पलोद्देशक के समान ही, स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट वर्ष-पृथक्त्व (दो वर्ष से नौ वर्ष तक)। समुद्घात समवहत (समुद्घात की प्राप्ति) और उद्वर्तना उत्पलोद्देशक के समान है।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्व, शाली, व्रीहि यावत् जवजव के मूल के जीवपने पहले उत्पन्न हो चुके हैं ?

८ उत्तर-हां, गौतम ! अनेक अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है' - कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-पहले वर्ग में दस उद्देशक हैं। उनकी संग्रह गाथा इस प्रकार है।

मूले कंदे खंधे तया य साले पवाल-पत्ते य।
पुप्फे फल बीए विय इक्केक्को होइ उद्देसो ॥

अर्थात् पहले वर्ग में, दस उद्देशक हैं। यथा-१ मूल, २ कन्द, ३ स्कन्ध, ४ त्वचा, ५ शाखा, ६ प्रवाल (कोमल पत्र), ६ पत्र, ८ पुष्प, ९ फल और १० बीज। ये दस उद्देशक हैं। आगे के सात वर्गों में भी प्रत्येक वर्ग में ये दस-दस उद्देशक हैं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाल्यादि के मूल में उत्पन्न होने वाले जीव की उत्पत्ति के लिये प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद का अतिदेश किया गया है। वहां वनस्पति में देवों की उत्पत्ति बतलाई गई है। इसका आशय यह है कि देव वनस्पति के पुष्प आदि शुभ अंगों में उत्पन्न होते हैं। परन्तु मूल आदि अशुभ अंगों में उत्पन्न नहीं होते। इसीलिये मूल पाठ में कहा है कि-'णवरं देव वज्जं' (देव गति से आ कर मूल आदि में उत्पन्न नहीं होते)।

यद्यपि सामान्यतया वनस्पति में प्रति समय अनन्त उत्पन्न होते हैं, तथापि यहाँ शालि आदि प्रत्येक शरीरी वनस्पति होने से इनमें एक, दो आदि की उत्पत्ति का कथन विरुद्ध नहीं है।

उन शालि आदि के जीवों को प्रति समय एक-एक निकाला जाय, तो असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जाने पर भी वे पूरी तरह नहीं निकाले जा सकते (क्योंकि ऐसा किसी ने किया नहीं और कर भी नहीं सकता)।

शालि आदि के जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मों के अबन्धक नहीं है, बन्धक हैं। कभी उनमें एक जीव हो, तो वह एक जीव ज्ञानावरणीय आदि का बन्धक होता है और कदाचित् बहुत जीव हों, तो बहुत जीव बन्धक होते हैं, इत्यादि।

कृष्ण-लेश्या, नील-लेश्या, कापोत-लेश्या, इन तीन लेश्या के एकवचन और बहुवचन सम्बन्धी असंयोगी तीन-तीन भंग होने से छह भंग होते हैं। कृष्ण-नील, कृष्ण-कापोत और नील-कापोत ये द्विक संयोगी तीन विकल्प होते हैं। इन प्रत्येक के एक वचन और बहुवचन सम्बन्धी चार-चार भंग होने से बारह भंग होते हैं। त्रिक संयोगी एक वचन और बहुवचन सम्बन्धी आठ भंग होते हैं। इस प्रकार ये कुल मिला कर छब्बीस भंग होते हैं।

जघन्य दो भव और उत्कृष्ट असंख्यात भव तक गमनागमन की स्थिति है। शाल्यादि जीवों के वेदना, कषाय और मरण-ये तीन समुद्घात होती हैं। ये समुद्घात कर के भी मरते हैं और समुद्घात किये बिना भी मरते हैं। मर कर ये मनुष्य और तिर्यंच गति में जाते हैं, इत्यादि वर्णन ग्यारहवें शतक के प्रथम उद्देशक से जान लेना चाहिये।

॥ इक्कीसवें शतक के पहले वर्ग का पहला उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २१ वर्ग १ उद्देशक २-१०

शालि आदि के कन्द की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! साली-वीही० जाव जवजवाणं एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं कंदाहिगारेण सच्चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो, जाव असइं अदुवा अणंतखुत्तो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति । २१-२ । एवं खंधे वि उद्देसओ णेयव्वो । २१-३ । एवं तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो । २१-४ । साले वि उद्देसो भाणियव्वो । २१-५ । पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो । २१-६ । पत्ते वि उद्देसो भाणियव्वो । एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा णेयव्वा । २१-७ । एवं पुप्फे वि उद्देसओ, णवरं देवा उववज्जंति जहा उप्पलुद्देसे । चत्तारि लेस्साओ, असीइ भंगा । ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अंगुलपुहुत्तं, सेसं तं चेव । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति । २१-८ । जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो । २१-९ । एवं बीए वि उद्देसओ । २१-१० । एए दस उद्देसगा ।

॥ एगवीसइमे सए पढमो वग्गो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! शालि, व्रीहि यावत् जवजव, इन सब के कन्द रूप में जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! कन्द के विषय में पूर्वकथित मूल का समग्र उद्देशक यावत् 'अनेक बार अथवा अनन्त बार पहले उत्पन्न हो चुके हैं'-तक। विशेष यह है कि यहां 'मूल' के स्थान 'कन्द'-पाठ कहना चाहिये। 'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है।' (२१-२)

इसी प्रकार स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रवाल (कोंपल) और पत्र के विषय में एक-एक उद्देशक मूल के समान जानना चाहिए। (२१-७)

'पुष्प' के विषय में भी इसी प्रकार एक उद्देशक कहना चाहिये। विशेषता यह है कि 'पुष्प' में देव उत्पन्न होते हैं। ग्यारहवें शतक के प्रथम उत्पलोद्देशक में, जिस प्रकार चार लेश्या और उनके अस्सी भंग कहे गये हैं, उसी प्रकार यहां भी कहने चाहिए। अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट अंगुल पृथक्त्व होती है। शेष सब पूर्ववत्। 'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है।' (२१-८) इसी प्रकार 'फल' और 'बीज' के विषय में भी एक-एक उद्देशक कहना चाहिये। (२१-१०) ये दस उद्देशक हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है।'

विवेचन-कृष्ण, नील, कापोत और तेजो लेश्या के एक वचन और बहु वचन की अपेक्षा असंयोगी चार-चार भंग गिनने से आठ भंग होते हैं। द्विकसंयोगी छह विकल्प होते हैं, उनके एक वचन और बहु वचन से चार-चार भंग होने से चौबीस भंग होते हैं। त्रिकसंयोगी चार विकल्प होते हैं और एक-एक विकल्प के आठ-आठ भंग होने से बत्तीस भंग होते हैं। चतुःसंयोगी सोलह भंग होते हैं। ये कुल मिला कर अस्सी भंग होते हैं।

मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रवाल और पत्र, इन सात में देव उत्पन्न नहीं होते। पुष्प, फल और बीज में देव उत्पन्न होते हैं। अतएव इनमें चार लेश्याएँ होती हैं। जिसके अस्सी भंग ऊपर बतलाये हैं। अवगाहना इस प्रकार है-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूले, कंदे, खंधे, तयाय साले पवाल पत्ते य ।
सत्तसु वि धणुपुहुत्तं, अंगुलिमो पुप्फफलबीए ।।

अर्थात्-मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रवाल और पत्र, इन सात में अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट धनुष पृथक्त्व है। पुष्प, फल और बीज, इन तीन की उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल पृथक्त्व है।

।। इक्कीसवें शतक का पहला वर्ग सम्पूर्ण ।।

शतक २१ वर्ग २ उद्देशक १-१०

कलाय, मसूर आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! कलाय-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-अलिसंदग-सतिण-पलिमंथगाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीणं णिरवसेसं तहेव ।

।। एगवीसइमे सए बिइओ वग्गो समत्तो ।।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! कलाय (मटर) मसूर, तिल, मूंग, उड़द, निष्पाव (वल्ल नाम का धान्य), कुलथ, आलिसंदक, सतिन और पलिमंथक (चना) इन सब के मूल में जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । मूलादि दस उद्देशक जो शालि के विषय में कहे हैं, वे यहां भी पूरे कहने चाहिये ।

॥ इक्कीसवें शतक का दूसरा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २१ वर्ग ३ उद्देशक १-१०

अलसी आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगु-रालग-तुवरी-कोदूसा-सण-सरिसव-मूलगबीयाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं णिरवसेसं तहेव भाणियव्वं ।

॥ एगवीसइमे सए तइओ वग्गो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कठिन शब्दार्थ-अयसि-अलसी ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! अलसी, कुसुम्ब, कोद्रव, कांग, राल, तूअर, कोदूसा, सण और सर्षप (सरसों) तथा मूलक बीज, इन वनस्पति के मूल में जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहाँ भी शालि उद्देशक के समान मूलादिक दस उद्देशक कहने चाहिये ।

॥ इक्कीसवें शतक का तीसरा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २१ वर्ग ४ उद्देशक १-१०

बाँस आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! वंस-वेणु-कणक-कक्कावंस-चारुवंस-दंडा-कुडा-विमा-चंडा-वेणुया-कल्लाणीणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्क-मंति० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं, णवरं देवो सव्वत्थ वि ण उववज्जइ, तिण्णि लेसाओ, सव्वत्थ वि, छव्वीसं भंगा, सेसं तं चेव ।

॥ एगवीसइमे सए चउत्थो वग्गो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! बांस, वेणु, कनक, कर्कावंश, चारुवंश, दण्डा, कुडा, विमा, चण्डा, वेणुका और कल्याणी, इन सब वनस्पति के मूल में जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहां भी पूर्ववत् शालि-वर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये। विशेष में यहां किसी भी स्थान में देव उत्पन्न नहीं होते। अतः सर्वत्र तीन लेश्या और उनके छब्बीस भंग जानना चाहिये। शेष सब पूर्ववत्।

॥ इक्कीसवें शतक का चौथा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २१ वर्ग ५ उद्देशक १-१०

इक्षु आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! उक्खु-इक्खुवाडिया-वीरणा-इक्कड-भमास-सुंठि-सत्त-वेत्त-तिमिर-सयपोरग-णलाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर-एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा, णवरं खंधुद्देसे देवो उववज्जइ, चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव।

॥ एगवीसइमे सए पंचमो वग्गो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कठिन शब्दार्थ--उक्खु-इक्षु-गन्ना ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! इक्षु, इक्षु-वाटिका, वीरण, इक्कड़, भमास, सूंठ, शर, वेत्र (बेंत), तिमिर, सतपोरग और नल, इन सब वनस्पतियों के मूल में, जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार चौथा वंश-वर्ग कहा, उसी प्रकार यहां भी मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये । विशेष यह है कि स्कन्धोद्देशक में देव भी उत्पन्न होते है और उनके चार लेश्या होती हैं । शेष पूर्ववत् ।

॥ इक्कीसवें शतक का पांचवां वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २१ वर्ग ६ उद्देशक १-१०

सेडिय आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! सेडिय-भंडिय-दब्भ-कोंतिय दब्भकुस-+ धवग-पोइद-ताल-अज्जुण आसाढग-रोहिय-समु-अवखीर-भुस-एरंड-कुरुकुंद-

+ यहां प्रतियों में पाठ-भेद है । इसी विषय का पाठ प्रज्ञापना पद १ में इस प्रकार है; —

'संडिय-भंतिय-हो (कों) त्तिय, दब्भ-कुसे पव्वए य पोडइला ।
अज्जुण-असाढए होहियंसे सुयवेय-खीरभुसे ।
एरंडे कुरुविंदे करजर सुंठे सहा विभंगू य ।
महुरत्तण छुरय सिप्पिय बोद्धव्वे सुंकलितणे य ।'

करवर-वदसुंठ-विभंगु-महुरयण-थुरग-सिप्पिय-सुंकलितणाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि दस उद्देसगा णिरवसेसं जहेव वंसवग्गो।

॥ एगवीसइमे सए छट्ठो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! सेडिय, भंतिय (भण्डिय), दर्भ, कौन्तिय, दर्भकुश, पर्वक, पोदेइल (पौदिना) अर्जुन (अंजन) आषाढक, रोहितक, समू, अवखीर (तवखीर), भुस, एरंड, कुरुकुन्द, करवर, सूंठ, विभंगु, मधुरतृण थुरग, शिल्पिक और सुंकलितृण, इन सब वनस्पतियों के मूल में जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! चौथे वंश-वर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये।

॥ इक्कीसवें शतक का छठा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २१ वर्ग ७ उद्देशक १-१०

अभ्ररुह आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! अब्भरुह-वोयाण-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-चोरग मज्जारयाई-चिल्लि-यालक्क-दगपिप्पलिय-दव्वि-सोत्थिय-

सायमंडुक्कि-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं, एएसि णं जे जीवा मूल० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव वंसवग्गो ।

॥ एगवीसइमे सए सत्तमो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! अभ्ररुह, वायण, हरितक, तांदलजो, तृण, वत्थुल, पोरक, मार्जारक, झिल्लि (चिल्लि), पालक, दगपिप्पली, दर्वी, स्वस्तिक, शाकमण्डुकी, मूलक, सर्षप (सरसों), अंबिलशाक, जियतंक, इन सब वनस्पति के मूल में जो जीव उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

१ उत्तर-हे गौतम ! चौथे वंश-वर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये ।

विवेचन-एक वृक्ष में दूसरी जाति का वृक्ष उग जाता है, उसे 'अभ्र वृक्ष' कहते हैं। जैसे बड़ के वृक्ष में पीपल का वृक्ष उग जाता है, नीम के वृक्ष में पीपल का वृक्ष उग जाता है।

॥ इक्कीसवें शतक का सातवां वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २१ वर्ग ८ उद्देशक १-१०

तुलसी आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! तुलसी-कण्ह-दल-फणेज्जा-अज्जा-चूयणा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चोरा-जीरा-दमणा-मरुया-इंदीवर-सयपुप्फाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर-एत्थ वि दस उद्देसगा णिरवसेसं जहा वंसाणं। एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीइं उद्देसगा भवंति।

॥ एगवीसइमे सए अट्ठमो वग्गो समत्तो ॥

॥ एक्कवीसइमं सयं समत्तं ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! तुलसी, कृष्ण, दराल, फणेज्जा, अज्जा, चूयणा (चूतणा), चोरा, जीरा, दमणा, मरुया, इन्दीवर और शतपुष्प, इन सब वनस्पतियों के मूल में जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! चौथे वंश-वर्ग के समान यहाँ भी मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये। इस प्रकार ये सब मिला कर आठ वर्ग के अस्सी उद्देशक होते हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-प्रथम वर्ग में जो विवेचन दिया गया है, तदनुसार सब का विवेचन समझना चाहिये। यहाँ जिन वनस्पतियों के नाम दिये गये हैं, वे सब प्रायः अप्रसिद्ध वनस्पतियाँ हैं।

॥ इक्कीसवें शतक का आठवां वर्ग सम्पूर्ण ॥

॥ इक्कीसवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २२

तालेगट्ठिय-बहुबीयगा य, गुच्छा य गुम्म वल्ली य ।
छद्दस वग्गा एए, सट्ठिं पुण होंति उद्देसा ॥

भावार्थ—इस शतक में छह वर्ग हैं । यथा—ताल, तमाल आदि वृक्षों के विषय में दस उद्देशात्मक प्रथम वर्ग है । एक बीज वाले वृक्षों के विषय में दूसरा वर्ग है । बहुबीज फल वाले वृक्षों के सम्बन्ध में तीसरा वर्ग है । रींगणी आदि गुच्छ वनस्पति के विषय में चौथा वर्ग है । सिरिय नवमालिका आदि गुल्म वनस्पति के विषय में पांचवां वर्ग है । वल्लि आदि बेल के विषय में छठा वर्ग है । प्रत्येक वर्ग में दस-दस उद्देशक हैं । ये सब मिला कर ६० उद्देशक हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २२ वर्ग १ उद्देशक १-१०

ताल-तमालादि की उत्पत्ति

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-अह भंते ! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि-साल-सरला-सारगल्लाणं जाव केयइ-कदलि-कंदलि-चम्मरुक्ख-गुंतरुक्ख-हिंगुरुक्ख-लवंगरुक्ख-पूयफल-खज्जूरि-णालिएरीणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते ! जीवा कओ-हिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं, णवरं इमं णाणत्तं-मूले कंदे खंदे तयाए साले य एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो ण उववज्जइ । तिण्णि लेसाओ । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जइ । चत्तारि लेसाओ । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्को-सेणं वासपुहुत्तं । ओगाहणा मूले कंदे धणुहपुहुत्तं, खंधे तयाए साले य गाउयपुहुत्तं, पवाले पत्ते धणुहपुहुत्तं, पुप्फे हत्थपुहुत्तं, फले बीए य अंगुलपुहुत्तं । सव्वेसिं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । सेसं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जहा सालीणं। एवं एए दस उद्देसगा।

॥ बावीसइमे सए पढमो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-'हे भगवन् ! ताल (ताड़), तमाल, तक्कली, तेतली, शाल, सरल (देव दारु), सारगल्ल, यावत् केतकी (केवड़ा), कदली (केला), कन्दली, चर्मवृक्ष, गुन्दवृक्ष, हिंगुवृक्ष, लवंगवृक्ष, पूगफल (सुपारी) का वृक्ष, खजूर और नारियल, इन सब के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! शालिवर्ग के समान यहां भी मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये। विशेष यह है कि इन वृक्षों के मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा (छाल) और शाखा, इन पांच उद्देशकों में देव आकर उत्पन्न नहीं होते। इसलिये यहां तीन लेश्याएँ होती हैं। इनकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की होती है। शेष पांच उद्देशकों में देव उत्पन्न होते हैं। इसलिये उनमें चार लेश्याएँ होती हैं। उनकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व होती है। अवगाहना मूल और कन्द की धनुष पृथक्त्व, स्कन्ध, त्वचा और शाखा की गव्यूति (दो कोश) पृथक्त्व होती है। प्रवाल और पत्र की अवगाहना धनुषपृथक्त्व होती है। पुष्प की हस्तपृथक्त्व, फल और बीज की अंगुलपृथक्त्व उत्कृष्ट अवगाहना होती है। इन सब की जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग होती है। शेष सब शालिवर्ग के समान जानना चाहिये। इस प्रकार ये दस उद्देशक होते हैं।

विवेचन-इन सब की व्याख्या शालि उद्देशक के समान है। विशेषता यह है-

पत्त पवाले पुप्फे, फले य बीए य होइ उववाओ।
रुक्खेसु सुरगणाणं, पसत्थरस-वण्णगंधेसु ॥

अर्थ-इनमें से उत्तम रस, वर्ण और गन्ध वाले वृक्षों के पत्र, प्रवाल, पुष्प, फल और बीज, इन पांच में देव आ कर उत्पन्न होते है।

यहां अनेक वृक्षों के नाम बतलाये गये हैं। इनमें 'कदली' नाम भी आया है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'कदली' का अर्थ है केले का वृक्ष। केले के भी मूल से ले कर बीज पर्यन्त दस उद्देशक कहे गये हैं। इससे यह स्पष्ट है कि केले में बीज होते हैं। एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्नोत्तरों में उन जीवों का उपपात (जन्म), परिमाण, स्थिति, अवगाहना, लेश्या आदि का वर्णन किया गया है। अतः केले (कदली फल) में बीज होते हैं और वे सचित्त हैं +।

यहां ताल वर्ग में वर्णित वनस्पतियों में फल और बीज की उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल पृथक्त्व बताई गई है। इसलिए यह भ्रम हो सकता है कि यहां पर उन्हीं वनस्पतियों का ग्रहण करना चाहिए कि जिनके फल एवं बीज की अवगाहना समान हो। कदली (केले) की स्थिति ऐसी नहीं होने से उसका यहां पर ग्रहण नहीं करना चाहिए। किन्तु गहराई से विचार करने पर यह भ्रम दूर हो सकता है। यहां पर वलय जाति की अनेक वनस्पतियों का ग्रहण हुआ है, उनमें खजूर पूगीफल (सुपारी) आदि कुछ वनस्पतियों में फल और बीज की अवगाहना समान है तो नारियल, कदला आदि अनेक वनस्पतियों में फल और बीज की अवगाहना समान नहीं है। सब वनस्पतियों की अलग-अलग अवगाहना बताना संभव न होने से आगमकार उस पूरे समूह की सर्व जघन्य एवं सर्व उत्कृष्ट अवगाहना बता देते हैं। फल और बीजों का जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग बताई है और उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल पृथक्त्व। यद्यपि अनेक स्थानों पर पृथक्त्व का अर्थ दो से नव तक किया जाता है, तथापि यहां पर आया हुआ 'पृथक्त्व' शब्द अनेकता का द्योतक है, मात्र दो से नव अंगुल तक का ही नहीं। आवश्यकतानुसार इससे अधिक अंगुलों का भी इसमें ग्रहण समझना चाहिए। अंगुल के असंख्यातवें भाग की अवगाहना उत्पत्ति के समय होती है। उसके बाद बढ़ते हुए किसी की अवगाहना अंगुल के संख्यातवें भाग आदि हो कर रह जाती है, वे अंगुल पृथक्त्व से अधिक तो होती ही नहीं। इसलिए वलय वनस्पति के सभी भेदों के फल और बीजों की अवगाहना अंगुल पृथक्त्व नहीं समझ कर किसी भेद की समझनी चाहिए। उसमें भी प्रथम-द्वितीयादि सभी आरों का ग्रहण है। प्रथमादि आरों में वनस्पतियों की अवगाहना भी बड़ी होती है। स्कंधादि की गव्यूति

+ भगवती सूत्र के इस मूल पाठ से केले में भी बीज होना स्पष्ट प्रमाणित हो। रहा है केले के मध्य में जो काली रेखा दिखाई देती है, वह छोटे-छोटे बीजों की पंक्ति है। यह प्रत्यक्ष से भी सिद्ध है। केला पूरा हो, या खण्ड रूप टुकड़े, और भले हो उन टुकड़ों पर शक्कर डाल दी गई हो, बीज तो है ही और ज्यों के त्यों सचित्त है। इसलिये साधु-साध्वियों के लिए अकल्पनीय है। यही बात इस शतक के अंतिम वर्ग में वर्णित 'दाख' के विषय में भी लागू होती है। दाख भी बीज युक्त एवं सचित्त है-डोशी।

(कोस) पृथक्त्व की अवगाहना भी प्रथमादि आरों की अपेक्षा से ही संभव है । वैसे ही फल और बीज की भी उत्कृष्ट अवगाहना प्रथमादि आरों की अपेक्षा समझनी चाहिए तथा फल और बीज की अंगुल पृथक्त्व अवगाहन दोनों की अवगाहना एकांत समान भी नहीं समझनी चाहिए । क्योंकि दो अंगुल को भी अंगुल पृथक्त्व कहते हैं और अनेक अंगुलों को भी अंगुल पृथक्त्व कहते हैं । जैसे कि बकुश और प्रतिसेवना कुशील की संख्या कोटि शत पृथक्त्व होते हुए भी दोनों की संख्या समान नहीं है । बकुश से प्रतिसेवना कुशील संख्यात गुणा है वैसे ही फल और बीज की उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल पृथक्त्व होते हुए भी बीज से फल की अवगाहना बड़ी हो सकती है, जो नारियल आदि में बिना मतभेद के स्वीकार की ही जाती है । इतनी स्पष्टता होते हुए भी यदि बीज की अंगुल पृथक्त्व अवगाहना का आग्रह रखा जायेगा तो आज उपलब्ध नारियल, खजूर आदि होने वाली सभी वनस्पतियों को आगम निर्दिष्ट वनस्पतियों से भिन्न मानना पड़ेगा । (क्योंकि आज उपलब्ध होने वाली किसी भी वनस्पति के स्कंधादि की अवगाहना गव्यूति पृथक्त्व नहीं है ।) जिससे उनको भी सचित्त (बीज वाला) मानने में बाधा पड़ेगी । इसलिए आगम निर्दिष्ट उत्कृष्ट अवगाहना प्रथमादि आरों की अपेक्षा ताल वर्ग के किसी भेद की समझनी चाहिए, सभी की नहीं । दूसरी बात यदि उपलब्ध केले के वृक्ष को ताल वर्ग में नहीं माना जायगा तो उसे किसमें माना जायगा ? उसमें लक्षण तो तालवर्ग (वलय) के ही पाये जाते हैं । इसलिए दूसरी वनस्पति में उसका ग्रहण संभव नहीं होने से उसे तालवर्ग में ही ग्रहण करना होगा।

इसी प्रकार छठा वल्ली वर्ग है, उसमें दाख की बेल का भी ग्रहण है । वहां पर फल की उत्कृष्ट अवगाहना जो धनुष पृथक्त्व बताई गई है वह भी तरबूज, खरबूज, ककड़ी आदि की अपेक्षा समझनी चाहिए, दाख की अपेक्षा नहीं, क्योंकि वल्ली वर्ग में बड़ी अवगाहना वाले फल तरबूज आदि ही हैं । इनमें भी बीज हैं एवं बीज की अवगाहना (उत्कृष्ट अंगुल पृथक्त्व) ताल वर्ग के समान समझनी चाहिए ।

नारियल (सूखा), मुनक्का आदि के बीज नहीं उगते हुए भी इनमें बीज होने से इन्हें सचित्त समझा जाता है । वैसे ही केले * और छोटी दाख (किशमिश) में भी बीज होते हैं, इसलिए इन्हें भी सचित्त समझना चाहिए ।

।। बाईसवें शतक का पहला वर्ग सम्पूर्ण ।।

* **टिप्पण**—सन् १९३३ विक्रम संवत् १९९० में अजमेर (राजस्थान) में अखिल भारतवर्षीय

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २२ वर्ग २ उद्देशक १-१०

नीम-आम्रादि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! णिंब-ब-जंबु-कोसंब-ताल-अंकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-बउल-पलास-करंज-पुत्तंजीवग-रिट्ठ-बिहेडग-हरियग-भल्लाय-उंबरिय-खीरणि-धायई-पियाल-पूइयणिंबायग-(करंज)-सेण्हय-पासिय-सीसव-अयसि-पुण्णाग-णागरुक्ख-सीवण्ण-असोगाणं

स्थानकवासी बृहत् साधु सम्मेलन हुआ था। उसमें स्थानकवासी सब सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व था। उसमें केला (कदली फल) सचित्त अचित्त का प्रश्न चला था। उन महापुरुषों के सामने भगवती सूत्र का यह पाठ संभवतः उपस्थित नहीं हुआ था, अन्यथा उन महापुरुषों को केले को सचित्त स्वीकार करने में जरा भी संकोच नहीं होता।

बृहत्कल्प सूत्र संस्कृत टीका सहित सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जोधपुर द्वारा प्रकाशित हुआ है। इसके अनुवादक और सम्पादक पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. है। इसके पहले उद्देशक में "ताल पलंब" शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसका अर्थ पृष्ठ २ में संस्कृत टीका में इस प्रकार किया है। **'तालो वृक्ष विशेषः तत्र भवं तालं-तालफलं, प्रकर्षेण लम्बते इति प्रलम्बम्'** अर्थात् ताल एक प्रकार का वृक्ष होता है। उसके फल को 'ताल प्रलंब' कहते हैं। यह अर्थ आचार्य मलयगिरि ने किया है। पृष्ठ ८५ में पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. ने ताल पलंब शब्द का हिन्दी अर्थ किया है-

ताल पलंबे=तालवृक्ष का फल।

इस प्रकार बृहत्कल्प सूत्र की प्राचीन निर्युक्ति भाष्य और टीका में ताल पलंब शब्द का अर्थ केला (कदली फल) कहीं नहीं किया है। आगम में केले के लिए **"कयली"** (कदली) शब्द का प्रयोग हुआ है। किन्तु ताल प्रलंब शब्द का नहीं। तथा किसी भी आगम, व्याकरण, शब्दकोष और आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी ताल प्रलंब शब्द का अर्थ केला (कदली फल) देखने में नहीं आया है।

अतः भगवती सूत्र के इस पाठ से केला सचित्त है, यह बात स्पष्ट सिद्ध होती है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर-एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा णिरवसेसं जहा तालवग्गो।

॥ बावीसइमे सए बिइओ वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! नीम, आम्र, जम्बू, कोशम्ब, ताल, अकोल्ल, पीलु, सेलु, सल्लकी, मोचकी, मालुक, बकुल, पलाश, करंज, पुत्रंजीवक, अरिष्ट (अरिट्ठा), बहेड़ा, हरड़ (हरितकी), भिलामा, उम्बेभरिका, क्षीरणी, धातकी (धावड़ी), प्रियाल (चारोली), पूतिकनिम्ब (करंज), सेण्हक, पासिय, शीशम, अतसी (असन), नागकेशर, नागवृक्ष, श्रीपर्णी (सेवन) और अशोक, इन सब वृक्षों के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहाँ भी प्रथम ताड़ वर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये ।

॥ बाईसवें शतक का दूसरा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २२ वर्ग ३ उद्देशक १-१०

अगस्तिकादि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! अत्थिय-तिंदुय-बोर-कविट्ठ-अंबाडग-माउ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लिंग-बिल्ल-आमलग-फणस-दाडिम-आसत्थ-उंबर-वड-णग्गोह-णंदिरुक्ख-पिप्पलि-सतर-पिलक्खुरुक्ख-काउंबरिय-कुच्छुंभरिय-देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सिरीस-सत्तवण्ण-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चंदण-अज्जुण-णीव-कुडुग-कलंबाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! ० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा णेयव्वा जाव बीयं ।

॥ बावीसइमे सए तइओ वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! अगस्तिक, तिन्दुक, बोर, कवीठ, अंबाडक, बिजोरा, बिल्व, आमलक (आंवला), फणस, दाड़िम, अश्वत्थ (पीपल), उंबर, बड़, न्यग्रोध, नन्दिवृक्ष, पीपर, सतर, प्लक्षवृक्ष (ढाक का वृक्ष) काकोदुंबरी, कुस्तुंभरी, देवदालि, तिलक, लकुच (लीच), छत्रौघ, शिरीष, सप्तपर्ण (सादड़) दधिपर्ण, लोध्रक (लोद), धव, चन्दन, अर्जुन, नीप, कुटज और कदंब, इन सब वृक्षों के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम ताड़ वृक्ष के समान यहां भी मूल से ले कर बीज तक दस उद्देशक कहने चाहिये ।

॥ बाईसवें शतक का तीसरा वर्ग सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २२ वर्ग ४ उद्देशक १-१०

बैंगनादि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! वाइंगणि-अल्लइ-पोंडइ० एवं जहा पण्णवणाए गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव गंज-पाडला-वासि-अंकोल्लाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा णेयव्वा जाव वीयंति णिरवसेसं जहा वंसवग्गो ।

॥ बावीसइमे सए चउत्थो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! बेंगन, अल्लइ, पोंडइ, इत्यादि वृक्षों के नाम प्रज्ञापना सूत्र के पहले पद की गाथा के अनुसार जानना चाहिये, यावत् गंज, पाटला, वासी और अंकोल्ल, इन सभी वृक्षों के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहां मूल से ले कर बीज तक दस उद्देशक, वंश-वर्ग के समान जानना चाहिये ।

॥ बाईसवें शतक का चौथा वर्ग सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २२ वर्ग ५ उद्देशक १-१०

सिरियकादि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! सिरियका-णवणालिय-कोरंटग-बंधुजीवग-मणोज्जा० जहा पण्णवणाए पढमपए गाहाणुसारेणं जाव णलणीय-कुंद-महाजाईणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा णिरवसेसं जहा सालीणं ।

॥ बावीसइमे सए पंचमो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! सिरियक, नवनालिका, कोरण्टक, बन्धु-जीवक, मणोजा इत्यादि सब नाम प्रज्ञापना सूत्र के प्रथम पद की गाथा के अनुसार यावत् नलिनी, कुन्द और महाजाति, इन सब वृक्षों के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहाँ भी शालिवृक्ष के समान मूलादि दस उद्देशक हैं ।

॥ बाईसवें शतक का पांचवां वर्ग सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २२ वर्ग ६ उद्देशक १-१०

पूसफलिकादि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न—अह भंते ! पूसफलि-कालिंगी-तुंबी-तउसी-एलावालुकी० एवं पयाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव दधिफोल्लइ-काकलि-मोकलि-अक्कबोंदीणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर—एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो। णवरं फलउद्देसे ओगाहणाए जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुहपुहुत्तं। ठिई सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहुत्तं, सेसं तं चेव। छट्ठो वग्गो समत्तो। एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठिं उद्देसगा भवंति।

॥ बावीसइमे सए छट्ठो वग्गो समत्तो ॥

॥ बावीसइमं सयं समत्तं ॥

भावार्थ—१ प्रश्न—हे भगवन् ! पूसफलिका, कालिंगी, तुम्बी, त्रपुषी (ककड़ी), एलवालुंकी इत्यादि नाम प्रज्ञापना सूत्र के प्रथम पद की गाथा (२६ वीं से तीसवीं तक) के अनुसार ताड़वर्ग में कहे अनुसार, यावत् दधिफोल्लइ, काकली, मोकली और अर्कबोन्दी, इन सब वल्लियों के मूल में जो जीव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहां भी ताड़वर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक हैं। विशेष यह है कि फलोद्देशक में फल की जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट धनुषपृथक्त्व होती है। सब जगह स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व है। शेष सब पूर्ववत्। इस प्रकार इन छह वर्गों में सब मिला कर साठ उद्देशक होते हैं।

विवेचन-इस बाईसवें शतक का विवेचन प्रायः इक्कीसवें शतक के समान है।

यहां वल्लियों के नाम निर्देश के लिये प्रज्ञापना सूत्र के प्रथम पद की छब्बीसवीं गाथा से ले कर तीसवीं गाथा तक का अतिदेश किया गया है। उनमें उनतीसवीं गाथा में 'मुद्दिय' शब्द है, जिसका अर्थ है-मृद्वीका अर्थात् द्राक्षा (दाख)। दाख की बेलड़ी के मूल से ले कर बीज तक दस उद्देशक हैं। अतः दाख में भी बीज हैं, यह इससे स्पष्ट है। इस प्रकार दाख सचित्त है।

॥ बाईसवें शतक का छठा वर्ग सम्पूर्ण ॥

॥ बाईसवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

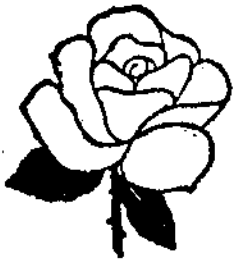

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २३

णमो सुयदेवयाए भगवईए ।

आलुय-लोही अवया पाढा तह मासवण्णि-वल्ली य ।
पंचेए दसवग्गा पण्णासं होंति उद्देसा ॥

कठिन शब्दार्थ--णमो सुयदेवयाए भगवईए—भगवान् की वाणी रूप भगवती श्रुत देवी को नमस्कार हो।

भावार्थ—इस शतक के पांच वर्ग हैं। यथा—आलू आदि साधारण वनस्पति विषयक दस उद्देशात्मक प्रथम वर्ग है। लोही आदि अनन्तकायिक विषयक दूसरा, अवकादि वनस्पति विषयक तीसरा, पाठा मृगवालुंकी आदि वनस्पति विषयक चौथा और माषपर्णी आदि वनस्पति विषयक पांचवां वर्ग है। प्रत्येक वर्ग में दस-दस उद्देशक हैं। सब मिला कर पचास उद्देशक इस तेईसवें शतक में हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २३ वर्ग १ उद्देसक १-१०

आलु आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न—रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! आलुय-मूलग-सिंगबेर-हलिद्द-रुरु-कंडरिय-जीरु-च्छीरविरालि-किट्ठि-कुंदक-कण्हकडसु-महु-पयलइ-महुसिंगि-णिरुहा-सप्पसुगंधा-छिण्णरुहा-बीय-रुहाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ?

१ उत्तर—एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्गसरिसा, णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति। अवहारो—गोयमा ! ते णं अणंता समये-समये अवहीरमाणा अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं एवइकालेणं अवहीरंति, णो चेव णं अवहरिया सिया। ठिई जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव।

॥ तेवीसइमे सए पढमो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ—१ प्रश्न—राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा—'हे भगवन् ! आलू, मूला, शृंगबेर (अदरख), हल्दी, रुरु, कण्डरीक, जीरु, क्षीरविराली (क्षीर विदारीकन्द), किट्ठि, कुन्दुक, कृष्ण, कडसु,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मधु, पयलई, मधुशृंगी, निरुहा, सर्पसुगन्धा, छिन्नरुहा और बीजरुहा, इन वृक्षों के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे जीव कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! यहां वंशवर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक कहने चाहिये। विशेष यह है कि उनका परिमाण एक समय में जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ठ संख्यात, असंख्यात और अनन्त जीव आ कर उत्पन्न होते हैं। हे गौत्तम ! यदि एक-एक समय में, एक-एक जीव का अपहार किया जाय, तो अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल तक किया जाने पर भी उनका अपहार नहीं हो सकता (ऐसा किसी ने किया नहीं और कर भी नहीं सकता) क्योंकि उनकी स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की होती है। शेष सब पूर्ववत्।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ तेईसवें शतक का पहला वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २३ वर्ग २ उद्देशक १-१०

लोही आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! लोही-णीहू-थीहू-थिवगा-अस्सकण्णी-सीह-कण्णी-सीउंढी-मुसंढीणं, एएसि णं जीवा मूल० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१ उत्तर-एवं एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गे। णवरं ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते'! त्ति ❀

॥ तेवीसइमे सए बिइओ वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! लोही, नीहू, थीहू, थिभगा, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सीउंढी और मुसुंढी, इन सब के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! आलू-वर्ग के समान यहाँ भी मूलादि दस उद्देशक जानना चाहिये। अवगाहना ताड़-वर्ग के समान। शेष सब पूर्ववत्।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ तेईसवें शतक का दूसरा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २३ वर्ग ३ उद्देशक १-१०

आय आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! आय-काय-कुहुण-कुंदुरुक्क-उव्वेहलिया-सफा-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुमाराणं, एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा णिरवसेसं जहा आलुवग्गो, णवरं ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ तेवीसइमे सए तइओ वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! आय, काय, कुहुणा, कुन्दुरुक्क, उव्वेहलिय, सफा, सज्जा, छत्रा, वंशानिका और कुमारी, इन सब के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! आलू-वर्ग के समान यहाँ भी मूलादि दस उद्देशक जानना । अवगाहना ताड़-वर्ग के समान है । शेष सब पूर्ववत् ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

॥ तेईसवें शतक का तीसरा वर्ग सम्पूर्ण ॥

शतक २३ वर्ग ४ उद्देशक १-१०

पाठा आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! पाढा-मियवालुंकि-महुररसा-रायवल्लि-पउमा-मोंढरि-दंति-चंडीणं, एएसि णं जे जीवा मूल० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, णवरं ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं तं चेव।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ तेवीसइमे सए चउत्थो वग्गो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! पाठा, मृगवालुंकी, मधुर रसा, राजवल्ली, पद्मा, मोढरी, दंती और चण्डी, इन सब वनस्पति के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहाँ से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! आलू-वर्ग के समान यहां भी मूलादि दस उद्देशक जानना चाहिये। अवगाहना वल्ली के समान। शेष सब पूर्ववत्।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ तेईसवें शतक का चौथा वर्ग सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २३ वर्ग ५ उद्देशक १-१०

माषपर्णी आदि के मूल की उत्पत्ति

१ प्रश्न-अह भंते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-कए-णुय-काओलि-खीरकाकोलि-भंगि-णहि-किमिरासि-भद्दमुच्छ-णंगलइ-पओय-किंणा पउल-पाढे-हरेणुया-लोहीणं,एएसि णं जे जीवा मूल० ?

१ उत्तर-एवं एत्थ वि दस उद्देसगा णिरवसेसं आलुयवग्ग-सरिसा । एवं एत्थ पंचसु वि वग्गेसु पण्णासं उद्देसगा भाणियव्वा । सव्वत्थ देवा ण उववज्जंति, तिण्णि लेसाओ ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ तेवीसइमे सए पंचमो वग्गो समत्तो ॥

॥ तेवीसइमं सयं समत्तं ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! माषपर्णी, मुद्गपर्णी, जीवक, सर्षप केरेणुक, काकोली, क्षीर काकोली, भंगी, णही, कृमिराशि, भद्रमुस्ता, लांगली, पयोद, किण्णापउलय, पाढ (हढ) हरेणुका और लोही, इन सब के मूलपने जो जीव उत्पन्न होते हैं, वे कहां से आते हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१ उत्तर–हे गौतम ! यहां भी आलू-वर्ग के समान मूलादि दस उद्देशक जानना। इस प्रकार इन पांच वर्गों में सब मिला कर पचास उद्देशक हैं। इन पांचों ही वर्गों में कथित वनस्पति में देव उत्पन्न नहीं होते। इसलिये सब में प्रथम की तीन लेश्याएँ ही होती हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'–कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन–यहाँ बतलाई हुई वनस्पतियाँ प्रायः अप्रसिद्ध हैं। इनके नामादि का विस्तृत कथन प्रज्ञापना सूत्र के प्रथम पद में है। जिज्ञासुओं को वहाँ देखना चाहिये।

॥ तेईसवें शतक का पांचवाँ वर्ग सम्पूर्ण ॥

॥ तेईसवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४

उववाय परीमाणं संघयणुच्चत्तमेव संठाणं ।
लेस्सा दिट्ठी णाणे, अण्णाणे जोग उवओगे ॥१॥
सण्णा-कसाय-इंदिय-समुग्घाया, वेयणा य वेए य ।
आउं अज्झवसाणा, अणुबंधो कायसंवेहो ॥२॥
जीवपए जीवपए जीवाणं, दंडगंमि उद्देसो ।
चउवीसइमंमि सए, चउव्वीसं होंति उद्देसा ॥३॥

भावार्थ--इस शतक में चौबीस उद्देशक इस प्रकार हैं--१ उपपात, २ परिमाण, ३ संहनन, ४ ऊँचाई, ५ संस्थान, ६ लेश्या, ७ दृष्टि, ८ ज्ञान, अज्ञान, ९ योग, १० उपयोग, ११ संज्ञा, १२ कषाय, १३ इन्द्रिय, १४ समुद्घात, १५ वेदना, १६ वेद, १७ आयुष्य, १८ अध्यवसाय, १९ अनुबन्ध और २० काय-संवेध । यह सब विषय चौबीस दण्डक से प्रत्येक जीव पद में कहे जायेंगे अर्थात् प्रत्येक दण्डक पर ये बीस द्वारा कहे जायेंगे । इन बीस द्वारों में से पहला-दूसरा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वार तो जीव जहाँ उत्पन्न होता है, उस स्थान की अपेक्षा से हैं। तीसरे से उन्नीसवें तक सतरह द्वार, उत्पन्न होने वाले जीव के इस भव सम्बन्धी हैं और बीसवां द्वार दोनों भव सम्बन्धी सम्मिलित है। इस प्रकार चौबीसवें शतक में चौबीस दण्डक सम्बन्धी चौबीस उद्देशक कहे जायेंगे।

विवेचन-उपपात आदि बीस द्वारों का अर्थ स्पष्ट है। 'उपपात' का अर्थ है-नैरयिकादि कहाँ से आते हैं? 'परिमाण' का अर्थ है-नैरयिकादि में उत्पन्न होने वाले जीवों की गणना (संख्या)। इसी प्रकार संहनन, संस्थान आदि का भी अर्थ समझना चाहिये। 'अनुबन्ध' का अर्थ है-विवक्षित पर्याय से अव्यवछिन्न रहना। 'कायसंवेध' का अर्थ है-विवक्षित काय से कायान्तर (दूसरी काया) अथवा तुल्यकाय में जा कर पुनः यथासम्भव उसी काया में आना।

शतक २४ उद्देशक १

नैरयिकादि का उपपातादि

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एवं वयासी-णेरइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, णो देवेहिंतो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति ।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-हे भगवन् ! नैरयिक कहां से आते हैं ? क्या नैरयिकों से, तिर्यंच-योनिकों से, मनुष्यों से या देवों से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक, नैरयिकों से नहीं आते, तिर्यंच-योनिकों से और मनुष्यों से आते हैं । देवों से भी नहीं आते ।

२ प्रश्न-जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, बेइंदियतिरि०, तेइंदियतिरि०, चउरिंदियतिरि०, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?

२ उत्तर-गोयमा ! णो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, णो बेंदिय०, णो तेइंदिय०, णो चउरिंदिय०, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो क्या एकेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से या बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय से या पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक से आते हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से नहीं आते, वे पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं ।

३ प्रश्न-जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदिय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?

३ उत्तर-गोयमा ! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णीपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि नैरयिक जीव पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो क्या संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, या असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वे संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं ।

४ प्रश्न-जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो उववज्जंति, खहचरेहिंतो उववज्जंति ?

४ उत्तर-गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो वि उववज्जंति, खहचरेहिंतो वि उववज्जंति ।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक यदि असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो क्या जलचर, थलचर और खेचर से आते हैं ?

४ उत्तर- हे गौतम ! वे जलचर, थलचर और खेचर से भी आते हैं ।

५ प्रश्न-जइ जलचर-थलचर-खहचरेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?

५ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, णो अपज्जत्तएहिंतो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे जलचर, थलचर और खेचर से आते हैं, तो क्या पर्याप्त या अपर्याप्त जलचर, थलचर और खेचर से आते हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! पर्याप्त जलचर, थलचर और खेचर से आते हैं, अपर्याप्त से नहीं ।

६ प्रश्न-पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?

६ उत्तर-गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव जो नैरयिक में उत्पन्न होने योग्य है, वह कितने नरक पृथ्वियों में उत्पन्न होता है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! वह एक रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होता है ।

७ प्रश्न-पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ-कालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

७ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा १ ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट पल्योपम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

विवेचन-रत्नप्रभा के नैरयिकों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक सागरोपम की है। किन्तु पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जो नरक में जाता है, वह पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले नैरयिकों तक ही उत्पन्न होता है, इससे आगे नहीं।

८ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

८ उत्तर- गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति २ ।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असंज्ञी तिर्यंच रत्नप्रभा पृथ्वी में एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

८ उत्तर-हे गौतम ! वे जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं ।

९ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता ?

९ उत्तर-गोयमा ! छेवट्ठसंघयणी पण्णत्ता ३ ।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके (असन्नी तिर्यंच-पञ्चेन्द्रिय के) शरीर किस संहनन वाले होते हैं ?

९ उत्तर-हे गौतम ! सेवार्त संहनन वाले होते हैं ।

१० प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

१० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ४ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी होती है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! उनके शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक हजार योजन की होती है।

११ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पण्णत्ता ?

११ उत्तर-गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिया पण्णत्ता ५।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके शरीर का संस्थान कौन-सा है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! हुण्डक संस्थान होता है।

१२ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

१२ उत्तर-गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ। तं जहा-कण्हलेस्सा, णीललेस्सा, काउलेस्सा ६।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके कितनी लेश्याएँ होती हैं ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! उनके तीन लेश्याएँ होती हैं। यथा-कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या।

१३ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ?

१३ उत्तर-गोयमा ! णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी ७।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि या सम्यग्मिथ्यादृष्टि होते हैं ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! वे सम्यग्दृष्टि नहीं होते, मिथ्यादृष्टि होते हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि भी नहीं होते।

१४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं णाणी, अण्णाणी ?

१४ उत्तर-गोयमा ! णो णाणी, अण्णाणी, णियमा दुअण्णाणी, तं जहा-मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य ८।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव ज्ञानी होते हैं या अज्ञानी ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! वे ज्ञानी नहीं होते, अज्ञानी होते हैं। उनके अवश्य दो अज्ञान होते हैं। यथा-मतिअज्ञान और श्रुतअज्ञान।

१५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ?

१५ उत्तर-गोयमा ! णो मणजोगी, वयजोगी वि, कायजोगी वि ९।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव मनयोगी, वचनयोगी या काययोगी हैं ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! वे मनयोगी नहीं, वचनयोगी और काययोगी हैं।

१६ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ?

१६ उत्तर-गोयमा ! सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि १०।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव साकारोपयोग वाले हैं या अनाकारोपयोग युक्त ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! वे साकारोपयोग युक्त भी हैं और अनाकारोपयोग युक्त भी ।

१७ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ सण्णाओ पण्णत्ताओ ?

१७ उत्तर-गोयमा ! चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तं जहा-आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ११ ।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के संज्ञाएँ कितनी हैं ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! उनके चार संज्ञाएँ हैं। यथा-आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

१८ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ कसाया पण्णत्ता ?

१८ उत्तर-गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा-कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए १२ ।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के कषाय कितनी हैं ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! उनके कषाय चारों हैं। यथा-क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय और लोभकषाय ।

१९ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ इंदिया पण्णत्ता ?

१९ उत्तर-गोयमा ! पंचिंदिया पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदिए, चक्खिदिए जाव फासिंदिए १३ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के इन्द्रियां कितनी हैं ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! उनके पांच इन्द्रियां हैं। यथा-श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, यावत् स्पर्शनेन्द्रिय ।

२० प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?

२० उत्तर-गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा-वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए १४ ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के समुद्घात कितनी हैं ?

२० उत्तर-हे गौतम ! उनके तीन समुद्घात हैं। यथा-वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और मारणान्तिकसमुद्घात ।

२१ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा ?

२१ उत्तर-गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि १५ ।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव साता-वेदक हैं, या असाता-वेदक ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! वे साता-वेदक भी हैं और असाता-वेदक भी हैं।

२२ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा किं इत्थीवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुंसगवेयगा ?

२२ उत्तर-गोयमा ! णो इत्थीवेयगा, णो पुरिसवेयगा, णपुंसगवेयगा १६ ।

भावार्थ-२२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव स्त्री-वेदक हैं, पुरुष-वेदक हैं, या नपुंसक-वेदक हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२२ उत्तर-हे गौतम ! वे स्त्री-वेदक और पुरुष-वेदक नहीं, एक नपुंसक-वेदक हैं।

२३ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

२३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्व-कोडी १७।

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों की स्थिति कितने काल की है ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! उनकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की होती है।

२४ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?

२४ उत्तर-गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके अध्यवसाय स्थान कितने हैं ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! उनके अध्यवसाय स्थान असंख्यात हैं।

२५ प्रश्न-ते णं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ?

२५ उत्तर-गोयमा ! पसत्था वि अप्पसत्था वि १८।

भावार्थ-२५ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके अध्यवसाय स्थान प्रशस्त हैं, या अप्रशस्त ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! प्रशस्त भी होते हैं और अप्रशस्त भी।

२६ प्रश्न-से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?

२६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पुव्व-कोडी १९ ।

भावार्थ-२६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक रूप में कितने काल तक रहते हैं ?

२६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि ।

२७ प्रश्न-से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए णेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएत्ति केवइयं कालं सेवेज्जा-केवइय कालं गइरागइं करेज्जा ?

२७ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलि-ओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिमब्भहियं, एवइयं कालं सेवेज्जा-एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा २० ।

भावार्थ-२७ प्रश्न-हे भगवन् ! वे पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, रत्नप्रभा पृथ्वी में नैरयिकपने उत्पन्न होते हैं और फिर पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हों, इस प्रकार कितने काल तक सेवन करते हैं और कितने काल तक गमनागमन करते हैं ?

२७ उत्तर-हे गौतम ! भवादेश की अपेक्षा दो भव और कालादेश की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग, इतने काल तक सेवन करता है और इतने काल तक गमनागमन करता है ।२०।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन-यहां असंज्ञी तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय के विषय में बीस द्वार कहे हैं। वे प्रायः स्पष्टार्थ ही हैं। कायसंवेध के विषय में इस प्रकार समझना चाहिये। जो जीव पूर्व-भव में असंज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय हो और वहां से मर कर नरक में उत्पन्न हो तो वह नरक से निकल कर फिर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच नहीं होता। वह अवश्य संज्ञीपन प्राप्त करता है। इसलिए भव की अपेक्षा दो भव कायसंवेध जानना चाहिये। काल की अपेक्षा जघन्य कायसंवेध असंज्ञी के जघन्य अन्तर्मुहूर्त आयुष्य सहित नरक की जघन्य दस हजार वर्ष की स्थिति वाला होता है और उत्कृष्ट कायसंवेध असंज्ञी के पूर्वकोटि वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयुष्य सहित। रत्नप्रभा में उसका उत्कृष्ट आयुष्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण जानना चाहिये।

२८ प्रश्न-पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठिईएसु रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

२८ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा।

भावार्थ-२८ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, रत्नप्रभा पृथ्वी में जघन्य काल स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

२८ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट भी दस हजार वर्ष की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है।

२९ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

२९ उत्तर-एवं सच्चेव वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा जाव अणुबंधो त्ति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-२९ प्रश्न-हे भगवन् ! वह असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

२९ उत्तर-हे गौतम ! पूर्वकथित सारी वक्तव्यता यावत् अनुबन्ध (सूत्र ७ से २६) तक जाननी चाहिये ।

३० प्रश्न-से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालट्ठिईय-रयणप्पभापुढविणेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णि० जाव गइरागइं करेज्जा ?

३० उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा २ ।

भावार्थ-३० प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक, जघन्य स्थिति वाले रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हों और फिर पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, इस प्रकार कितने काल तक यावत् गति आगति करता है ?

३० उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक दस हजार वर्ष, इतना काल सेवन और गमनागमन करता है । २ ।

३१ प्रश्न-पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालट्ठिईएसु रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

३१ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग-ट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग-ट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-३१ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक, रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो वह कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

३१ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

३२ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

३२ उत्तर-अवसेसं तं चेव जाव अणुबंधो ।

भावार्थ-३२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

३२ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् सारी वक्तव्यता यावत् अनुबन्ध (सूत्र ७ से २६) पर्यन्त जानो ।

३३ प्रश्न-से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठिईयरयणप्पभापुढविणेरइए, पुणरवि पज्जत्ता० जाव करेज्जा ?

३३ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्को-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिअब्भहियं, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा, ३ ।

भावार्थ-३३ प्रश्न-हे भगवन् ! वह पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक, रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो और पुनः पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, तो इस प्रकार कितने काल तक यावत् गमनागमन करता है ?

३३ उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग तक सेवन और गमनागमन करता है । ३ ।

३४ प्रश्न-जहण्णकालट्ठिईयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-जोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविणेरइएसु, उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

३४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु उक्कोसेणं, पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-३४ प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव, रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, वह कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

३४ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

३५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३५ उत्तर-सेसं तं चेव, णवरं इमाइं तिण्णि णाणत्ताइं-आउं, अज्झवसाणा, अणुबंधो य । जहण्णेणं ठिई अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?

उत्तर-गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ।

प्रश्न-ते णं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ?

उत्तर-गोयमा ! णो पसत्था, अप्पसत्था । अणुबंधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ।

भावार्थ-३५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

३५ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । किन्तु उनके आयुष्य, अध्यवसाय और अनुबन्ध के विषय में अन्तर है । यथा-आयुष्य जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त ।

प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के अध्यवसाय कितने होते हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! असंख्यात होते हैं ।

प्रश्न-हे भगवन् ! वे अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं या अप्रशस्त ?

उत्तर-हे गौतम ! प्रशस्त नहीं होते, अप्रशस्त होते हैं । अनुबन्ध अन्तर्मुहूर्त होता है । शेष सब पूर्ववत् ।

३६ प्रश्न-से णं भंते ! जहण्णकालट्ठिईए पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदिय० रयणप्पभा० जाव करेज्जा ?

३६ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं पलिओ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, एवइयं कालं सेवेज्जा जाव गइरागइं करेज्जा ४।

भावार्थ-३६ प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, रत्नप्रभा में नैरयिकपने उत्पन्न हो और पुनः जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, इस प्रकार कितने काल यावत् गमनागमन करता है ?

३६ उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग तक यावत् गमनागमन करता है ४।

३७ प्रश्न-जहण्णकालट्ठिईयपज्जत्तअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठिइएसु रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

३७ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-३७ प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने के योग्य है, वह कितनी स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

३७ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

३८ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३८ उत्तर-सेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि णाणत्ताइ जाव-

भावार्थ-३८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय मे कितने उत्पन्न होते हैं ?

३८ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । किन्तु आयुष्य, अध्यवसाय और अनुबन्ध के विषय में पूर्ववत् अन्तर है। यावत्

३९ प्रश्न-से णं भंते ! जहण्णकालट्ठिईयपज्जत्त० जाव जोणिए जहण्णकालट्ठिईयरयणप्पभा० पुणरवि जाव ?

३९ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि दस-वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा ५।

भावार्थ-३९ प्रश्न-हे भगवन् ! वह जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक, रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो और पुनः असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच हो, इस प्रकार कितने काल तक यावत् गमनागमन करता है ?

३९ उत्तर-हे गौतम ! भवादेश से दो भव और कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष सेवन और इतने काल तक गमनागमन करता है ५ ।

४० प्रश्न-जहण्णकालट्ठिईयपज्जत्ता० जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठिईएसु रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग-ट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग-ट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-४० प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो वह कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

४० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

४१ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

४१ उत्तर-अवसेसं तं चेव। ताइं चेव तिण्णि णाणत्ताइं जाव०

भावार्थ-४१ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४१ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । आयुष्य, अध्यवसाय और अनुबन्ध के विषय में भी पूर्ववत् अन्तर है । यावत्

४२ प्रश्न-से णं भंते ! जहण्णकालट्ठिईयपज्जत्त० जाव तिरिक्ख-जोणिए उक्कोसकालट्ठिईयरयण० जाव करेज्जा ?

४२ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं, अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, एवइयं कालं जाव करेज्जा ६ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-४२ प्रश्न-हे भगवन् ! वह जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो और पुनः पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, इस प्रकार कितने काल तक यावत् गमनागमन करता है ?

४२ उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग तक यावत् गमनागमन करता है । ६ ।

४३ प्रश्न-उक्कोसकालट्ठिइयपज्जत्तअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० जाव उववज्जेज्जा ?

४३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ० जाव उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-४३ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव रत्नप्रभा में नैरयिकपने उत्पन्न होता है, वह कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

४३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

४४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ?

४४ उत्तर-अवसेसं जहेव ओहियगमएणं तहेव अणुगंतव्वं । णवरं इमाइं दोण्णि णाणत्ताइं-ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वि पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो वि, अवसेसं तं चेव।

भावार्थ-४४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४४ उत्तर-हे गौतम ! सारी वक्तव्यता पूर्व के औधिक (सामान्य) पाठ के अनुसार जाननी चाहिये । स्थिति और अनुबन्ध में अन्तर है । स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष और अनुबन्ध भी इसी प्रकार है, शेष पूर्ववत् ।

४५ प्रश्न-से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्तअसण्णि० जाव तिरिक्खजोणिए रयणप्पभा० जाव- ?

४५ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं, एवइयं जाव करेज्जा ७ ।

भावार्थ-४५ प्रश्न-हे भगवन् ! वह उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक, फिर रत्नप्रभा में उत्पन्न हो और पुनः उत्कृष्ट स्थिति वाला असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, इस प्रकार कितने काल तक यावत् गमनागमन करता है ?

४५ उत्तर-हे गौतम ! भव से दो भव और काल से जघन्य दस हजार वर्ष अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग तक यावत् गमनागमन करता है ७।

४६ प्रश्न-उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्त० तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठिईएसु रयण० जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० जाव उववज्जेज्जा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिएईसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-४६ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी तिर्यंच-योनिक जीव, रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

४६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

४७ प्रश्न-ते णं भंते ! ० ?

४७ उत्तर-सेसं तं चेव, जहा सत्तमगमए । जाव···

भावार्थ-४७ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४७ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् यावत् अनुबन्ध तक सातवें गमक के अनुसार जानना चाहिये । यावत्

४८ प्रश्न-से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिईय जाव तिरिक्ख-जोणिए जहण्णकालट्ठिईयरयणप्पभा० जाव करेज्जा ?

४८ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी दसवाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवइयं जाव करेज्जा ८ ।

भावार्थ-४८ प्रश्न-हे भगवन् ! वह उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक, रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, और पुनः पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, इस प्रकार कितने काल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तक यावत् गमनागमन करता है ?

४८ उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक दस हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है । ८ ।

४९ प्रश्न-उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्त० जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठिईएसु रयण० जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० जाव उववज्जेज्जा ?

४९ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग-ट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-४९ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

४९ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वालें नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

५० प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ?

५० उत्तर-सेसं जहा सत्तमगमए जाव-

भावार्थ-५० प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

५० उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् सातवें गमक के अनुसार । यावत्

५१ प्रश्न-से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्त० जाव तिरि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्खजोणिए उक्कोसकालट्ठिईयरयणप्पभा० जाव करेज्जा ?

५१ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं, एवइयं कालं सेवेज्जा, जाव गइरागइं करेज्जा १। एवं एए ओहिया तिण्णि गमगा ३, जहण्णकालट्ठिईएसु तिण्णि गमगा, उक्कोसकालट्ठिईएसु तिण्णि गमगा ९, सव्वे ते णव गमा भवंति।

भावार्थ-५१ प्रश्न-हे भगवन् ! वह उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो और पुनः उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक हो, तो कितने काल तक यावत् गमनागमन करता है ?

५१ उत्तर-हे गौतम ! दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग तक यावत् गमनागमन करता है। ९। इस प्रकार औधिक तीन गमक हैं, जघन्य काल की स्थिति के तीन गमक हैं और उत्कृष्ट स्थिति के भी तीन गमक हैं। ये सब मिला कर ९ गमक होते हैं।

विवेचन-१-पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव का नरक में उत्पन्न होना, यह पहला गमक है। २-जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होना, यह दूसरा गमक है। ३-उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होना, यह तीसरा गमक है। इस प्रकार पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच के साथ किसी प्रकार का विशेषण लगाये विना तीन गमक बनते हैं। इसी प्रकार जघन्य स्थिति वाले पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव के तीन गमक बनते हैं और तीन गमक उत्कृष्ट स्थिति वाले पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव के बनते हैं। ये नव गमक होते हैं।

असंज्ञी की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की होती है और नरक में जाने वाले के अध्य-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वसाय स्थान अप्रशस्त होते हैं । आयुष्य की दीर्घ स्थिति हो, तो प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों प्रकार के अध्यवसाय हो सकते हैं । अनुबन्ध आयुष्य के समान ही होता है और काय-संवेध नैरयिक और असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य स्थिति और उत्कृष्ट स्थिति दोनों को मिला कर जाननी चाहिये ।

संज्ञी तिर्यंच का नरकोपपात

५२ प्रश्न-जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, किं संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्ख० जाव उववज्जंति ?

५२ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, णो असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति ।

भावार्थ-५२ प्रश्न-हे भगवन् ! जो नैरयिक, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच से आते हैं, या असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-से आते हैं ?

५२ उत्तर-हे गौतम ! वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच से आते हैं, असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच से नहीं ।

५३ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० जाव उववज्जंति किं जलचरेहिंतो उववज्जंति-पुच्छा ।

५३ उत्तर-गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, जहा असण्णी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, णो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति।

भावार्थ-५३ हे भगवन् ! जो नैरयिक संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच से आते हैं, वे जलचर से थलचर या खेचर से आते हैं ?

५३ उत्तर-हे गौतम ! वे जलचर से आते हैं, इत्यादि सब असंज्ञी के समान यावत् पर्याप्त से आते हैं, अपर्याप्त से नहीं।

५४ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसु पुढविसु उववज्जेज्जा ?

५४ उत्तर-गोयमा ! सत्तसु पुढविसु उववज्जेज्जा, तं जहा-रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए।

भावार्थ-५४ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच किन नरक पृथ्वियों में उत्पन्न होता है ?

५४ उत्तर-हे गौतम ! वह सातों ही नरक पृथ्वियों में उत्पन्न होता है। यथा-रत्नप्रभा यावत् अधःसप्तम पृथ्वी।

५५ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

५५ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-५५ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा पृथ्वी में नैरयिकपने उत्पन्न हो, तो कितने वर्ष की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

५५ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

५६ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

५६ उत्तर-जहेव असण्णी ।

भावार्थ-५६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

५६ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत्, असंज्ञी के समान ।

५७ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता ?

५७ उत्तर-गोयमा ! छव्विहसंघयणी पण्णत्ता, तं जहा-वइरोसभणारायसंघयणी, उसभणारायसंघयणी जाव छेवट्ठसंघयणी। सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।

भावार्थ-५७ प्रश्न-हे भगवन् ! उन के शरीर के संहनन कितने हैं ?

५७ उत्तर-हे गौतम ! उनके शरीर छहों संहनन वाले हैं । यथा-वज्रऋषभनाराचसंहनन यावत् सेवार्त्तसंहनन । शरीर की अवगाहना असंज्ञी के समान जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक हजार योजन ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५८ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पण्णत्ता ?

५८ उत्तर-गोयमा ! छव्विहसंठिया पण्णत्ता, तं जहा-समचउरंसा, णिग्गोहा जाव हुंडा ।

भावार्थ-५८ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके शरीर-संस्थान कितने हैं ?

५८ उत्तर-हे गौतम ! छहों संस्थान होते हैं। यथा-समचतुरस्र, न्यग्रोधपरिमण्डल यावत् हुण्डक संस्थान ।

५९ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

५९ उत्तर-गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ । तं जहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा । दिट्ठी तिविहा वि । तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । जोगो तिविहो वि । सेसं जहा असण्णीणं जाव अणुबंधो । णवरं पंच समुग्घाया आदिल्लगा । वेदो तिविहो वि, अवसेसं तं चेव जाव-

भावार्थ-५९ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के लेश्याएँ कितनी होती हैं ?

५९ उत्तर-हे गौतम ! उनके छहों लेश्याएँ होती हैं । यथा-कृष्ण-लेश्या यावत् शुक्ल-लेश्या । दृष्टियाँ तीन, ज्ञान तीन, अज्ञान तीन भजना (विकल्प) से होते हैं । योग तीनों होते हैं । शेष सब यावत् अनुबन्ध तक असंज्ञी के समान, किंतु समुद्घात प्रथम के पांच होते हैं और वेद तीनों होते हैं । शेष पूर्ववत् । यावत्

६० प्रश्न-से णं भंते ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय० जाव तिरिक्खजोणिए रयणप्पभा० जाव करेज्जा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

६० उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा १ ।

भावार्थ-६० प्रश्न-हे भगवन् ! वह पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा में नैरयिकपने उत्पन्न हो और फिर संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच हो, इस प्रकार कितने समय तक यावत् गमनागमन करता है ?

६० उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तक तथा काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम काल तक सेवन करता है और इतने ही काल तक गमनागमन करता है । १ ।

६१ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्ज० जाव जे भविए जहण्णकाल० जाव से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईए उववज्जेज्जा ?

६१ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सठिईएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिईएसु जाव उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-६१ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

६१ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की स्थिति के नैरयिकों में ।

६२ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

६२ उत्तर-एवं सो चेव पढमो गमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा २ ।

भावार्थ-६२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

६२ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् (सूत्र ५६ से ५८ तक) प्रथम गमक पूरा यावत् काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चालीस हजार वर्ष अधिक चार पूर्वकोटि तक यावत् गमनागमन करता है । २ ।

६३-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं सागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा । अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो णेयव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा ३ ।

भावार्थ-६३-यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति में उत्पन्न हो, तो जघन्य एक सागरोपम और उत्कृष्ट भी एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है । शेष परिमाणादि से ले कर भवादेश तक का कथन पूर्वोक्त प्रथम गमक के समान है, यावत् काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है । ३ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

६४ प्रश्न-जहण्णकालट्ठिईयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढवि० जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

६४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-६४ प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त संख्येय-वर्षायुष्क पंचेन्द्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा पृथ्वी में नैरयिक हो, तो वह कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

६४ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

६५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

६५ उत्तर-अवसेसो सो चेव गमओ । णवरं इमाइं अट्ठ णाणत्ताइं-१ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुहपुहुत्तं, २ लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ, ३ णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी, ४ णो णाणी, दो अण्णाणा णियमं, ५ समुग्घाया आदिल्ला तिण्णि, ६ आउं, ७ अज्झवसाणा, ८ अणुबंधो य जहेव असण्णीणं । अवसेसं जहा पढमगमए जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवइयं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कालं जाव करेज्जा ४ ।

भावार्थ-६५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

६५ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम गमक के समान सारी वक्तव्यता जाननी चाहिये, किंतु इन आठ विषयों में विशेषता है । यथा-१-शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट धनुषपृथक्त्व (दो धनुष से ९ धनुष तक) होती है । २-उनमें प्रथम की तीन लेश्याएँ होती हैं । ३-वे सम्यग्-दृष्टि या मिश्र-दृष्टि नहीं होते, एक मिथ्यादृष्टि ही होते हैं । ४-वे ज्ञानी नहीं, नियम से दो अज्ञान वाले होते हैं । ५-उनमें प्रथम की तीन समुद्घात होती हैं । ६-आयुष्य ७-अध्यवसाय और ८-अनुबन्ध, असंज्ञी के समान होता है, शेष सब प्रथम गमक के समान है, यावत् काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार सागरोपम काल तक यावत् गमनागमन करता है ४ ।

६६ प्रश्न-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उव-वज्जेज्जा । ते णं भंते ! ०

६६ उत्तर-एवं सो चेव चउत्थो गमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ५ ।

भावार्थ-६६ प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

६६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की स्थिति के नैरयिकों में उत्पन्न होता है। यहां सम्पूर्ण चौथे गमक के समान, यावत् काल से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चालीस हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। ५।

६७ प्रश्न-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा। ते णं भंते० ?

६७ उत्तर-एवं सो चेव चउत्थो गमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ६।

भावार्थ-६७ प्रश्न-हे भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला यावत् संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितनी स्थिति में उत्पन्न होता है ?

६७ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है। यहां चौथे गमक के समान यावत् काल से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सागरोपम और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। ६।

६८ प्रश्न-उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविणेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

६८ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-६८ प्रश्न-हे भगवन् ! वह उत्कृष्ट स्थिति वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

६८ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

६९ प्रश्न-ते णं भंते जीवा० ?

६९ उत्तर-अवसेसो परिमाणादीओ भवाएसपज्जवसाणो एएसिं चेव पढमगमओ णेयव्वो, णवरं ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं जाव करेज्जा ७ ।

भावार्थ-६९ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

६९ उत्तर-हे गौतम ! परिमाण से ले कर भवादेश तक की वक्तव्यता के लिये संज्ञी पञ्चेन्द्रिय का प्रथम गमक जानना चाहिये । विशेष यह है कि स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष की होती है और इसी प्रकार अनुबन्ध

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भी होता है, शेष पूर्ववत् । काल की अपेक्षा जघन्य दस हजार वर्ष अधिक पूर्वकोटि वर्ष और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ७ ।

७०-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

७०-वह जघन्य और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

७१ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

७१ उत्तर-सो चेव सत्तमो गमओ णिरवसेसो भाणियव्वो, जाव 'भवादेसो' त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवइयं जाव करेज्जा ८ ।

भावार्थ-७१ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

७१ उत्तर-हे गौतम ! परिमाण से ले कर भवादेश तक सातवें गमकवत् । काल से जघन्य दस हजार वर्ष अधिक पूर्वकोटि वर्ष और उत्कृष्ट चालीस हजार वर्ष अधिक चार पूर्वकोटि वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है ८ ।

७२ प्रश्न-उक्कोसकालट्ठिईयपज्जत्त० जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठिईय० जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

७२ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-७२ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्कृष्ट स्थिति वाला पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच उत्कृष्ट स्थिति वाले रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

७२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

७३ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

७३ उत्तर-सो चेव सत्तमगमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव 'भवादेसो' त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ९ । एवं एए णव गमका उक्खेवणिक्खेवओ णवसु वि जहेव असण्णीणं ।

भावार्थ-७३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

७३ उत्तर-हे गौतम ! परिमाण से ले कर भवादेश तक के लिये सातवां गमक सम्पूर्ण कह देना चाहिये यावत् काल की अपेक्षा जघन्य पूर्वकोटि अधिक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है । इस प्रकार ये नव गमक होते हैं । इन नव गमकों का प्रारम्भ और उपसंहार असंज्ञी के समान है ।

विवेचन-संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच जो नरक में उत्पन्न होने वाले हैं, उनमें तीन ज्ञान या तीन अज्ञान विकल्प से होते हैं अर्थात् किसी में दो ज्ञान या तीन ज्ञान होते हैं और किसी में दो अज्ञान या तीन अज्ञान होते हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में प्रथम की तीन समुद्घात होती हैं और नरक में जाने वाले संज्ञी तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय के पहले की पांच समुद्घात होती हैं। अन्तिम दो समुद्घात (आहारक समुद्घात और केवली समुद्घात नहीं होता। क्योंकि ये दो समुद्घात मनुष्यों के सिवाय दूसरे जीवों में नहीं होती)।

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव करता है। अर्थात् संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच नरक में उत्पन्न होता है और वहाँ से निकल कर तिर्यंच होता है। इसी प्रकार उत्कृष्ट आठ भव समझना चाहिये। इस प्रकार चार भव संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के और चार भव नरक के करके नौवें भव में मनुष्य होता है। इस प्रकार औधिक (सामान्य) संज्ञी तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय का औधिक नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप प्रथम गमक है। जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप दूसरा गमक है और उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप तीसरा गमक है। जघन्य स्थिति वाला तिर्यंच नरक में उत्पन्न होने रूप चौथा गमक है। इसमें आठ नानात्व (अन्तर) है। यथा-अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट धनुष पृथक्त्व (दो धनुष से लगा कर नव धनुष तक), लेश्या प्रथम की तीन, दृष्टि एक मिथ्यादृष्टि, अज्ञान दो, प्रथम की तीन समुद्घात। आयुष्य अन्तर्मुहूर्त, अध्यवसाय अशुभ और अनुबन्ध आयुष्य के अनुसार होता है। शेष कथन संज्ञी के प्रथम गमक के समान है। जघन्य स्थिति वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच का जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप पांचवां गमक है और उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप छठा गमक है। उत्कृष्ट स्थिति वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच का नरक में उत्पन्न होने रूप सातवां गमक है। इसका आयुष्य और अनुबन्ध पूर्वकोटि वर्ष का होता है और उसी का जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप आठवां गमक है तथा उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप नौवां गमक है। इस प्रकार पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच की अपेक्षा रत्नप्रभा पृथ्वी सम्बन्धी वक्तव्यता कही गई है। आगे उसी की अपेक्षा शर्कराप्रभा की वक्तव्यता कही जायगी।

७४ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

७४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-७४ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, शर्कराप्रभा पृथ्वी में नैरयिकपने उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

७४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक सागरोपम और उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

७५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ?

७५ उत्तर-एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी सच्चेव णिरवसेसा भाणियव्वा जाव 'भवादेसो' त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा १ । एवं रयणप्पभा-पुढविगमगसरिसा णव वि गमगा भाणियव्वा । णवरं सव्वगमएसु वि णेरइयट्ठिईसंवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा, एवं जाव 'छट्ठपुढवि' त्ति० । णवरं णेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया सा तेणं चेव कमेणं चउगुणा कायव्वा । वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीसं सागरोवमाइं चउगुणिया भवंति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठिं, तमाए अट्ठासीइं । संघयणाइं-वालुयप्पभाए पंचविहसंघयणी,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा--वयरोसहणारायसंघयणी जाव खीलियासंघयणी, पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी, धूमप्पभाए तिविहसंघयणी, तमाए दुविहसंघयणी तं जहा-वयरोसभणारायसंघयणी य १ उसभणारायसंघयणी य २, सेसं तं चेव।

भावार्थ-७५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

७५ उत्तर-हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच की सम्पूर्ण वक्तव्यता भवादेश तक जाननी चाहिये। काल से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक बारह सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। (१) इस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी के गमक के समान नव गमक जानने चाहिये। विशेषता यह है कि नैरयिक की स्थिति और संवेध में 'सागरोपम' जानना, इसी प्रकार यावत् छठी नरक पर्यंत। जिस नरक में जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति जितने काल की हो, उस स्थिति को उसी क्रम से चार गुणी करनी चाहिये। जैसे-वालुकाप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है। उसे चार गुणा करने से अट्ठाईस सागरोपम होती है। इसी प्रकार पंकप्रभा में चालीस सागरोपम, धूमप्रभा में अड़सठ सागरोपम और तमःप्रभा में ८८ सागरोपम की स्थिति होती है। संहनन के विषय में वालुकाप्रभा में वज्रऋषभनाराच से कीलिका तक पांच संहनन वाले जाते हैं। पंकप्रभा में प्रथम के चार संहनन वाले, धूमप्रभा में प्रथम के तीन संहनन वाले और तमःप्रभा में प्रथम के दो संहनन वाले नैरयिकपने उत्पन्न होते हैं। शेष सब पूर्ववत्।

७६ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउय० जाव तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं

भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

७६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-७६ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच सातवीं नरक पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

७६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

७७ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

७७ उत्तर-एवं जहेव रयणप्पभाए णव गमगा लद्धी वि सच्चेव। णवरं वयरोसभणारायसंघयणी । इत्थीवेयगा ण उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव 'अणुबंधो' त्ति । संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा १ ।

भावार्थ-७७ प्रश्न-हे भगवन् ! एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

७७ उत्तर-हे गौतम ! रत्नप्रभा के समान इसके भी नौ गमक और सम्पूर्ण वक्तव्यता जानो । विशेष यह है कि वहां वज्रऋषभनाराच संहनन वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच जीव ही उत्पन्न होता है । स्त्रीवेद वाले जीव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वहां उत्पन्न नहीं होते, शेष सब यावत् अनुबन्ध तक पूर्वोक्त प्रकार से जानना चाहिये। संवेध जघन्य भव की अपेक्षा तीन भव और उत्कृष्ट सात भव तथा काल की अपेक्षा जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है १।

७८-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो० सच्चेव वत्तव्वया जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं० कालादेसो वि तहेव जाव चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाई, एवइयं जाव करेज्जा २।

भावार्थ-७८ प्रश्न-हे भगवन् ! वह संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय जीव, सातवीं नरक में जघन्य स्थिति के नैरयिकों में कितने काल की स्थिति वाला होता है ?

७८ उत्तर-हे गौतम ! भवादेश तक पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार, जघन्य कालादेश भी उसी प्रकार यावत् चार पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है २।

७९-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो० सच्चेव लद्धी जाव 'अणुबंधो' त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ३।

७९-उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, इत्यादि वक्तव्यता यावत् अनुबन्ध तक पूर्ववत्। भव की अपेक्षा जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट पांच भव तथा काल की अपेक्षा जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम काल तक यावत् गमनागमन करता है ३।

८०-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ० सच्चेव रयणप्पभापुढविजहण्णकालट्ठिईयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव 'भवादेसो' त्ति, णवरं पढमसंघयणं, णो इत्थिवेयगा। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ४।

८०-जघन्य स्थिति वाला वह संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच, सातवीं नरक पृथ्वी में नैरयिकपने उत्पन्न हो, इस विषयक सारी वक्तव्यता रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले जघन्य स्थिति वाले संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के समान यावत् भवादेश पर्यन्त। विशेष यह कि सातवीं नरक पृथ्वी में उत्पन्न होने वाला प्रथम संहननी होता है, वह स्त्रीवेदी नहीं होता। भव की अपेक्षा जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट सात भव तथा काल की अपेक्षा जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ६६ सागरोपम काल तक यावत् गमनागमन करता है।

८१-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो० एवं सो चेव चउत्थो गमओ णिरवसेसो भाणियव्वो जाव 'कालादेसो' त्ति ५।

८१-जघन्य स्थिति वाला संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, सातवीं नरक में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो चौथा गमक यावत् कालादेश तक सम्पूर्ण जानना चाहिये । ५ ।

८२-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो० सच्चेव लद्धी जाव 'अणुबंधो' त्ति । भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं जाव करेज्जा ६ ।

भावार्थ-८२ जघन्य स्थिति वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, सातवीं नरक में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, इस विषय में यावत् अनुबन्ध तक पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये । भव की अपेक्षा जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट पांच भव तथा काल की अपेक्षा जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन अन्तर्मुहूर्त अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है । ६ ।

८३-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-८३-उत्कृष्ट स्थिति वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, सातवीं नरक में उत्पन्न हो, तो वह जघन्य बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

८४-ते णं भंते !० अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमगवत्तव्वया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भाणियव्वा जाव 'भवादेसो' त्ति। णवरं ठिई अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं जाव करेज्जा ७।

भावार्थ-८४-वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि सम्पूर्ण वक्तव्यता सातवीं नरक पृथ्वी के प्रथम गमक के समान यावत् भवादेश पर्यंत। विशेष में स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि, शेष सब पूर्ववत्। संवेध, काल से जघन्य दो पूर्वकोटि अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। ७।

८५-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो० सच्चेव लद्धी संवेहो वि तहेव सत्तमगमगसरिसो ८।

भावार्थ-८५-उत्कृष्ट स्थिति वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, सातवीं नरक में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये। संवेध सातवें गमक के समान है। ८।

८६-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो० एस चेव लद्धी जाव 'अणुबंधो' त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं सेवेज्जा जाव करेज्जा ९।

८६-उत्कृष्ट स्थिति वाला संज्ञो पंचेन्द्रिय तिर्यंच, सातवीं नरक में उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिक में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त वक्तव्यता यावत् अनुबन्ध पर्यंत। संवेध, भव से जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट पांच भव तथा काल से जघन्य दो पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ९।

विवेचन-परिमाण, संहनन आदि की प्राप्ति जो रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होने वाले नैरयिक की कही गई है, वह शर्कराप्रभा के विषय में भी जाननी चाहिये। शर्कराप्रभा में संज्ञी जीव की अपेक्षा जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक एक सागरोपम और उत्कृष्ट स्थिति बारह सागरोपम कही गई है। क्योंकि शर्कराप्रभा में उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम की है। उसे चार से गुणा करने पर बारह सागरोपम होती है। इसी प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच के चार भवों में चार पूर्वकोटि होती है।

रत्नप्रभा में जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम की है। शर्कराप्रभा आदि नरक पृथ्वियों में क्रमशः तीन, सात, दस, सतरह, बाईस और तेतीस सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति है। पूर्व-पूर्व की नरक पृथ्वियों में जो उत्कृष्ट स्थिति होती है, वही आगे-आगे की नरक पृथ्वियों में जघन्य स्थिति होती है। अतः शर्कराप्रभा आदि में स्थिति और संवेध के विषय में सागरोपम कहना चाहिये। छठी नरक पृथ्वी तक नव ही गमकों का कथन रत्नप्रभा के गमकों के तुल्य है। जिस नरक की जितनी उत्कृष्ट स्थिति है, उत्कृष्ट कायसंवेध उससे चार गुणा है। जैसे तीसरी वालुकाप्रभा नरक की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम है उसे चार से गुणा करने पर अट्ठाईस सागरोपम से उत्कृष्ट कायसंवेध होता है। इसी प्रकार आगे-आगे की नरक पृथ्वियों में भी समझना चाहिये।

पहली और दूसरी नरक में छहों संहनन वाले जीव जाते हैं। फिर आगे-आगे की नरकों में एक-एक संहनन कम होता जाता है। अतः तीसरी में पांच संहनन वाले, चौथी में चार संहनन वाले, पाँचवीं में तीन संहनन वाले, छठी में दो संहनन वाले और सातवीं में केवल वज्रऋषभनाराच संहनन वाले ही जाते हैं। सातवीं नरक में स्त्रीवेदी जीव नहीं जाते, क्योंकि स्त्रीवेदी जीवों की उत्पत्ति छठी नरक तक ही होती है।

सातवीं नरक में जघन्य तीन भव कहे गये हैं अर्थात् दो जलचर मत्स्य के भव और एक नरक भव, इस प्रकार जघन्य तीन भव होते हैं और उत्कृष्ट चार मत्स्य भव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और तीन नरक भव, इस प्रकार सात होते हैं।

कालादेश से यहां दो अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस सागरोपम कहा गया है, सो सातवीं पृथ्वी के नरक भव सम्बन्धी जघन्य स्थिति के बाईस सागरोपम समझने चाहिये और प्रथम तथा तृतीय मत्स्य भव सम्बन्धी दो अन्तर्मुहूर्त समझने चाहिये।

सातवीं पृथ्वी में बाईस सागरोपम का स्थिति से तीन बार उत्पन्न होता है। इसलिये ६६ सागरोपम की स्थिति कही गई है। नारक भवान्तरित चार मत्स्य भव होते हैं। उनको अपेक्षा चार पूर्वकोटि कही गई है। इससे यह फलितार्थ होता है कि सातवीं नरक पृथ्वी में जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में ही उत्कृष्ट तीन बार उत्पन्न होता है, यदि ऐसा न हो, तो ऊपर कहा हुआ काल परिमाण घटित नहीं हो सकता। यहां उत्कृष्ट काल की विवक्षा की गई है, इसलिये जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में तीन बार उत्पन्न होने का कथन किया गया है और चार मत्स्य भवों की अपेक्षा चार पूर्वकोटि का कथन किया गया है। उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में दो बार ही उत्पत्ति होती है। उस अपेक्षा से ६६ सागरोपम का कथन किया गया है और तीन मत्स्य भवों की अपेक्षा तीन पूर्वकोटि का कथन किया गया है। यह पहला गमक है। जघन्य काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने का दूसरा गमक है। उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने सम्बन्धी तीसरा गमक है। इसमें उत्कृष्ट पांच भव ग्रहण का कथन किया गया है। जिनमें तीन मत्स्य भव और दो नारक भव समझने चाहिये। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सातवीं नरक में मध्यम और उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में दो ही बार उत्पन्न होता है।

जघन्य स्थिति वाला संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने सम्बन्धी चौथा गमक है। इसकी वक्तव्यता रत्नप्रभा के चौथे गमक के समान है। अन्तर केवल इतना है कि रत्नप्रभा में छह संहनन और तीन वेद कहे गये हैं, किन्तु सातवीं नरक के चौथे गमक में केवल एक वज्रऋषभनाराच संहनन का कथन करना चाहिये और स्त्रीवेद का निषेध करना चाहिये। शेष गमकों का कथन स्पष्ट ही है।

मनुष्यों का नरकोपपात

८७ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणुस्सेहिंतो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति, असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?

८७ उत्तर-गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो असण्णीमणुस्सेहिंतो उववज्जंति।

भावार्थ-८७ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह नैरयिक, मनुष्यों से आता है, तो संज्ञी मनुष्यों से आता है या असंज्ञी मनुष्यों से ?

८७ उत्तर-हे गौतम ! वह संज्ञी मनुष्यों से आता है, असंज्ञी मनुष्यों से नहीं।

८८ प्रश्न-जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असंखेज्ज० जाव उववज्जंति ?

८८ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति।

भावार्थ-८८ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह संज्ञी मनुष्यों से आता है, तो संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आता है या असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से ?

८८ उत्तर-हे गौतम ! वह संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आता है, असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से नहीं।

८९ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ?

८९ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, णो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-८९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आता है, तो क्या पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आता है या अपर्याप्त से ?

८९ उत्तर-हे गौतम ! वह पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आता है, अपर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से नहीं।

९० प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! कइसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?

९० उत्तर-गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा-रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए।

भावार्थ-९० प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला पर्याप्त संज्ञी मनुष्य, नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितनी नरक पृथ्वियों में उत्पन्न होता है ?

९० उत्तर-हे गौतम ! वह सातों ही नरक पृथ्वियों में उत्पन्न होता है। यथा-रत्नप्रभा यावत् अधःसप्तम नरक-पृथ्वी में।

९१ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकालट्ठिइएसु उववज्जेज्जा ?

९१ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा।

भावार्थ-९१ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला पर्याप्त संज्ञी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्य, रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

९१ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष की स्थिति वाले और उत्कृष्ट एक सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है।

९२ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

९२ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । संघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहुत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । एवं सेसं जहा सण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं जाव 'भवादेसो' त्ति । णवरं चत्तारि णाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । छ समुग्घाया केवलिवज्जा । ठिई अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं जाव करेज्जा १ ।

भावार्थ-९२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे संख्येय-वर्षायुष्क पर्याप्त संज्ञी मनुष्य एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

९२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं । वे छहों संहनन वाले होते हैं । शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुलपृथक्त्व (दो अंगुल से नौ अंगुल तक) और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष की होती है । शेष सब संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक जीव के समान यावत् भवा-देश तक । विशेषता यह कि मनुष्यों के चार ज्ञान और तीन अज्ञान विकल्प से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

होते हैं। केवलिसमुद्घात को छोड़ कर शेष छह समुदघात होती है। स्थिति और अनुबन्ध जघन्य मास-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि। शेष सब पूर्ववत्। संवेध-काल की अपेक्षा जघन्य मास-पृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है १।

९३-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ-एवइयं० २।

९३-यदि वह मनुष्य जघन्य काल की स्थिति वाले रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो पूर्ववत्। विशेषता यह कि काल की अपेक्षा जघन्य मास-पृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चालीस हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है २।

९४-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं जाव करेज्जा ३।

९४-यदि वह मनुष्य, उत्कृष्ट स्थिति वाले रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो उसके लिए पूर्वोक्त सभी वर्णन जानना चाहिए। विशेषता यह कि काल से मास-पृथक्त्व अधिक एक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ३।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

९५-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ-एस चेव वत्तव्वया। णवरं इमाइं पंच णाणत्ताइं-१ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंगुलपुहुत्तं, २ तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए, ३ पंच समुग्घाया आदिल्ला, ४ ठिई ५ अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहुत्तं, उक्कोसेण वि मासपुहुत्तं, सेसं तं चेव, जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहुत्त-मब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहुत्तेहिं अब्भ-हियाइं-एवइयं जाव करेज्जा ४।

भावार्थ-९५-यदि वह मनुष्य स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो और रत्नप्रभा के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त जानना चाहिए। विशेषता यह कि १-शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुलपृथक्त्व और उत्कृष्ट भी अंगुल-पृथक्त्व होती है, २-तीन ज्ञान और तीन अज्ञान विकल्प से होते हैं, ३-प्रथम की पांच समुद्घात होती हैं, ४-५ स्थिति और अनुबन्ध जघन्य मासपृथक्त्व और उत्कृष्ट भी मासपृथक्त्व होता है। शेष भवादेश तक पूर्ववत् जानना चाहिए। काल की अपेक्षा जघन्य मासपृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार मासपृथक्त्व अधिक चार सागरोपम काल तक यावत् गमनागमन करता है।४।

९६-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा णेयव्वा। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दसवास-सहस्साइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं मासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइयं जाव करेज्जा ५।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१६ यदि वह जघन्य स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त चौथे गमक के समान। विशेषता यह कि काल की अपेक्षा जघन्य मासपृथक्त्व अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार मासपृथक्त्व अधिक चालीस हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है ।५।

१७-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव गमगो। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइयं जाव करेज्जा ६।

भावार्थ-१७-यदि वह जघन्य स्थिति वाला मनुष्य उत्कृष्ट स्थिति वाले रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त गमकानुसार। विशेषता यह कि काल की अपेक्षा जघन्य मासपृथक्त्व अधिक एक सागरोपम और उत्कृष्ट चार मासपृथक्त्व अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ।६।

१८-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, सो चेव पढमगमओ णेयव्वो। णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं, ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं काल जाव करेज्जा ७।

भावार्थ-१८-यदि वह मनुष्य स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो और रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो इसके विषय में प्रथम गमक के समान। विशेषता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यह है कि शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष की होती है। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष की होती है और इसी प्रकार अनुबन्ध भी होता है। काल से जघन्य पूर्वकोटि अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागन करता है ७।

९९-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो,स च्चेव सत्तमगमग-वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वास-सहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ-एवइयं कालं जाव करेज्जा ८।

९९-वह उत्कृष्ट स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो सातवें गमक के अनुसार। विशेषता में काल से जघन्य दस हजार वर्ष अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट चालीस हजार वर्ष अधिक चार पूर्वकोटि तक यावत् गमनागमन करता है ८।

१००-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, स च्चेव सत्तम-गमगवत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं एगं सागरोवमं पुव्व-कोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं कालं जाव करेज्जा ९।

१००-वह उत्कृष्ट स्थिति वाला मनुष्य उत्कृष्ट स्थिति वाले रत्नप्रभा नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त सातवें गमक वक्तव्यतावत्। विशेषता यह है कि काल से जघन्य पूर्वकोटि अधिक एक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्व-कोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ९।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन-संज्ञी मनुष्य सदा संख्यात ही होते हैं, इसलिये उत्कृष्ट रूप से उनकी उत्पत्ति संख्यात ही होती है। नरक में उत्पन्न होने वाले गर्भज मनुष्य में चार ज्ञान, तीन अज्ञान भजना से कहे गये हैं। इस विषय में चूर्णिकार का कथन यह है-'**ओहिणाणमणपज्जव आहारयसरीराणिलद्धूणं परिसाडित्ता उववज्जंति**' अर्थात् जो मनुष्य अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान और आहारक शरीर प्राप्त करके बाद में वहां से गिर कर नरक में उत्पन्न होता है (यहां मनःपर्यव ज्ञान और आहारक शरीर उसकी पूर्व अवस्था की अपेक्षा समझना चाहिये अवधिज्ञान को तो साथ में लेकर तीसरी नरक तक उत्पन्न हो सकता है) उस मनुष्य में चार ज्ञान और तीन अज्ञान विकल्प से लिये गये हैं।

दो मास से कम की आयुष्य वाला मनुष्य नरक गति में नहीं जाता, इसलिये नरक गति में जाने वाले मनुष्य का जघन्य आयुष्य मास पृथक्त्व होता है।

मनुष्य हो कर यदि नरक गति में उत्पन्न हो, तो एक नरक पृथ्वी में चार बार ही उत्पन्न होता है, उसके पश्चात् वह अवश्य तिर्यंच होता है। इसलिये मनुष्य-भव सम्बन्धी चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम संवेध काल कहा गया है।

जघन्य स्थिति वाले मनुष्य के नरक में उत्पन्न होने सम्बन्धी चौथे गमक में पांच नानात्व बतलाये गये हैं। प्रथम गमक में अवगाहना जघन्य अंगुल-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष बतलाई गई है। यहां जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल-पृथक्त्व होती है। प्रथम गमक में चार ज्ञान और तीन अज्ञान भजना से बतलाये गये हैं और यहां तीन ज्ञान और तीन अज्ञान भजना से बतलाये गये हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाले मनुष्य में इन्हीं का सद्भाव होता है। प्रथम गमक में छह समुद्घात बतलाई गई है और यहां पांच बतलाई गई हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाले मनुष्य के आहारक समुद्घात नहीं पाई जाती। प्रथम गमक में स्थिति और अनुबन्ध जघन्य मास-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि बतलाया गया है और यहां जघन्य और उत्कृष्ट मास-पृथक्त्व ही बतलाया गया है। शेष गमकों का कथन स्पष्ट है।

१०१ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइएसु जाव उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० जाव उववज्जेज्जा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१०१ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-१०१ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्येय वर्षायुष्क पर्याप्त संज्ञी मनुष्य, शर्कराप्रभा में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति के नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

१०१ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक सागरोपम और उत्कृष्ट तीन सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ।

१०२ प्रश्न-ते णं भंते !०

१०२ उत्तर-सो चेव रयणप्पभापुढविगमओ णेयव्वो । णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहुत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । ठिई जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो वि । सेसं तं चेव, जाव 'भवादेसो' त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं, वासपुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं जाव करेज्जा । एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी । णाणत्तं-णेरइयट्ठिई कालादेसेणं संवेहं च जाणेज्जा १-२-३ ।

भावार्थ-१०२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

१०२ उत्तर-हे गौतम ! रत्नप्रभा नैरयिकों में वर्णित गमक जानो । विशेषता यह कि शरीर की अवगाहना जघन्य रत्नि-पृथक्त्व (दो हाथ से नौ हाथ तक) और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष होती है । स्थिति जघन्य वर्षपृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष, इसी प्रकार अनुबन्ध भी । शेष सब पूर्ववत्, यावत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भवादेश पर्यन्त। काल से जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक एक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक बारह सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। इस प्रकार औधिक के तीनों गमकों में (औधिक का औधिक में उत्पन्न होना, औधिक का जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होना और औधिक का उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होना) मनुष्य की वक्तव्यता के समान लब्धि कह देनी चाहिए। संवेध नैरयिक की स्थिति और कालादेश से कहना चाहिए १-२-३।

१०३-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी। णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहुत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहुत्तं, ठिई जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहुत्तं, एवं अणुबंधो वि। सेसं जहा ओहियाणं। संवेहो सव्वो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-५-६।

भावार्थ-१०३-वह जघन्य स्थिति का संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त मनुष्य, शर्कराप्रभा में उत्पन्न हो, तो तीनों गमकों में पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये, विशेषता यह है कि उसके शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट रत्निपृथक्त्व होती है। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट वर्ष-पृथक्त्व। इसी प्रकार अनुबन्ध भी होता है। शेष सब औधिक गमक के समान और संवेध भी उपयोगपूर्वक जानना चाहिये ४-५-६।

१०४-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ। तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं णाणत्तं-सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं, ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वि पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो वि । सेसं जहा पढमगमए । णवरं णेरइयठिई य कायसंवेहं च जाणेज्जा ७-८-९ । एवं जाव छट्ठपुढवी । णवरं तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायइ जहेव तिरिक्खजोणियाणं । कालादेसो वि तहेव, णवरं मणुस्सट्ठिई भाणियव्वा ।

भावार्थ-१०४-यदि वह मनुष्य स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो और शर्कराप्रभा में उत्पन्न हो, तो तीनों गमकों में विशेषता इस प्रकार है-शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष तथा स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि होती है, इसी प्रकार अनुबन्ध भी । शेष सब प्रथम गमक के समान । विशेषता यह है कि नैरयिक की स्थिति और काय-संवेध तदनुकूल जानना चाहिये (७-८-९)। इसी प्रकार यावत् छठी नरक पर्यन्त जानना चाहिये। विशेषता यह है कि तीसरी नरक से ले कर आगे तिर्यंच-योनिक के समान एक-एक संहनन कम होता है। कालादेश भी उसी प्रकार, परंतु स्थिति मनुष्य की कहनी चाहिये।

विवेचन-दो रत्नि (हाथ) से कम की अवगाहना वाले और दो वर्ष की आयुष्य से कम आयुष्य वाले मनुष्य, दूसरी शर्कराप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न नहीं होते । यहाँ पर जघन्य गमों में भी मनःपर्याय ज्ञान लिया है । इससे यह ध्वनित होता है कि दूसरी आदि नरक पृथ्वियों में जाने वाले में जघन्य आयुष्य भी चारित्र प्रायोग्य नव वर्ष के लगभग समझना चाहिए ।

पहले, दूसरे और तीसरे गमक में जो नानात्व कथन किया है, उनमें से प्रथम गमक में जो स्थिति आदि का निर्देश मूल पाठ में कर ही दिया गया है । दूसरे गमक में औधिक मनुष्य की जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पत्ति का कथन किया गया है । वहाँ नैरयिक की स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट एक सागरोपम जाननी चाहिये । काल की अपेक्षा संवेध-जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम होता है । तीसरे गमक में भी इसी प्रकार समझना चाहिये, किन्तु जघन्य तीन सागरोपम और उत्कृष्ट बारह सागरोपम है ।

जघन्य स्थिति वाले मनुष्य का औधिक नरक में उत्प[illegible], इस चौथे गमक में संवेध काल की अपेक्षा वर्ष-पृथक्त्व अधिक एक सागरोपम [illegible] चार वर्षपृथक्त्व

अधिक बारह सागरोपम होता है। जघन्य स्थिति वाले मनुष्य का जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होने रूप पाँचवें गमक में काय-संवेध---काल की अपेक्षा जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक एक सागरोपम और उत्कृष्ट चार वर्ष पृथक्त्व अधिक चार सागरोपम होता है। इसी प्रकार छठा गमक भी उपयोग पूर्वक जानना चाहिये।

सातवें, आठवें और नौवें गमक में शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पाँच सौ धनुष की है। इसी प्रकार दूसरे नानात्व भी समझ लेना चाहिये। तिर्यंच की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की कही गई थी, किन्तु मनुष्य गमकों में मनुष्य स्थिति का कथन करना चाहिये। शर्कराप्रभा आदि नरकों में जाने वाले मनुष्यों की स्थिति जघन्य वर्ष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की होती है।

१०५ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवि णेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

१०५ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा।

भावार्थ-१०५ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्येय वर्षायुष्क पर्याप्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय मनुष्य, जो अधःसप्तम पृथ्वी में नैरयिकपने उत्पन्न होने के योग्य है, वह कितने काल की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है ?

१०५ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिकों में उत्पन्न होता है।

१०६ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ?

१०६ उत्तर-अवसेसो सो चेव सक्करप्पभापुढविगमओ णेयव्वो। णवरं पढमं संघयणं, इत्थिवेयगा ण उववज्जंति, सेसं तं चेव, जाव 'अणुबंधो' त्ति। भवादेसेणं दोभवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं जाव करेज्जा १ ।

भावार्थ-१०६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

१०६ उत्तर-हे गौतम ! इसकी सभी वक्तव्यता शर्कराप्रभा के नैरयिक के समान जाननी चाहिये, विशेषता यह है कि सातवीं नरक में प्रथम संहनन वाले ही उत्पन्न होते हैं और वहाँ स्त्रीवेदी उत्पन्न नहीं होते । शेष सब यावत् अनुबन्ध तक पूर्ववत् । भवादेश से दो भव और कालादेश से जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है १ ।

१०७-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव वत्तव्वया । णवरं णेरइयट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा २ ।

१०७-यदि वह मनुष्य जघन्य स्थिति वाले सप्तम नरक पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो भी पूर्वोक्त वर्णन जानना चाहिये, विशेष में नैरयिक की स्थिति और संवेध स्वयं जानना चाहिये २ ।

१०८-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव वत्तव्वया, णवरं संवेहं च जाणेज्जा ३ ।

१०८-यदि वह मनुष्य उत्कृष्ट स्थिति वाले सप्तम नरक पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो भी यही वक्तव्यता है । संवेध स्वयं जानना चाहिये ३ ।

१०९-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया । णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रयणिपुहुत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहुत्तं। ठिई जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहुत्तं, एवं अणुबंधो वि । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-५-६ ।

१०९-यदि वह संज्ञी मनुष्य स्वयं जघन्य स्थिति वाला हो और अधःसप्तम पृथ्वी के नैरयिकों में उत्पन्न हो, तो तीनों गमकों में यही वक्तव्यता है। शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट रत्निपृथक्त्व होती है। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट वर्ष-पृथक्त्व होती है। इसी प्रकार अनुबन्ध भी होता है। संवेध का कथन उपयोगपूर्वक जानना चाहिये ४-५-६ ।

११०-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया । णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं । ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो वि । णवसु वि एएसु गमएसु णेरइयट्ठिई संवेहं च जाणेज्जा । सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोण्णि जाव णवमगमए । कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा ७-८-९ ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ चउवीसइमे सए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-११०-यदि वह संज्ञी मनुष्य स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो और अधःसप्तम नरक पृथ्वी में उत्पन्न हो, तो उसके तीनों गमकों में पूर्वोक्त वक्तव्यता कहनी चाहिये। शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष होती है। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि होती है। इसी प्रकार अनुबन्ध भी जानना चाहिये। उपर्युक्त नव ही गमकों में नैरयिक की स्थिति और संवेध विचार कर कहना चाहिये। सर्वत्र दो भव जानने चाहिये, यावत् नौवें गमक में काल की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ७-८-९।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-सातवीं नरक पृथ्वी के प्रथम गमक में काय-संवेध उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम कहा गया है, क्योंकि सातवीं नरक से निकला हुआ जीव, मनुष्य रूप से उत्पन्न नहीं होता। इसलिये प्रथम मनुष्य का भव और दूसरा सातवीं नरक का भव, इन दो भवों में काय-संवेध इतने काल का ही होता है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

॥ चौबीसवें शतक का प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

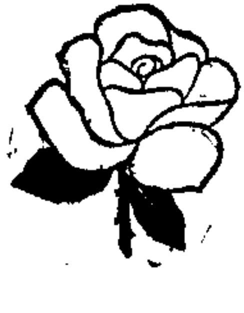

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक २

असुरकुमारों का उपपात

१ प्रश्न—रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि०, मणु०, देवेहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर—गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-जोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो देवेहिंतो उववज्जंति । एवं जहेव णेरइयउद्देसए, जाव—

भावार्थ—१ प्रश्न—राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा—'हे भगवन् ! असुरकुमार कहां से आते हैं ? क्या नैरयिकों से आते हैं, तिर्यंचों से, मनुष्यों से, अथवा देवों से आते हैं ?'

१ उत्तर—हे गौतम ! वे नैरयिकों से नहीं आते, तिर्यंच-योनिक और मनुष्यों से आते हैं । देवों से भी नहीं आते । इस प्रकार नैरयिक उद्देशक के समान, यावत्—

२ प्रश्न—पज्जत्तअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ।

३ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

३ उत्तर-एवं रयणप्पभागमगसरिसा णव वि गमा भाणियव्वा । णवरं जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ भवइ ताहे अज्झवसाणा पसत्था, णो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु । अवसेसं तं चेव ९ ।

कठिन शब्दार्थ-अज्झवसाणा-अध्यवसाय ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

३ उत्तर-हे गौतम ! यहां रत्नप्रभा पृथ्वी के गमकों के समान सभी-नव ही गमक कहने चाहिये । यदि वह स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तो तीनों गमकों में अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं, अप्रशस्त नहीं होते । शेष सब पूर्ववत् ।

विवेचन-यहां पर्याप्त असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव, जो असुरकुमारों में उत्पन्न होता है, उसकी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग बतलाई गई है । यह पल्योपम का असंख्यातवां भाग, पूर्वकोटि रूप समझना चाहिये, क्योंकि सम्मूर्च्छिम तिर्यंच का उत्कृष्ट आयुष्य पूर्वकोटि परिमाण होता है और वह अपने आयुष्य के समान ही उत्कृष्ट देव आयुष्य बांधता है, अधिक नहीं बांधता । चूर्णिकार ने भी यही कहा है । यथा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'उक्कोसेणं स तुल्लपुव्वकोडी आउयत्तं णिव्वत्तेइ ण य सम्मुच्छिमो पुव्वकोडीआउयत्ताओ परो अत्थि'।

अर्थात्—सम्मूर्च्छिम तिर्यंच का आयुष्य पूर्वकोटि से अधिक नहीं होता। इसलिये वह देव-भव में भी पूर्वकोटि परिमाण ही आयुष्य बांधता है, अधिक नहीं बांधता।

पर्याप्त असंज्ञी पचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक के चौथे, पांचवें और छठे गमक में अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं।

४ प्रश्न—जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसण्णि० जाव उववज्जंति असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति ?

४ उत्तर—गोयमा ! संखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति।

भावार्थ—४ प्रश्न—हे भगवन् ! यदि संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो क्या संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिकों से आता है या असंख्यात वर्ष की आयुष्य में से ?

४ उत्तर—हे गौतम ! संख्यात वर्ष और असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले दोनों प्रकार के तिर्यंचों से आता है।

५ प्रश्न—असंखेज्जवासाउय-सण्णि-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

५ उत्तर—गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच जीव, असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ।

६ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं-पुच्छा ।

६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । वयरोसभणारायसंघयणी । ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहुत्तं, उक्कोसेणं छ गाउयाइं । समचउरंससंठाणसंठिया पण्णत्ता । चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ । णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी । णो णाणी, अण्णाणी, णियमं दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य । जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । तिण्णि समुग्घाया आदिल्लगा । समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । वेयणा दुविहा वि-सायावेयगा वि असायावेयगा वि । वेदो दुविहो वि-इत्थिवेयगा वि पुरिसवेयगा वि, णो णपुंसगवेयगा । ठिई जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबंधो जहेव ठिई । कायसंवेहो भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं-एवइयं जाव करेज्जा १ ।

कठिन शब्दार्थ--साइरेगा--सातिरेक-कुछ अधिक ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं । वे वज्रऋषभनाराच संहनन वाले होते हैं । उनके शरीर की अवगाहना जघन्य धनुष पृथक्त्व और उत्कृष्ट छह गाऊ (कोस) की होती है । वे समचतुरस्र संस्थान वाले होते हैं । उनमें प्रथम की चार लेश्याएँ होती हैं । वे सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होते, वे केवल मिथ्यादृष्टि ही होते हैं । वे ज्ञानी नहीं, अज्ञानी होते हैं । उनमें मतिअज्ञान और श्रुतअज्ञान-ये दो अज्ञान होते हैं । योग तीनों होते हैं । दो उपयोग, चार संज्ञा, चार कषाय, पांच इन्द्रियां और पहले की तीन समुद्घात होती हैं । वे समुद्घात करके भी मरते हैं और समुद्घात किये बिना भी मरते हैं । साता और असाता-दोनों प्रकार की वेदना होती है । वे पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी होते हैं, नपुंसकवेदी नहीं होते । स्थिति जघन्य सातिरेक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की होती है । अध्यवसाय प्रशस्त भी होते हैं और अप्रशस्त भी । स्थिति के तुल्य अनुबन्ध होता है । काय-संवेध भव की अपेक्षा दो भव और काल की अपेक्षा जघन्य सातिरेक पूर्वकोटि अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट छह पल्योपम तक यावत् गमनागमन करते हैं । १ ।

७-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो-एस चेव वत्तव्वया । णवरं असुरकुमारट्ठिई (इं) संवेहं च जाणेज्जा २ ।

भावार्थ-७-यदि असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, जघन्य काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त

वक्तव्यतानुसार, स्थिति और संवेध का विचार करना चाहिये ३।

८-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा-एस चेव वत्तव्वया। णवरं ठिई से जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं-एवइयं० सेसं तं चेव ३।

भावार्थ-८-यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है, इत्यादि पूर्वोक्त वर्णनवत्। स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम। काल से जघन्य और उत्कृष्ट छह पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है। शेष सब पूर्ववत् ३।

९-सो चेव-अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं साइरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा।

भावार्थ-९-यदि असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक जघन्य काल की स्थिति वाला हो और असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो वह जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट सातिरेक पूर्वकोटि वर्ष आयुष्य वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१० प्रश्न-ते णं भंते !०

१० उत्तर-अवसेसं तं चेव जाव 'भवादेसो' त्ति । णवरं ओगाहणा जहण्णेणं धणुहपुहुत्तं, उक्कोसेणं साइरेगं धणुसहस्सं। ठिई जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि साइरेगा पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं साइरेगाओ दो पुव्वकोडीओ-एवइयं० ४।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! वे एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

१० उत्तर-हे गौतम ! भवादेश तक पूर्ववत्। अवगाहना जघन्य धनुष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट सातिरेक एक हजार धनुष, स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट सातिरेक पूर्वकोटि, काल से जघन्य सातिरेक पूर्वकोटि अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट सातिरेक दो पूर्वकोटि तक यावत् गमनागमन करता है ४।

११-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया। णवरं असुरकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ५।

भावार्थ-११-यदि वह जघन्य काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त वर्णनानुसार। असुरकुमारों की स्थिति और संवेध विचार कर कहना चाहिये ५।

१२-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं साइरेग-पुव्वकोडीआउएसु, उक्कोसेण वि साइरेगपुव्वकोडीआउएसु उव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वज्जेज्जा, सेसं तं चेव । णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि साइरेगाओ दो पुव्वकोडीओ-एवइयं काल सेवेज्जा ६ ।

भावार्थ-१२ यदि वह जीव उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट सातिरेक पूर्वकोटि वर्ष की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है । शेष पूर्ववत् । काल की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट सातिरेक दो पूर्वकोटि वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है ६ ।

१३-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, सो चेव पढम-गमगो भाणियव्वो । णवरं ठिई जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेणं वि तिण्णि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि । कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं-एवइयं० ७ ।

भावार्थ-१३ यदि वह स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो और असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो उसके लिये वही प्रथम गमक कहना चाहिये, स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम का होता है । काल से जघन्य दस हजार वर्ष अधिक तीन पल्योपम और उत्कृष्ट छह पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है ७ ।

१४-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया । णवरं असुरकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणिज्जा ८ ।

भावार्थ-१४ यदि वह उत्कृष्ट स्थिति वाला पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, जघन्य काल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो उसके लिये भी पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये। यहां असुरकुमारों की स्थिति और संवेध का कथन विचार पूर्वक जानना चाहिये ८।

१५—सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं तिपलिओवम०, उक्कोसेण वि तिपलिओवम० एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं—एवइयं० ९।

भावार्थ—१५ यदि वह उत्कृष्ट स्थिति वाला पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, उत्कृष्ट स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो वह जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है, इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यता। काल से जघन्य और उत्कृष्ट छह पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है ९।

विवेचन—असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच के गमकों में जो उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की बतलाई गई है, वह देवकुरु आदि के युगलिक तिर्यञ्चों की अपेक्षा समझनी चाहिये। क्योंकि वे तीन पल्योपम रूप असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले होते हैं और उत्कृष्ट अपनी आयु के समान ही देव आयु का बन्ध करते हैं। वे उत्कृष्ट संख्याता उत्पन्न होते हैं, क्योंकि असंख्यातवर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच, मनुष्य-क्षेत्रवर्ती ही होने से सदा संख्यात ही होते हैं, असंख्यात कभी नहीं होते। उनमें एक वज्रऋषभनाराच संहनन ही पाया जाता है। अवगाहना में जो धनुष-पृथक्त्व अवगाहना कही गई है, वह पक्षियों की अपेक्षा समझनी चाहिये। उनका आयु पल्योपम के असंख्यातवें भाग परिमाण होने से वे असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले होते हैं। उत्कृष्ट अवगाहना जो छह गाऊ की बतलाई गई है, वह देवकुरु आदि में उत्पन्न हाथी आदि की अपेक्षा समझनी चाहिये। असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले नपुंसक वेदी नहीं होते, वे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी ही होते हैं। उत्कृष्ट छह पल्योपम की स्थिति बतलाई गई है, वह तीन पल्योपम तो तिर्यंच भव सम्बन्धी और तीन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पल्योपम असुरकुमार भव सम्बन्धी समझनी चाहिये। जीव, देवभव से निकल कर फिर असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले जीवों में उत्पन्न नहीं होते। जघन्य स्थिति रूप चौथा गमक है। उसमें जघन्य स्थिति सातिरेक पूर्वकोटि होती है-ऐसा पक्षी आदि के लिए समझना चाहिये। उत्कृष्ट स्थिति सातिरेक पूर्वकोटि जो बतलाई गई है, उसका आशय यह है कि असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले पक्षी आदि की स्थिति सातिरेक पूर्वकोटि होती है और वह उत्कृष्ट अपनी आयु के बराबर ही देव आयु का बन्ध करता है। उत्कृष्ट अवगाहना सातिरेक एक हजार धनुष की बतलाई गई है, वह सातवें कुलकर (नाभि) या उससे पहले होने वाले हस्ती आदि की अपेक्षा समझनी चाहिये। क्योंकि यहाँ जघन्य स्थिति वाले असंख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच का प्रकरण चल रहा है। उसकी आयु सातिरेक पूर्वकोटि होती है। इस प्रकार का हस्ती आदि सातवें कुलकर या उससे पहले ही पाया जाता है। सातवें कुलकर की अवगाहना तो पाँच सौ पच्चीस धनुष होती है और उनसे पहले होने वाले कुलकरों की अवगाहना उनसे अधिक होती है और उनके समय में होने वाले हस्ती आदि की अवगाहना उनसे दुगुनी होती है। अतः सातवें कुलकर या उससे पहले होने वाले असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले हस्ती आदि में ही उपर्युक्त अवगाहना-प्रमाण पाया जाता है।

चौथे गमक में जो सातिरेक दो पूर्वकोटि की स्थिति बतलाई गई है, उसमें एक सातिरेक पूर्वकोटि तो तिर्यंच भव सम्बन्धी समझनी चाहिये और एक सातिरेक पूर्वकोटि असुरकुमार भव सम्बन्धी समझनी चाहिये। असुरकुमारों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की होती है और उनका संवेध सातिरेक पूर्वकोटि सहित दस हजार वर्ष होता है। शेष गमक स्वतः स्पष्ट ही हैं।

१६ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० जाव उववज्जंति किं जलचर०, एवं जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

१६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

साइरेगसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि असुरकुमार, संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों से आते हैं, तो क्या जलचरों से आते हैं, इत्यादि यावत् हे भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, जो असुरकुमारों में उत्पन्न होता है, वह कितने काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट सातिरेक एक सागरोपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ।

१७ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ?

१७ उत्तर-एवं एएसिं रयणप्पभापुढविगमगसरिसा णव गमगा णेयव्वा । णवरं जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठिइओ भवइ, ताहे तिसु वि गमएसु इमं णाणत्तं-चत्तारि लेस्साओ, अज्झवसाणा पसत्था, णो अप्पसत्था, सेसं तं चेव । संवेहो साइरेगेण सागरोवमेण कायव्वो ९ ।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! वे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के विषय में वर्णित नौ गमकों के समान जानना चाहिये । जब वह स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला होता है, तब तीनों ही गमकों (४-५-६) में यह भेद है । इनमें लेश्या चार होती हैं । अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं, अप्रशस्त नहीं होते । शेष सब पूर्ववत् । संवेध-सातिरेक सागरोपम से कहना चाहिये । ९ ।

विवेचन-'उत्कृष्ट सातिरेक सागरोपम स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है'-यह कथन बलीन्द्रनिकाय की अपेक्षा समझना चाहिये ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जघन्य काल की स्थिति वाले रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होने योग्य तिर्यंचों के चौथे, पाँचवें और छठे गमक में कृष्ण, नील, कापोत-ये तीन लेश्याएँ कही गई हैं, किन्तु यहां चार कही गई हैं। क्योंकि असुरकुमारों में तेजोलेश्या वाले जीव भी उत्पन्न होते हैं। रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होने वाले, जघन्य स्थिति के तिर्यंचों के अध्यवसाय स्थान अप्रशस्त कहे गये हैं, किन्तु यहां असुरकुमारों में प्रशस्त होते हैं। दीर्घ स्थिति वालों में तो प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों अध्यवसाय स्थान होते हैं, किन्तु जघन्य स्थिति वालों में अप्रशस्त नहीं पाये जाते, क्योंकि काल अल्प है। रत्नप्रभा पृथ्वी के गमकों में संवेध एक सागरोपम से बतलाया गया है, किन्तु यहां असुरकुमार गमकों में सातिरेक सागरोपम बतलाया गया है। यह भी बलीन्द्र निकाय की अपेक्षा समझना चाहिये।

१८ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणुस्सेहिंतो० असण्णिमणुस्सेहिंतो० ?

१८ उत्तर-गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो०, णो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे असुरकुमार, मनुष्यों से आते हैं, तो संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, या असंज्ञी मनुष्यों से ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! वे संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, असंज्ञी मनुष्यों से नहीं।

१९ प्रश्न-जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?

१९ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, तो क्या संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं या असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! वे संख्यात वर्ष और असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले-दोनों से आते हैं।

२० प्रश्न-असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

२० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा । एवं असंखेज्जवासाउयतिरिक्ख-जोणियसरिसा आदिल्ला तिण्णि गमगा णेयव्वा । णवरं सरीरोगाहणा पढमबिइएसु गमएसु जहण्णेणं साइरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, सेसं तं चेव । तईयगमे ओगाहणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं जहेव तिरिक्खजोणि-याणं ३ ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य जो असुरकुमारों में उत्पन्न होने के योग्य हैं, वे कितने काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होते हैं ?

२० उत्तर-हे गौतम ! वे जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच-योनिक जीवों के समान प्रथम के तीन गमकों के वर्णनवत् जानना चाहिये। पहले और दूसरे गमक में शरीर की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अवगाहना जघन्य सातिरेक पांच सौ धनुष और उत्कृष्ट तीन गाऊ की होती है, शेष सब पूर्ववत् । तीसरे गमक में अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट तीन गाऊ होती है, शेष सब तिर्यंच-योनिक के समान है (१-२-३) ।

२१-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालट्ठिइयतिक्खजोणियसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा । णवरं सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं साइरेगाइं पंचधणु-सयाइं, उक्कोसेण वि साइरेगाइं पंचधणुसयाइं, सेसं तं चेव ६ ।

भावार्थ-२१-यदि वह स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तो उसके लिये जघन्य काल की स्थिति वाले तिर्यंच-योनिक के तुल्य तीनों गमक जानना चाहिये । तीनों ही गमकों में शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट सातिरेक पांच सौ धनुष होती है । शेष सब पूर्ववत् (४-५-६)।

२२-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्लगा तिण्णि गमगा भाणियव्वा । णवरं सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, अवसेसं तं चेव ९ ।

भावार्थ-२२-यदि वह स्वयं उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला हो, तो उसके विषय में भी पूर्वोक्त अन्तिम तीन गमक जानने चाहिये । तीनों ही गमकों में शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट तीन गाऊ की होती है, शेष पूर्ववत् (७-८-९) ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२३ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ?

२३ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज०, णो अपज्जत्तसंखेज्ज० ।

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे असुरकुमार, संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, तो पर्याप्त या अपर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! वे पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, अपर्याप्त संज्ञी मनुष्यों से नहीं आते ।

२४ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

२४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं साइरेगसागरोवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी मनुष्य, असुरकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट सातिरेक सागरोपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होता है ।

२५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

२५ उत्तर-एवं जहेव एएसिं रयणप्पभाए उववज्जमाणाणं णव गमगा तहेव इह वि णव गमगा भाणियव्वा । णवरं संवेहो साइरेगेण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सागरोवमेण कायव्वो, सेसं तं चेव ९ ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए बीओ उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ–२५ प्रश्न–हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

२५ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के नव गमक कहे गये हैं, उसी प्रकार यहां भी है । संवेध सातिरेक सागरोपम, शेष पूर्ववत् (१ से ९) ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'–कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन–'तीन पल्योपम की स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होते हैं'–यह कथन देवकुरु आदि के युगलिक मनुष्यों की अपेक्षा समझना चाहिये, क्योंकि वे ही अपनी आयु के समान देवायु के उत्कृष्ट बन्धक होते हैं । शरीर अवगाहना के विषय में औधिक मनुष्य का औघिक असुरकुमारों में उत्पन्न होने सम्बन्धी प्रथम गमक है और औधिक मनुष्य का जघन्य स्थिति वाले असुरकुमारों में उत्पन्न होने सम्बन्धी दूसरा गमक है । इनमें से औधिक असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाला मनुष्य, जघन्य सातिरेक पांच सौ धनुष प्रमाण होता है । यह सातवें कुलकर या उससे पहले होने वाला युगलिक मनुष्य समझना चाहिये और उसकी उत्कृष्ट अवगाहना तीन गाऊ परिमाण होती है, जैसे कि देवकुरु आदि का युगलिक मनुष्य । यह प्रथम गमक में होता है । दूसरे गमक में भी इसी तरह दोनों प्रकार का होता है और तीसरे गमक में तो तीन गाऊ की अवगाहना वाला होता है । क्योंकि यही तीन पल्योपम रूप उत्कृष्ट स्थिति में उत्पन्न होता है और वह उत्कृष्ट अपनी आयुष्य के समान ही देवायु का बन्धक होता है ।

संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य के नव ही गमकों का कथन पूर्ववत् (रत्नप्रभावत्) जानना चाहिये ।

॥ चौबीसवें शतक का दूसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक ३

नागकुमारों में उपपात

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एवं वयासी–णागकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि० मणु० देवेहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर–गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणि०, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो देवेहिंतो उववज्जंति ।

भावार्थ–१ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा–हे भगवन् ! नागकुमार कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य या देव से आते हैं ?

१ उत्तर–हे गौतम ! वे नैरयिक से या देव से नहीं आते, किन्तु तिर्यंच या मनुष्य से आते हैं ।

२ प्रश्न–जइ तिरिक्ख० ?

२ उत्तर–एवं जहा–असुरकुमाराणं वत्तव्वया तहा एएसिं पि जाव 'असण्णित्ति' ।

भावार्थ–२ प्रश्न–यदि वे तिर्यंचों से आते हैं ?

२ उत्तर–सभी वर्णन असुरकुमारों के समान यावत् असंज्ञी पर्यन्त ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३ प्रश्न-जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो० किं संखेज्ज-वासाउय०, असंखेज्जवासाउय० ?

३ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं तो क्या संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं या असंख्यात वर्ष की ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वे संख्यात वर्ष और असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच-योनिक से आते हैं ।

४ प्रश्न-असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइकाल-ट्ठिई० ?

४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेणं देसूणदुपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ ४ प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीव, नागकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाला होता है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट देशोन दो पल्योपम की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न होता है ।

५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ उत्तर-अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं-एवइय जाव करेज्जा १।

भावार्थ- ५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि ?

५ उत्तर-असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंचों के समान यावत् भवादेश तक समग्र वर्णन जानना चाहिये। काल की अपेक्षा जघन्य सातिरेक पूर्वकोटि सहित दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट देशोन पाँच पल्योपम काल तक यावत् गमनागमन करता है १।

६-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया। णवरं णागकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा २।

भावार्थ-६-यदि वह जीव जघन्य काल की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न हो, तो इसी प्रकार उत्पन्न होता है। किन्तु यहां नागकुमारों की स्थिति और संवेध जानना चाहिये २।

७-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया। णवरं ठिई जहण्णेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, सेसं तं चेव जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं देसूणाइं चत्तारि पलिओवमाइं उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं-एवइयं कालं० ३।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-७-यदि वह जीव उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न हो, तो उसके लिये भी यही वक्तव्यता कहनी चाहिये। स्थिति जघन्य देशोन दो पल्योपम और उत्कृष्ट तीन पल्योपम। शेष पूर्ववत्, यावत् भवादेश तक। काल की अपेक्षा जघन्य देशोन चार पल्योपम और उत्कृष्ट देशोन पांच पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है। ३।

८-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकालट्ठिईयस्स तहेव णिरवसेसं ६।

भावार्थ-८-यदि वह जीव स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तो उसके भी तीनों गमकों में असुरकुमारों में उत्पन्न, जघन्य काल की स्थिति वाले असंख्यात वर्ष की आयुष्य के तिर्यंच के समान जानना चाहिये ४-५-६।

९-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स। णवरं णागकुमार-ट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा सेसं तं चेव ७-८-९।

भावार्थ-९-यदि वह स्वयं उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला हो, तो उसके विषय में भी असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच योनिक के समान तीनों गमक तथा स्थिति और संवेध नागकुमारों का, शेष पूर्ववत् ७-८-९।

१० प्रश्न-जइ संखेज्ज-वासाउय-सण्णि-पंचिंदिय० जाव किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, अपज्जत्तसंखेज्ज० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१० उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, णो अपज्जत्त-संखेज्जवासाउय० ।

भावार्थ-१०प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे नागकुमार, संख्यात वर्ष की आयुष्य के संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो वे पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयु वाले या अपर्याप्त संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं ?

१० उत्तर-हे गौतम ! वे पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, अपर्याप्त से नहीं ।

११ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउय० जाव जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

११ उत्तर-जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं । एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि णवसु वि गमएसु । णवरं णागकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तं चेव ९ ।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, नागकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट देशोन दो पल्योपम की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न होता है, इत्यादि असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान नव गमक जानने चाहिये । स्थिति और संवेध नागकुमारों के योग्य, शेष पूर्ववत् ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन-'उत्कृष्ट देशोन दो पल्योपम की स्थिति वालों में उत्पन्न होता है'-यह कथन उत्तर दिशा के नागकुमार निकाय की अपेक्षा से समझना चाहिये। क्योंकि उन्हीं में देशोन दो पल्योपम की उत्कृष्ट आयु होती है।

उत्कृष्ट संवेध पद में जो देशोन पांच पल्योपम कहे गये हैं, वे असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच सम्बन्धी तीन पल्योपम और नागकुमार सम्बन्धी देशोन दो पल्योपम, इस प्रकार देशोन पांच पल्योपम समझना चाहिये।

दूसरे गमक में नागकुमारों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष और संवेध काल की अपेक्षा जघन्य सातिरेक पूर्वकोटि सहित दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट तीन पल्योपम सहित दस हजार वर्ष समझना चाहिये। तीसरे गमक में देशोन दो पल्योपम की स्थिति वालों में उत्पत्ति समझनी चाहिये। स्थिति जघन्य देशोन दो पल्योपम जो कही है, वह अवसर्पिणी काल के सुषमा नामक दूसरे आरे का कुछ भाग बीत जाने पर असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंचों की अपेक्षा समझनी चाहिये, क्योंकि उन्हीं में इस प्रमाण की आयुष्य हो सकती है और वे ही अपनी उत्कृष्ट आयु के समान देवायु का बन्ध कर के उत्कृष्ट स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न होते हैं।

तीन पल्योपम की जो स्थिति कही गई है, वह देवकुरु आदि के असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंचों की अपेक्षा समझनी चाहिये। तीन पल्योपम की आयुष्य वाले भी नागकुमारों में देशोन दो पल्योपम की आयु बाँधते हैं, क्योंकि वे अपनी आयु के बराबर अथवा उससे कम आयु तो बांध लेते हैं, परन्तु अधिक देवायु नहीं बांधते।

१२ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणु०, असण्णिमणु० ?

१२ उत्तर-गोयमा ! सण्णिमणु०, णो असण्णिमणुस्सेहिंतो०, जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव-

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे (नागकुमार) मनुष्यों से आते हैं, तो संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, या असंज्ञी मनुष्यों से ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! वे संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, असंज्ञी मनुष्यों से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नहीं, इत्यादि, असुरकुमारों में उत्पन्न होने के योग्य मनुष्यों के समान जानना चाहिये। यावत्-

१३ प्रश्न-असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जइ ?

१३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं, एवं जहेव असंखेज्जवासाउयाणं तिरिक्ख-जोणियाणं णागकुमारेसु आदिल्ला तिण्णि गमगा तहेव इमस्स वि। णवरं पढमबिइएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं साइरेगाइं पंच-धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, तइयगमे ओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णिं गाउयाइं, सेसं तं चेव ३ ।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी मनुष्य, नागकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न होता है ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट देशोन दो पल्योपम की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न होता है। इस प्रकार असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंचों का नागकुमारों में उत्पन्न होने सम्बन्धी प्रथम के तीन गमक जानना चाहिये। परन्तु पहले और दूसरे गमक में शरीर की अवगाहना जघन्य सातिरेक पाँच सौ धनुष और उत्कृष्ट तीन गाऊ होती है। तीसरे गमक में अवगाहना जघन्य देशोन दो गाऊ और उत्कृष्ट तीन गाऊ की होती है, शेष पूर्ववत् (१-२-३)।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१४-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव णिरवसेसं ६ ।

भावार्थ-१४-यदि वह स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तो उसके भी तीनों गमकों में असुरकुमारों में उत्पन्न होने योग्य असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य के समान सम्पूर्ण वक्तव्यता जाननी चाहिये (४-५-६)।

१५-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठिइयस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, णवरं णागकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तं चेव ९ ।

भावार्थ-१५-यदि वह स्वयं उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला हो, तो तीनों गमकों में असुरकुमारों में उत्पन्न होने योग्य उत्कृष्ट काल की स्थिति और असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य के समान वक्तव्यता जाननी चाहिये। स्थिति और संवेध नागकुमारों के समान, शेष पूर्ववत् (७-८-९)

१६ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणु० किं पज्जत्तसंखेज्ज०, अपज्जत्तसंखेज्ज० ?

१६ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज०, णो अपज्जत्तसंखेज्ज० ।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, तो पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य या अपर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! वे पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मनुष्यों से आते हैं, अपर्याप्त संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्यों से नहीं आते।

१७ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए णागकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

१७ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठिइएसु उक्कोसेणं देसूणदोपलिओवमट्ठिइएसु उववज्जंति, एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी णिरवसेसा णवसु गमएसु, णवरं णागकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए तइओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-लद्धी-लब्धि प्राप्ति।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! पर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी मनुष्य, नागकुमारों में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले नागकुमारों में उत्पन्न होता है ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट देशोन दो पल्योपम की स्थिति के नागकुमारों में उत्पन्न होता है, इत्यादि असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले मनुष्य की वक्तव्यता के समान सभी गमकों में जानना चाहिये, किंतु स्थिति और संवेध नागकुमारों की जानना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-नागकुमारों में उत्पन्न होने सम्बन्धी वक्तव्यता प्रायः असुरकुमारों के

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

समान है। जहां जहां विशेषता है, वह मूल पाठ में बता दी गई है।

॥ चौवीसवें शतक का तीसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक ४-११

सुवर्णकुमारादि का उपपात

१-अवसेसा सुवण्णकुमाराइं जाव थणियकुमारा एए अट्ठ वि उद्देसगा जहेव णागकुमारा तहेव णिरवसेसा भाणियव्वा।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए चउत्थयाइ उद्देसा समत्ता ॥

भावार्थ-१ सुवर्णकुमार से ले कर स्तनितकुमार तक आठ भवनपति देवों के आठ उद्देशक, नागकुमारों के समान ही जानना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ चौबीसवें शतक के चार से ग्यारह उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक १२

पृथ्वीकायिक जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-पुढविक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख०, मणुस्से०, देवेहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि०, मणु०, देवेहिंतो वि उववज्जंति।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य या देव से आते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! वे नैरयिक से नहीं आते, किंतु तिर्यंच, मनुष्य और देव से आते हैं।

२ प्रश्न-जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो० किं एगिंदियतिरिक्ख-जोणिए० ?

२ उत्तर-एवं जहा वक्कंतीए उववाओ जाव-

प्रश्न-जइ बायरपुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तबादर० जाव उववज्जंति, अपज्जत्तबादरपुढवि० ?

उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तबादरपुढवि०, अपज्जत्तबादरपुढवि० जाव उववज्जंति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कठिन शब्दार्थ-वक्कंतीए-व्युत्क्रान्ति-उत्पन्न होने सम्बन्धी प्रज्ञापना सूत्र का पद ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि पृथ्वीकायिक जीव तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो क्या एकेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

२ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार प्रज्ञापना सूत्र के व्युत्क्रान्ति नामक छठे पद के अनुसार यावत्—

प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो पर्याप्त या अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक से आते हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! वे पर्याप्त और अपर्याप्त दोनों प्रकार के बादर पृथ्वीकायिकों में से आते हैं ।

३ प्रश्न-पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिइएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न हो, वह कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाला होता है ।

४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं-पुच्छा ।

४ उत्तर-गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति। छेवट्ठसंघयणी । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। मसूरचंदसंठिया। चत्तारि लेस्साओ। णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी। णो णाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा णियमं। णो मणजोगी, णो वइजोगी, कायजोगी। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। एगे फासिंदिए पण्णत्ते। तिण्णि समुग्घाया। वेयणा दुविहा। णो इत्थीवेयगा, णो पुरिसवेयगा, णपुंसगवेयगा। ठिईए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अज्झवसाणा पसत्था वि, अप्पसत्था वि। अणुबंधो जहा ठिई १।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वे प्रति समय निरन्तर असंख्यात उत्पन्न होते हैं। उनमें एक सेवार्त संहनन होता है। शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण होती है। संस्थान मसूरचन्द्र (मसूर की दाल) के समान होता है। लेश्याएँ चार होती है। वे सम्यग्दृष्टि और सम्यग्-मिथ्यादृष्टि नहीं होते, मिथ्यादृष्टि ही होते हैं। वे ज्ञानी नहीं, अज्ञानी होते हैं। उनमें अवश्य ही मतिअज्ञान और श्रुतअज्ञान होता है। वे मनयोगी और वचनयोगी नहीं होते, काययोगी होते हैं। उनमें साकार और निराकार-दोनों उपयोग होते हैं। चार संज्ञा और चार कषाय होती है और एकमात्र स्पर्शनेन्द्रिय होती हैं। प्रथम की तीन समुद्घात होती हैं। साता और असाता दोनों वेदना होती है। वे स्त्री वेदी और पुरुषवेदी नहीं होते, नपुंसकवेदी ही होते हैं। स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की होती है। अध्यवसाय प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों प्रकार के होते हैं। अनुबन्ध स्थिति के अनुसार होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५ प्रश्न-से णं भंते ! पुढविकाइए पुणरवि 'पुढविकाइए' त्ति केवइयं कालं सेवेज्जा, केवइयं कालं गइरागइं करेज्जा ?

५ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं-एवइयं जाव करेज्जा १ ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे पृथ्वीकायिक मर कर पुनः पृथ्वीकायिक हो, इस प्रकार कितने काल तक सेवन और गमनागमन करते हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! भव की अपेक्षा जघन्य दो भव और उत्कृष्ट असंख्यात भव, काल की अपेक्षा जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असंख्यात काल तक यावत् गमनागमन करता है १ ।

६-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु-एवं चेव वत्तव्वया णिरवसेसा २ ।

भावार्थ-६ यदि वह पृथ्वीकायिक जघन्य काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण वक्तव्यता जाननी चाहिये २ ।

७-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं बावीसवाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठिईसु, सेसं तं चेव जाव 'अणुबंधो' त्ति। णवरं जहण्णेणं एक्को वा दो वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जिज्जा । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावत्तरिंवाससहस्सुत्तरं सयसहस्सं-एवइयं कालं जाव करेज्जा ३ ।

भावार्थ-७ यदि वह पृथ्वीकायिक उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होता है । शेष अनुबन्ध तक पूर्ववत् । जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं । भव की अपेक्षा जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तथा काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख छिहत्तर हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है ३ ।

८-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो, णवरं लेस्साओ तिण्णि । ट्ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । अप्पसत्था अज्झवसाणा । अणुबंधो जहा ट्ठिई । सेसं तं चेव ४ ।

भावार्थ-८ यदि वह स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो कर पृथ्वीकायिक में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त प्रथम गमक के समान । लेश्याएँ तीन होती स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अध्यवसाय अप्रशस्त और अनुबन्ध, स्थिति के समान होता है । शेष पूर्ववत् ४ ।

९-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णे सच्चेव चउत्थगमग-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वत्तव्वया भाणियव्वा ५।

भावार्थ-९-यदि वह पृथ्वीकायिक जघन्य काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक में उत्पन्न हो, तो पूर्वोक्त चौथे गमकवत् जानना चाहिये। ५।

१०-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया। णवरं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा जाव भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ६।

भावार्थ-१० यदि वह जघन्य स्थिति वाला पृथ्वीकायिक, उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न हो, तो यही वक्तव्यता जाननी चाहिये। विशेष यह कि जघन्य, एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं, यावत् भव की अपेक्षा जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तथा काल की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ८८ हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। ६।

११ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिइओ जाओ, एवं तइयगमगसरिसो णिरवसेसो भाणियव्वो। णवरं अप्पणा से ट्ठिई जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७।

भावार्थ-११-यदि वह स्वयं उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला हो, तो तीसरे गमक के समान सम्पूर्ण गमक जानने चाहिये, विशेष यह है कि उसकी स्वयं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

की स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की होती है। ७।

१२-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतो- मुहुत्त०, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। एवं जहा सत्तमगमगो जाव 'भवादेसो' कालदेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्त- मब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ८।

भावार्थ-१२-यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला पृथ्वीकायिक, जघन्य काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होता है। इस प्रकार यहाँ सातवें गमक की वक्तव्यता यावत् भवादेश तक जाननी चाहिये। काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ८८ हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। ८।

१३-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसं- वाससहस्सट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठिईएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं चोयालीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं छावत्तरिवाससहस्सुत्तरं सयसहस्सं-एवइयं ९।

भावार्थ-१३-यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला, पृथ्वीकायिक उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होता है। यहां सातवें

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गमक की सम्पूर्ण वक्तव्यता यावत् भवादेश तक जाननी चाहिये। काल की अपेक्षा जघन्य ४४ हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख छिहत्तर हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है ९।

विवेचन--दूसरे प्रश्न में प्रज्ञापना सूत्र के व्युत्क्रांति नामक छठे पद का अतिदेश किया गया है। वहां के पाठ का अर्थ यह है-हे भगवन् ! वे एकेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, यावत् पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आते हैं ? (उत्तर) हे गौतम ! एकेन्द्रिय यावत् पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं।

तीसरे गमक में जो यह कहा है कि 'जघन्य एक, दो तीन, उत्पन्न होते हैं'। इसका अभिप्राय यह है कि पहले और दूसरे गमक में उत्पन्न होने वाले बहुत होने से असंख्यात ही उत्पन्न होते हैं, किन्तु तीसरे गमक में उत्कृष्ट स्थिति वाले एकादि से ले कर असंख्यात तक उत्पन्न होते हैं। क्योंकि उत्कृष्ट स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले अल्प होने से वे एकादि रूप से भी उत्पन्न हो सकते हैं।

तीसरे गमक में उत्कृष्ट आठ भव कहे गये हैं। इस विषय में समझना चाहिये कि जिस संवेध में दोनों पक्षों में अथवा दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष में अर्थात् उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक जीव की अथवा जिनमें उत्पन्न हुआ जाता है, उन पृथ्वीकायिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति हो, तो अधिक से अधिक आठ भव की कायस्थिति होती है, इसके अतिरिक्त (जघन्य और मध्यम) असंख्यात भवों की कायस्थिति होती है। अतः यहां उत्पत्ति के विषयभूत (जिनमें उत्पन्न हुआ जाता है) जीवों की उत्कृष्ट स्थिति होने से आठ भव कहे गये हैं। इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिये। एक भव की उत्कृष्ट स्थिति बाईस हजार वर्ष की होती है, उसे आठ से गुणा करने पर आठ भवों की उत्कृष्ट स्थिति एक लाख छिहत्तर हजार (१७६०००) वर्ष होती है।

चौथे गमक में तीन लेश्याएँ कही गई हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकायिक में जीव, देवों से चव कर उत्पन्न नहीं होता, अतः तेजोलेश्या नहीं होती।

छठे गमक में चार अन्तर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट अठासी हजार वर्ष कहे गये हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाले और उत्कृष्ट स्थिति वाले की चार-चार बार उत्पत्ति होने से इतना काल होता है। नौवें गमक में जघन्य चवालीस हजार वर्ष कहे गये हैं, वह बाईस हजार वर्ष रूप उत्कृष्ट स्थिति के दो भव करने से चवालीस हजार वर्ष होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इस प्रकार यह पृथ्वीकायिक जीव का पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पत्ति का कथन हुआ। अब आगे अप्कायिक जीव की उत्पत्ति का कथन किया जायगा।

१४ प्रश्न—जइ आउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सुहुमआउ०, वादरआउ० ?

१४ उत्तर—एवं चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविकाइयाणं।

भावार्थ—१४ प्रश्न—यदि वह पृथ्वीकायिक जीव, अप्कायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच से आता है, तो क्या सूक्ष्म से आता है या बादर अप्कायिक तिर्यंचयोनिक से ?

१४ उत्तर—पृथ्वीकायिक के समान ही यहां भी सूक्ष्म, वादर, पर्याप्त और अपर्याप्त—ये चार भेद जानने चाहिये।

१५ प्रश्न—आउकाइए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

१५ उत्तर—गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्सट्ठिईएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविकाइयगमगसरिसा णव गमगा भाणियव्वा ९। णवरं थिवुगबिंदुसंठिए। ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं। एवं अणुबंधो वि। एवं तिसु वि गमएसु। ठिई संवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमणवमगमेसु—भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं सेसेसु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चउसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं-एवइयं०। छट्ठे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं--एवइयं०। सत्तमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं-एवइयं०। अट्ठमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइयं०। णवमे गमए भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं एगूणतीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं-एवइयं०। एवं णवसु वि गमएसु आउकाइयट्ठिई जाणियव्वा ९।

कठिन शब्दार्थ--थिबुगबिंदुसंठिए--स्तिबुक बिन्दु--पानी के बुलबुले के समान।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! जो अप्कायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होने के योग्य हैं, वह कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होता है ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होता है। इस प्रकार पृथ्वीकायिक के समान अप्कायिक के भी नव गमक जानना चाहिये। विशेष में अप्कायिक के शरीर का संस्थान स्तिबुक (पानी के परपोटे-बुलबुले) के

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकार का होता है। स्थिति और अनुबन्ध जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट सात हजार वर्ष है। इस प्रकार तीनों गमकों में जानना चाहिये। तीसरे, छठे, सातवें, आठवें और नौवें गमक में संवेध भव की अपेक्षा जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव होते हैं, शेष चार गमकों में जघन्य दो भव और उत्कृष्ट असंख्यात भव होते हैं। तीसरे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। छठे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक अठासी हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। सातवें गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सात हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। आठवें गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक सात हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक अट्ठाईस हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। नौवें गमक में भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव करता है, काल की अपेक्षा जघन्य उनतीस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। इस प्रकार नौ ही गमकों में अप्कायिक की स्थिति जाननी चाहिये। ९।

विवेचन-अप्काय के चार भेद हैं। यथा-सूक्ष्म के अपर्याप्त और पर्याप्त तथा बादर के अपर्याप्त और पर्याप्त।

भवादेश से संवेध का कथन इस प्रकार है। संवेध--भव की अपेक्षा सभी गमकों में जघन्य दो भव हैं किन्तु उत्कृष्ट में भिन्नता है। यथा-तीसरे, छठे, सातवें, आठवें, और नौवें गमक में उत्कृष्ट संवेध आठ भव है। क्योंकि तीसरे, छठे, सातवें और आठवें गमक में एक पक्ष में उत्कृष्ट स्थिति है और नौवें गमक में दोनों पक्ष में उत्कृष्ट स्थिति है। शेष पहले, दूसरे, चौथे और पांचवें गमक में उत्कृष्ट असंख्यात भव होते हैं। क्योंकि इन चार गमकों में किसी भी पक्ष में उत्कृष्ट स्थिति नहीं है।

तीसरे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य बाईस हजार वर्ष कहे गये हैं, क्योंकि उत्पत्ति स्थानभूत पृथ्वीकायिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति है और अन्तर्मुहूर्त जो अधिक कहा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गया है, वह वहाँ पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले अप्कायिक जघन्य काल स्थिति की विवक्षा से कहा गया है। काल की अपेक्षा उत्कृष्ट एक लाख सोलह हजार वर्ष कहे गये हैं। यहाँ उत्कृष्ट स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों के चार भवों के ८८००० वर्ष होते हैं। इसी प्रकार औधिक में भी उत्कृष्ट स्थिति वाले अप्कायिक जीवों के चार भवों के २८००० वर्ष होते हैं। इन दोनों को मिलाने से एक लाख सोलह हजार वर्ष होते हैं।

छठे गमक में जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पत्ति बतलाई गई है। इसलिये दोनों के चार भवों के चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ८८००० वर्ष होते हैं। इसी प्रकार सातवें और आठवें गमक का संवेध भी जानना चाहिये, किन्तु नौवें गमक में जघन्य से पृथ्वीकायिक और अप्कायिक का उत्कृष्ट स्थिति मिलाने से २९००० वर्ष होते हैं और उत्कृष्ट पूर्वोक्त रीति से एक लाख सोलह हजार वर्ष होते हैं।

१६ प्रश्न-जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जंति ० ?

१६ उत्तर-तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया। णवरं णवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ। तेउक्काइया णं सुईकलावसंठिया। ठिई जाणियव्वा। तईयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं बारसहिं राइंदिएहिं अब्भहियाइं-एवइयं०। एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो।

कठिन शब्दार्थ-उवजुंजिऊण-उपयोग लगा कर।

भावार्थ-१६ प्रश्न-यदि वह तेजस्काय से आता हो, तो ?

१६ उत्तर-इस विषय में भी यही वक्तव्यता जाननी चाहिये। यहां नौ ही गमकों में तीन लेश्याएँ होती हैं। तेउकाय का संस्थान सूचीकलाप (सूइयों का समूह) के समान होता है। स्थिति तीन अहोरात्र की होती है। तीसरे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बारह अहोरात्र अधिक ८८००० वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। इसी प्रकार उपयोगपूर्वक संवेध भी कहना चाहिए। १ से ९।

१७ प्रश्न-जइ वाउकाइएहिंतो० ?

१७ उत्तर-वाउक्काइयाण वि एवं चेव णव गमगा जहेव तेउक्काइयाणं। णवरं पडागासंठिया पण्णत्ता। संवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्सं। एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो।

भावार्थ-१७ प्रश्न-यदि वे वायुकायिक जीवों से आते हैं, तो ?

१७ उत्तर-तेजस्काय के समान नौ ही गमक जानने चाहियें। वायुकाय का संस्थान पताका के आकार का होता है। संवेध हजारों वर्षों से करना चाहिये। तीसरे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख वर्ष। इस प्रकार उपयोगपूर्वक संवेध जानना चाहिये।

१८ प्रश्न-जइ वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जंति० ?

१८ उत्तर-वणस्सइकाइयाणं आउकाइयगमगसरिसा णव गमगा भाणियव्वा। णवरं णाणासंठिया। सरीरोगाहणा-पढमएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं, मज्झिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं। संवेहो ठिई य जाणियव्वा। तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसुत्तरं वाससय-सहस्सं-एवइयं० । एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ९ ।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे वनस्पतिकायिक जीवों से आते हैं, तो ?

१८ उत्तर-इसके भी नौ गमक अप्कायिक के समान हैं । वनस्पति-काय का संस्थान अनेक प्रकार का होता है। प्रथम के तीन गमक और अन्तिम तीनों गमक में अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट साति-रेक एक हजार योजन की होती है । बीच के तीन गमकों में पृथ्वीकायिक के समान जानना चाहिये । संवेध और स्थिति भी कहनी चाहिये । तीसरे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक लाख अट्ठाईस हजार वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है । इसी प्रकार उपयोग पूर्वक संवेध भी कहना चाहिये ।

विवेचन-अप्काय में देवोत्पत्ति होती है, इसलिये चार लेश्याएँ कही गई है । तेउ-काय में देवोत्पत्ति नहीं होती, इसलिये तीन लेश्याएँ कही गई हैं । तेउकाय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट तीन अहोरात्र है । तीसरे गमक में औधिक तेजस्कायिक की उत्पत्ति उत्कृष्ट स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में बतलाई गई है, यहाँ एक पक्ष उत्कृष्ट स्थिति वाला होने से पृथ्वीकायिक के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ८८००० वर्ष होती है, तथा तेउ-काय की चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति बारह अहोरात्र होती है । संवेध-छठे से नौवें गमक तक में भव की अपेक्षा आठ भव होते हैं और काल की अपेक्षा उपयोगपूर्वक कहना चाहिये।

शेष गमकों में उत्कृष्ट असंख्यात भव होते हैं और काल भी असंख्यात होता है ।

'वायुकायिक जीवों का संवेध हजारों वर्ष से करना चाहिये'-इस कथन का आशय यह है कि तेजस्काय के अधिकार में तीन अहोरात्र से संवेध किया गया था, क्योंकि उनकी उत्कृष्ट स्थिति तीन अहोरात्र की होती है । वायुकायिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्ष होती है, इसलिये इनका संवेध तीन हजार वर्षों से करना चाहिये । तीसरे गमक में उत्कृष्ट आठ भव होते हैं । उनमें से पृथ्वीकायिक के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ८८००० वर्ष होती है और वायुकायिक जीवों के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति १२००० वर्ष होती है । इन दोनों को मिलाने से संवेध एक लाख वर्ष का होता है । इस प्रकार जहाँ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्कृष्ट स्थिति का गमक हो, वहाँ उत्कृष्ट आठ भव और तदनुसार काल कहना चाहिये। इसके अतिरिक्त दूसरे गमको में असंख्यात भव और तदनुसार असंख्यात काल कहना चाहिये।

वनस्पतिकायिक नौ गमकों के लिये अप्कायिक गमकों का अतिदेश किया गया है और जो विशेषता है, वह मूल में बता दी गई है। अप्काय का संस्थान स्तिबुक के आकार का है और वनस्पतिकाय का संस्थान नाना प्रकार का है। वनस्पतिकाय के प्रथम तीन औधिक गमों में और अन्तिम अर्थात् सातवें, आठवें और नौवें गमक में अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट दोनों प्रकार की होती है। अर्थात् जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट सातिरेक एक हजार योजन होती है। चौथे, पाँचवें और छठे, इन बीच के जघन्य स्थिति के तीन गमकों में अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग ही होती है। वनस्पतिकाय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की होती है। इसके अनुसार संवेध भी जानना चाहिये। किसी भी पक्ष में उत्कृष्ट स्थिति के गमकों में उत्कृष्ट आठ भव होते हैं। उनमें से पृथ्वीकाय के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ८८००० वर्ष होती है और वनस्पतिकाय के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ४०००० वर्ष होती है। दोनों को मिलाने से एक लाख अट्ठाईस हजार (१२८०००) वर्ष का संवेध काल होता है।

१९ प्रश्न-जइ बेइंदिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तबेइंदिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तबेइंदिएहिंतो० ?

१९ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तबेइंदिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्त-बेइंदिएहिंतो वि उववज्जंति।

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि बेइन्द्रिय जीवों से आते हों, तो क्या पर्याप्त या अपर्याप्त बेइन्द्रिय जीवों से आते हैं ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! पर्याप्त और अपर्याप्त दोनों प्रकार के जीवों से आते हैं।

२० प्रश्न-बेइंदिए णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

से णं भंते ! केवइयकाल० ?

२० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठिईएसु ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! जो बेइन्द्रिय जीव, पृथ्वीकायिक जीवों में आने के योग्य हैं, वे कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक जीवों में आते हैं ?

२० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होते हैं ।

२१ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं० ?

२१ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । छेवट्ठसंघयणी । ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं । हुंडसंठिया । तिण्णि लेसाओ । सम्मदिट्ठि वि, मिच्छादिट्ठि वि, णो सम्मामिच्छादिट्ठि । दो णाणा, दो अण्णाणा णियमं । णो मणजोगी, वयजोगी वि, कायजोगी वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । दो इंदिया पण्णत्ता, तंजहा-जिब्भिंदिए य फासिंदिए य । तिण्णि समुग्घाया । सेसं जहा पुढविकाइयाणं । णवरं ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं । एवं अणुबंधो वि, सेसं तं चेव । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दो अंतोमुहुत्ताइं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं-एवइयं० १।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन्! वे जीव एक समय में कितने आते हैं ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात, या असंख्यात आते हैं। उनका संहनन सेवार्त्त होता है। अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट बारह योजन की होती है। संस्थान हुण्डक, लेश्या तीन, दृष्टि दो-सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होते हैं। सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होते। उनमें दो ज्ञान या दो अज्ञान अवश्य होते हैं। वे मनयोगी नहीं होते, वचनयोगी और काययोगी होते हैं। उनमें दो उपयोग, चार संज्ञा और चार कषाय होती हैं। जिव्हेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ये दो इन्द्रियाँ होती है। तीन समुद्घात होती हैं। शेष सभी पृथ्वीकायिकों के समान जानना चाहिये। स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बारह वर्ष की होती है। इसी प्रकार अनुबन्ध भी होता है। शेष सभी पूर्ववत्। भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट संख्यात भव तथा कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट संख्यात काल तक यावत् गमनागमन करता है १।

२२-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २।

भावार्थ-२२ प्रश्न-यदि वह बेइन्द्रिय जघन्य काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में आता हो तो भी पूर्वोक्त सभी वक्तव्यता जाननी चाहिये २।

२३-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव बेंदियस्स लद्धी। णवरं भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ३।

भावार्थ-२३-यदि वह बेइन्द्रिय, उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में आता हो, तो उसके विषय में भी उपर्युक्त वर्णनानुसार है। भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तथा कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक २२००० वर्ष और उत्कृष्ट ४८ वर्ष अधिक ८८००० वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। ३।

२४-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु। णवरं इमाइं सत्त णाणत्ताइं-१ सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं। २ णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी। ३ दो अण्णाणा णियम। ४ णो मणजोगी, णो वयजोगी, कायजोगी। ५ ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। ६ अज्झवसाणा अप्पसत्था। ७ अणुबंधो जहा ठिई। संवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं ६।

भावार्थ-२४-यदि वह बेइन्द्रिय, स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो और वह पृथ्वीकायिक जीवों में आता हो, तो उसके तीनों गमकों में पूर्वोक्त

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वक्तव्यता जाननी चाहिये, किन्तु विशेष में यहां सात नानात्व (भेद) हैं। यथा-१-शरीर की अवगाहना पृथ्वीकायिकों के समान (अंगुल के असंख्यातवें भाग) है, २-वे सम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होते, मिथ्यादृष्टि होते हैं, ३-दो अज्ञान नियम से होते हैं, ४-वे मनयोगी और वचनयोगी नहीं होते, काययोगी होते हैं, ५-स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त होती है, ६ अध्यवसाय अप्रशस्त होते हैं, ७-स्थिति के अनुसार अनुबन्ध होता है। दूसरे त्रिक के पहले के दो गमकों में (चौथे और पांचवें गमक में) संवेध भी इसी प्रकार जानना चाहिये। छठे गमक में भवादेश उसी प्रकार आठ भव। कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक २२००० वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ८८००० वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। ४-५-६।

२५-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा। णवरं तिसु वि गमएसु ठिई जहण्णेणं बारस संवच्छराइं, उक्कोसेण वि बारस संवच्छराइं। एवं अणुबंधो वि। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं, जाव णवमे गमए जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं बारसहिं संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ९।

भावार्थ-२५-यदि वह बेइन्द्रिय जीव, स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो और पृथ्वीकायिक जीवों में आता हो, तो तीनों गमक औधिक गमकों के समान जानना चाहिये। तीनों गमकों में स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट बारह वर्ष की होती है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुबन्ध भी इसी प्रकार होता है। भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तथा कालादेश से संवेध विचार कर कहना चाहिये, यावत् नौवें गमक में जघन्य बारह वर्ष अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट ४८ वर्ष अधिक ८८००० वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। ७-८-९।

विवेचन-बेइन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना जो बारह योजन बताई गई है, वह शंख आदि की अपेक्षा समझनी चाहिये। जैसा कि कहा है-'संखो पुण बारस जोयणाइं'। औघिक बेइन्द्रिय का औघिक पृथ्वीकायिकों में उत्पत्ति रूप प्रथम गमक में जो सम्यग्दृष्टि-पन कहा गया है, वह सास्वादनसमकित की अपेक्षा समझना चाहिये।

बेइन्द्रिय के तीसरे गमक में संवेध, भवादेश से उत्कृष्ट आठ भव बताये हैं, क्योंकि यहां एक पक्ष उत्कृष्ट स्थिति वाला है। कालादेश में बेइन्द्रिय के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ४८ वर्ष होती है और पृथ्वीकाय के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ८८००० वर्ष होती है। अतः ४८ वर्ष अधिक ८८००० वर्ष बताये गये हैं।

बेइन्द्रिय के चौथे पाँचवें और छठे गमक में, सात बातों का नानात्व बताया गया है। प्रथम तीन गमकों में उत्कृष्ट अवगाहना बारह योजन बताई गई थी, किन्तु यहां जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग बताई गई है। पहले गमकों में सम्यग्दृष्टिपन बताया गया है, किन्तु इन गमकों में सम्यग्दृष्टिपन का अभाव है, क्योंकि जघन्य स्थिति होने से इनमें सास्वादन सम्यग्दृष्टि जीवों की उत्पत्ति नहीं होती। इसी प्रकार दो अज्ञान ही पाये जाते हैं, ज्ञान नहीं। जघन्य स्थिति होने के कारण अपर्याप्तक होने से इनमें वचनयोग भी नहीं पाया जाता। स्थिति अन्तर्मुहूर्त ही होती है। अल्प-स्थिति होने से अध्यवसाय भी अप्रशस्त ही होते हैं। सातवां नानात्व अनुबन्ध है, वह स्थिति के अनुसार होता है। संवेध-चौथे और पाँचवें गमक में भवादेश से उत्कृष्ट संख्यात भव होते हैं और कालादेश से संख्यात काल होता है। छठे गमक का संवेध भवादेश से उत्कृष्ट आठ भव, कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ८८००० वर्ष होता है। सातवें गमक का संवेध भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव। कालादेश से उत्कृष्ट सातवें गमक में ४८ वर्ष अधिक ८८००० वर्ष। आठवें गमक में चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ४८ वर्ष। नौवें गमक का संवेध, जघन्य बारह वर्ष अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट ४८ वर्ष अधिक ८८००० वर्ष का होता है। अतः उपयोग पूर्वक जघन्य और उत्कृष्ट संवेध कहना चाहिये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२६ प्रश्न-जइ तेइंदिएहिंतो उववज्जंति० ?

२६ उत्तर-एवं चेव णव गमगा भाणियव्वा, णवरं आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । तिण्णि इंदियाइं । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणपण्णं राइंदियाइं । तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं छण्णउइं राइंदियसयमब्भहियाइं-एवइयं०। मज्झिमा तिण्णि गमगा तहेव, पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव । णवरं ठिई जहण्णेणं एगूणपण्णं राइंदियाइं, उक्कोसेण वि एगूणपण्णं राइंदियाइं । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ९ ।

कठिन शब्दार्थ-एगूणपण्णं-उनपचास (४९) ।

भावार्थ-२६ प्रश्न-यदि वह पृथ्वीकायिक तेइन्द्रिय से आता हो, तो ?

२६ उत्तर-यहां भी इसी प्रकार नौ गमक कहना चाहिये । प्रथम के तीन गमकों में शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट तीन गाऊ की होती है । इन्द्रियाँ तीन और स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट ४९ रात्रि-दिवस की होती है । तीसरे गमक में काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक २२००० वर्ष और उत्कृष्ट १९६ रात्रि-दिवस अधिक ८८००० वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है । बीच के तीन (चौथे, पांचवें और छठे) गमक का कथन भी उसी प्रकार (बेइन्द्रिय के समान) जानना चाहिये । अन्तिम तीन (सातवें, आठवें और नौवें) गमक का कथन भी उसी प्रकार जानना चाहिये । स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट ४९ रात्रि-दिवस की होती है और संवेध उपयोगपूर्वक कहना चाहिये ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२७ प्रश्न-जइ चउरिंदिएहिंतो उववज्जंति० ?

२७ उत्तर-एवं चेव चउरिंदियाण वि णव गमगा भाणियव्वा। णवरं एएसु चेव ठाणेसु णाणत्ता भाणियव्वा। सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण य छम्मासा। एवं अणुबंधो वि। चत्तारि इंदियाइं, सेसं तं चेव जाव णवमगमए। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं छहिं मासेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ९।

भावार्थ-२७ प्रश्न-यदि वह पृथ्वीकायिक जीव, चतुरिन्द्रिय जीवों से आते हो, तो ?

२७ उत्तर-इस विषय में भी इसी प्रकार नौ गमक कहना चाहिये। शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट चार गाऊ की होती है। स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट छह मास की होती है। स्थिति के अनुसार अनुबन्ध होता है। इन्द्रियां चार होती हैं। शेष पूर्ववत् यावत् नौवें गमक में कालादेश से जघन्य छह मास अधिक बाईस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चौबीस मास अधिक ८८००० वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है।

विवेचन-तेइन्द्रिय के तीसरे गमक में उत्कृष्ट आठ भव होते हैं। उनमें से तेइंद्रिय के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति १९६ रात्रि-दिवस और पृथ्वीकाय के चार भवों की उत्कृष्ट स्थिति ८८००० वर्ष होती है। दोनों को मिला कर १९६ रात्रि-दिवस अधिक ८८००० वर्ष होते हैं। चौथा, पाँचवा और छठा गमक बेइन्द्रिय के समान है। सातवें, आठवें और नौवें गमक का संवेध भवादेश से प्रत्येक के आठ भव होते हैं। कालादेश से सातवें और नौवें गमक में उत्कृष्ट १९६ रात्रि-दिवस अधिक ८८००० वर्ष होते हैं। आठवें गमक में चार अन्तर्मुहूर्त अधिक १९६ रात्रि-दिवस होते हैं।

चतुरिन्द्रिय का कथन तेइन्द्रिय के समान है। अवगाहना आदि की विशेषता मूल

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पाठ में बता दी गई है। संवेध का कथन उपयोगपूर्वक यथायोग्य कहना चाहिये।

२८ प्रश्न-जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए० ?

२८ उत्तर-गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय०, असण्णिपंचिंदिय० ।

भावार्थ-२८ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे पृथ्वीकायिक, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो क्या संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं या असंज्ञी से ?

२८ उत्तर-हे गौतम ! संज्ञी और असंज्ञी दोनों प्रकार के पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च-योनिक से आते हैं।

२९ प्रश्न-जइ असण्णिपंचिंदिय० किं जलचरेहिंतो उववज्जंति जाव किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?

२९ उत्तर-गोयमा ! जाव पज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति ।

भावार्थ-२९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो जलचरों से आते हैं यावत् पर्याप्त या अपर्याप्त से आते हैं ?

२९ उत्तर-हे गौतम ! यावत् सभी के पर्याप्त और अपर्याप्त से आते हैं।

३० प्रश्न-असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

३० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-३० प्रश्न-हे भगवन् ! असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक, पृथ्वीकायिक जीवों में आवे, तो वह कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक में आता है ?

३० उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होता है ।

३१ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ।

३१ उत्तर-एवं जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए, लद्धी तहेव । णवरं सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । पंचिंदिया । ठिई अणुबंधो य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । सेसं तं चेव । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीईए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ-एवइयं० । णवसु वि गमएसु कायसंवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं । णवरं मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव बेइंदियस्स, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एयस्स चेव पढमगमएसु । णवरं ठिई अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तं चेव जाव णवमगमएसु-'जहण्णेणं पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीईए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ'-एवइयं कालं सेवेज्जा० ९ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-३१ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, एक समय में कितने आते हैं, इत्यादि ?

३१ उत्तर-बेइन्द्रिय के औधिक गमकों के अनुसार । विशेष में शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक हजार योजन होती है । इन्द्रियाँ पाँच । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि, शेष पूर्ववत् । संवेध भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव, कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट ८८००० वर्ष अधिक चार पूर्वकोटि तक यावत् गमनागमन करता है । नौ गमकों में भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव होते हैं । कालादेश से कायसंवेध उपयोगपूर्वक कहना चाहिये, विशेष यह है कि मध्य के (चौथा, पाँचवाँ और छठा) तीन गमकों का कथन बेइन्द्रिय के मध्य के तीन गमकों के समान । पिछले (सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ) तीन गमकों का कथन प्रथम के तीन गमकों के अनुसार । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि, शेष पूर्ववत्, यावत् नौवें गमक में संवेध कालादेश से जघन्य २२००० वर्ष अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट ८८००० वर्ष अधिक चार पूर्वकोटि यावत् गमनागमन करता है १-९ ।

३२ प्रश्न-जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय० ?

३२ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, णो असंखेज्जवासाउय० ।

भावार्थ-३२ प्रश्न-यदि वे पृथ्वीकायिक, सञ्ज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च-योनिक से आते हैं, तो संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले से आते हैं या असंख्यात वर्ष की ?

३२ उत्तर-वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले से नहीं आते ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३३ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउय० किं जलचरेहिंतो० ?

३३ उत्तर-सेसं जहा असण्णीणं जाव-

भावार्थ-३३ प्रश्न-यदि वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आते हैं, तो ?

३३ उत्तर-सभी वक्तव्यता असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान जाननी चाहिये। यावत्

३४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

३४ उत्तर-एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि, णवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तहेव जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीईए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ-एवइयं० । एवं संवेहो णवसु वि गमएसु जहा असण्णीणं तहेव णिरवसेसं । लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव मज्झिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव। णवरं इमाइं णव णाणत्ताइं-१ ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। तिण्णि लेस्साओ । मिच्छादिट्ठी। दो अण्णाणा । कायजोगी । तिण्णि समुग्घाया । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । अप्पसत्था अज्झवसाणा । अणुबंधो जहा ठिई, सेसं तं चेव । पच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पढमगमए। णवरं ठिई अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तं चेव ९।

भावार्थ-३४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पृथ्वीकायिक जीवों में आते हों, तो एक समय में कितने आते हैं ?

३४ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार रत्नप्रभा में आने वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच सम्बन्धी वक्तव्यता कही, उसी प्रकार यहां भी जाननी चाहिये। शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक हजार योजन की होती है। शेष इसी प्रकार जानना चाहिये, यावत् कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट ८८००० वर्ष अधिक चार पूर्वकोटि तक यावत् गमनागमन करते हैं। इस प्रकार नौ गमकों में सर्वत्र सवेध-असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान है। प्रथम के तीन गमक और मध्य के तीन गमकों में भी यही वक्तव्यता जाननी चाहिये, परन्तु मध्य के (चौथा, पांचवां और छठा) तीन गमकों में ये नौ नानात्व है। यथा-१ शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवां भाग, २-लेश्या तीन, ३-मिथ्यादृष्टि, ४-दो अज्ञान, ५-काययोगी, ६-तीन समुद्घात, ७-स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, ८-अध्यवसाय अप्रशस्त और ९-अनुबन्ध स्थिति के अनुसार होता है, शेष पूर्ववत्। अन्तिम (सातवां, आठवां और नौवां) तीन गमकों में प्रथम गमक के समान, स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि का होता है, शेष पूर्ववत्।

विवेचन-पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होने वाले संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की होती है और संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के प्रथम, द्वितीय और तृतीय गमक का कथन, रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के प्रथम, द्वितीय और तृतीय गमक के समान ही है। चौथे, पाँचवें और छठे गमक का कथन भी इसी प्रकार है, किन्तु अन्तर नौ विषयों में है, जो मूल में बताया गया है। अन्तिम तीन गमकों का कथन प्रथम तीन गमकों के समान है। स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि का होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३५ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असण्णिमणुस्सेहिंतो० ?

३५ उत्तर-गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति।

भावार्थ-३५ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे पृथ्वीकायिक, मनुष्यों से आते हैं, तो संज्ञी मनुष्यों से आते हैं या असंज्ञी मनुष्यों से ?

३५ उत्तर-हे गौतम ! संज्ञी और असंज्ञी दोनों प्रकार के मनुष्यों से आते हैं।

३६ प्रश्न-असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु० से णं भंते ! केवइयकाल० ?

३६ उत्तर-एवं जहा असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णकालट्ठिईयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा तहेव णिरवसेसा, सेसा छ ण भण्णंति १।

भावार्थ-३६ प्रश्न-हे भगवन् ! असंज्ञी मनुष्य, पृथ्वीकायिक में आते हो, तो कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक जीवों में आता है ?

३६ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार जघन्य काल की स्थिति वाले असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक के विषय में तीन गमक कहे गये हैं, उसी प्रकार यहां भी औघिक तीन गमक सम्पूर्ण कहने चाहिये। शेष छह गमक नहीं कहने चाहिये।

३७ प्रश्न-जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्ज-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वासाउय०, असंखेज्जवासाउय० ?

३७ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, णो असंखेज्जवासाउय० ।

भावार्थ-३७ प्रश्न-यदि वे संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, तो क्या संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले या असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं ?

३७ उत्तर-हे गौतम ! वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से आते हैं, असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्यों से नहीं आते ।

३८ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउय० किं पज्जत्त०, अपज्जत्त० ?

३८ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज०, अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय० जाव उववज्जंति ।

भावार्थ-३८ प्रश्न-यदि वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले मनुष्यों से आते हैं, तो पर्याप्त मनुष्यों से आते हैं या अपर्याप्त से ?

३८ उत्तर-हे गौतम ! पर्याप्त और अपर्याप्त दोनों प्रकार के संज्ञी मनुष्यों से आते हैं ।

३९ प्रश्न-सण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० ?

३९ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं-वाससहस्सठिईएसु ।

भावार्थ-३९ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी मनुष्य, पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने के योग्य है, तो वह कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होता है ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३९ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होता है ।

४० प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

४० उत्तर-एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी । णवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ-भागं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्को-सेणं पुव्वकोडी, एवं अणुबंधो । संवेहो णवसु गमएसु जहेव सण्णि-पंचिंदियस्स । मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णिपंचिं-दियस्स, सेसं तं चेव णिरवसेसं, पच्छिल्ला तिण्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा । णवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । ठिई अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्को-सेण वि पुव्वकोडी, सेसं तहेव ।

भावार्थ-४० प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव, एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४० उत्तर-हे गौतम ! तीन गमकों में रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के समान । विशेष यह है कि शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष, स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि । इसी प्रकार अनुबन्ध भी । संवेध-संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान नौ गमकों में जानना चाहिये । बीच के तीन गमकों में संज्ञी पञ्चे-न्द्रिय तिर्यंच की लब्धि (परिमाणादि की प्राप्ति) जाननी चाहिये, शेष पूर्ववत् । अन्तिम तीन गमकों का कथन इसके प्रथम के तीन औधिक गमकों के समान । शरीर की अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष, स्थिति और अनुबन्ध

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि है, शेष पूर्ववत् ।

विवेचन-जिस प्रकार जघन्य स्थिति वाले असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के तीन गमक कहे हैं, उसी प्रकार असंज्ञी मनुष्य के भी तीन औधिक गमक होते हैं । शेष छह गमक नहीं होते ।

रत्नप्रभा में उत्पन्न होने के योग्य संज्ञी मनुष्य के जिस प्रकार गमक कहे, उसी प्रकार इसके छह गमक (पहला, दूसरा, तीसरा तथा सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ) जानना चाहिये । विशेषता यह है कि रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले मनुष्य की अवगाहना जघन्य अंगुल-पृथक्त्व और स्थिति जघन्य मास-पृथक्त्व कही थी, किन्तु यहाँ अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग और स्थिति अन्तर्मुहूर्त है । संवेध-नौ गमकों में पृथ्वीकायिक में आने वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के समान । क्योंकि पृथ्वीकायिक जीवों में आने वाले संज्ञी मनुष्य और तिर्यञ्च की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि होती है ।

प्रथम के औधिक गमकों में जो अवगाहना और स्थिति कही गई है, वह अन्तिम गमकों में नहीं होती, किन्तु इनमें अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष तथा स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि का है ।

४१ प्रश्न-जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर०, जोइसियदेवेहिंतो०, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ?

४१ उत्तर-गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति ।

भावार्थ-४१ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे पृथ्वीकायिक जीव, देवों से आते हैं, तो क्या भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी या वैमानिक देवों से आते हैं ?

४१ उत्तर-हे गौतम ! वे भवनपति यावत् वैमानिक देवों से भी आते हैं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४२ प्रश्न-जइ भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमार-भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो०?

४२ उत्तर-गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ।

भावार्थ-४२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे भवनपति देवों से आते हैं, तो असुरकुमारों से आते हैं या यावत् स्तनितकुमारों से आते हैं ?

४२ उत्तर-हे गौतम ! वे असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार देवों से आते हैं ।

४३ प्रश्न-असुरकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

४३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं बावीसं-वाससहस्सठिई० ।

भावार्थ-४३ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमार भवनपति देव, पृथ्वीकायिक में आते हैं, तो कितने काल की स्थिति में आते हैं ?

४३ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होते हैं ।

४४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० पुच्छा ।

४४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-४४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असुरकुमार, एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं।

४५ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता ?

४५ उत्तर-गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी जाव परिणमंति।

भावार्थ-४५ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों (पृथ्वीकायिक जीवों में आने वाले भवनपति देवों) के शरीर कितने संहनन वाले हैं ?

४५ उत्तर-हे गौतम ! उनके शरीर छहों प्रकार के संहनन से रहित होते हैं, यावत् इष्ट, कान्त और मनोज्ञ पुद्गल शरीर-संघात रूप से परिणमते हैं।

४६ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ?

४६ उत्तर-गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं+, उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं।

भावार्थ-४६ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी होती हैं ?

+ 'सुत्तागमे' में यहां 'असंखेज्जइभागं' पाठ दिया, जो अनुपयुक्त लगता है-डोशी।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४६ उत्तर-हे गौतम ! उनके दो प्रकार की अवगाहना कही गई है। यथा-भवधारणीय और उत्तरवैक्रिय। भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट सात हाथ और उत्तरवैक्रिय अवगाहना जघन्य अंगुल के संख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक लाख योजन की होती है।

४७ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पण्णत्ता ?

४७ उत्तर-गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरंससंठाण-संठिया पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते णाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता। लेस्साओ चत्तारि। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि णाणा णियमं, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। पंच इंदिया। पंच समुग्घाया। वेयणा दुविहा वि। इत्थिवेयगा वि पुरिसवेयगा वि, णो णपुंसगवेयगा। ठिई जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं अज्झवसाणा असंखेज्जा पसत्था वि अप्पसत्था वि। अणु-बंधो जहा ठिई। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं-एवइयं० । एवं णव वि गमा णेयव्वा। णवरं मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुर-कुमाराणं ठिइविसेसो जाणियव्वो, सेसा ओहिया चेव लद्धी काय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संवेहं च जाणेज्जा। सव्वत्थ दो भवग्गहणाइं जाव णवमगमए काला-देसेणं जहण्णेणं साइरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भ-हियं, उक्कोसेण वि साइरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं-अब्भहियं-एवइयं० ९।

भावार्थ-४७ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के शरीर का संस्थान कौन-सा है ?

४७ उत्तर-हे गौतम ! उनके शरीर दो प्रकार के कहे गये हैं। यथा-भवधारणीय और उत्तरवैक्रिय। भवधारणीय शरीर समचतुरस्र संस्थान वाला होता है और उत्तरवैक्रिय शरीर अनेक प्रकार के संस्थान वाला होता है। उनके लेश्या चार, दृष्टि तीन, ज्ञान नियमा तीन, अज्ञान भजना से तीन, योग तीन, उपयोग दो, संज्ञा चार, कषाय चार, इन्द्रियां पांच, समुद्घात पांच और वेदना दो प्रकार की होती है। वे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी होते हैं, नपुंसकवेदी नहीं होते। स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट सातिरेक सागरोपम होती है। अध्यवसाय असंख्यात प्रकार के प्रशस्त और अप्रशस्त होते हैं। अनुबन्ध स्थिति के अनुसार होता है। संवेध-भवादेश से दो भव तथा कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष अधिक सातिरेक एक सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। इस प्रकार नौ गमक जानने चाहिये। विशेष यह है कि मध्य के तीन गमक और अंतिम तीन गमक इन छह गमकों में असुरकुमारों की स्थिति के विषय में विशेषता है। शेष औधिक वक्तव्यता और कायसंवेध जानना चाहिये। संवेध में सर्वत्र दो भव जानने चाहिये। इस प्रकार यावत् नौवें गमक में कालादेश से जघन्य बाईस हजार वर्ष अधिक सातिरेक सागरोपम काल तक यावत् गमनागमन करता है (१-९)।

४८ प्रश्न-णागकुमारे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु ?

४८ उत्तर-एस चेव वत्तव्वया जाव 'भवादेसो' त्ति। णवरं ठिई जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं, एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं। एवं णव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, णवरं ठिइं कालादेसं च जाणेज्जा, एवं जाव थणियकुमाराणं।

४८ प्रश्न-हे भगवन् ! जो नागकुमार देव, पृथ्वीकायिक में आवे, तो वह कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में आते हैं ?

४८ उत्तर-हे गौतम ! यहां असुरकुमार की पूर्वोक्त वक्तव्यता यावत् भवादेश तक जाननी चाहिये। विशेष यह कि स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट देशोन दो पल्योपम होती है। इसी प्रकार अनुबन्ध भी। संवेध-कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष अधिक देशोन दो पल्योपम। इस प्रकार नौ गमक असुरकुमार के गमकों के समान जानना चाहिये, किन्तु स्थिति और कालादेश इनका ही रहे। इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक जानना चाहिये।

विवेचन-देवों का शरीर छह संहनन में से किसी भी संहनन वाला नहीं होता। उनके इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम (मन के अनुकूल) पुद्गल शरीर-संघात रूप से परिणमते हैं।

उत्पत्ति के समय अनाभोग (अनुपयोग) से और कर्म परतन्त्रता से देवों के भवधारणीय शरीर की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग होती है। उत्तरवैक्रिय अवगाहना आभोग (उपयोग) जनित होने के कारण जघन्य अंगुल के संख्यातवें भाग होती है, किन्तु भवधारणीय अवगाहना के समान अंगुल के असंख्यातवें भाग नहीं बना सकते। उत्तरवैक्रिय अपनी इच्छा के अनुसार बनाया जाता है, इसलिये उनका संस्थान नाना प्रकार का होता है।

तीन अज्ञान जो भजना से कहे गये हैं, इसका कारण यह है कि जो असुरकुमार

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

असंज्ञी जीवों से आते हैं, उनमें अपर्याप्त अवस्था में विभंगज्ञान नहीं होता, शेष में होता है। इसलिये अज्ञान के विषय में भजना कही गई है। संवेध-जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष का जो कहा गया है, उसमें पृथ्वीकायिक की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त और असुरकुमारों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष को मिला कर कहा गया है और इसी प्रकार उत्कृष्ट के विषय में भी समझना चाहिये कि पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट स्थिति बाईस हजार वर्ष और असुरकुमारों की उत्कृष्ट स्थिति सातिरेक सागरोपम है। इन दोनों को मिला कर कहा गया है। इसका संवेध काल भी इतना ही है, क्योंकि असुरकुमारादि से आ कर पृथ्वीकाय में आते हैं, किन्तु पृथ्वीकाय से निकल कर असुरकुमारादि में नहीं आते। मध्य के तीन गमकों में असुरकुमारों की स्थिति दस हजार वर्ष और अन्तिम तीन गमकों में सातिरेक सागरोपम समझनी चाहिये।

४९ प्रश्न-जइ वाणमंतरेहिंतो उववज्जंति किं पिसायवाणमंतर० जाव गंधव्ववाणमंतर० ?

४९ उत्तर-गोयमा ! पिसायवाणमंतर० जाव गंधव्ववाणमंतर०।

४९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे (पृथ्वीकायिक) जीव वाणव्यन्तरों से आते हों, तो क्या पिशाच वाणव्यन्तरों से या यावत् गंधर्व से ?

४९ उत्तर-हे गौतम ! वे पिशाच वाणव्यंतर से यावत् गंधर्व से आते हैं।

५० प्रश्न-वाणमंतरदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु० ?

५० उत्तर-एएसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा णव गमगा भाणियव्वा। णवरं ठिइं कालादेसं च जाणेज्जा। ठिई जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमं, सेसं तहेव।

५० प्रश्न-हे भगवन् ! वाणव्यन्तर देव, जो कि पृथ्वीकायिकों में

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आवें, तो वे कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिकों में आते हैं ?

५० उत्तर-हे गौतम ! यहां भी असुरकुमार के समान नौ गमक हैं, परन्तु स्थिति और कालादेश उनसे भिन्न है । स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट पल्योपम, शेष पूर्ववत् ।

५१ प्रश्न-जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाण-जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति जाव ताराविमाणजोइसिय० ?

५१ उत्तर-गोयमा ! चंदविमाण० जाव ताराविमाण० ।

भावार्थ-५१ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे (पृथ्वीकायिक) ज्योतिषी देवों से आते हैं, तो चन्द्र-विमान यावत् तारा-विमान से आते हैं ?

५१ उत्तर-हे गौतम ! वे चन्द्र-विमान से यावत् तारा-विमान से आते हैं।

५२ प्रश्न-जोइसियदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु० ?

५२ उत्तर-लद्धी जहा असुरकुमाराणं । णवरं एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता । तिण्णि णाणा, तिण्णि अण्णाणा णियमं । ठिई जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण पलिओवमं वाससयसहस्सअब्भहियं । एवं अणुबंधो वि । कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्से णं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवइयं० । एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, णवरं ठिइं कालादेसं च जाणेज्जा ।

भावार्थ-५२ प्रश्न-हे भगवन् ! जो ज्योतिषी देव, पृथ्वीकायिक जीवों में आवें,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तो, कितने काल की स्थिति वाले पृथ्वीकायिक में आते हैं ?

५२ उत्तर-हे गौतम ! यहां भी असुरकुमारों की वक्तव्यता के समान है। विशेषता यह है कि इनमें एकमात्र तेजोलेश्या होती है। तीन ज्ञान अथवा तीन अज्ञान नियम से होते हैं। स्थिति जघन्य पल्योपम का आठवां भाग और उत्कृष्ट एक लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम होती है, इसी प्रकार अनुबन्ध भी होता है। संवेध-कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पल्योपम का आठवाँ भाग और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष अधिक एक पल्योपम तथा एक लाख वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है। इसी प्रकार शेष आठ गमक भी है, परन्तु स्थिति और कालादेश जानना चाहिये।

विवेचन-ज्योतिषी देवों में तीन ज्ञान और तीन अज्ञान नियम से कहे गये हैं। इसका कारण यह है कि ज्योतिषी देवों में असंज्ञी नहीं आते। जो सम्यग्दृष्टि संज्ञी आते हैं, तो उनके उत्पत्ति के समय ही मत्यादि तीन ज्ञान होते हैं और मिथ्यादृष्टि संज्ञी आते हैं तो उनके मत्यादि तीन अज्ञान होते हैं।

पल्योपम के आठवें भाग की जो जघन्य स्थिति कही गई है, वह तारा-विमानवासी देव और देवी की अपेक्षा समझनी चाहिये और एक लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम की जो उत्कृष्ट स्थिति कही गई हैं, वह चन्द्र-विमानवासी देवों की अपेक्षा समझनी चाहिये।

५३ प्रश्न-जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणिय०, कप्पाईयवेमाणिय० ?

५३ उत्तर-गोयमा ! कप्पोवगवेमाणिय०, णो कप्पाईयवेमाणिय०।

भावार्थ-५३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे (पृथ्वीकायिक) वैमानिक देवों से आते हैं, तो कल्पोपपन्नक वैमानिक देवों से आते हैं, या कल्पातीत से ?

५३ उत्तर-हे गौतम ! वे कल्पोपपन्नक वैमानिक देवों से आते हैं, कल्पातीत से नहीं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५४ प्रश्न-जइ कप्पोवगवेमाणिय० किं सोहम्मकप्पोवगवेमाणिय० जाव अच्चुयकप्पोवगवेमाणिय० ?

५४ उत्तर-गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणिय०, ईसाणकप्पोवगवेमाणिय०, णो सणंकुमार० जाव णो अच्चुयकप्पोवगवेमाणिय० ।

भावार्थ-५४ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे कल्पोपपन्नक वैमानिक देवों से आते हैं, तो क्या सौधर्मकल्पोपपन्नक यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक से आते हैं ?

५४ उत्तर-हे गौतम ! सौधर्म और ईशानकल्पोपपन्नक वैमानिक देवों से आते हैं, सनत्कुमार यावत् अच्युत कल्पोपपन्नक से नहीं आते ।

५५ प्रश्न-सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइय० ?

५५ उत्तर-एवं जहा जोइसियस्स गमगो । णवरं ठिई अणुबंधो य जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं-एवइयं कालं०, एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, णवरं ठिइं कालादेसं च जाणेज्जा ।

भावार्थ-५५ प्रश्न-हे भगवन् ! सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव, जो पृथ्वीकायिक में आता है, तो वह कितने काल की स्थिति में आता है ?

५५ उत्तर-हे गौतम ! ज्योतिषी देवों के गमक के समान, स्थिति और अनुबन्ध जघन्य एक पल्योपम और उत्कृष्ट दो सागरोपम । संवेध-कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक एक पल्योपम और उत्कृष्ट बाईस हजार वर्ष अधिक दो सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है । इसी प्रकार शेष आठ

गमक भी हैं। स्थिति और कालादेश पहले से भिन्न जानना चाहिये।

५६ प्रश्न-ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ?

५६ उत्तर-एवं ईसाणदेवेण वि णव गमगा भाणियव्वा। णवरं ठिई अणुबंधो जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव विहरइ ❀

॥ चउवीसइमे सए दुवालसमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-५६ प्रश्न-ईशानकल्पोपपन्नक देव जो पृथ्वीकायिकों में आवें, तो ?

५६ उत्तर-इस विषय में भी पूर्ववत् नौ गमक हैं, स्थिति और अनुबन्ध जघन्य सातिरेक पल्योपम और उत्कृष्ट सातिरेक दो सागरोपम, शेष पूर्ववत्।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-सौधर्म देवलोक से बारहवें अच्युत देवलोक तक के देव 'कल्पोपपन्नक' कहलाते हैं। इससे आगे के देव 'कल्पातीत' कहलाते हैं। सौधर्म और ईशान देवलोक से चव कर जीव पृथ्वीकाय में उत्पन्न हो सकता है। इससे आगे के देवलोकों से चव कर आया हुआ जीव, पृथ्वीकायादि में उत्पन्न नहीं होता। इसके गमकों की व्याख्या पूर्ववत् जाननी चाहिये।

॥ चौबीसवें शतक का बारहवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक १३

अप्कायिक जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न–आउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर–एवं जहेव पुढविकाइयउद्देसए जाव–

प्रश्न–पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जि· त्तए से णं भंते ! केवइ० ?

उत्तर–गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं सत्तवास· सहस्सट्ठिइएसु उववज्जेज्जा एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो । णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा. सेसं तहेव ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए तेरसमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! अप्कायिक जीव कहाँ से आते हैं, इत्यादि ?

१ उत्तर–सभी वक्तव्यता पृथ्वीकायिक उद्देशक के अनुसार जाननी चाहिये, यावत्–

प्रश्न–हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, जो अप्कायिक में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले अप्कायिक में होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्थिति वाले अप्कायिक में उत्पन्न होता है। यह सम्पूर्ण उद्देशक पृथ्वीकायिक उद्देशक के समान है। स्थिति और संवेध यथायोग्य, शेष पूर्ववत्।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है'— कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ चौबीसवें शतक का तेरहवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक १४

तेउकायिक जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न—तेउकाइया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति?

१ उत्तर—एवं जहेव पुढविकाइयउद्देसगसरिसो उद्देसो भाणियव्वो। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा, देवेहिंतो ण उववज्जंति, सेसं तं चेव।

❀ 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति जाव विहरइ ❀

॥ चउवीसइमे सए चोद्दसमो उद्देसो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! तेजस्कायिक जीव कहां से आ कर उत्पन्न होते है, इत्यादि ?

१ उत्तर-इनकी उत्पत्ति भी पृथ्वीकायिक उद्देशक के समान है । स्थिति और संवेध पूर्व से भिन्न है । तेजस्कायिक जीव, देवों से नहीं आते, शेष पूर्ववत् ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते है ।

विवेचन-कोई भी देव चव कर तेजस्काय में उत्पन्न नहीं होता । तेजस्काय की आयु जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन अहोरात्रि है ।

॥ चौबीसवें शतक का चौदहवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक १५

वायुकायिक जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-वाउकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं जहेव तेउकाइयउद्देसओ तहेव । णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए पण्णरसमो उद्देसो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! वायुकायिक जीव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं, इत्यादि ?

१ उत्तर-तेजस्कायिक उद्देशक के अनुसार। स्थिति और संवेध तेजस्कायिक से भिन्न समझना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-देवों से चव कर आया हुआ जीव, वायुकायिक जीवों में, उत्पन्न नहीं होता। वायुकाय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष की है। शेष पूर्ववत्।

॥ चौबीसवें शतक का पन्द्रहवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक १६

वनस्पतिकायिक जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-वणस्सइकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं पुढविकाइयसरिसो उद्देसो। णवरं जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएसु उववज्जइ ताहे पढम-बिइय चउत्थ-पंचमेसु गमएसु परिमाणं अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति। भवा-

देसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं-एवइयं०। सेसा पंच गमा अट्ठभवग्गहणिया तहेव। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा।

❀ 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए सोलसमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन्! वनस्पतिकायिक जीव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं, इत्यादि?

१ उत्तर-पृथ्वीकायिक उद्देशक के समान, विशेष यह कि जब वनस्पतिकायिक जीव, वनस्पतिकायिक जीवों में उत्पन्न होते हैं, तब पहले, दूसरे, चौथे और पांचवें गमक में 'प्रतिसमय निरन्तर अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं।' भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट अनन्त भव तथा कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अनन्तकाल तक यावत् गमनागमन करते हैं। शेष पांच गमकों में उसी प्रकार आठ भव जानने चाहिये। स्थिति और संवेध पहले से भिन्न जानना चाहिये।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-वनस्पतिकाय के जीवों का वनस्पतिकाय में उद्वर्तन और उत्पाद अनन्त है, दूसरी कायों का नहीं। क्योंकि दूसरी सभी कायों के जीव असंख्यात ही हैं। इसलिये उनका उद्वर्तन और उत्पाद असंख्यात का ही होता है, अनन्त का नहीं। वनस्पति के पहले दूसरे, चौथे और पांचवें गमक की स्थिति उत्कृष्ट नहीं होने से अनन्त उत्पन्न होते हैं। शेष पांच गमकों की उत्कृष्ट स्थिति होने से उनमें एक, दो या तीन इत्यादि रूप से भी उत्पन्न होते हैं। पहले, दूसरे, चौथे और पांचवें गमक की स्थिति उत्कृष्ट नहीं होने के

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कारण ही उनमें भवादेश से उत्कृष्ट अनन्त भव और कालादेश से अनन्त काल है। शेष पाँच गमकों में उत्कृष्ट स्थिति होने से भवादेश से उत्कृष्ट आठ भव और कालादेश से उत्कृष्ट ८०००० वर्ष होते हैं। सर्व गमकों में जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति प्रतीत ही है अर्थात् जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट १०००० वर्ष है। संवेध-तीसरे और सातवें गमक में जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट आठ भव की अपेक्षा ८०००० वर्ष है। छठे और आठवें गमक में जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक १०००० वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक ४०००० वर्ष है। नौवें गमक में जघन्य २०००० वर्ष और उत्कृष्ट ८०००० वर्ष होता है।

॥ चौबीसवें शतक का सोलहवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक १७

बेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-बेइंदिया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? जाव पुढविकाइए णं भंते! जे भविए बेइंदिएसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवइ०?

१ उत्तर-सच्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं-एवइयं०। एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पंचसु तहेव अट्ठ भवा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवं जाव चउरिंदिएणं समं चउसु संखेज्जा भवा, पंचसु अट्ठ भवा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु समं तहेव अट्ठ भवा। देवेसु ण चेव उववज्जंति, ठिइं संवेहं च जाणेज्जा।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए सत्तरसमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं, इत्यादि यावत् हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव यदि बेइन्द्रिय में उत्पन्न हों, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! पूर्वोक्त (पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने योग्य) पृथ्वीकायिक की वक्तव्यता के समान, यावत् भवादेश से जघन्य दो भव, उत्कृष्ट संख्यात भव कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट संख्यात काल तक यावत् गमनागमन करते हैं। जिस प्रकार पृथ्वीकायिक के साथ में बेइन्द्रिय का संवेध कहा गया है, उसी प्रकार पहला, दूसरा, चौथा और पाँचवां, इन चार गमकों में संवेध जानना चाहिये। शेष पाँच गमकों में उसी प्रकार आठ भव होते हैं। इसी प्रकार अप्कायिक से ले कर यावत् चतुरिन्द्रियों के साथ चार गमकों में संख्यात भव और शेष पाँच गमकों में आठ भव जानने चाहिये। तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्यों के साथ सभी गमकों में आठ भव जानने चाहिए। देवों से चव कर आया हुआ जीव, बेइन्द्रिय जीवों में उत्पन्न नहीं होता। स्थिति और संवेध पहले से भिन्न है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-पृथ्वीकायिक जीव के पृथ्वीकायिक जीव में ही उत्पन्न होने की वक्तव्यता के समान बेइन्द्रिय में उत्पन्न होने के विषय में भी जानना चाहिये तथा पृथ्वीकायिक जीव का बेइन्द्रिय के साथ जो संवेध कहा गया है, वही अप्काय, तेउकाय,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय के साथ जानना चाहिये। अर्थात् पहले, दूसरे, चौथे और पाँचवें गमक में उत्कृष्ट संख्यात भव और शेष पाँच गमकों में उत्कृष्ट आठ भव जानने चाहिये। कालादेश में पृथ्वीकायिकादि की जो स्थिति हो, उसे बेइन्द्रिय की स्थिति के साथ जोड़ कर संवेध जानना चाहिए। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्यों के साथ बेइन्द्रिय के पूर्ववत् सभी गमकों में उत्कृष्ट आठ-आठ भव होते हैं।

॥ चौबीसवें शतक का सतरहवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक १८

तेइन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-एवं तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाणं उद्देसो । णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा । तेउक्काइएसु समं तइयगमे उक्कोसेणं अट्ठुत्तराइं बेराइंदियसयाइं, बेइंदिएहिं समं तइयगमे उक्कोसेणं अडयालीसं संवच्छराइं छण्णउयराइंदियसयमब्भहियाइं, तेइंदिएहिं समं तइयगमे उक्कोसेणं बाणउयाइं तिण्णि राइंदियसयाइं । एवं सव्वत्थ जाणेज्जा जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'सण्णिमणुस्स' त्ति ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए अट्ठारसमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! तेइन्द्रिय जीव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-बेइन्द्रिय उद्देशक के समान। विशेष में स्थिति और संवेध बेइन्द्रिय से भिन्न समझना चाहिये। तेजस्कायिकों के साथ तेइन्द्रियों का संवेध तीसरे गमक में उत्कृष्ट २०८ रात्रि-दिवस का और बेइन्द्रियों के साथ तीसरे गमक में उत्कृष्ट १९६ रात्रि-दिवस अधिक ४८ वर्ष होता है। तेइन्द्रियों के साथ तीसरे गमक में उत्कृष्ट ३९२ रात्रि-दिवस होता है। इस प्रकार यावत् संज्ञी मनुष्य तक सर्वत्र जानना चाहिये।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-तेइन्द्रिय जीवों में उत्पन्न होने वाले जीवों की स्थिति और तेइन्द्रिय जीवों की स्थिति को मिला कर संवेध कहना चाहिये। तेजस्कायिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति तीन रात्रि-दिवस है। उसे चार भवों के साथ गुणा करने पर बारह रात्रि दिवस होते हैं। तेइन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति ४९ रात्रि-दिवस है। उनको चार भवों के साथ गुणा करने से १९६ रात्रि-दिवस होते हैं। इन दोनों राशि को जोड़ने से २०८ रात्रि-दिवस होते हैं। यह तेजस्कायिक का तेइन्द्रिय के साथ तीसरे गमक का संवेध काल है।

बेइन्द्रिय का संवेध चार भव की अपेक्षा ४८ वर्ष होते हैं और तेइन्द्रिय के चार भव का संवेध १९६ रात्रि-दिवस होता है। दोनों को मिलाने से १९६ रात्रि-दिवस अधिक ४८ वर्ष, बेइन्द्रिय के साथ तेइन्द्रिय का तीसरे गमक का संवेध काल होता है। तेइन्द्रिय का तेइन्द्रिय के साथ संवेध काल आठ भव का ३९२ रात्रि-दिवस होता है। इस प्रकार चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी तिर्यंच, संज्ञी तिर्यंच, असंज्ञी मनुष्य और संज्ञी मनुष्य के साथ तीसरे गमक का संवेध काल जानना चाहिये। तीसरे गमक के संवेध काल के अनुसार छठे आदि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गमकों का संवेध काल सूचित किया हुआ समझना चाहिये, क्योंकि उनमें भी आठ भव होते हैं। एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियों के साथ प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ और पंचम-इन चार गमकों का संवेध भवादेश से संख्यात भव और कालादेश से संख्यात काल जानना चाहिये।

॥ चौबीसवें शतक का अठारहवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक १९

चौरिन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-चउरिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-जहा तेइंदियाणं उद्देसओ तहेव चउरिंदियाण वि। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए एगूणवीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! चौरिन्द्रिय जीव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार तेइन्द्रिय का उद्देशक कहा, उसी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकार चौरिन्द्रियों के विषय में भी है, स्थिति और संवेध तेइन्द्रियों से भिन्न है।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'- कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ चौबीसवें शतक का उन्नीसवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक २४ उद्देशक २०

पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की उत्पत्ति

१ प्रश्न-पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं णेरइएहिंतो०, तिरिक्ख०, मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख०, मणुस्सेहिंतो वि०, देवेहिंतो वि उववज्जंति।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक जीव, कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य या देव से आ कर उत्पन्न

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! वे नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य और देव से भी आकर उत्पन्न होते हैं।

२ प्रश्न-जइ णेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति ?

२ उत्तर-गोयमा ! रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविणेरइएहिंतो० ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे नैरयिक से आते हैं, तो क्या रत्नप्रभापृथ्वी के नैरयिक से यावत् अधःसप्तम पृथ्वी के नैरयिक से आते हैं ?

२ उत्तर-हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिक यावत् अधःसप्तम पृथ्वी के नैरयिक से आते हैं।

३ प्रश्न-रयणप्पभापुढविणेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिक, जो पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होते है, वह कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होता हैं।

४ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?

४ उत्तर-एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया। णवरं संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकंता जाव परिणमंति। ओगाहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणिओ छच्चंगुलाइं। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! असुरकुमार की वक्तव्यतानुसार। किन्तु रत्नप्रभा के नैरयिकों के संहनन में अनिष्ट, अकान्त यावत् पुद्गल परिणमन होता है। अवगाहना दो प्रकार की-भवधारणीय और उत्तरवैक्रिय। भवधारणीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट सात धनुष, तीन हाथ और छह अंगुल की होती है। उत्तरवैक्रिय अवगाहना जघन्य अंगुल के संख्यातवें भाग और उत्कृष्ट पन्द्रह धनुष ढाई हाथ की होती है।

५ प्रश्न-तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किं संठिया पण्णत्ता ?

५ उत्तर-गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता । तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता । एगा काउलेस्सा पण्णत्ता । समुग्घाया चत्तारि । णो इत्थिवेयगा, णो पुरिसवेयगा, णपुंसगवेयगा । ठिई जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं । एवं अणुबंधो वि, सेसं तहेव । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! उन जीवों के शरीर किस संस्थान वाले होते हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! उनके शरीर दो प्रकार के कहे गये हैं-१ भवधारणीय शरीर और २ उत्तरवैक्रिय । दोनों प्रकार के शरीर केवल हुण्डक संस्थान वाले होते हैं । लेश्या एक कापोत और समुद्घात चार होती हैं । वे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी नहीं होते, मात्र नपुंसकवेदी होते हैं । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक सागरोपम होता है । शेष पूर्ववत् । भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तथा कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करते हैं १ ।

६-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु०, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु०, अवसेसं तहेव । णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं तहेव, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइय कालं० २ । एवं सेसा वि

सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव णेरइयउद्देसए सण्णिपंचिंदिएहिं समं । णेरइयाणं मज्झिमएसु य तिसु वि गमएसु पच्छिमएसु तिसु वि गमएसु ठिइणाणत्तं भवइ, सेसं तं चेव। सव्वत्थ ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९।

भावार्थ-६-यदि वह रत्नप्रभा नैरयिक, जघन्य काल की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होता है, शेष पूर्ववत्। विशेष यह कि कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है २। इसी प्रकार शेष सात गमक, नैरयिक उद्देशक में संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के साथ बतलाये, उसी प्रकार यहाँ भी जानने चाहिये। मध्य के तीन गमक और अन्तिम तीन गमकों में स्थिति और अनुबंध की विशेषता है, शेष पूर्ववत्। सर्वत्र स्थिति और संवेध उपयोग पूर्वक जानना चाहिये ३-९।

७ प्रश्न-सक्करप्पभापुढविणेरइए णं भंते ! जे भविए० ?

७ उत्तर-एवं जहा रयणप्पभाए णव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि। णवरं सरीरोगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे। तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा णियमं। ठिई अणुबंधा पुव्वभणिया। एवं णव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा, एवं जाव छट्ठपुढवी। णवरं ओगाहणा लेस्सा ठिई अणुबंधो संवेहो य जाणियव्वा।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! शर्कराप्रभा का नैरयिक, जो पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में आता है, इत्यादि ?

७ उत्तर-रत्नप्रभा के नौ गमकवत्। शरीर की अवगाहना प्रज्ञापना सूत्र के इक्कीसवें 'अवगाहना संस्थान पद' के अनुसार। तीन ज्ञान और तीन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अज्ञान नियम से। स्थिति और अनुबन्ध पूर्ववत् । इस प्रकार नौ गमक उपयोग-पूर्वक जानना चाहिये, इसी प्रकार यावत् छठी नरक पृथ्वी तक जानना चाहिये, परन्तु अवगाहना, लेश्या, स्थिति, अनुबन्ध और संवेध यथायोग्य भिन्न-भिन्न जानना चाहिये ।

८ प्रश्न-अहेसत्तमपुढविणेरइए णं भंते ! जे भविए० ?

८ उत्तर-एवं चेव णव गमगा । णवरं ओगाहणा-लेस्सा-ठिई-अणुबंधा जाणियव्वा। संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छब्भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं० । आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं । लद्धी णवसु वि गमएसु जहा पढमगमए। णवरं ठिईविसेसो कालादेसो य बिइयगमएसु जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं-एवइयं कालं । तइयगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं । चउत्थगमे जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्व-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कोडीहिं अब्भहियाइं। पंचमगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। छट्ठगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुमत्तब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। अट्ठमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। णवमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं० ९।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! अधःसप्तम नरक पृथ्वी का नैरयिक, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में आवे, तो कितने काल की स्थिति में आता है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् नौ गमक जानने चाहिये, विशेष यह है कि अवगाहना, लेश्या, स्थिति और अनुबन्ध विचार कर कहना चाहिये। संवेध-भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट छह भव तथा कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। प्रथम के छह गमकों में जघन्य दो भव और उत्कृष्ट छह भव तथा अन्तिम तीन गमकों में जघन्य दो भव और उत्कृष्ट चार भव जानना चाहिये। नौ गमकों में लब्धि प्रथम गमक के समान। दूसरे गमक में स्थिति की विशेषता है तथा कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त

अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन अन्तर्मुहूर्त अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। तीसरे गमक में जघन्य पूर्वकोटि अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम, चौथे गमक में जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम। पंचम गमक में जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन अन्तर्मुहूर्त अधिक ६६ सागरोपम। छठे गमक में जघन्य पूर्वकोटि अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम। सातवें गमक में जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम और उत्कृष्ट दो पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम। आठवें गमक में जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागरोपम और उत्कृष्ट दो अन्तर्मुहूर्त अधिक ६६ सागरोपम। नौवें गमक में जघन्य पूर्वकोटि तेतीस सागरोपम और उत्कृष्ट दो पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम काल तक यावत् गमनागमन करता है।

विवेचन–नरक से निकले हुए जीव असंख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच आदि में नहीं आते, वे पूर्वकोटि तक की आयु वाले में आते हैं।

पृथ्वीकायिक जीवों में आने वाले असुरकुमार के परिमाण आदि की जो वक्तव्यता कही है, वही पंचेन्द्रिय तिर्यंच में आने वाले नैरयिक के विषय में जाननी चाहिये। उत्पत्ति के समय नैरयिक की जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग होती है। प्रथम नरक में उत्कृष्ट अवगाहना सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल कही, वह तेरहवें प्रस्तट (पाथड़ा) की अपेक्षा समझनी चाहिये। प्रथम प्रस्तटादि में तो अवगाहना का क्रम इस प्रकार है–

"रयणाइ पढमपयरे, हत्थतियं देहउस्सयं भणियं।
छप्पन्नंगुलसड्ढा पयरे पयरे य वुड्ढीओ॥"

अर्थात् रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम प्रस्तट में तीन हाथ की अवगाहना होती है और आगे के प्रत्येक प्रस्तट में क्रमशः साढ़े छप्पन अंगुल की वृद्धि होती जाती है। इस क्रम से तेरहवें प्रस्तट के नैरयिक की अवगाहना सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल होती है। यह भवधारणीय अवगाहना है। नैरयिक में जितनी भवधारणीय अवगाहना होती है, उससे दुगुनी उत्तरवैक्रिय अवगाहना होती है।

यहाँ मूल में दो गमकों में स्थिति आदि का कथन किया गया है। इससे आगे सात

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गमकों में स्थिति आदि का कथन इसी शतक के प्रथम उद्देशक में संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच के साथ नैरयिक जीवों के समान है।

सात नरकों की अवगाहना का कथन प्रज्ञापना सूत्र के इक्कीसवें पद में इस प्रकार है-

सत्त धणु तिण्णि रयणी, छच्चेव य अंगुलाइं उच्चत्तं।
पढमाए पुढवीए बिउणा बिउणं च सेसासु॥

अर्थात्-प्रथम नरक में अवगाहना सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल होती है। आगे दूसरी आदि नरकों में क्रमशः दुगुनी-दुगुनी अवगाहना होती है।

दूसरी आदि नरकों में संज्ञी जीव ही उत्पन्न होते हैं। इसलिये उनमें तीन ज्ञान या तीन अज्ञान नियम से होते हैं।

उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम का जो कथन किया गया है, वह भव और काल की बहुलता की विवक्षा से किया गया है। यह संवेध जघन्य स्थिति वाले सप्तम पृथ्वी के नैरयिक में पाया जाता है, क्योंकि सातवीं नरक में तीन भवों की जघन्य स्थिति ६६ सागरोपम होती है और पंचेंद्रिय तिर्यंच के तीन भवों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पूर्वकोटि होती है। यदि उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की आयु वाला नैरयिक हो और पूर्वकोटि के आयु वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में आवे, तो इस प्रकार दो बार ही उत्पत्ति होती है। इससे दो पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम ही स्थिति होती है, तिर्यंच-भव सम्बन्धी तीसरे पूर्वभव की कोटि नहीं होती। इस प्रकार भव और काल की उत्कृष्टता नहीं होती।

९ प्रश्न-जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो० ?

९ उत्तर-एवं उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव-

भावार्थ-९ प्रश्न-यदि वह संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, तिर्यंच-योनिक से आता है, तो क्या एकेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक से आता है, इत्यादि ?

९ उत्तर-पृथ्वीकायिक उद्देशक के अनुसार यहाँ उपपात जानना चाहिये। यावत्-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१० प्रश्न-पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

१० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जंति ।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, जो पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक में उत्पन्न होता है ।

११ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

११ उत्तर-एवं परिमाणाइया अणुबंधपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा । णवरं णवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । भवादेसेण वि णवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, सेसं तं चेव । कालादेसेणं उभओ ठिईए करेज्जा ।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! वे पृथ्वीकायिक जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि ?

११ उत्तर-परिमाण से ले कर अनुबन्ध तक स्वयं के स्व स्थान की वक्तव्यता के अनुसार जाननी चाहिये । परन्तु नौ गमकों में परिमाण जघन्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात आते हैं। संवेध-भवादेश से नौ गमक में जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव, शेष पूर्ववत्। काला-देश से दोनों की स्थिति को जोड़ कर संवेध-जानना चाहिये।

१२ प्रश्न-जइ आउकाइएहिंतो उववज्जंति० ?

१२ उत्तर-एवं आउकाइयाण वि। एवं जाव चउरिंदिया उववाएयव्वा। णवरं सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा। णवसु वि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उभओ ठिइं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु। जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणाणं लद्धी तहेव सव्वत्थ ठिइं संवेहं च जाणेज्जा।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच अप्कायिक जीवों से आता है, इत्यादि पूर्ववत् ?

१२ उत्तर-इसी प्रकार यावत् चौरिन्द्रिय पर्यंत उपपात जानना चाहिये, परंतु वक्तव्यता सर्वत्र अपनी-अपनी कहनी चाहिये। नौ गमकों में भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव, कालादेश से दोनों की स्थिति को जोड़ना चाहिये। पृथ्वीकायिक में आने वाले जीव की वक्तव्यता के अनुसार सभी गमकों में सभी जीवों के विषय में जानना चाहिये और स्थिति और संवेध सर्वत्र भिन्न-भिन्न यथायोग्य जानना चाहिये।

१३ प्रश्न-जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदिय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?

१३ उत्तर-गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय०, भेओ जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स जाव-

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से ही आता है, तो क्या संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आता है या असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! वह दोनों प्रकार के पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आता है, इत्यादि पृथ्वीकायिक में आने वाले तिर्यंच के भेद के अनुसार यावत्-

१४ प्रश्न-असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० ?

१४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं०, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जंति ।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन् ! असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में आता है, तो कितने काल की स्थिति में आता है ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक में आता है ।

१५ प्रश्न-ते णं भंते !० ?

१५ उत्तर-अवसेसं जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव णिरवसेसं जाव 'भवादेसो' त्ति कालादेसेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं एवइयं० १। बिइयगमए एस चेव लद्धी। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडिओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहिया-एवइयं० २।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच एक समय में कितने आते हैं० ?

१५ उत्तर--पृथ्वीकायिक में आने वाले असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच की वक्तव्यता के समान यावत् भवादेश पर्यंत। कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग तक यावत् गमनागमन करता है १। दूसरे गमक में भी इसी प्रकार, परन्तु कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि काल तक यावत् गमनागमन करता है २।

१६-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिईएसु उववज्जंति।

प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

उत्तर-एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव णिरवसेसं जाव 'कालादेसो' त्ति। णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति, सेसं तं चेव ३।

भावार्थ-१६-यदि वह असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों में आता है।

भावार्थ-प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं० ?

उत्तर-रत्नप्रभा पृथ्वी में आने वाले असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के अनुसार यावत् कालादेश पर्यंत। परिमाण-जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात, शेष पूर्ववत् ३।

१७-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जंति।

प्रश्न-ते णं भंते !०

उत्तर-अवसेसं जहा एयस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव 'अणुबंधो' त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ४।

भावार्थ-१७-यदि वह स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष की स्थिति वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में आता है।

प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने आते हैं, इत्यादि ?

उत्तर-जिस प्रकार पृथ्वीकायिक में आने वाले जघन्य स्थिति वाले असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के मध्य के तीन गमकों का कथन किया है, उसी प्रकार यहां भी तीनों ही गमकों में यावत् अनुबन्ध तक जानना चाहिये। भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव तथा कालादेश से जघन्य दो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है ४।

१८-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अट्ठ अंतोमुहुत्ता-एवइयं० ५।

भावार्थ-१८ यदि वह असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच, जघन्य काल की स्थिति वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो इसी प्रकार है। कालादेश से जघन्य दो अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट आठ अंतर्मुहूर्त तक यावत् गमनागमन करता है।

१९-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुव्वकोडिआउएसु उववज्जइ-एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जाणेज्जा ६।

भावार्थ-१९यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक में आता हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि वर्ष की स्थिति में आता है। यहां भी पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये। कालादेश इस से भिन्न जानना चाहिये ६।

२०-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया। णवरं ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतो·

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडि-पुहुत्तमब्भहियं-एवइयं० ७।

भावार्थ-२० यदि वह स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो, तो प्रथम गमक के अनुसार। स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि, शेष पूर्ववत्। कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग तक यावत् गमनागमन करता है ७।

२१-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया जहा सत्तमगमे। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्त-मब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भ-हियाओ-एवइयं० ८।

भावार्थ-१९ यदि वह स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला, जघन्य काल की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो भी सातवें गमक की वक्तव्यता के समान है। कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि ८।

२२-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागं, एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स णवमगमए तहेव णिरवसेसं जाव 'कालादेसो' त्ति। णवरं परिमाणं जहा एयस्सेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तइयगमे, सेसं तं चेव ९।

भावार्थ-२२-यदि वह उत्कृष्ट स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में आता हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है, इत्यादि रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय सम्बन्धी नौवें गमक की वक्तव्यता के समान, यावत् कालादेश पर्यन्त। परिमाण तीसरे गमक के अनुसार, शेष पूर्ववत् ९।

२३ प्रश्न-जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउय० असंखेज्जवासाउय० ?

२३ उत्तर-गोयमा ! संखेज्ज०, णो असंखेज्ज०।

भावार्थ-२३ प्रश्न-यदि वह संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच जीव, संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले या असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच से उत्पन्न होता है ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! वह संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होता है, असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले तिर्यंच में से नहीं।

२४ प्रश्न-जइ संखेज्ज० जाव किं पज्जत्तसंखेज्ज०, अपज्जत्तसंखेज्ज० ?

२४ उत्तर-दोसु वि।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच में से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो पर्याप्त या अपर्याप्त संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

२४ उत्तर-हे गौतम ! वे दोनों में से आ कर उत्पन्न होते हैं।

२५ प्रश्न-संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ०?

२५ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं०, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिइएसु उववज्जेज्जा।

भावार्थ-२५ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच जीव, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है।

२६ प्रश्न-ते णं भंते !० ?

२६ उत्तर-अवसेसं जहा एयस्स चेव सण्णिस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए। णवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तं चेव जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं-एवइयं० १।

भावार्थ-२६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि ?

२६ उत्तर-रत्नप्रभा में उत्पन्न होने वाले इस संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच के

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम गमक के समान। अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक हजार योजन, शेष पूर्ववत्, यावत् भवादेश पर्यन्त। कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम काल तक यावत् गमनागमन करता है १।

२७-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २।

भावार्थ-२७-यदि वही जीव जघन्य काल की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो भी पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार। कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि २।

२८-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जइ-एस चेव वत्तव्वया। णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, सेसं तं चेव जाव 'अणुबंधो' त्ति। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ३।

भावार्थ-२८-यदि वही जीव उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है, इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार। परिमाण जघन्य एक, दो और तीन, उत्कृष्ट संख्यात जीव उत्पन्न होते हैं। अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट एक हजार योजन, शेष पूर्ववत्, यावत् अनुबन्ध पर्यन्त भवादेश से दो भव और कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक तीन पल्योपम और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम ३।

२९-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जइ। लद्धी से जहा एयस्स चेव सण्णिपंचिंदियस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा। संवेहो जहेव एत्थ चेव असण्णिस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु ६।

भावार्थ-२९-यदि वह संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच स्वयं जघन्य स्थिति वाला हो (और संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो) तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है। इस विषय में पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले इसी संज्ञी पञ्चेन्द्रिय की वक्तव्यता के अनुसार यहाँ मध्य के तीन (चौथा, पाँचवाँ, छठा) गमक जानना चाहिये और पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय के बीच के तीन गमक में जो संवेध कहा है, उसी प्रकार यहां भी जानना चाहिये ६।

३०-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ जहा पढमगमओ। णवरं ठिई अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं ७ ।

भावार्थ-३० यदि वह स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो, तो प्रथम गमक के समान । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि । कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम ७ ।

३१-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया । णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८ ।

भावार्थ-३१ यदि वही उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच, जघन्य स्थिति वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो भी पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार । कालादेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट चार अंतर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि ८ ।

३२-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठिईएसु, अवसेसं तं चेव । णवरं परिमाणं ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं ९ ।

भावार्थ-३२ यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति में उत्पन्न होता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

है, शेष पूर्ववत् । परिमाण और अवगाहना तीसरे गमक के अनुसार । भवादेश से दो भव तथा कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है ९ ।

विवेचन--पृथ्वीकायिक जीव, पृथ्वीकायिक में उत्पन्न हो, तो प्रति-समय असंख्यात उत्पन्न होते हैं, किन्तु पृथ्वीकायिक यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात या असंख्यात उत्पन्न होते हैं । संवेध--नौ गमकों में उत्कृष्ट आठ भव होते हैं ।

सर्वत्र अप्कायिक से ले कर चौरिन्द्रिय तक से निकल कर पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने में परिमाणादि का कथन अपना-अपना करना चाहिये ।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच से निकल कर असंख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच जीवों में उत्पन्न हो सकता है ।

जिस प्रकार परिमाणादि का कथन पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी के पृथ्वीकायिक उद्देशक में किया, उसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी का भी करना चाहिये । इसका उत्कृष्ट कालादेश पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम का असंख्यातवां भाग कहा है क्योंकि पूर्वकोटि की स्थिति वाला असंज्ञी पूर्वकोटि की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में सात बार उत्पन्न हुआ और आठवें भव में पल्योपम के असंख्यातवें भाग की स्थिति वाले युगलिकों में उत्पन्न हुआ, इस प्रकार पूर्वोक्त कालादेश बनता है ।

असंख्यात वर्ष की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच संख्यात ही हैं, इसलिये वे उत्कृष्ट रूप से भी संख्यात ही उत्पन्न होते हैं, असंख्यात नहीं ।

जघन्य स्थिति वाला असंज्ञी, संख्यात वर्ष की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में ही उत्पन्न होता है । इसलिये चौथे गमक में कहा है कि--'उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में ही उत्पन्न होता है,' इत्यादि नौ गमक विचारपूर्वक कहना चाहिये ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच से आता हो, तो भी पूर्वोक्त प्रकार से जानना चाहिये, किन्तु वह तीन पल्योपम की स्थिति तक में उत्पन्न हो सकता है । पहले और सातवें गमक में उत्कृष्ट कालादेश सात पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम होता है । तीसरे और नौवें गमक में उत्कृष्ट संख्यात ही उत्पन्न होते हैं और भव दो ही होते हैं । अतः दो भव का ही कालादेश कहना चाहिये । शेष गमक में युगलिक नहीं होते । अतः समझपूर्वक स्थिति जाननी चाहिये ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३३ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सण्णिमणु०, असण्णिमणु० ?

३३ उत्तर-गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो वि, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति ।

भावार्थ-३३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्यों से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो क्या संज्ञी मनुष्य से या असंज्ञी मनुष्य से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

३३ उत्तर-हे गौतम ! वे संज्ञी और असंज्ञी दोनों प्रकार के मनुष्य से आ कर उत्पन्न होते हैं ।

३४ प्रश्न-असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० ?

३४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जइ । लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स । संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपंचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव णिरवसेसो भाणियव्वो ।

भावार्थ-३४ प्रश्न-हे भगवन् ! असंज्ञी मनुष्य, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

३४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है । पृथ्वीकायिक जीवों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी मनुष्य के प्रथम तीन गमक के अनुसार यहां भी प्रथम के तीन गमक जानना चाहिये । संवेध, असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच के मध्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

के तीन गमक के अनुसार।

३५ प्रश्न-जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो० किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो०, असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ?

३५ उत्तर-गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, णो असंखेज्जवासाउय०।

भावार्थ-३५ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच, संज्ञी मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है, तो क्या संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले मनुष्य से आता है, या असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है ?

३५ उत्तर-हे गौतम ! संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले संज्ञी मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है, असंख्यात वर्ष की आयुष्य के संज्ञी मनुष्य से नहीं।

३६ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउय० किं पज्जत्त०, अपज्जत्त० ?

३६ उत्तर-गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०, अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय०।

भावार्थ-३६ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच, संख्यात वर्ष की आयुष्य वाले मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है, तो क्या पर्याप्त मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है या अपर्याप्त मनुष्य से ?

३६ उत्तर-हे गौतम ! पर्याप्त और अपर्याप्त दोनों प्रकार के मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है।

३७ प्रश्न-सण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ-० ?

३७ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जइ ।

भावार्थ-३७ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयुष्य वाला संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

३७ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति में उत्पन्न होता है ।

३८ प्रश्न-ते णं भंते !० ?

३८ उत्तर-लद्धी से जहा एयस्सेव सण्णिमणुस्सस्स पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव 'भवादेसो' त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं १ ।

भावार्थ-३८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे संज्ञी मनुष्य एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं, इत्यादि ?

३८ उत्तर-पृथ्वीकाय में उत्पन्न होने वाले संज्ञी मनुष्य के प्रथम गमक के समान, यावत् भवादेश पर्यन्त । कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम १ ।

३९-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया । णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-३९-यदि वह संज्ञी मनुष्य जघन्य काल की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो भी पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार। कालादेश से जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट चार अन्तर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि वर्ष २।

४०-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठिईएसु-सच्चेव वत्तव्वया। णवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहुत्तं, उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं। ठिई जहण्णेणं मासपुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं मासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं० ३।

भावार्थ-४०-यदि वही मनुष्य उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है। यहां भी पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये। अवगाहना जघन्य अंगुल-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पाँच सौ धनुष। स्थिति जघन्य मास-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि। इस प्रकार अनुबन्ध भी जानना चाहिए। भवादेश से दो भव तथा कालादेश-जघन्य मास-पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम ३।

४१-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, जहा सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भाणिया एस चेव एयस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु णिरवसेसा भाणियव्वा । णवरं परिमाणं उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति, सेसं तं चेव ६ ।

भावार्थ-४१ यदि वह मनुष्य स्वयं जघन्य स्थिति वाला हो, तो पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच के मध्य के तीन गमक के अनुसार। परिमाण में उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं, शेष पूर्ववत् ४, ५, ६ ।

४२-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया । णवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं । उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं । ठिई अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तहेव जाव भवादेसो त्ति, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं-एवइयं ७ ।

भावार्थ-४२ यदि वह मनुष्य स्वयं उत्कृष्ट स्थिति वाला हो, तो इसके प्रथम गमक की वक्तव्यता जाननी चाहिये, किन्तु अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष होती है । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि, शेष भवादेश पर्यंत उसी प्रकार । कालादेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक तीन पल्योपम ७ ।

४३-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्को-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८।

भावार्थ-४३ यदि वही मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो भी इसी प्रकार। कालादेश से जघन्य अतर्मुहूर्त अधिक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट चार अतर्मुहूर्त अधिक चार पूर्वकोटि ८।

४४-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं ९।

भावार्थ-४४ यदि वही मनुष्य उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है, सातवें गमकवत्। भवादेश से दो भव तथा कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तीन पल्योपम काल तक यावत् गमनागमन करता है ९।

विवेचन-असंज्ञी मनुष्य के विषय में केवल पहला, दूसरा और तीसरा-ये तीन गमक ही कहे हैं, इसका कारण यह है कि असंज्ञी मनुष्य की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त की होने से, तीन गमक ही बनते हैं। शेष छह गमक नहीं बनते।

असंख्यात वर्ष की आयुष्य वाले मनुष्य देव में ही उत्पन्न होते हैं, तिर्यंच आदि में नहीं।

तिर्यंच के तीसरे गमक में अवगाहना और स्थिति के विषय में जो विशेषता बताई गई है, इससे यह स्पष्टता होती है कि अंगुल-पृथक्त्व (दो अंगुल से नौ अंगुल तक) से कम अवगाहना वाला और मास-पृथक्त्व (दो मास से नौ मास तक) से कम स्थिति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वाला मनुष्य, उत्कृष्ट स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न नहीं होता।

संज्ञी मनुष्य के मध्य के तीन गमक के परिमाण में उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं। क्योंकि संज्ञी मनुष्य संख्यात ही हैं, इसलिये वे उत्कृष्ट रूप से भी संख्यात ही उत्पन्न होते हैं।

४५ प्रश्न-जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर०, जोइसिय०, वेमाणियदेवेहिंतो० ?

४५ उत्तर-गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि० जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि०।

भावार्थ-४५ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, देव से आ कर उत्पन्न होता है, तो भवनपति देव से, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, या वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है ?

४५ उत्तर-हे गौतम ! वह भवनपति देव यावत् वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है।

४६ प्रश्न-जइ भवणवासि० किं असुरकुमारभवण० जाव थणियकुमारभवण० ?

४६ उत्तर-गोयमा ! असुरकुमार० जाव थणियकुमारभवण०।

भावार्थ-४६ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह भवनपति देव से आ कर उत्पन्न होता है, तो असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार भवनपति देव से आ कर उत्पन्न होता है ?

४६ उत्तर-हे गौतम ! वह असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार भवनपति देव से आ कर उत्पन्न होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४७ प्रश्न-असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

४७ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जइ। असुरकुमाराणं लद्धी णवसु वि गमएसु जहा पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स, एवं जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवादेसेणं सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं जहण्णेणं दोण्णि भवग्गहणाइं। ठिइं संवेहं च सव्वत्थ जाणेज्जा ९।

भावार्थ-४७ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमार जो पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

४७ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है। उसके नौ गमक में, पृथ्वी-कायिक में उत्पन्न होने वाले असुरकुमार की वक्तव्यतानुसार यावत् ईशान देवलोक पर्यन्त। भवादेश से सर्वत्र जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव होते हैं। स्थिति और संवेध सर्वत्र भिन्न-भिन्न है १ से ९।

४८ प्रश्न-णागकुमारे णं भंते ! जे भविए० ?

४८ उत्तर-एस चेव वत्तव्वया। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। एवं जाव थणियकुमारे ९।

भावार्थ-४८ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि नागकुमार देव, पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले तिर्यंच में उत्पन्न होता है ?

४८ उत्तर-हे गौतम ! यहाँ भी पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार है। स्थिति और संवेध भिन्न है। इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४९ प्रश्न-जइ वाणमंतरेहिंतो० किं पिसाय० ?

४९ उत्तर-तहेव । जाव-

भावार्थ-४९ प्रश्न-यदि वह पंचेंद्रिय तिर्यंच, वाणव्यन्तर से आ कर उत्पन्न होता है, तो क्या पिशाच वाणव्यन्तर से आ कर उत्पन्न होता है, इत्यादि ?

४९ उत्तर-पूर्ववत् ।

५० प्रश्न-वाणमंतरे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख०?

५० उत्तर-एवं चेव, णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९ ।

भावार्थ-५० प्रश्न-हे भगवन् ! वाणव्यन्तर देव, पंचेंद्रियतिर्यंच में उत्पन्न हो, तो वह कितने काल की स्थिति वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है ?

५० उत्तर-हे गौतम ! पूर्ववत् । स्थिति और संवेध उससे भिन्न जानना चाहिये ।

५१ प्रश्न-जइ जोइसिय० ?

५१ उत्तर-उववाओ तहेव, जाव-

भावार्थ-५१ प्रश्न-यदि वह पंचेंद्रिय तिर्यंच, ज्योतिषी देव से आ कर उत्पन्न हो ?

५१ उत्तर-उपपात पूर्ववत् (पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले पंचेंद्रिय तिर्यंच के अनुसार) ।

५२ प्रश्न-जोइसिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख० ?

५२ उत्तर-एस चेव वत्तव्वया । जहा पुढविक्काइयउद्देसए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भवग्गहणाइं णवसु वि गमएसु अट्ठ जाव कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं चउहिं य वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं-एवइयं० । एवं णवसु वि गमएसु, णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा १ ।

भावार्थ-५२ प्रश्न-हे भगवन् ! ज्योतिषी देव, पंचेंद्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो ?

५२ उत्तर-हे गौतम ! पूर्वोक्त पृथ्वीकायिक उद्देशक के अनुसार । नौ गमक में आठ भव होते हैं, यावत् कालादेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक पल्योपम का आठवाँ भाग और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक चार पल्योपम और चार लाख वर्ष तक यावत् गमनागमन करता है । इसी प्रकार नौ गमक जानना चाहिये । स्थिति और संवेध भिन्न-भिन्न जानना चाहिये १ से ९ ।

५३ प्रश्न-जइ वेमाणियदेवेहिंतो० किं कप्पोवगवेमाणिय०, कप्पाईयवेमाणिय० ?

५३ उत्तर-गोयमा ! कप्पोवगवेमाणिय०, णो कप्पाईयवेमाणिय० । जइ कप्पोवग० जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, णो आणय० जाव णो अच्चुयकप्पोवगवेमाणिय० ।

भावार्थ-५३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है, तो कल्पोपपन्नक या कल्पातीत वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है ?

५३ उत्तर-हे गौतम ! वह कल्पोपपन्नक वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है, कल्पातीत वैमानिक देव से नहीं । यदि कल्पोपपन्नक वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है, तो यावत् सहस्रार कल्पोपपन्नक वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होता है, किन्तु आणत यावत् अच्युत कल्पोपपन्नक वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न नहीं होता ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५४ प्रश्न-सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइ० ?

५४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त०, उक्कोसेणं पुव्व-कोडीआउएसु, सेसं जहेव पुढविकाइयउद्देसए णवसु वि गमएसु। णवरं णवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। ठिइं कालादेसं च जाणिज्जा, एवं ईसाणदेवे वि। एवं एएणं कमेणं अवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववाएयव्वा। णवरं ओगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे, लेस्सा-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाणं एगा सुक्कलेस्सा। वेए णो इत्थि-वेयगा, पुरिसवेयगा, णो णपुंसगवेयगा। आउ-अणुबंधा जहा ठिई-पए, सेसं जहेव ईसाणगाणं कायसंवेहं च जाणेज्जा।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति। ❀

॥ चउवीसइमे सए वीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-५४ प्रश्न-हे भगवन् ! सौधर्म देव, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

५४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि स्थिति वाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होता है। शेष नौ गमक में पृथ्वी-कायिक उद्देशक के अनुसार जानना चाहिये, परन्तु नौ गमक में संवेध-भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट आठ भव होते हैं। स्थिति और कालादेश भिन्न-भिन्न जानना चाहिये। इसी प्रकार ईशान देव के विषय में भी जानना चाहिये-इसी क्रम से सहस्रार देव पर्यंत। अवगाहना प्रज्ञापना सूत्र के इक्कीसवें

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'अवगाहना संस्थान' पद के अनुसार। लेश्या सनत्कुमार, माहेन्द्र और ब्रह्मलोक में एक पद्म लेश्या और लान्तक, महाशुक्र और सहस्रार में एक शुक्ल-लेश्या होती है। स्त्रीवेदी और नपुंसक वेदी नहीं होते, एक पुरुष वेदी ही होते हैं। प्रज्ञापना सूत्र के चौथे स्थिति पद के अनुसार स्थिति और अनुबन्ध जानना चाहिये। शेष ईशान देव के समान। काय संवेध भिन्न-भिन्न जानना चाहिये।

'हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन--पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने वाले असुरकुमारादि देव के लिये पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले देव यावत् ईशान देवलोक तक के देव का अतिदेश किया गया है। इसका कारण यह है कि ईशान देवलोक तक के देव ही पृथ्वीकायादि में उत्पन्न होते हैं, किन्तु यहाँ आठवें स्वर्ग तक से आ कर उत्पन्न होते हैं। इसके परिमाण, संहनन आदि का कथन पहले किया जा चुका है। भवादेश आदि के लिये भी पूर्ववत् अतिदेश किया गया है। अवगाहना के लिये प्रज्ञापना सूत्र के इक्कीसवें पद का अतिदेश किया गया है। वह इस प्रकार है--

भवणवणजोइसोहम्मीसाणे सत्त हुंति रयणीओ।
एक्केक्क हाणि सेसे दुदुगे य दुगे चउक्के य॥

अर्थात्-भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, सौधर्म और ईशान देवलोक में भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवां भाग, उत्कृष्ट सात रत्नि (हाथ) है। सनत्कुमार और माहेन्द्र में छह रत्नि, ब्रह्मलोक और लान्तक में पाँच रत्नि, महाशुक्र और सहस्रार में चार रत्नि, आणत, प्राणत, आरण और अच्युत देवलोक में तीन रत्नि की अवगाहना होती है। उत्तर-वैक्रिय अवगाहना सभी देवलोकों में जघन्य अंगुल का संख्यातवाँ भाग और उत्कृष्ट एक लाख योजन की होती है।

स्थिति सभी में भिन्न-भिन्न है। जिसका निर्देश अन्यत्र कर दिया गया है। स्थिति के अनुसार उपयोगपूर्वक संवेध कहना चाहिये।

॥ चौबीसवें शतक का बीसवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक २१

मनुष्य की विविध योनियों से उत्पत्ति

१ प्रश्न-मणुस्सा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं णेरइए-हिंतो उववज्जंति, जाव देवेहिंतो उववज्जंति ?

१ उत्तर-गोयमा ! णेरइएहिंतो वि उववज्जंति जाव देवेहिंतो वि उववज्जंति-एवं उववाओ जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए जाव 'तमापुढविणेरइएहिंतो वि उववज्जंति, णो अहेसत्तमपुढविणेरइए-हिंतो उववज्जंति।'

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! मनुष्य कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं, क्या नैरयिक से यावत् देव से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक यावत् देव से भी आ कर उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक उद्देशक के अनुसार उपपात जानना चाहिये, यावत् तमःप्रभा नाम की छठी पृथ्वी के नैरयिक से आ कर उत्पन्न होते हैं। अधःसप्तम पृथ्वी के नैरयिक से आ कर उत्पन्न नहीं होते।

२ प्रश्न-रयणप्पभापुढविणेरइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० ?

२ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वकोडीआउएसु, अवसेसा वत्तव्वया जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव। णवरं परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। जहा तहिं अंतोमुहुत्तेहिं तहा इहं मासपुहुत्तेहिं संवेहं करेज्जा, सेसं तं चेव १। जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि, णवरं जहण्णेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडी०। ओगाहणा-लेस्सा-णाण-ट्ठिइ-अणुबंधसंवेहं णाणत्तं च जाणेज्जा जहेव तिरिक्खजोणियउद्देसए। एवं जाव तमापुढविणेरइए १।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का नैरयिक, मनुष्यों में उत्पन्न हो, तो वह कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य मास-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है। शेष वक्तव्यता पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक में उत्पन्न होने वाले रत्नप्रभा नैरयिकवत्। परिमाण-जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं। वहां तो अन्तर्मुहूर्त के साथ संवेध किया था, किन्तु यहां मास-पृथक्त्व के साथ संवेध करना चाहिये। शेष पूर्ववत्। रत्नप्रभा पृथ्वी की वक्तव्यता के समान शर्कराप्रभा की भी है। स्थिति जघन्य वर्ष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि। अवगाहना लेश्या, ज्ञान, स्थिति, अनुबन्ध और संवेध का नानात्व (विशेषता) तिर्यंच उद्देशक के अनुसार। इस प्रकार यावत् तमःप्रभा पृथ्वी के नैरयिक पर्यन्त।

विवेचन-रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिक, यदि मनुष्यायु का बंध करते हैं, तो मास-पृथक्त्व (२ महीने से ९ महीने तक) से कम आयु का बन्ध नहीं करते। क्योंकि तथाविध परिणाम का अभाव होता है। इसी प्रकार आगे की नरकों के विषय में भी समझना चाहिये। नैरयिक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्मूर्च्छिम मनुष्यों में उत्पन्न नहीं होते, वे गर्भज मनुष्य में ही आते हैं और संख्यात ही होते हैं, असंख्यात नहीं।

रत्नप्रभा पृथ्वी से निकल कर पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने वालों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त होती है। इसलिये वहाँ अन्तर्मुहूर्त के साथ संवेध किया गया था, किन्तु मनुष्य प्रकरण में जघन्य स्थिति मास-पृथक्त्व होती है, अतः मास-पृथक्त्व के साथ संवेध करना चाहिये।

शर्कराप्रभा आदि की वक्तव्यता पंचेन्द्रिय तिर्यंच उद्देशक के अनुसार जाननी चाहिये। वह भावार्थ में कही है।

३ प्रश्न-जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?

३ उत्तर-गोयमा ! एगिंदियतिरिक्खजोणिए० भेदो जहा पंचिं-दियतिरिक्खजोणियउद्देसए, णवरं तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा, सेसं तं चेव। जाव—

कठिन शब्दार्थ-पडिसेहेयव्वा-निषेध करना चाहिये।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि जीव, तिर्यंच-योनिक से आ कर मनुष्य में उत्पन्न होता है, तो एकेन्द्रिय यावत् पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक इत्यादि पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच उद्देशक के अनुसार, किंतु तेउकाय और वायुकाय का निषेध करना चाहिये (क्योंकि इनसे आ कर मनुष्य में उत्पन्न नहीं होता) शेष पूर्ववत्।

४ प्रश्न-पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-भविए-उत्पन्न होने के योग्य ।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! जो पृथ्वीकायिक, मनुष्य में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ।

५ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

५ उत्तर-एवं जहेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा णवसु वि गमएसु । णवरं तइय-छट्ठ-णवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठिइओ भवइ ताहे पढमगमए, अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि, बिइयगमए अप्पसत्था, तइयगमए पसत्था भवंति, सेसं तं चेव णिरवसेसं ९ ।

भावार्थ-५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे पृथ्वीकायिक जीव, एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

५ उत्तर-पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक में उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक के समान यहां मनुष्य में उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक के नौ गमक जानना चाहिये, किन्तु तीसरे, छठे और नौवें गमक में परिमाण जघन्य एक, दो या तीन

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं। जब पृथ्वीकायिक स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तब मध्य के तीन गमक में के प्रथम (चौथे) गमक में अध्यवसाय प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों प्रकार के होते हैं। दूसरे (पांचवां) गमक में अप्रशस्त और तीसरे (छठे) गमक में प्रशस्त होते हैं। शेष पूर्ववत्।

६ प्रश्न-जइ आउकाइए० ?

६ उत्तर-एवं आउकाइयाण वि। एवं वणस्सइकाइयाण वि। एवं जाव चउरिंदियाण वि। असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एए सव्वे वि जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए तहेव भाणियव्वा। णवरं एयाणि चेव परिमाण-अज्झवसाण-णाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि। सेसं तहेव णिरवसेसं।

भावार्थ-६ प्रश्न- हे भगवन् ! यदि वे मनुष्य अप्कायिक से आ कर उत्पन्न हो तो ?

६ उत्तर-अप्कायिक और वनस्पतिकायिक भी इसी प्रकार जानना चाहिए और इसी प्रकार चौरिन्द्रिय पर्यन्त। असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, असंज्ञी मनुष्य और संज्ञी मनुष्य, इन सभी के विषय में, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच उद्देशक के अनुसार, परन्तु सभी के परिमाण और अध्यवसायों की भिन्नता, पृथ्वीकायिक के इसी उद्देशक के अनुसार है, शेष पूर्ववत्।

विवेचन-जब तिर्यंच से आ कर मनुष्य में उत्पन्न होता है, उसके लिये पृथ्वीकाय से निकल कर पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उत्पन्न होने वाले का जो निरूपण किया, वही पृथ्वीकाय से निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होने वाले के लिए जानना चाहिये। किन्तु तीसरे गमक में औधिक पृथ्वीकायिक से निकल कर जब उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य में जो उत्पन्न होते हैं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वे उत्कृष्ट संख्यात ही होते हैं। यद्यपि यहाँ सामान्य रूप से मनुष्य का ग्रहण होने से सम्मूर्च्छिम मनुष्यों का भी ग्रहण हो जाता है और वे असंख्यात हैं, तथापि उत्कृष्ट स्थिति के पूर्वकोटि वर्ष की आयु वाले मनुष्य संख्यात ही होते हैं, जब कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच तो असंख्यात हो जाते हैं। यही समाधान छठे और नौवें गमक के लिये भी समझना चाहिये।

मध्य के त्रिक के प्रथम (अर्थात् चौथे) गमक में जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकायिक का मनुष्य में औधिक उत्पाद होना है। उस समय उस पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य में उत्पत्ति होती है, तब उसके अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं और जब उसी गमक में जघन्य स्थिति वाले मनुष्य में उत्पत्ति होती है, तब अध्यवसाय अप्रशस्त होते हैं, अतः चौथे गमक में दोनों प्रकार के अध्यवसाय होते हैं। मध्य के त्रिक के दूसरे (अर्थात् पाँचवें) गमक में जघन्य स्थिति वाला पृथ्वीकायिक जघन्य स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है, तब उसके अध्यवसाय अप्रशस्त होते हैं, क्योंकि प्रशस्त अध्यवसायों से जघन्य स्थिति में उत्पत्ति नहीं होती। मध्य के त्रिक के तीसरे (छठे) गमक में जब जघन्य स्थिति वाला पृथ्वीकायिक, उत्कृष्ट स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है तब अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं।

७ प्रश्न-जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर०, जोइसिय०, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ?

७ उत्तर-गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि० जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे मनुष्य, देव से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी या वैमानिक से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वे भवनपति यावत् वैमानिक देव से भी आ कर उत्पन्न होते हैं।

८ प्रश्न-जइ भवणवासि० किं असुर० जाव थणिय० ?

८ उत्तर-गोयमा ! असुरकुमार० जाव थणिय०।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे भवनपति देव से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो क्या असुरकुमार से यावत् स्तनितकुमार से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

८ उत्तर-हे गौतम ! वे असुरकुमार से यावत् स्तनितकुमार से भी आ कर उत्पन्न होते हैं।

९ प्रश्न-असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

९ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा । एवं जच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-उद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थ वि भाणियव्वा । णवरं जहा तहिं जहण्णगं अंतोमुहुत्तट्ठिईएसु तहा इहं मासपुहुत्तट्ठिईएसु । परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं, संखेज्जा उववज्जंति, सेसं तं चेव । एवं जाव 'ईसाणदेवो' त्ति । एयाणि चेव णाणत्ताणि । सणंकुमारादीया जाव 'सहस्सारो' त्ति जहेव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियउद्देसए । णवरं परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । उववाओ जहण्णेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जंति, सेसं तं चेव । संवेहं वासपुहुत्तं पुव्वकोडीसु करेज्जा । सणंकुमारे ठिई चउ-गुणिया अट्ठावीसं सागरोवमा भवंति, माहिंदे ताणि चेव साइरेगाणि, बम्हलोए चत्तालीसं, लंतए छप्पण्णं, महासुक्के अट्ठसट्ठिं, सहस्सारे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बावत्तरिं सागरोवमाइं । एसा उक्कोसा ठिई भणिया । जहण्णट्ठिइं पि चउ गुणेज्जा ९ ।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमार देव, मनुष्य में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य मास-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है । इस प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक के उद्देशक के अनुसार । वहां तो अन्तर्मुहूर्त की स्थिति वाले तिर्यंच में उत्पन्न होने का कहा है, किंतु यहां मास-पृथक्त्व की स्थिति वालों में उत्पन्न होते हे । परिमाण-जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं । शेष पूर्ववत् । इस प्रकार यावत् ईशान देव पर्यंत तथा उपरोक्त विशेषता भी जाननी चाहिये । सनत्कुमार से ले कर सहस्रार तक के देव के विषय में पंचेंद्रिय तिर्यंच उद्देशक के अनुसार । परिमाण-जघन्य एक, दो या तीन और उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं । वे जघन्य वर्ष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होते हैं । शेष पूर्ववत् । संवेध-जघन्य वर्ष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि । सनत्कुमार में स्वयं की उत्कृष्ट स्थिति को चार गुणा करने से अट्ठाईस सागरोपम होते हैं और माहेन्द्र में सातिरेक अट्ठाईस सागरोपम होते हैं । इसी प्रकार स्वयं की उत्कृष्ट स्थिति को चार गुणा करने से ब्रह्मलोक में चालीस सागरोपम, लान्तक में छप्पन सागरोपम, महाशुक्र में अड़सठ सागरोपम और सहस्रार में बहत्तर सागरोपम होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति है और जघन्य स्थिति को भी चार गुणा करना चाहिये । (इस प्रकार कायसंवेध जानना चाहिये) १ से ९ ।

१० प्रश्न-आणयदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीठिईएसु० ।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! आणत देव, मनुष्य में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ।

१० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य वर्ष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ।

११ प्रश्न-ते णं भंते !०

११ उत्तर-एवं जहेव सहस्सारदेवाणं वत्तव्वया । णवरं ओगाहणा-ठिई-अणुबंधे य जाणेज्जा, सेसं तं चेव । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावण्णं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडिहिं अब्भहियाइं-एवइयं कालं० । एवं णव वि गमा, णवरं ठिइं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा, एवं जाव अच्चुयदेवो, णवरं ठिइं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा । पाणयदेवस्स ठिई तिगुणिया सट्ठिं सागरोवमाइं, आरणगस्स तेवट्ठिं सागरोवमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठिं सागरोवमाइं ।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! वे मनुष्य एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

११ उत्तर-सहस्रार देव की वक्तव्यता के अनुसार । अवगाहना, स्थिति और अनुबन्ध की विशेषता जाननी चाहिये, शेष पूर्ववत् । भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट छह भव तथा कालादेश से जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अठारह सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक सत्तावन सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। इस प्रकार नौ गमक जानना चाहिये, किंतु स्थिति, अनुबन्ध और संवेध उससे भिन्न है। इस प्रकार यावत् अच्युत देवलोक पर्यन्त। स्थिति, अनुबन्ध और संवेध उससे भिन्न है। प्राणत देवलोक की स्थिति को तीन गुणा करने पर साठ सागरोपम, आरण की स्थिति को तीन गुणा करने पर त्रेसठ सागरोपम और अच्युत की स्थिति को तीन गुणा करने पर छासठ सागरोपम होते हैं।

१२ प्रश्न-जइ कप्पाईयवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं गेविज्जगकप्पाईय०, अणुत्तरोववाइयकप्पाईय० ?

१२ उत्तर-गोयमा ! गेविज्जगकप्पाईय०, अणुत्तरोववाइय० ।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे मनुष्य, कल्पातीत वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं या अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव से ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! वे ग्रैवेयक और अनुत्तरौपपातिक-दोनों प्रकार के कल्पातीत वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं।

१३ प्रश्न-जइ गेविज्जग० किं हेट्ठिम हेट्ठिम गेविज्जगकप्पाईय० जाव उवरिम उवरिम गेविज्जग० ?

१३ उत्तर-गोयमा ! हेट्ठिम हेट्ठिम गेविज्जग० जाव उवरिम २० ।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे मनुष्य, ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो अधस्तन-अधस्तन (सब से नीचे के) ग्रैवेयक से यावत् उपरितन-उपरितन (सब से ऊपर के) ग्रैवेयक से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१३ उत्तर-हे गौतम ! वे अधस्तन-अधस्तन यावत् उपरितन-उपरितन ग्रैवेयक से भी आ कर उत्पन्न होते हैं ।

१४ प्रश्न-गेविज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइयकाल० ?

१४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहुत्तट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडी०, अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया । णवरं ओगाहणा-गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरए, से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं दो रयणीओ । संठाणं-एगे भवधारणिज्जे सरीरे, से समचउरंससंठिए पण्णत्ते । पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा-वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, णो चेव णं वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहिं समोहणिंसु वा, समोहणंति वा, समोहणिस्संति वा । ठिई अणुबंधो जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेणउतिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं० । एवं सेसेसु वि अट्ठगमएसु । णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९ ।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन् ! ग्रैवेयक देव, मनुष्य में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य वर्ष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट पूर्वकोटि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है, शेष आणत देववत् । परन्तु उस देव के केवल भवधारणीय शरीर होता है और उसकी अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट दो रत्नि होती है । एक भवधारणीय शरीर, समचतुरस्र संस्थान और पांच समुद्घात होती हैं, यथा-वेदना समुद्घात यावत् तेजस् समुद्घात । परन्तु उन्होंने वैक्रिय समुद्घात और तेजस् समुद्घात कभी की नहीं, करते भी नहीं और करेंगे भी नहीं । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य बाईस सागरोपम उत्कृष्ट इकत्तीस सागरोपम, शेष पूर्ववत् । कालादेश से जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक बाईस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक तिरानवें सागरोपम । शेष आठों ही गमक में इसी प्रकार । स्थिति और संवेध भिन्न जानना चाहिये ।

१५ प्रश्न-जइ अणुत्तरोववाइयकप्पाईयवेमाणिय० किं विजय-अणुत्तरोववाइय०, वेजयंतअणुत्तरोववाइय० जाव सव्वट्ठसिद्ध० ?

१५ उत्तर-गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय० जाव सव्वट्ठसिद्ध-अणुत्तरोववाइय० ।

भावार्थ-१५ प्रश्न-यदि मनुष्य, अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो क्या विजय, वैजयन्त यावत् सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! वे विजय यावत् सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक वैमानिक देव से आ कर उत्पन्न होते हैं ।

१६ प्रश्न-विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१६ उत्तर-एवं जहेव गेविज्जगदेवाणं। णवरं ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एगा रयणी। समदिट्ठी, णो मिच्छदिट्ठी, णो सम्मामिच्छदिट्ठी। णाणी, णो अण्णाणी, णियमं तिण्णाणी, तं जहा-आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी, ओहिणाणी। ठिई जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइ वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्व-कोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा। णवरं ठिइं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं एवं चेव।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन्! विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित अनुत्तरौपपातिक देव, मनुष्य में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होते हैं?

१६ उत्तर-हे गौतम! ग्रैवेयक देव के अनुसार। अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट एक रत्नि की होती है। वे सम्यग्दृष्टि होते हैं, मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होते। वे ज्ञानी होते हैं, अज्ञानी नहीं होते। उनके मति, श्रुत और अवधि-ये तीन ज्ञान नियम से होते हैं। स्थिति जघन्य ३१ सागरोपम और उत्कृष्ट ३३ सागरोपम, शेष पूर्ववत्। भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट चार भव तथा कालादेश से जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक ३१ सागरोपम और उत्कृष्ट दो पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम। शेष आठ गमक भी इसी प्रकार। स्थिति, अनुबन्ध और संवेध भिन्न-भिन्न, शेष पूर्ववत्।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ प्रश्न-सव्वट्ठसिद्धगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए० ?

१७ उत्तर-सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा। णवरं ठिई अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं अणुबंधो वि, सेसं तं चेव। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं० १।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक देव, मनुष्य में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! विजयादि देववत्। स्थिति अजघन्यानुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम। अनुबन्ध भी इसी प्रकार। भवादेश से दो भव तथा कालादेश से जघन्य वर्ष-पृथक्त्व अधिक तेतीस सागरोपम और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम १।

१८-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं-एवइयं २।

भावार्थ-१८ यदि वह सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक देव जघन्य काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न होता है, तो उसके विषय में भी यही वक्तव्यता कहनी चाहिये। कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट वर्ष-पृथक्त्व अधिक तेतीस सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है २।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१९-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं-एवइयं० ३। एए चेव तिण्णि गमगा, सेसा ण भण्णंति।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए एक्वीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१९-यदि वह सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक देव, उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले मनुष्य में उत्पन्न हो, तो उसके लिये भी यही वक्तव्यता है। कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम ३। यहां ये तीन गमक कहने चाहिये। शेष छह गमक नहीं बनते हैं।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-मनुष्य में उत्पन्न होने वाले असुरकुमार देव से ले कर ईशान देव तक की वक्तव्यता के लिये पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच उद्देशक का अतिदेश किया है, क्योंकि दोनों की वक्तव्यता समान है। सनत्कुमार आदि की वक्तव्यता में विशेषता है। अतः उनका कथन पृथक् किया है। जब औघिक या उत्कृष्ट स्थिति के देव, औघिक आदि मनुष्य में उत्पन्न होते हैं, तब उत्कृष्ट स्थिति और संवेध का कथन करने के लिये चार मनुष्य भव और चार देव भव की स्थिति को जोड़ना चाहिये। आनत आदि देवों में उत्कृष्ट छह भव होते हैं। इसलिये वहाँ तीन मनुष्य भव और तीन देवभवों की स्थिति को जोड़ कर संवेध करना चाहिये।

कल्पातीत देव में लब्धि की अपेक्षा पांच समुद्घात होती है, किन्तु वैक्रिय और तेजस् समुद्घात उन्होंने कभी की नहीं, करते भी नहीं और करेंगे भी नहीं, क्योंकि इनका उन्हें कोई प्रयोजन नहीं है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम ग्रैवेयक में जघन्य स्थिति बाईस सागरोपम की होती है और उत्कृष्ट तेईस सागरोपम की। आगे क्रमशः प्रत्येक ग्रैवेयक में एक-एक सागरोपम की वृद्धि होती जाती है। नौवें ग्रैवेयक में उत्कृष्ट स्थिति ३१ सागरोपम है। वहाँ भवादेश से उत्कृष्ट छह भव होते हैं। इसलिये तीन मनुष्य भव की उत्कृष्ट स्थिति तीन पूर्वकोटि और तीन ग्रैवेयक भव की उत्कृष्ट स्थिति तिरानवें सागरोपम होता है। यह कालादेश से उत्कृष्ट संवेध है।

सर्वार्थसिद्ध देव के अधिकार में प्रथम के तीन गमक होते हैं, क्योंकि उनकी स्थिति अजघन्यानुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की होती है। जघन्य स्थिति न होने से चौथा, पाँचवाँ और छठा-ये तीन गमक नहीं बनते और उत्कृष्ट स्थिति न होने से सातवाँ, आठवाँ और नौवाँ-ये तीन अन्तिम गमक नहीं बनते।

अनुत्तरोपपातिक देव में मिथ्यादृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि को वर्जित किया है और एक सम्यग्दृष्टि ही बतलाई गई है, परन्तु नवग्रैवेयक के वर्णन में कोई भी दृष्टि वर्जित नहीं की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नवग्रैवेयक में तीनों दृष्टियाँ पाई जाती हैं।

॥ चौबीसवें शतक का इक्कीसवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक २२

वाणव्यंतर देवों का उपपात

१ प्रश्न–वाणमंतरा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं णेरइए-हिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख० ?

१ उत्तर–एवं जहेव णागकुमारउद्देसए असण्णी तहेव णिरवसेसं। जइ सण्णिपंचिंदिय० जाव असंखेज्जवासाउय० ।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! वाणव्यंतर देव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ? नैरयिक, तिर्यंच योनिक, मनुष्य से या देव से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१ उत्तर–हे गौतम ! नागकुमार देव के उद्देशकानुसार यावत् असंज्ञी तक। यदि वाणव्यन्तर देव-संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होते हैं, इत्यादि यावत् असंख्यात वर्ष की आयु तक पूर्ववत् जानना चाहिये ।

२ प्रश्न–सण्णिपंचिंदिय० जे भविए वाणमंतरेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

२ उत्तर–गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सठिईएसु, उक्कोसेणं पलिओवमठिईएसु, सेसं तं चेव जहा णागकुमारउद्देसए जाव काला-देसेणं जहण्णेणं साइरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं–एवइयं १ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की स्थिति वाला संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, वाणव्यन्तर में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट एक पल्योपम की स्थिति वाले वाणव्यन्तर में उत्पन्न होता है। शेष नागकुमार उद्देशक के अनुसार, यावत् कालादेश से जघन्य सातिरेक पूर्वकोटि अधिक दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट चार पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है १।

३-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो जहेव णागकुमाराणं बिइयगमे वत्तव्वया २।

भावार्थ-३-यदि वह जघन्य काल की स्थिति वाले वाणव्यन्तर में उत्पन्न होता है, तो नागकुमार के दूसरे गमक में कही हुई वक्तव्यता जाननी चाहिये २।

४-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठिईएसु एस चेव वत्तव्वया। णवरं ठिई से जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। संवेहो जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं-एवइयं० ३। मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव णागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा णागकुमारुद्देसए। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। संखेज्जवासाउय० तहेव, णवरं ठिई अणुबंधो संवेहं च उभओ ठिईए जाणेज्जा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-४ यदि वह उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले वाणव्यन्तर में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम की स्थिति वाले वाणव्यन्तर में उत्पन्न होता है, इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार। स्थिति जघन्य पल्योपम और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की जाननी चाहिये। संवेध-जघन्य दो पल्योपम और उत्कृष्ट चार पल्योपम ३। मध्य के तीन गमक और अन्तिम तीन गमक नागकुमार उद्देशक के अनुसार। स्थिति और संवेध उससे भिन्न जानना चाहिये। संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के विषय में भी उसी प्रकार जानना चाहिये, किंतु स्थिति और अनुबन्ध भिन्न है। संवेध, दोनों की स्थिति को मिला कर जानना चाहिये।

५-जइ मणुस्स० असंखेज्जवासाउयाणं जहेव णागकुमाराणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया। णवरं तइयगमए ठिई जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव। संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियाणं। संखेज्जवासाउयसण्णि-मणुस्से जहेव णागकुमारुद्देसए। णवरं वाणमंतरे ठिइं संवेहं च जाणेज्जा।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए बावीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-५ यदि वे वाणव्यन्तर देव, मनुष्य से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो नागकुमार उद्देशक के असंख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्य के समान। तीसरे गमक में स्थिति जघन्य पल्योपम और उत्कृष्ट तीन पल्योपम। अवगाहना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जघन्य एक गाऊ और उत्कृष्ट तीन गाऊ, शेष पूर्ववत् । संवेध इसी उद्देशक में असंख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान । संख्यात वर्ष के आयु वाले संज्ञी मनुष्य के विषय में नागकुमार उद्देशक के अनुसार, परन्तु वाणव्यन्तर की स्थिति और संवेध उससे भिन्न जानना चाहिये ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-वाणव्यन्तर देवों के प्रकरण में, असंख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पंचेंद्रियों के अधिकार में उत्कृष्ट चार पल्योपम का जो कथन किया है, वहां संज्ञी पञ्चेंद्रिय तिर्यंच की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम और वाणव्यन्तर देव की एक पल्योपम, इस प्रकार दोनों की स्थिति को मिला कर चार पल्योपम का संवेध जानना चाहिये । नागकुमार के दूसरे गमक की वक्तव्यता प्रथम गमक के समान है, परन्तु यहां जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की जाननी चाहिये । संवेध-कालादेश से जघन्य दस हजार वर्ष अधिक सातिरेक पूर्वकोटि और उत्कृष्ट दस हजार वर्ष अधिक तीन पल्योपम का जानना चाहिये । तीसरे गमक में जघन्य स्थिति पल्योपम की होती है । यद्यपि असंख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों की जघन्य स्थिति सातिरेक पूर्वकोटि वर्ष की होती है, तथापि यहां पल्योपम की कही है, इसका कारण यह है कि वह पल्योपम की आयु वाले वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न होने वाला है और असंख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच अपनी आयु से अधिक आयु वाले देवों में उत्पन्न नहीं होते, यह बात पहले कही जा चुकी है ।

।। चौबीसवें शतक का बाईसवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ।।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक २३

ज्योतिषी देवों का उपपात

१ प्रश्न–जोइसिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं णेरइए ० ?

१ उत्तर–भेदो जाव सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, णो असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख० ।

भावार्थ–१ प्रश्न–ज्योतिषी देव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ? नैरयिक, इत्यादि से ?

१ उत्तर–भेद यावत् वे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होते हैं, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न नहीं होते ।

२ प्रश्न–जइ सण्णि० किं संखेज्ज०, असंखेज्ज० ?

२ उत्तर–गोयमा ! संखेज्जवासाउय०, असंखेज्जवासाउय० ।

भावार्थ–२ प्रश्न–हे भगवन् ! यदि संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो क्या संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होते हैं या असंख्यात वर्ष की आयु वाले से ?

२ उत्तर–हे गौतम ! संख्यात वर्ष और असंख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न होते हैं ।

३ प्रश्न–असंखेज्ज-वासाउय-सण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवइ० ?

३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससयसहस्सट्ठिईएसु उववज्जइ, अवसेसं जहा असुरकुमारुद्देसए। णवरं ठिई जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि, सेसं तहेव। णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं-एवइयं ० १।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की आयु वाला संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिक ज्योतिषी में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले ज्योतिषी में उत्पन्न होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य पल्योपम के आठवें भाग और उत्कृष्ट एक लाख वर्ष अधिक एक पल्योपम की स्थिति वाले ज्योतिषी में उत्पन्न होता है, शेष असुरकुमार उद्देशक के अनुसार। स्थिति जघन्य पल्योपम के आठवें भाग और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की होती है और इसी प्रकार अनुबन्ध भी होता है, शेष पूर्ववत्। कालादेश से जघन्य पल्योपम के दो आठवें भाग और उत्कृष्ट एक लाख वर्ष अधिक चार पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है १।

४-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो, जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु एस चेव वत्तव्वया। णवरं कालादेसेणं जाणेज्जा २।

भावार्थ-४ यदि वह संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच जघन्य काल की स्थिति वाले

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्योतिषी में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के आठवें भाग की स्थिति वाले ज्योतिषी में उत्पन्न होता है, इत्यादि पूर्वानुसार । कालादेश इससे भिन्न है २ ।

५-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया । णवरं ठिई जहण्णेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि । कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं दोहिं वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं ३ ।

भावार्थ-५-यदि वह संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, उत्कृष्ट स्थिति वाले ज्योतिषी में उत्पन्न हो, तो भी यही वक्तव्यता । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य एक लाख वर्ष अधिक पल्योपम और उत्कृष्ट तीन पल्योपम । कालादेश से जघन्य दो लाख वर्ष अधिक दो पल्योपम और उत्कृष्ट एक लाख वर्ष अधिक चार पल्योपम ३ ।

६-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जिज्जा ४ ।

भावार्थ-६-यदि वह संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो और ज्योतिषी में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के आठवें भाग की स्थिति वाले ज्योतिषी में उत्पन्न होता है ४ ।

७ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

७ उत्तर-एस चेव वत्तव्वया । णवरं ओगाहणा जहण्णेणं धणु-पुहुत्तं, उक्कोसेणं साइरेगाइं अट्ठारसधणुसयाइं । ठिई जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमं । एवं अणुबंधोऽवि, सेसं तहेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइं-एवइयं०। जहण्णकालट्ठिईयस्स एस चेव एक्को गमो ६ ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असंख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

७ उत्तर-हे गौतम ! पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार । अवगाहना जघन्य धनुष पृथक्त्व और उत्कृष्ट सातिरेक अठारह सौ धनुष । स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के आठवें भाग, शेष पूर्ववत् । कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम के दो आठवें भाग । जघन्य काल की स्थिति वाले के लिये यह एक ही गमक होता है ६ ।

८-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया । णवरं ठिई जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि, सेसं तं चेव । एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा णेयव्वा । णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। एए सत्त गमगा ।

भावार्थ-८-यदि वह असंख्यात वर्ष की आयु वाला संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच, स्वयं उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला हो और ज्योतिषी में उत्पन्न हो, तो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

औधिक गमक के समान। परन्तु स्थिति और अनुबन्ध जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम, शेष पूर्ववत्। इस प्रकार अन्तिम तीन गमक जानने चाहिये। स्थिति और संवेध भिन्न है। ये सात गमक हुए ७।

९ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० ?

९ उत्तर-संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव णव वि गमा भाणियव्वा। णवरं जोइसियठिइं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं ९।

भावार्थ-९ प्रश्न-यदि वह संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न हो, तो ?

९ उत्तर-असुरकुमार में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान नौ गमक जानना चाहिये। स्थिति और संवेध उनसे भिन्न है। शेष पूर्ववत् १ से ९।

१० प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ?

१० उत्तर-भेदो तहेव। जाव-

भावार्थ-१० प्रश्न-यदि वे मनुष्य से आ कर उत्पन्न होते हैं, तो ?

१० उत्तर-पूर्वोक्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के समान।

११ प्रश्न-असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए से णं भंते !० ?

११ उत्तर-एवं जहा असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियस्स जोइ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि । णवरं ओगाहणाविसेसो । पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं साइरेगाइं णव धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । मज्झिमगमए जहण्णेणं साइरेगाइं णव धणुसयाइं, उक्कोसेण वि साइरेगाइं णव धणुसयाइं । पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं । सेसं तहेव णिरवसेसं जाव 'संवेहो' त्ति ।

भावार्थ-११ प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्य वर्ष की आयु वाला संज्ञी मनुष्य, ज्योतिषी में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! ज्योतिषी में उत्पन्न होने वाले असंख्य वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के सात गमक के समान, मनुष्य के विषय में भी सात गमक जानना चाहिये, परन्तु अवगाहना में विशेषता है । प्रथम के तीन गमक में अवगाहना जघन्य सातिरेक नौ सौ धनुष और उत्कृष्ट तीन गाऊ की होती है । मध्य के तीन गमक में जघन्य और उत्कृष्ट सातिरेक नौ सौ धनुष होती है । अन्तिम के तीन गमक में जघन्य और उत्कृष्ट तीन गाऊ है । शेष यावत् संवेध तक उसी प्रकार है ।

१२ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ० ?

१२ उत्तर-संखेज्जवासाउयाणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव णव गमगा भाणियव्वा । णवरं जोइसियठिइं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तं चेव णिरवसेसं ।

❀ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ❀

॥ चउवीसइमे सए तेवीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१२ प्रश्न-यदि वह संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है, तो ?

१२ उत्तर-असुरकुमार में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्य के समान नौ गमक जानना चाहिये, किंतु ज्योतिषी की स्थिति और संवेध भिन्न है, शेष पूर्ववत् ।

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'- कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-पल्योपम के दो आठवें भाग जो कहा है, उसमें से एक तो असंख्यात वर्षायुष्क सम्बन्धी और दूसरा तारा ज्योतिषी सम्बन्धी है और उत्कृष्ट जो एक लाख वर्ष अधिक चार पल्योपम कहे हैं, उनमें से तीन पल्योपम तो असंख्यात वर्ष की आयु सम्बन्धी हैं और सातिरेक एक पल्योपम चन्द्र विमानवासी ज्योतिषी सम्बन्धी है । तीसरे गमक में स्थिति जघन्य एक लाख वर्ष अधिक पल्योपम की कही है, सो यद्यपि असंख्यात वर्ष की आयु वालों की जघन्य स्थिति सातिरेक पूर्वकोटि होती है, तथापि यहां एक लाख वर्ष अधिक पल्योपम कहा है, इसका कारण यह है कि वह इतनी ही स्थिति वाले ज्योतिषी में उत्पन्न होने वाला है, क्योंकि असंख्यात वर्ष की आयु वाले जीव, अपनी आयु से अधिक आयु वाले देव में उत्पन्न नहीं होते हैं । यह पहले बताया जा चुका है । चौथे गमक में जघन्य काल की स्थिति वाले की उत्पत्ति औधिक ज्योतिषी में बताई है, सो असंख्यात वर्ष की आयु वाला तो पल्योपम के आठवें भाग से कम जघन्य आयु वाला हो सकता है, किन्तु ज्योतिषी में इससे कम आयु नहीं है । असंख्येय वर्षायुष्क अपनी आयु के तुल्य उत्कृष्ट देवायु बन्धक होते हैं । इसलिये जघन्य स्थिति वाले वे पल्योपम के आठवें भाग आयु वाले होते हैं । प्रथम कुलकर विमलवाहन के पूर्व काल में होने वाले हस्ती आदि की यह स्थिति थी । इसी प्रकार के औधिक ज्योतिषी भी उस उत्पत्ति स्थान को प्राप्त होते हैं । यहाँ जो जघन्य अवगाहना धनुष-पृथक्त्व कही है, वह विमलवाहन कुलकर से पहले होने वाले पल्योपम के आठवें भाग की स्थिति वाले हस्त्यादि से भिन्न क्षुद्रकाय चतुष्पदों की अपेक्षा समझनी चाहिये और उत्कृष्ट अवगाहना सातिरेक अठारह सौ धनुष की कही है, वह विमलवाहन कुलकर से पूर्व होने वाले हस्त्यादि की अपेक्षा समझनी चाहिये । क्योंकि विमलवाहन कुल-कर की अवगाहना नौ सौ धनुष थी और उस समय में होने वाले हस्ती आदि की अवगाहना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उसमें दुगुनी थी, तथा उससे पहले समय में होने वाले हस्ती आदि की अवगाहना सातिरेक अठारह सौ धनुष थी। चौथे गमक का जो कथन किया गया है, उसीमें पाँचवें और छठे गमक का अन्तर्भाव कर दिया गया है। क्योंकि पल्योपम के आठवें भाग की आयु वाले युगलिक तिर्यंचों की पाँचवें और छठे गमक में भी पल्योपम के आठवें भाग की ही आयु होती है। सप्तमादि गमकों में तिर्यंच की तीन पल्योपम की स्थिति उत्कृष्ट ही है और ज्योतिषी देव की तो सातवें गमक में जघन्य और उत्कृष्ट यह दो प्रकार की स्थिति होती है। आठवें गमक में स्थिति पल्योपम के आठवें भाग और नौवें गमक में सातिरेक पल्योपम होती है। इसी के अनुसार संवेध करना चाहिये। इस प्रकार पहला, दूसरा और तीसरा-ये प्रथम तीन गमक, मध्य के तीन गमकों के स्थान में एक ही गमक और अन्तिम तीन गमक, इस प्रकार ये सात गमक होते हैं।

असंख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्य के अधिकार में अवगाहना जो सातिरेक नौ सौ धनुष की बताई गई है, वह विमलवाहन कुलकर के पूर्वकालीन मनुष्यों की अपेक्षा समझनी चाहिये और तीन गाऊ की अवगाहना सुषमसुषमा नामक प्रथम आरे में होने वाले युगलिक मनुष्यों की या देवकुरु आदि की अपेक्षा समझनी चाहिये। पूर्वोक्त रीति से मनुष्य के विषय में भी यहां सात ही गमक बताये गये हैं।

॥ चौबीसवें शतक का तेईसवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

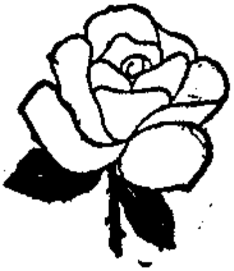

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतक २४ उद्देशक २४

वैमानिक देवों का उपपात

१ प्रश्न-सोहम्मदेवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? किं णेरइएहिंतो उववज्जंति० ?

१ उत्तर-भेदो जहा जोइसियउद्देसए।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन्! सौधर्म देव, किस गति से आ कर उत्पन्न होते हैं? नैरयिक से, तिर्यंच, मनुष्य या देव से आ कर उत्पन्न होते हैं?

१ उत्तर-हे गौतम! पूर्वोक्त ज्योतिषी उद्देशक के अनुसार भेद जानना चाहिये।

२ प्रश्न-असंखेज्ज-वासाउय-सण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए णं भंते! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए से णं भंते! केवइयकाल० ?

२ उत्तर-गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठिईएसु उववज्जेज्जा।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन्! असंख्यात वर्ष की आयु वाला संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, सौधर्म देवलोक में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है?

२ उत्तर-हे गौतम! जघन्य पल्योपम और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले सौधर्म देव में उत्पन्न होता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

३ प्रश्न-ते णं भंते !०

३ उत्तर-अवसेसं जहा जोइसिएसु उववज्जमाणस्स । णवरं सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, णो सम्मामिच्छादिट्ठी । णाणी वि, अण्णाणी वि, दो णाणा दो अण्णाणा णियमं । ठिई जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि, सेसं तहेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं-एवइयं० १ ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ?

३ उत्तर-ज्योतिषी में उत्पन्न होने वाले असंख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी तिर्यंचों के समान । वे समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि भी होते हैं, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होते । ज्ञानी और अज्ञानी भी होते हैं । उनमें दो ज्ञान या दो अज्ञान नियम से होते हैं । उनकी स्थिति जघन्य एक पल्योपम और उत्कृष्ट तीन पल्योपम होती है। इसी प्रकार अनुबन्ध भी, शेष पूर्ववत् । कालादेश से जघन्य दो पल्योपम और उत्कृष्ट छह पल्योपम १ ।

४-सो चेव जहण्णकालट्ठिईएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया । णवरं कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं-एवइयं० २ ।

भावार्थ-४-यदि वह असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच, जघन्य काल की स्थिति वाले सौधर्म देव में उत्पन्न हो, तो उसके लिये यही वक्तव्यता है । कालादेश से जघन्य दो पल्योपम और उत्कृष्ट चार पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है २ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

५-सो चेव उक्कोसकालट्ठिईएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवम०, उक्कोसेण वि तिपलिओवम०-एस चेव वत्तव्वया। णवरं ठिई जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं, सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं-एवइयं० ३।

भावार्थ-५ यदि वही जीव, उत्कृष्ट काल की स्थिति वाले सौधर्म देव में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति वाले सौधर्म देव में उत्पन्न होता है, इत्यादि पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार। परन्तु स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट तीन पल्योपम, शेष पूर्ववत्। कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट छह पल्योपम काल तक यावत् गमनागमन करता है ३।

६-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ, जहण्णेणं पलिओवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठिईएसु०, एस चेव वत्तव्वया। णवरं ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहुत्तं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं। ठिई जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण वि पलिओवमं, सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो पलिओवमाइं-एवइयं० ६।

भावार्थ-६ यदि वह स्वयं जघन्य स्थिति वाला हो और सौधर्म देव में उत्पन्न हो, तो जघन्य और उत्कृष्ट पल्योपम की स्थिति वाले सौधर्म देव में उत्पन्न होता है। उसके लिये भी पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार जानो। किन्तु अवगाहना जघन्य धनुष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट दो गाऊ होती है। स्थिति जघन्य और

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्कृष्ट दो पल्योपम, शेष पूर्ववत् । कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट दो पल्योपम तक यावत् गमनागमन करता है ४ ।

७-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिण्णि गमगा णेयव्वा । णवरं ठिइं कालादेसं च जाणेज्जा ९ ।

भावार्थ-७ यदि वह स्वयं उत्कृट स्थिति वाला हो, तो उसके अन्तिम तीन गमक का कथन प्रथम के तीन गमक के समान जानना चाहिये, विशेष में स्थिति और कालादेश जानना चाहिये ७-८-९ ।

८ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० ?

८ उत्तर-संखेज्जवासाउयस्स जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव णव वि गमा । णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा । जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि णो सम्मामिच्छादिट्ठी । दो णाणा दो अण्णाणा णियमं, सेसं तं चेव ।

भावार्थ-८ प्रश्न-यदि वह सौधर्म देव, संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच से आ कर उत्पन्न हो, तो ?

८ उत्तर-असुरकुमार में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच के समान नौ गमक जानने चाहिये, किन्तु यहां स्थिति और संवेध जानना चाहिये । जब वह स्वयं जघन्य स्थिति वाला हो, तो तीनों गमक में सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि होता है, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नहीं होता । दो ज्ञान या दो अज्ञान नियम से होते हैं । शेष पूर्ववत् ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

९ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ?

९ उत्तर-भेदो जहेव जोइसिएसु उववज्जमाणस्स । जाव-

भावार्थ-९ प्रश्न-यदि वह सौधर्म देव, मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है, तो ?

९ उत्तर-ज्योतिषी में उत्पन्न होने वाले संज्ञी मनुष्य के समान वक्तव्यता जाननी चाहिए । यावत्

१० प्रश्न-असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ?

१० उत्तर-एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा । णवरं आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । तइयगमे जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं । चउत्थगमए जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं । पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं । सेसं तहेव णिरवसेसं ९ ।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! असंख्यात वर्ष की आयु वाला संज्ञी मनुष्य सौधर्म देव में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! सौधर्मकल्प में उत्पन्न होने वाले असंख्य वर्ष की आयु वाले संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के समान सातों गमक जानना चाहिये, परन्तु प्रथम के दो गमक में अवगाहना जघन्य एक गाऊ और उत्कृष्ट तीन गाऊ होती है । तीसरे गमक में जघन्य और उत्कृष्ट तीन गाऊ, चौथे गमक में जघन्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

और उत्कृष्ट एक गाऊ और अन्तिम तीन गमक में जघन्य और उत्कृष्ट तीन गाऊ होती है। शेष पूर्ववत्।

११ प्रश्न-जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ?

११ उत्तर-एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव णव गमगा भाणियव्वा। णवरं सोहम्मदेवट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तं चेव ९।

भावार्थ-११ प्रश्न-यदि वह सौधर्म देव, संख्यात वर्ष के आयु वाले संज्ञी मनुष्य से आ कर उत्पन्न होता है ?

११ उत्तर-असुरकुमार में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्य के समान नौ गमक जानना चाहिये। विशेष यह है कि यहां सौधर्म देव की स्थिति और संवेध उससे भिन्न है, शेष पूर्ववत्। १ से ९।

१२ प्रश्न-ईसाणदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१२ उत्तर-ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वत्तव्वया। णवरं असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिई तेसु ठाणेसु इह साइरेगं पलिओवमं कायव्वं। चउत्थगमे ओगाहणा-जहण्णेणं धणुपुहुत्तं, उक्कोसेणं साइरेगाइं दो गाउयाइं, सेसं तहेव ९।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! ईशान देव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! ईशान देव की वक्तव्यता, सौधर्म देव के समान है। जिन स्थानों में असंख्यात वर्ष के आयु वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच की स्थिति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पल्योपम कही है, वहां सातिरेक पल्योपम जानना चाहिये। चौथे गमक में अवगाहना जघन्य धनुष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट सातिरेक दो गाऊ होती है। शेष पूर्ववत्।

१३-असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्स वि तहेव ठिई जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स असंखेज्जवासाउयस्स। ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं साइरेगं गाउयं, सेसं तहेव ९।

भावार्थ-१३-असंख्य वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्य की स्थिति, असंख्य वर्ष की आयु वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच के समान। जघन्य अवगाहना सातिरेक गाऊ जाननी चाहिये। शेष पूर्ववत्।

१४-संखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्जमाणाणं तहेव णिरवसेसं णव वि गमगा। णवरं ईसाणठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९।

भावार्थ-१४-सौधर्म देव में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच और मनुष्य के विषय में जो नौ गमक कहे हैं, वे ही ईशान देव के विषय में भी हैं, स्थिति और संवेध ईशान देव का जानना चाहिये।

विवेचन-सौधर्म देवलोक में जघन्य स्थिति पल्योपम से कम की नहीं होती, इसलिये वहाँ उत्पन्न होने वाला जीव, जघन्य पल्योपम की स्थिति में उत्पन्न होता है तथा उत्कृष्ट तीन पल्योपम की स्थिति में उत्पन्न होता है, यद्यपि सौधर्म देवलोक में इससे भी बहुत अधिक स्थिति है, तथापि युगलिक तिर्यंच उत्कृष्ट तीन पल्योपम की आयु वाले ही होते हैं। अतः वे इससे अधिक देवायु का बन्ध नहीं करते। दो पल्योपम का जो कथन किया है, उनमें से एक पल्योपम तिर्यंच-भव सम्बन्धी और एक पल्योपम देव-भव सम्बन्धी समझना चाहिये तथा उत्कृष्ट छह पल्योपम का जो कथन है उसमें तीन पल्योपम तिर्यंच-भव के और तीन पल्योपम देव-भव के समझना चाहिये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जघन्य अवगाहना जो धनुष-पृथक्त्व कही, वह क्षुद्रकाय चतुष्पद (छोटे शरीर वाले चौपाये) की अपेक्षा समझनी चाहिये और उत्कृष्ट दो गाऊ की कही है, सो जिस काल में और जिस क्षेत्र में एक गाऊ के मनुष्य होते हैं, उस क्षेत्र के हस्ती आदि की अपेक्षा समझनी चाहिये।

संख्येय वर्षायुष्क पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के अधिकार में मिश्रदृष्टि का निषेध किया है, क्योंकि जघन्य स्थिति वाले में मिश्रदृष्टि नहीं होता। उत्कृष्ट स्थिति वालों में तीनों दृष्टि होती हैं। यही बात ज्ञान और अज्ञान के विषय में भी समझनी चाहिये।

पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के अधिकार में प्रथम के दो गमक में सर्वत्र जघन्य अवगाहना धनुष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट छह गाऊ की कही है, किन्तु यहां मनुष्य के प्रकरण में, पहले दूसरे गमक में जघन्य एक गाऊ और उत्कृष्ट तीन गाऊ की कही है। तिर्यंच के तीसरे गमक में जघन्य धनुः-पृथक्त्व और उत्कृष्ट छह गाऊ की कही है। यहां जघन्य और उत्कृष्ट तीन गाऊ की कही है। चौथे गमक में तिर्यंच में जघन्य धनुष-पृथक्त्व और उत्कृष्ट दो गाऊ कही हैं, किन्तु यहां तो जघन्य और उत्कृष्ट एक गाऊ की कही है। इसी प्रकार दूसरे गमकों में भी समझना चाहिये।

ईशान देव के अधिकार में जघन्य स्थिति सातिरेक पल्योपम कही है, क्योंकि वहां यही जघन्य स्थिति है। इस स्थिति वाले सुषमा आरा में उत्पन्न क्षुद्रतर काय वाले तिर्यंच की अपेक्षा अवगाहना जघन्य धनुष-पृथक्त्व कही है। जिस काल और क्षेत्र में मनुष्य की अवगाहना सातिरेक गाऊ होती है, उस काल के हस्ती आदि की अवगाहना सातिरेक दो गाऊ होती है। इस प्रकार सौधर्म-देव के अधिकार में जिन स्थानों में अवगाहना एक गाऊ कही है, वहां ईशान-देवाधिकार में सातिरेक गाऊ जाननी चाहिये, क्योंकि उनकी सातिरेक पल्योपम की जघन्य स्थिति के अनुसार ही अवगाहना भी होती है।

सौधर्म-देवलोक में उत्पन्न होने वाले असंख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंच और मनुष्य में अर्थात् युगलिक तिर्यंच और मनुष्य में सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि ये दो दृष्टियां बताई हैं। इससे पूर्व अर्थात् भवनपति, वाणव्यन्तर और ज्योतिषी में उत्पन्न होने वाले युगलिक मनुष्य और तिर्यंच में एक मिथ्यादृष्टि ही बताई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि युगलिक में दृष्टि का परिवर्तन नहीं होता, तथा सम्यग्दृष्टि मनुष्य और तिर्यंच एकमात्र वैमानिक देव का ही आयु बांधते हैं। अतः ज्योतिषी तक मिथ्यादृष्टि युगलिक ही उत्पन्न होते हैं और पहले-दूसरे देवलोक में उत्पन्न होने वाले युगलिकों में दोनों (मिथ्या और सम्यग्) दृष्टियाँ होती है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१५ प्रश्न-सणंकुमारदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१५ उत्तर-उववाओ जहा सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं । जाव-

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! सनत्कुमार देव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! उपपात शर्कराप्रभा के नैरयिक के समान है। यावत्

१६ प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणंकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ?

१६ उत्तर-अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा सोहम्मे उववज्जमाणस्स । णवरं सणंकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा । जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ, सेसं तं चेव ९ ।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयु वाला पर्याप्त संज्ञी पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच, सनत्कुमार देव में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति वाले सनत्कुमार देव में उत्पन्न होता है ?

१६ उत्तर-परिमाण से ले कर भवादेश तक की सभी वक्तव्यता, सौधर्मकल्प में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी तिर्यंच के समान जाननी चाहिये, परन्तु सनत्कुमार की स्थिति और संवेध उससे भिन्न जानना चाहिये । जब वह जघन्य स्थिति वाला होता है, तब तीनों ही गमक में प्रथम की पाँच लेश्याएँ होती हैं । शेष पूर्ववत् १ से ९ ।

१७ प्रश्न-जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ?

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

१७ उत्तर-मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाणं तहेव णव वि गमा भाणियव्वा। णवरं सणंकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९।

भावार्थ-१७ प्रश्न-यदि सनत्कुमार देव, मनुष्य से आ कर उत्पन्न हो, तो?

१७ उत्तर-शर्कराप्रभा में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के समान नौ गमक जानना चाहिये, किन्तु सनत्कुमार की स्थिति और संवेध उससे भिन्न जानना चाहिये १ से ९।

१८ प्रश्न-माहिंदगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१८ उत्तर-जहा सणंकुमारगदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिंदगदेवाण वि भाणियव्वा। णवरं माहिंदगदेवाणं ठिई साइरेगा भाणियव्वा सच्चेव। एवं बंभलोगदेवाण वि वत्तव्वया। णवरं बंभलोगट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। एवं जाव सहस्सारो। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। लंतगादीणं जहण्णकालट्ठिईयस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साओ कायव्वाओ। संघयणाइं बंभलोग-लंतएसु पंच आदिल्लगाणि, महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि। तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि, सेसं तं चेव ९।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! माहेन्द्र देव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं?

१८ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार सनत्कुमार देव की वक्तव्यता कही, उसी प्रकार माहेन्द्र देव की भी जाननी चाहिये, किन्तु माहेन्द्र देव की स्थिति, सनत्कुमार देव से सातिरेक जाननी चाहिये। इसी प्रकार ब्रह्मलोक के देव की वक्तव्यता है। स्थिति और संवेध ब्रह्मलोक का जानना चाहिये। इसी प्रकार यावत् सहस्रार देवलोक पर्यन्त। स्थिति और संवेध अपना-अपना जानना चाहिये।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लान्तक, महाशुक्र और सहस्रार देवलोक में उत्पन्न होने वाले जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच के तीनों गमक में छहों लेश्याएँ होती हैं। ब्रह्मलोक और लान्तक में जाने वाले में प्रथम के पांच संहनन होते हैं। महाशुक्र और सहस्रार में जाने वाले में प्रथम के चार संहनन होते हैं। तिर्यंच और मनुष्य दोनों के लिए भी यही जानना चाहिये, शेष पूर्ववत् १ से ९।

१९ प्रश्न-आणयदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

१९ उत्तर-उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं। णवरं तिरिक्ख-जोणिया खोडेयव्वा जाव-

कठिन शब्दार्थ-खोडेयव्वा-निषेध करना चाहिये।

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! आणत देव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! उपपात सहस्रार देव के समान। परन्तु यहां तिर्यंच का निषेध करना चाहिये (यहां तिर्यंच उत्पन्न नहीं होते)। यावत्-

२० प्रश्न-पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए आणयदेवेसु उववज्जित्तए० ?

२० उत्तर-मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्ज-माणाणं। णवरं तिण्णि संघयणाणि, सेसं तहेव जाव अणुबंधो। भवा-देसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं दोहिं वासपुहुत्तेहिं अब्भ-हियाइं, उक्कोसेणं सत्तावण्णं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भ-हियाइं-एवइयं०। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा। णवरं ठिइं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संवेहं च जाणेज्जा, सेसं तं चेव ९ । एवं जाव अच्चुयदेवा, णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ९ । चउसु वि संघयणा तिण्णि आणयादीसु ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात वर्ष की आयु वाला पर्याप्त संज्ञी मनुष्य आनत देव में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

२० उत्तर-हे गौतम ! सहस्रार देव में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के समान । विशेष में--यहां प्रथम के तीन संहनन वाले उत्पन्न होते है, शेष पूर्ववत् यावत् अनुबन्ध पर्यन्त । भवादेश से जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट सात भव तथा कालादेश से जघन्य दो वर्ष-पृथक्त्व अधिक अठारह सागरोपम और उत्कृष्ट चार पूर्वकोटि अधिक सत्तावन सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है । इसी प्रकार शेष आठ गमक भी जानने चाहिये । विशेष में स्थिति और संवेध जानना चाहिये, शेष पूर्ववत् १ से ९ । इसी प्रकार यावत अच्युत देव पर्यन्त । स्थिति और संवेध अपना-अपना । आणतादि चारों देवलोकों में प्रथम के तीन संहनन वाले उत्पन्न होते हैं ।

२१ प्रश्न-गेविज्जगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

२१ उत्तर-एस चेव वत्तव्वया । णवरं दो संघयणा । ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन् ! ग्रैवेयक देव कहां से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

२१ उत्तर-पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार । विशेष में यहां प्रथम के दो संहनन वाले उत्पन्न होते हैं तथा स्थिति और संवेध इनका अपना है ।

२२ प्रश्न-विजत-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवा णं भंते ! कआ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हिंतो उववज्जंति ?

२२ उत्तर-एस चेव वत्तव्वया णिरवसेसा जाव 'अणुबंधो' त्ति। णवरं पढमं संघयणं, सेसं तहेव। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं०। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा। णवरं ठिइं संवेहं च जाणेज्जा। मणूसे लद्धी णवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स। णवरं पढमं संघयणं।

भावार्थ-२२ प्रश्न-हे भगवन् ! विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित देव कहाँ से आ कर उत्पन्न होते हैं ?

२२ उत्तर-पूर्वोक्त वक्तव्यता यावत् अनुबन्ध पर्यन्त। यहाँ केवल प्रथम संहनन वाला ही उत्पन्न होता है, शेष पूर्ववत्। भवादेश से जघन्य तीन भव और उत्कृष्ट पांच भव, कालादेश से जघन्य दो वर्ष पृथक्त्व अधिक इक्कतीस सागरोपम और उत्कृष्ट तीन पूर्वकोटि अधिक ६६ सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है। शेष आठ गमक भी इसी प्रकार। स्थिति और संवेध इनका अपना जानना चाहिये। मनुष्य के नौ गमक में ग्रैवेयक में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के समान। विशेषता यह कि विजय आदि में प्रथम संहनन वाला ही उत्पन्न होता है।

२३ प्रश्न-सव्वट्ठसिद्धगदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ?

२३ उत्तर-उववाओ जहेव विजयादीणं। जाव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध का देव कहां से आ कर उत्पन्न होता है ।

२३ उत्तर-हे गौतम ! उपपात विजयादि के समान । यावत्

२४ प्रश्न-से णं भंते ! केवइयकालट्ठिईएसु उववज्जेज्जा ?

२४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमट्ठिईएसु उववज्जंति, अवसेसा जहा विजयाईसु उववज्जंताणं । णवरं भवादेसेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं-एवइयं० १ ।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! संज्ञी मनुष्य, सर्वार्थसिद्ध देव में उत्पन्न हो, तो कितने काल की स्थिति में उत्पन्न होता है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले सर्वार्थसिद्ध देव में उत्पन्न होता है । शेष वक्तव्यता विजयादि में उत्पन्न होने वाले मनुष्य के समान है । भवादेश से तीन भव तथा कालादेश से जघन्य दो वर्ष-पृथक्त्व अधिक तेतीस सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है १ ।

२५-सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठिईओ जाओ एस चेव वत्तव्वया । णवरं ओगाहणाठिईओ रयणिपुहुत्त-वासपुहुत्ताणि, सेसं तहेव, संवेहं च जाणेज्जा २ ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भावार्थ-२५ यदि वह संज्ञी मनुष्य स्वयं जघन्य काल की स्थिति वाला हो, तो भी यही पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये। अवगाहना रत्नि-पृथक्त्व और स्थिति वर्ष-पृथक्त्व शेष पूर्ववत्। स्थिति और संवेध इसका अपना है २।

२६-सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठिईओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया। णवरं ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं। ठिई जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तहेव जाव 'भवादेसो' त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गइरागइं करेज्जा ३। एए तिण्णि गमगा सव्वट्ठ-सिद्धगदेवाणं।

※ 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति भगवं गोयमे जाव विहरइ ※

॥ चउवीसइमे सए चउवीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ चउवीसइमं सयं समत्तं ॥

भावार्थ-२६ यदि वह संज्ञी मनुष्य, स्वयं उत्कृष्ट काल की स्थिति वाला हो, तो पूर्वोक्त वक्तव्यता जाननी चाहिये। अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट पांच सौ धनुष तथा स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट पूर्वकोटि। शेष पूर्ववत्, यावत् भवादेश पर्यंत। कालादेश से जघन्य और उत्कृष्ट दो पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपम तक यावत् गमनागमन करता है ३। सर्वार्थसिद्ध के देव में ये तीन गमक ही होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है'-कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होने वाले जघन्य स्थिति वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच में प्रथम की पांच लेश्याएँ कही हैं, क्योंकि सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होने वाला जघन्य स्थिति का तिर्यंच अपनी जघन्य स्थिति के कारण कृष्णादि चार लेश्याओं में से किसी एक लेश्या में परिणत हो कर मरण के समय में पद्मलेश्या को प्राप्त कर मरता है, तब उस देवलोक में उत्पन्न होता है, क्योंकि अगले भव की लेश्या में परिणत होने पर जीव परभव जाता है-ऐसा सैद्धान्तिक नियम है । इस प्रकार इसके पांच लेश्या होती हैं । इसी प्रकार माहेन्द्र ब्रह्मलोक के विषय में भी समझना चाहिये ।

देवलोक में उत्पन्न होने वाले के संहननों के विषय में यह नियम है-

छेवट्टेण उगम्मइ चत्तारि उ जाव आइमा कप्पा ।
वड्ढेज्ज कप्पजुयलं संघयणे कीलियाईए ।।

अर्थात्-छह संहनन वाला प्रथम के चार देवलोक में जाता है । पांचवें और छठे में पांच संहनन वाला, सातवें, आठवें में चार संहनन वाला, नौवें, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें में तीन संहनन वाला, नवग्रैवेयक में दो संहनन वाला और अनुत्तरविमान में एक प्रथम संहनन वाला जाता है ।

आणतादि देव, मनुष्य से आ कर ही उत्पन्न होता है और वहां से चव कर मनुष्य में जाता है । इस प्रकार जघन्य तीन भव होते हैं और उत्कृष्ट इसी क्रम से सात भव होते हैं । आणतादि का संवेध-मनुष्य के चार भव सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति चार पूर्वकोटि और आनत देवलोक की तीन भव सम्बन्धी उत्कृष्ट स्थिति सत्तावन सागरोपम होती है । अतः आणत देव का उत्कृष्ट संवेध चार पूर्वकोटि अधिक सत्तावन सागरोपम का होता है । इसी प्रकार आगे के देवलोक की स्थिति का विचार कर संवेध जानना चाहिये ।

।। चौबीसवें शतक का चौबीसवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ।।

।। चौबीसवाँ शतक सम्पूर्ण ।।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री भगवती सूत्र के—

प्रथम भाग में—

शतक १–२ पृ. १ से ५३२ तक।

द्वितीय भाग में—

शतक ३–४–५–६ पृ. ५३३ से १०७६ तक।

तृतीय भाग में—

शतक ७–८ पृ. १०७७ से १५७० तक।

चतुर्थ भाग में—

शतक ९–१०–११–१२ पृ. १५७१ से २१३४ तक।

पंचम भाग में—

शतक १३–१४–१५–१६–१७ पृ. २१३५ से २६४६ तक।

षष्ठ भाग में—

शतक १८ से २४ पृ. २६४७ से ३११४ तक।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ

ब्यावर (राज.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org